हमारा देश
भारत

भाग 1

पाठ्यपुस्तक-समिति के सदस्य

डा. रवीन्द्र दवे (विभागाध्यक्ष)
प्रो. त्रिभुवन शंकर मेहता
श्रीमती आदर्श खन्ना
श्री चंद्रप्रकाश राय भटनागर

प्रो. विमल घोष (भूतपूर्व विभागाध्यक्ष)
डॉ. अल्बर्ट जॉन पैरेली
श्री भालचंद्र सदाशिव पारेख
श्री शांतिस्वरूप रस्तोगी

श्री चंद्र भूषण

मानचित्रकार
श्री कृष्ण कुमार

चित्रकार
श्री बी. एम. आनद
श्री केशव वाघ

सामाजिक अध्ययन

हमारा देश

भारत

भाग 1

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

कृतज्ञता-ज्ञापन

इस पुस्तक में प्रयुक्त फ़ोटोग्राफ़ प्रेस इन्फर्मेशन ब्यूरो, नई दिल्ली के सौजन्य से प्राप्त हुए हैं। राष्ट्रीय शैक्षिक अनु-संधान और प्रशिक्षण परिषद् का पाठ्यक्रम एवं मूल्यांकन विभाग इस सहायता के लिए आभार प्रकट करता है।

पाठ-सूची

क्रम-संख्या		पृष्ठ-संख्या
	सीख लो	... 1
	भारत के लोग	
1.	जम्मू-कश्मीर	... 10
2.	हिमाचल प्रदेश	... 19
3.	पंजाब	... 23
4.	हरियाणा	... 28
5.	राजस्थान	... 33
6.	गुजरात	... 39
7.	मध्य प्रदेश	... 44
8.	महाराष्ट्र	... 49
9.	मैसूर	... 57
10.	केरल	... 64
11.	मद्रास	... 71
12.	आंध्र प्रदेश	... 77
13.	उड़ीसा	... 82
14.	पश्चिमी बंगाल	... 87
15.	असम	... 94
16.	नागालैण्ड	... 102
17.	बिहार	... 107
18.	उत्तर प्रदेश	... 112
19.	दिल्ली	... 117
	इतिहास की कहानियाँ	
20.	रामायण की कहानी	... 124
21.	महाभारत की कहानी	... 128
22.	अशोक महान	... 131
23.	चंद्रगुप्त विक्रमादित्य	... 134
24.	हर्षवर्धन	... 137
25.	राजेन्द्र चोल	... 141
	कुछ जानने योग्य बातें	... 145
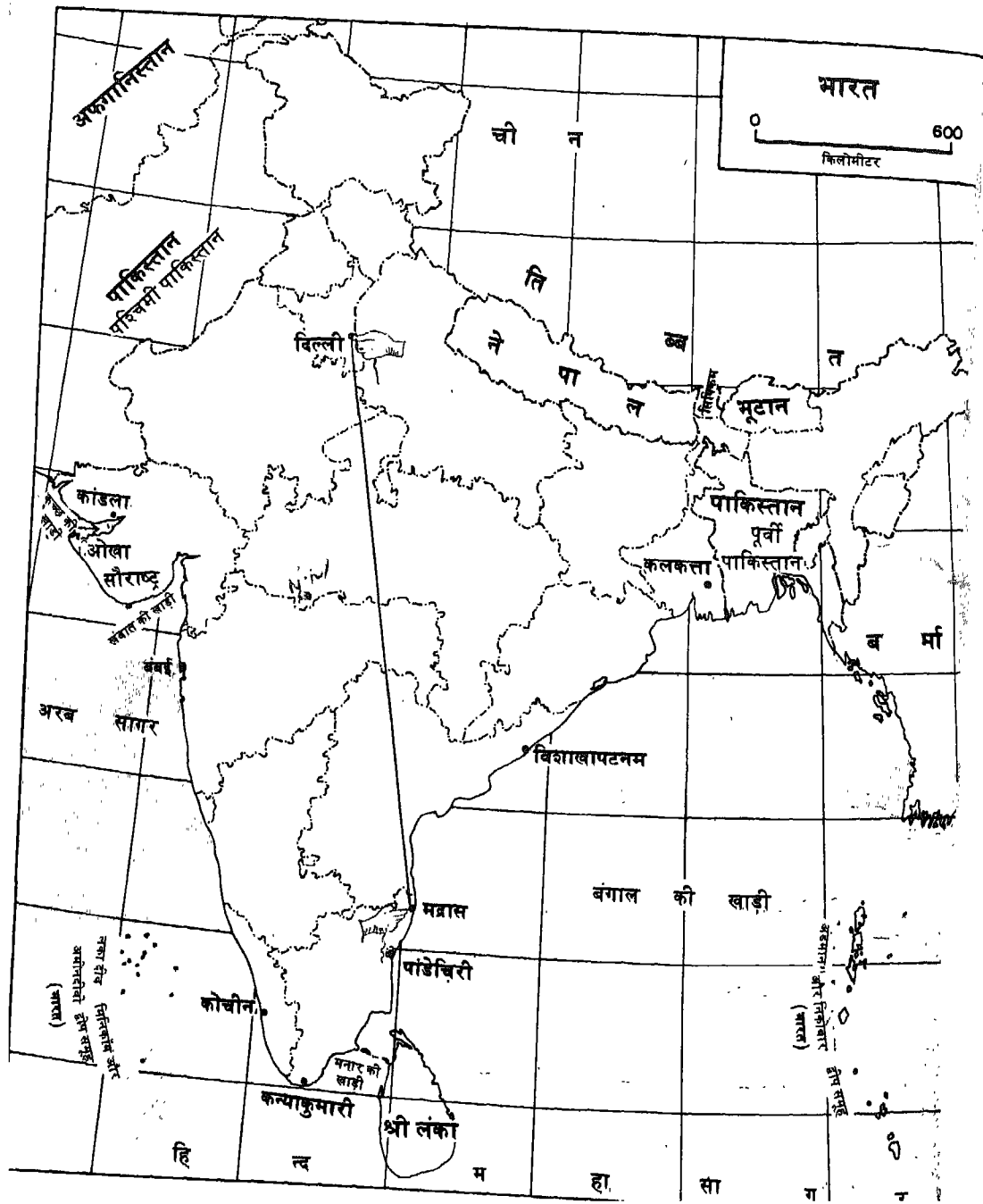
सीख लो

सामने के पृष्ठ पर दिए गए मानचित्र को ध्यान से देखो। यह हमारे देश—भारत का मानचित्र है। इसमें भारत और उसके पड़ोसी देशों के कुछ भाग दिखाए गए हैं। क्या तुम मानचित्र में इस प्रकार की (------------) रेखा देखते हो ? दो देशों के बीच की सीमा-रेखा मानचित्र पर इसी प्रकार दिखाई जाती है। इसे अंतर्राष्ट्रीय सीमा कहते हैं। अब तुम किसी भी मानचित्र पर अंतर्राष्ट्रीय सीमा ढूँढ़ सकते हो।

भारत की सीमा का कुछ भाग मानचित्र में इस प्रकार (————) की रेखा से दिखाया गया है। इसे तट-रेखा कहते हैं। तट-रेखा के साथ का नीला भाग समुद्र है। पानी के बहुत बड़े भंडार को समुद्र या सागर कहते हैं। समुद्र का पानी खारा होता है। बहुत बड़े और गहरे समुद्रों को महासागर कहते हैं। समुद्रों और महासागरों को रंगीन मानचित्रों में सदा नीले रंग से दिखाते हैं। तुम भारत की तट-रेखा के साथ लगने वाले समुद्र और महासागर के नाम मानचित्र में पढ़ सकते हो।

भारत में बहुत-से राज्य हैं। भारत के विभिन्न राज्यों के बीच की सीमाएँ मानचित्र में इस प्रकार की रेखा (------------) से दिखाई गई हैं।

तुम पृथ्वी पर दिशाएँ मालूम करना जानते हो। क्या तुमने कभी सोचा है कि मानचित्र में भी उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम दिशाएँ होती हैं ? आओ मानचित्र में दिशाएँ मालूम करना सीखें।

भारत का एक बड़ा मानचित्र लो। इसे दीवार पर लटकाओ और इसकी ओर मुँह करके खड़े हो जाओ। तुम्हारे सिर की ओर मानचित्र का उत्तर और पैरों की ओर दक्षिण होगा। तुम्हारे दाएँ हाथ की ओर पूर्व और बाएँ की ओर पश्चिम होगा। क्या तुम अब मानचित्र में दिशाएँ बता सकते हो ? ज़रा बताओ कि भारत के मानचित्र में दिए गए समुद्र और पड़ोसी देश किस-किस दिशा में हैं।

भारत एक विशाल देश है। इसकी लंबाई-चौड़ाई कागज़ पर नहीं दिखाई जा सकती। किसी भी स्थान अथवा देश का मानचित्र उसके ठीक-ठीक आकार से बहुत छोटा होता है। यही कारण है कि मानचित्र में बड़ी दूरी को छोटा करके दिखाया जाता है। सभी अच्छे मानचित्रों पर दूरी नापने के लिए एक छोटी-सी रेखा बनी होती है।

इसे पैमाना कहते हैं। पैमाने की सहायता से तुम मानचित्र पर दिए गए किन्हीं दो स्थानों के बीच की सीधी दूरी मालूम कर सकते हो। आओ, दिल्ली और मद्रास के बीच की सीधी दूरी मालूम करें। इससे तुम मानचित्र पर लिखे पैमाने का प्रयोग करना सीखोगे।

एक धागा या कागज की एक पट्टी लो। इसका एक सिरा दिल्ली के स्थान (विन्दु) पर रखो। धागे को खींचकर मद्रास के स्थान (विन्दु) तक लाओ। धागे पर मद्रास के सामने एक निशान लगाओ। धागे के दोनों सिरों को कसकर पकड़ो। इस धागे को दिल्ली
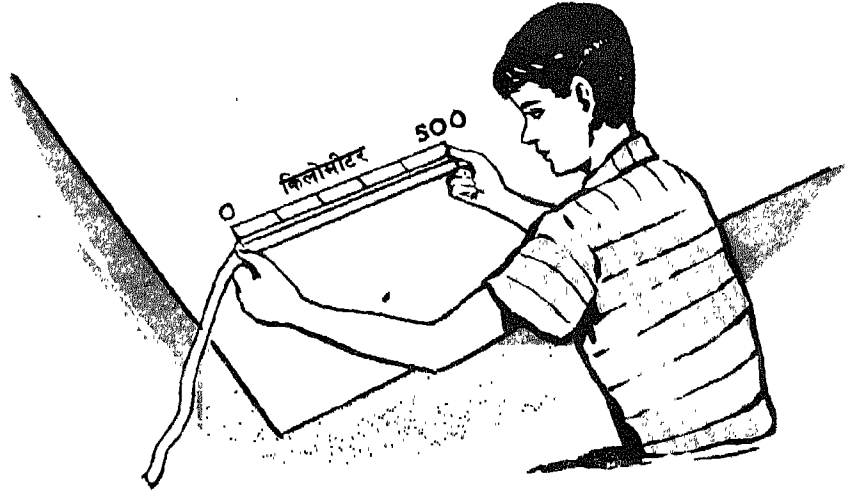
चित्र 1

और मद्रास के स्थान (विन्दु) के बीच की लंबाई के बराबर काट लो।

अब धागे का एक सिरा पैमाने के शून्य विन्दु पर रखो और धागे को पैमाने की रेखा के साथ लगाकर पैमाने के दूसरे सिरे तक की दूरी नापो (चित्र 1)। यदि धागे की लंबाई पैमाने की एक नाप से अधिक है तो धागे पर उस जगह निशान लगाओ जहाँ पैमाने का अंतिम सिरा है। धागे की शेष लंबाई को पहले की भाँति पैमाने पर नापो (चित्र 2)। इस प्रकार नापी गई सब दूरी को जोड़ने से तुम्हें दिल्ली और मद्रास के बीच की सीधी दूरी मालूम हो जाएगी। मानचित्र पर दिए गए किन्हीं दो स्थानों की दूरी तुम इसी प्रकार मालूम कर सकते हो। इस पैमाने की सहायता से तुम भारत की लंबाई और चौड़ाई भी मालूम कर सकते हो।

तुम देखते हो कि भारत की तट-रेखा बहुत लंबी है। जहाँ भूमि और समुद्र मिलते हैं, उसे समुद्र-तट कहते हैं। तट कहीं-कहीं पर कटा-फटा और टेढ़ा-मेढ़ा होता है। ऐसे

ही कटे-फटे तट के कुछ स्थानों के पास जहाँ समुद्र गहरा होता है, जहाज़ आकर रुकते हैं और वहाँ से ही विदेशों को जाते हैं। ऐसे स्थान को <u>बंदरगाह</u> कहते हैं। गहरे समुद्र और कटे-फटे तट पर अच्छे बंदरगाह बन सकते हैं। बंदरगाह पर सामान उतारा और लादा जाता है और यात्री भी चढ़ते-उतरते हैं। भारत के समुद्र-तट पर बहुत-से बंदरगाह हैं। तुम मानचित्र में इनके नाम पढ़ सकते हो।

कहीं-कहीं समुद्र अपने तट को काटकर भूमि के अंदर घुस गया है और तीन ओर धरती से घिरा है। समुद्र के ऐसे भाग को <u>खाड़ी</u> कहते हैं (चित्र 5)। खाड़ी चौड़ी
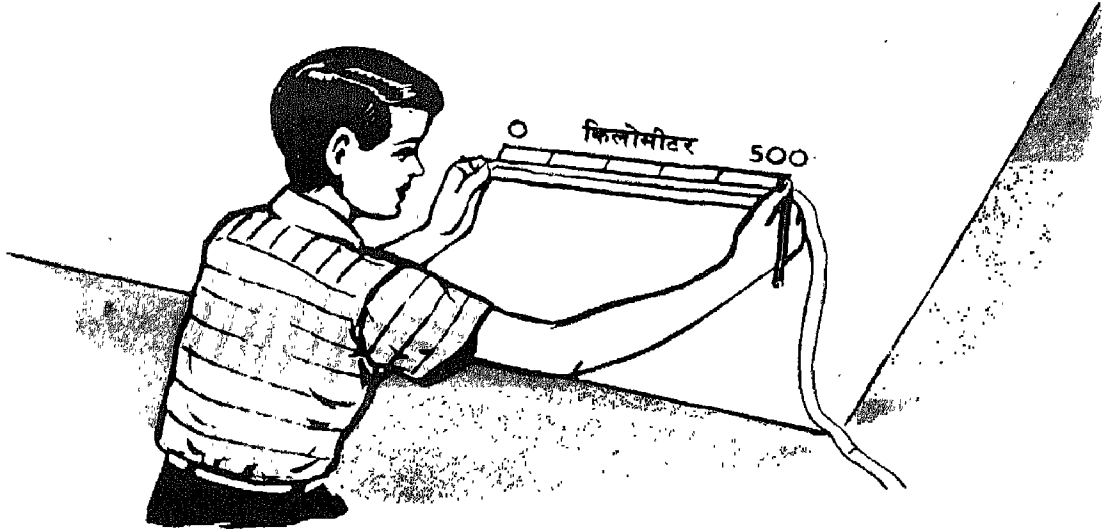
चित्र 2

भी हो सकती है और तंग भी। मानचित्र में बंगाल की खाड़ी, खंभात की खाड़ी और कच्छ की खाड़ी देखो।

कहीं-कहीं भूमि का कोई भाग दूर तक समुद्र में चला गया है और एक ओर को छोड़कर शेष सब तरफ़ समुद्र से घिरा है (चित्र 5)। भूमि के ऐसे भाग को <u>प्रायद्वीप</u> कहते हैं। इसी प्रकार कहीं-कहीं भूमि का एक पतला नुकीला भाग भी तीन ओर समुद्र से घिरा होता है। इसे <u>अंतरीप</u> कहते हैं (चित्र 5)। भूमि के कुछ ऐसे छोटे-बड़े टुकड़े हैं जिनके चारों ओर समुद्र है। ऐसे भूखंडों को <u>द्वीप</u> कहते हैं (चित्र 5)। क्या अब तुम मानचित्र में कन्या कुमारी अंतरीप, सौराष्ट्र प्रायद्वीप, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह ढूँढ़ सकते हो ?

पृष्ठ 7 पर दिए चित्र 6 को देखो। इससे पता चलता है कि समुद्र के पानी का तल भूमि

के अन्य सभी भागों से नीचा है। इसीलिए भूमि के भिन्न-भिन्न भागों की ऊँचाई हम सदा समुद्रतल को आधार अथवा शून्य मानकर ही नापते हैं। किसी स्थान की ऊँचाई का अर्थ है—'उस स्थान की समुद्रतल से ऊँचाई'। क्या तुम जानते हो कि भारत की राजधानी दिल्ली की समुद्रतल से ऊँचाई लगभग 239 मीटर है।

चित्र 6 में तुम देखते हो कि भूमि के कुछ भाग समुद्रतल से बहुत अधिक ऊँचे नहीं हैं। भूमि के ऐसे समतल भाग को मैदान कहते हैं। मैदान से कुछ ऊँची उठी और लगभग समतल भूमि को पठार कहते हैं। पठार मैदान से लगभग सीधा ऊपर की ओर उठा होता है। चित्र में यह भी देखो कि पहाड़ी भाग आस-पास की भूमि से बहुत ऊँचे उठे हुए हैं। इनकी ऊँचाई सब जगह एक-सी नहीं है। समुद्रतल से बहुत ऊँचे उठे भागों को पर्वत या पहाड़ कहते हैं। जिन पहाड़ों की ऊँचाई बहुत अधिक नहीं है उन्हें पहाड़ी कहते हैं। पर्वत के सबसे ऊँचे भाग को पर्वत-शिखर या पर्वत की चोटी कहते हैं।

तुम चित्र 5 में पर्वतों की एक पंक्ति देख रहे हो। पर्वतों की ऐसी पंक्ति को पर्वतमाला अथवा पर्वतश्रेणी कहते हैं। एक पर्वत में बहुत-सी पर्वतमालाएँ हो सकती हैं। एक पर्वतमाला में भिन्न-भिन्न ऊँचाई वाले पर्वत अथवा पहाड़ होते हैं। एक पहाड़ की ढलान
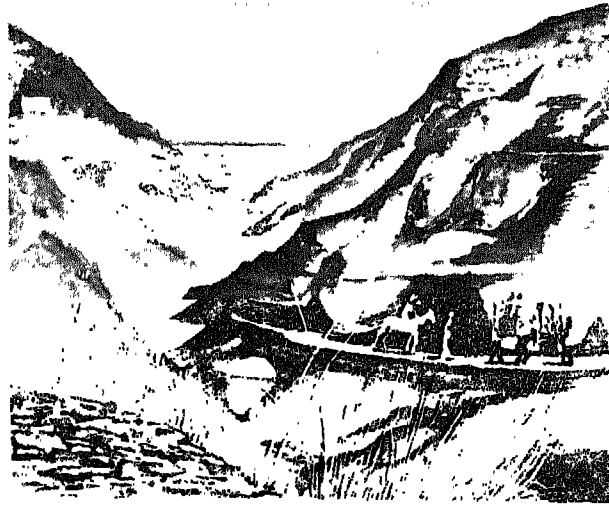
चित्र 3

और दूसरे पहाड़ की ढलान के बीच में गहराई वाले भाग को घाटी कहते हैं। घाटी में अक्सर नदी बहती है।

ऊँचे पहाड़ों को पार करना बहुत कठिन होता है। पहाड़ों में कहीं-कहीं तंग रास्ते पाए जाते हैं। इन तंग रास्तों को दर्रा कहते हैं (चित्र 3)। ऐसे दर्रों से ही लोग अक्सर

पहाड़ों को पार करते हैं। चित्र 3 में तुम कुछ लोगों को दर्रा पार करते हुए देख सकते हो।

किसी स्थान पर कितनी गर्मी या सर्दी होती है ? वर्षा वहाँ कब और कितनी होती है ? वर्षों तक किसी स्थान की इन दशाओं की जानकारी से वहाँ की जलवायु का पता चलता है। जलवायु 'गर्म' अथवा 'ठंडी', 'आर्द्र' अथवा 'शुष्क' हो सकती है। किसी स्थान की जलवायु की जानकारी बड़ी रुचिकर होती है। इससे हमें उस स्थान तथा वहाँ के लोगों के बारे में बहुत-सी बातों का पता चलता है।

जैसे-जैसे तुम इस पुस्तक को पढ़ोगे, तुम्हें पता चलेगा कि मैदानों की अपेक्षा पहाड़ी भागों की जलवायु ठंडी होती है। ऊँचे पर्वतों पर अधिकांशतः वर्षभर बर्फ़ पड़ती है। पहाड़ों की कुछ बहुत ऊँची चोटियाँ तो सदा बर्फ़ से ढकी रहती हैं। लगातार बर्फ़ गिरने से पहाड़ों पर बर्फ़ के मीलों लंबे-चौड़े ढेर लग जाते हैं। अधिक भार के कारण बर्फ़ कहीं-कहीं बहुत धीरे-धीरे पहाड़ से नीचे घाटी की ओर खिसकने लगती है। इसे हिम-नदी कहते हैं। हिम-नदी अक्सर कई किलोमीटर लंबी होती है। बर्फ़ की यह नदी इतने धीरे चलती है कि देखने में स्थिर मालूम पड़ती है (चित्र 4)।

चित्र 4

जब हिम-नदियाँ निचले भागों में पहुँचती हैं तो बर्फ़ पिघलकर पानी बन जाती है। उससे नदियाँ बनती हैं। हिमालय पर्वतमाला में कई हिम-नदियाँ हैं। इनसे हमारे देश की अनेक नदियाँ निकलती हैं।

नदी पहाड़ों और चट्टानों के ऊपर से कूदती-फाँदती आगे बढ़ती है। जब यह ढलवाँ पर्वतों से गिरती है तो जलप्रपात बनाती है (चित्र 5)।

मार्ग में ऐसी ही कई और नदियाँ इस नदी में आ मिलती हैं। अब यह नदी एक बड़ी नदी बन जाती है। जो छोटी नदियाँ बड़ी नदी में जाकर मिलती हैं, इसकी सहायक नदियाँ कहलाती हैं। जिस स्थान पर दो नदियाँ मिलती हैं, उसे संगम कहते हैं।

तुम जानते हो भूमि के कुछ भाग ऊँचे और कुछ भाग नीचे होते हैं। कहीं-कहीं भूमि के निचले भाग में बहुत-सा पानी जमा हो जाने से झील बन जाती है (चित्र 5)। कुछ झीलों का पानी खारा होता है और कुछ का मीठा। लगभग सभी नदियाँ पहाड़ों से बहती हुई मैदान में आकर किसी अन्य नदी या झील में मिलती हैं अथवा समुद्र में जा गिरती हैं।

इस पुस्तक में तुम भारत के राज्यों और यहाँ के लोगों के बारे में बहुत-सी रोचक और काम की बातें पढ़ोगे। इस पाठ से तुम्हें पुस्तक के शेष पाठों को अच्छी तरह समझने में बड़ी सहायता मिलेगी। आवश्यकता पड़ने पर तुम इस पाठ को बार-बार पढ़ सकते हो।

पर्वतमाला

जल प्रपात

झील

घाटी

सहायक नदी

नदी

खाड़ी

प्रायद्वीप

द्वीप

अंतरीप

चित्र 5

चित्र 6

भारत
राजनैतिक
0
600
किलोमीटर
अफगानिस्तान
चीन
पाकिस्तान
पश्चिमी पाकिस्तान
जम्मू और कश्मीर
हरियाणा
दिल्ली
उत्तर प्रदेश
नेपाल
राजस्थान
जयपुर
लखनऊ
बिहार
पश्चिमी बंगाल
कलकत्ता
पूर्वी पाकिस्तान
असम
कोहिमा
बर्मा
गुजरात
मध्यप्रदेश
उड़ीसा
भुवनेश्वर
महाराष्ट्र
(गोआ, दमन और दीव)
(दादरा और नगर हवेली)
हैदराबाद
अरब सागर
बंगाल की खाड़ी
पानाजी
गोआ
(गोआ, दमन और दीव)
मैसूर
आंध्र प्रदेश
बंगलौर
पांडेचिरी
पोर्ट ब्लेयर
त्रिवेन्द्रम
श्री लंका
हिन्द
महासागर
सतलुज
सिन्धु
ब्रह्मपुत्र
गोदावरी
कृष्णा
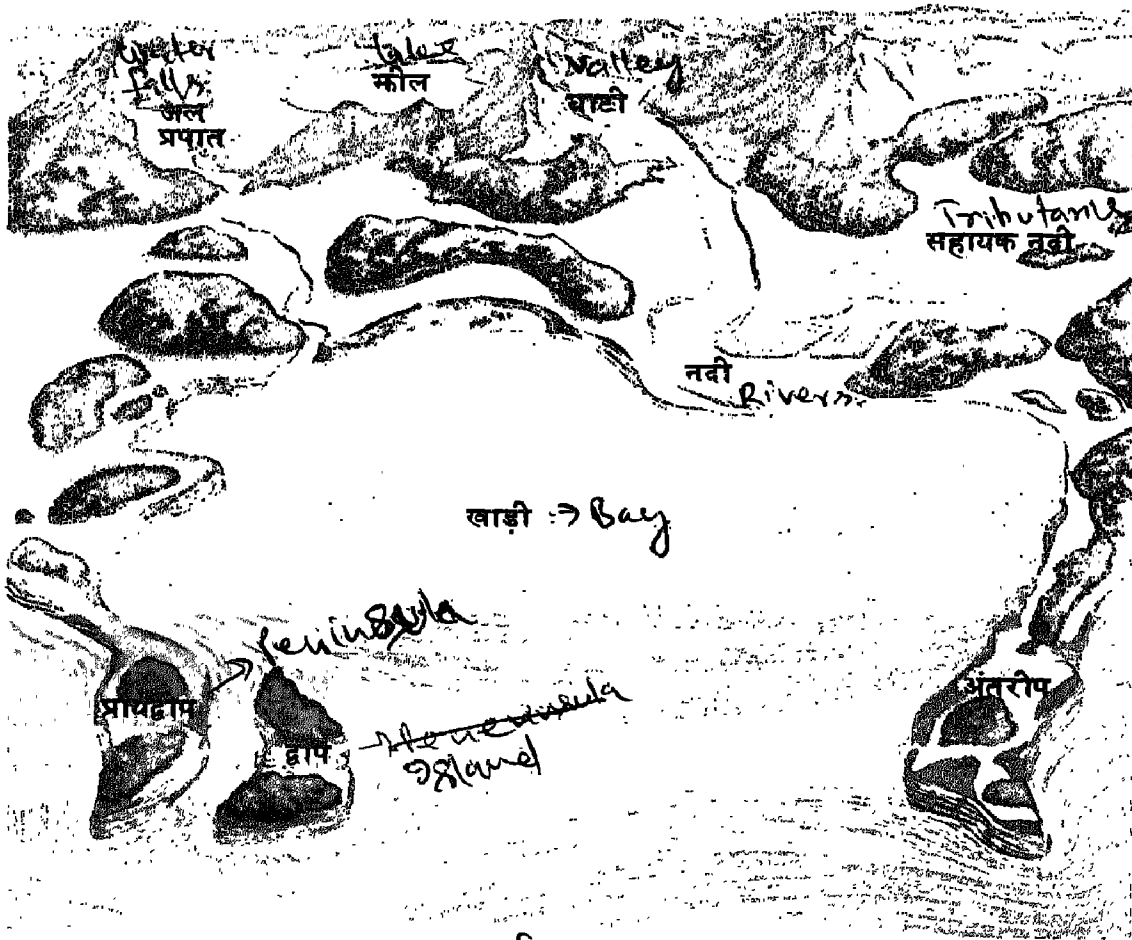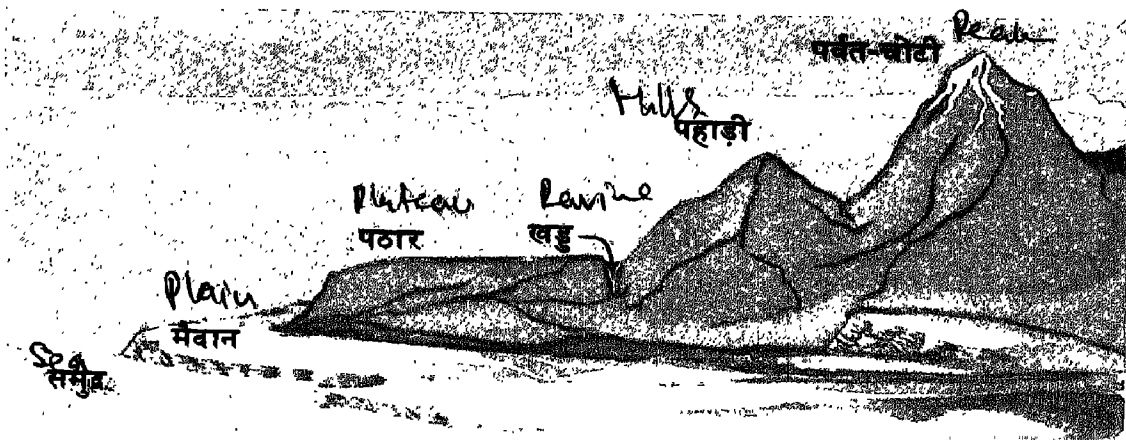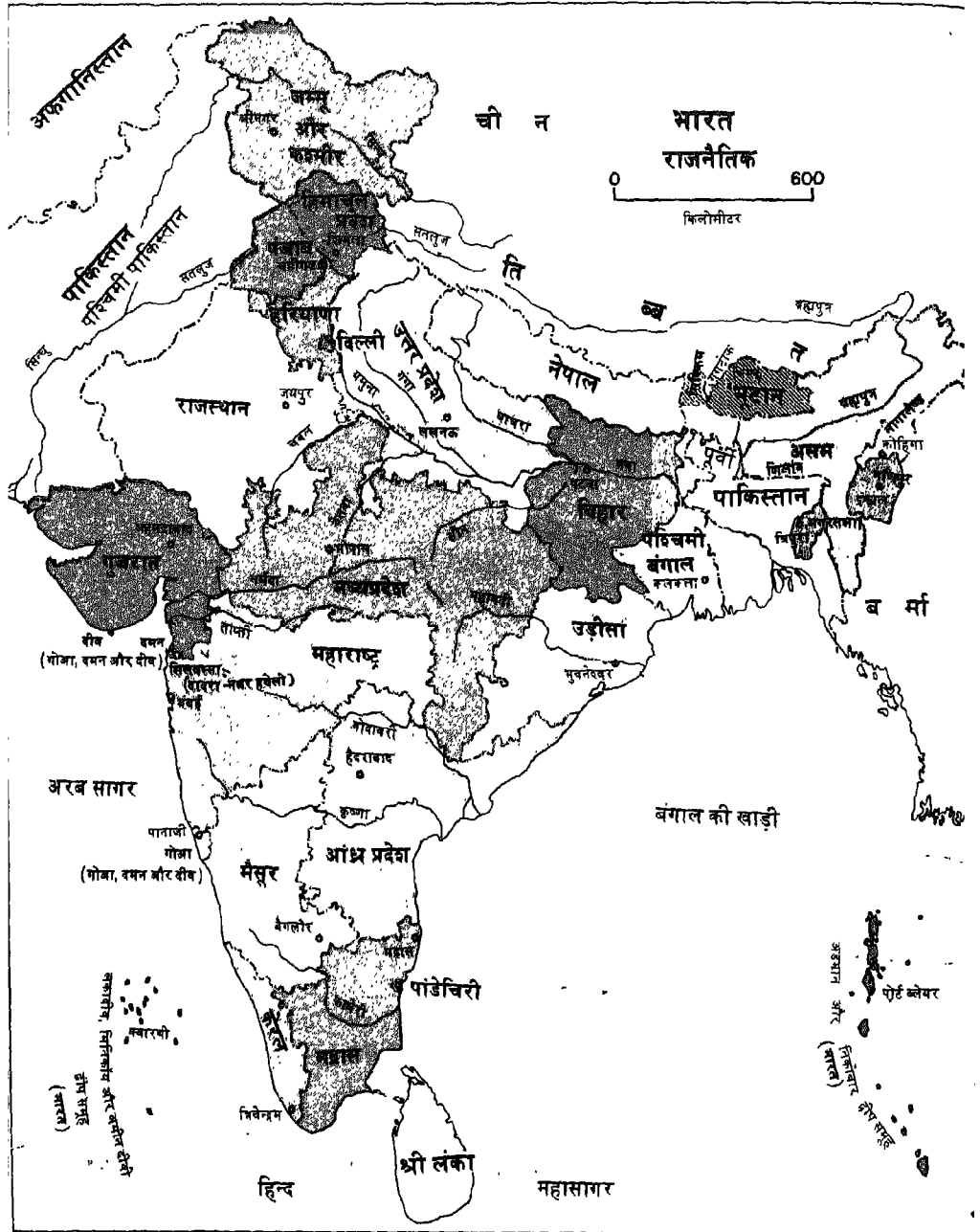
भारत के लोग

तुम अपने पास-पड़ोस, गाँव अथवा शहर के लोगों के बारे में बहुत-सी बातें पहले ही पढ़ चुके हो। अपने राज्य में रहनेवाले लोगों के बारे में भी तुम बहुत-सी बातें जानते हो। अब तुम देश के अन्य भागों में रहनेवाले लोगों के बारे में पढ़ोगे।

भारत एक बड़ा देश है। इसमें कई छोटे-बड़े 'राज्य' और 'संघीय क्षेत्र' हैं। इन सभी राज्यों और क्षेत्रों से मिलकर भारत बना है।

सामने के पृष्ठ पर दिए गए मानचित्र को देखो। इसमें हमारे देश के सभी राज्य और संघीय क्षेत्र दिखाए गए हैं। हमारे पड़ोसी देशों के कुछ भाग भी तुम इस मानचित्र में देखोगे। तुम इसमें भारत के सभी राज्यों और पड़ोसी देशों के नाम पढ़ सकते हो।

भारत के सभी राज्यों और संघीय क्षेत्रों की अपनी-अपनी एक राजधानी है। राजधानी उस राज्य या क्षेत्र के एक मुख्य नगर को बनाया जाता है। यहाँ राज्य सरकार के दफ़्तर होते हैं। सारे देश की राजधानी दिल्ली है। यह भारत का एक बहुत बड़ा नगर है। हमारे देश में और भी बहुत-से बड़े-बड़े और सुंदर नगर हैं।

भारत एक अनोखा देश है। यहाँ बहुत-सी बड़ी-बड़ी नदियाँ और झीलें हैं। ऊँचे-ऊँचे पर्वत और पहाड़ियाँ हैं। सुंदर-सुंदर घाटियाँ और वन हैं। एक लंबा समुद्र-तट है। यहाँ की भूमि के अंदर से कई तरह के खनिज मिलते हैं। यहाँ के खेतों में बहुत-सी फसलें पैदा होती हैं और कारखानों में अनेक प्रकार की वस्तुएँ तैयार होती हैं। तुम इन सब चीज़ों के बारे में बहुत-सी रोचक बातें पढ़ोगे।

देश के भिन्न-भिन्न राज्यों में रहनेवालों के जीवन में कई भिन्नताएँ हैं, लेकिन वे सब एक देश के रहनेवाले हैं। सभी भारतवासी हैं। इस पुस्तक में तुम भारत के भिन्न-भिन्न भागों के लोगों के रहन-सहन, भोजन, पहनावे, काम-धंधे, त्योहार आदि बहुत-सी बातों के विषय में भी पढ़ोगे।
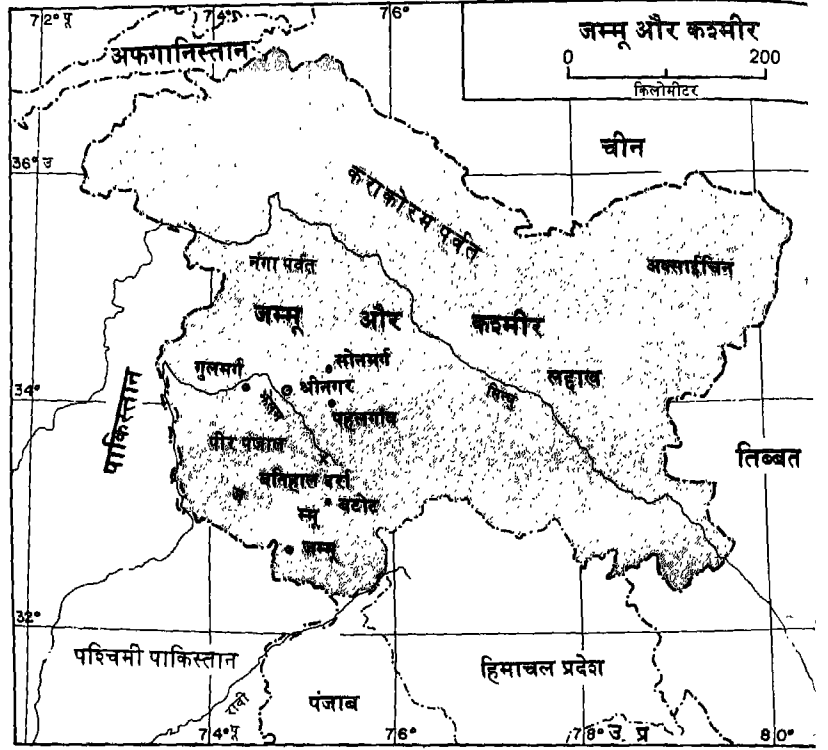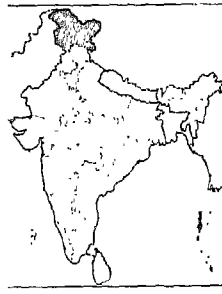
1. जम्मू-कश्मीर

ऊपर मानचित्र में देखो। जम्मू-कश्मीर राज्य हमारे देश में उत्तर-पश्चिमी भाग में है। इस राज्य के तीन ओर दूसरे देश हैं। ये पड़ोसी देश हैं—पाकिस्तान, अफ़गानिस्तान और चीन। इसकी दक्षिणी सीमा पर हमारे हिमाचल प्रदेश और पंजाब राज्य हैं।

यह सारा राज्य हिमालय पर्वतमाला में स्थित है। पर्वतों के बीच में कश्मीर की सुंदर घाटी है। देश-विदेश से हज़ारों लोग प्रति वर्ष इसकी सैर करने आते हैं। चलो, हम भी इसकी सैर करने चलें।

जून का महीना है, लेकिन याद रखो, यह पहाड़ी भाग है। अपने साथ गर्म कपड़े ले चलना न भूलना।

लो, हमारी यात्रा आरंभ हो गई। पठानकोट तक हम रेल द्वारा जाएँगे। पठानकोट पंजाब राज्य का एक नगर है। आगे बस से जाएँगे। पठानकोट से जम्मू तक मार्ग में छोटी-छोटी पहाड़ियाँ दिखाई देती हैं। जम्मू एक पुराना पहाड़ी नगर है। यह जम्मू-

कश्मीर राज्य की सर्दी की राजधानी है। सर्दी के दिनों में बहुत-से सरकारी दफ़्तर यहाँ आ जाते हैं। जम्मू में वैष्णोदेवी का प्रसिद्ध मंदिर है। प्रति वर्ष हज़ारों लोग देश के भिन्न-भिन्न भागों से इसके दर्शन करने आते हैं।

जम्मू क्षेत्र में रहनेवाले लोग अधिकतर डोगरी भाषा बोलते हैं। बहुत-से लोग सेना में नौकरी करते हैं। गाँव में रहनेवाले लोग अधिकतर खेती करते हैं। अक्सर लोग पायजामा, कुर्ता और कोट पहनते हैं। सिर पर पगड़ी बाँधते हैं। इनका मुख्य भोजन गेहूँ की रोटी, दाल और सब्ज़ी है। ये लोग चावल, दूध और दही का भी प्रयोग करते हैं। पहाड़ों की ढलानों पर गूजर लोग भेड़-बकरियाँ पालते हैं। गूजर लोग सदा एक स्थान पर नहीं रहते। वे अपने पशुओं के लिए चारे की खोज में घूमते फिरते हैं।

जम्मू से श्रीनगर भी हम बस से जाएँगे। इस यात्रा में हमारा पूरा डेढ़ दिन लग जाएगा। अब हम ऊँचे पहाड़ों की चढ़ाई शुरू करेंगे और चक्कर खाती सँकरी पहाड़ी सड़क की यात्रा का आनंद लेंगे। सड़क के किनारे कहीं ऊँचे-ऊँचे पेड़ हैं तो कहीं पहाड़ और झरने। इसीलिए यहाँ यात्रा में आनंद आता है। अब 'बटोट' निकल गया है। हमारी बस और ऊँची चढ़ाई पर चढ़ रही है। सड़क अधिक सँकरी और घुमावदार हो गई है। सड़क के एक ओर ऊँचे पहाड़ हैं और दूसरी ओर गहरे खड्ड। यदि हमारा बस-चालक ज़रा भी असावधानी करे तो बस सैकड़ों मीटर गहरे खड्ड में गिर जाएगी। परंतु हमारा बस-चालक होशियार है।

चक्कर खाती सँकरी पहाड़ी सड़क

हमारी बस की चाल अचानक बहुत धीमी हो गई है। ऐसा मालूम होता है कि बनिहाल दर्रा आने वाला है। यह दर्रा समुद्रतल से लगभग तीन हज़ार मीटर ऊँचा है। परंतु अब हमारी बस को इतनी ऊँचाई पर नहीं जाना होगा। अब बनिहाल दर्रे के नीचे सुरंग बना दी गई है। इस सुरंग का नाम 'जवाहर सुरंग' है। हम इस सुरंग से ही बनिहाल दर्रे को पार करेंगे। इस सुरंग के बन जाने से हम वर्ष-भर कश्मीर की घाटी में आ-जा सकते हैं।
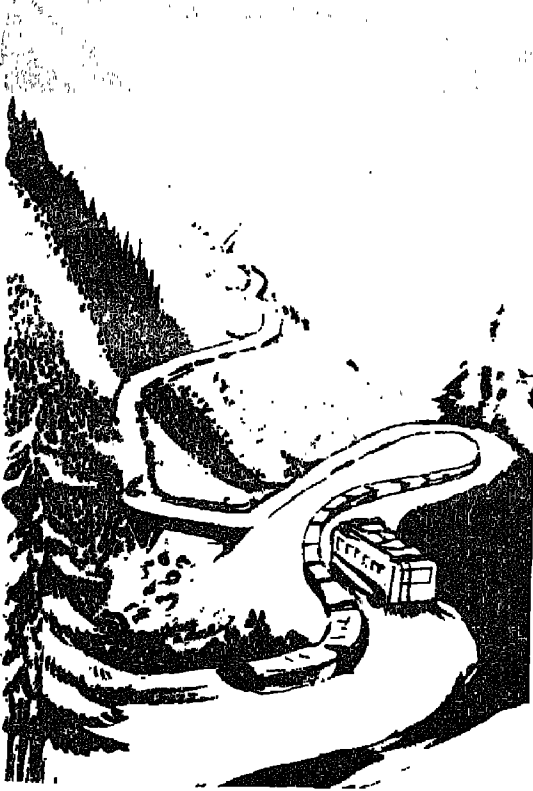
सुरंग बनने से पहले सर्दी के दिनों में हम कश्मीर नहीं जा सकते थे, क्योंकि दर्रा बर्फ़ के कारण बंद हो जाता था।

लो, अब हमने सुरंग पार कर ली। देखो, सामने कश्मीर की घाटी नज़र आ रही है। चारों ओर समतल मैदान ही मैदान हैं। ये मैदान घास तथा धान के खेतों के कारण ऐसे मालूम होते हैं जैसे हरी मख़मल बिछी हो। जहाँ हरियाली नहीं है वहाँ पानी ऐसे फैला हुआ है, जैसे चाँदी की चादर। इस मैदान के चारों ओर पहाड़ हैं। इन पहाड़ों की ऊँची चोटियाँ बर्फ़ से ढकी हुई हैं और इनकी निचली ढलानों पर बाग़ हैं। इन बाग़ों में सेब, नाशपाती, बग्गूगोशे, बादाम, अखरोट आदि अधिकता से पाए जाते हैं।

अब हमारी बस तेज़ी से आगे बढ़ रही है। रास्ते में पांपुर के पास खेतों में केसर की क्यारियाँ दिखाई देंगी। कश्मीर की केसर बहुत प्रसिद्ध है। कश्मीर के रहनेवालों को इसके फूलों से बहुत प्रेम है। जब वे खुश होते हैं तो अपनी भाषा में गाते हैं :

कुंगपोश पांपोर गछवई वेसिए।
गछवई वेसिए कुंगपोश पांपोर।।
कुंगपोश विल्मपोन तबलावान।
गछवई वेसिए कुंगपोश पांपोर।।

झेलम नदी का एक पुल

इसका अर्थ है : आओ, केसर की क्यारियोंवाली भूमि पांपुर चलें। केसर की कली ने मेरे दिल में हलचल मचा दी है। चलो केसर की क्यारियोंवाली भूमि पांपुर को चलें।

अब सड़क के दोनों ओर ऊँचे-ऊँचे चिनार के पेड़ दिखाई देने लगे हैं। इसका मतलब है श्रीनगर पास आ गया है। श्रीनगर घाटी के मध्य में है। यहाँ से घाटी प्याले जैसी दिखाई देती है। जानते हो क्यों ? घाटी का मैदान चारों ओर पहाड़ों से घिरा है।

श्रीनगर कश्मीर की राजधानी है। यह नगर झेलम नदी के दोनों ओर बसा हुआ है। शहर के भिन्न-भिन्न स्थानों को मिलाने के लिए झेलम पर नौ पुल बने हुए हैं। झेलम कश्मीर के लिए बहुत लाभदायक है। इससे एक जगह से दूसरी जगह नाव द्वारा जाने का आराम है। इससे सिंचाई के लिए नहरें भी निकाली गई हैं।

श्रीनगर में यात्रियों के ठहरने के लिए कई होटल और धर्मशालाएँ हैं। कुछ यात्री हाउस बोट में ठहरते हैं। आओ, हम भी रहने के लिए एक हाउस बोट किराए पर ले लें। हाउस बोट चार-पाँच कमरों का नाव पर बना मकान होता है। इसके अंदर हमारे आराम के लिए भोजन तथा दूसरी सुविधाएँ मिलती हैं। 'डल' झील में ऐसे अनेक हाउस बोट देखे जा सकते हैं। इनमें रहने में बड़ा आनंद आता है। ये एक जगह से दूसरी जगह आसानी से ले जाए जा सकते हैं।

डल झील में हाउस बोट और शिकारा
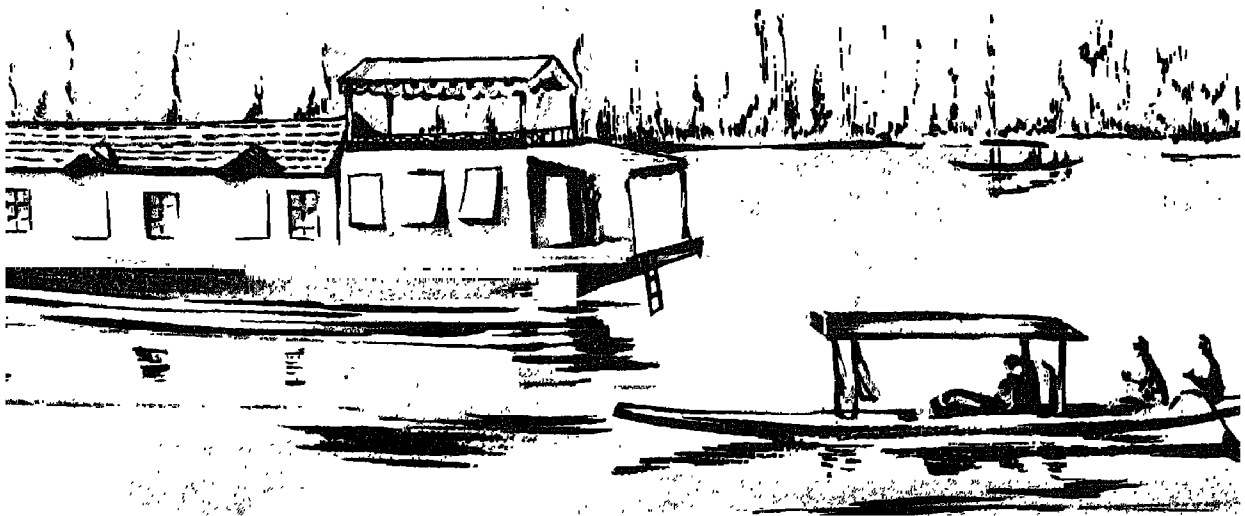
कश्मीर में अनेक झीलें और नदियाँ हैं। बहुत-से यात्री वूलर झील पर मछली और बतख का शिकार खेलते हैं। श्रीनगर में 'डल' और 'नगीन' झीलें लोगों के मनोरंजन के केन्द्र हैं। लोग हल्की नावों में सैर करते हैं। इन नावों को 'शिकारा' कहते हैं। डल झील पर तैरते हुए बगीचे बहुत ही सुंदर लगते हैं। इनमें बड़े-बड़े तरबूज़, ककड़ी, टमाटर, फूल आदि उगाए जाते हैं।

कश्मीर के लोग गोरे रंग के और सुंदर होते हैं। यहाँ स्त्री-पुरुष कुछ मिलते-जुलते से ही कपड़े पहनते हैं। वे सलवारनुमा पायजामा और ऊपर ढीली आस्तीनवाला एक लंबा चोगा पहनते हैं। इस चोगे को 'फिरन' कहते हैं। स्त्रियों के फिरन पर कढ़ाई का काम होता है। टोपी तो यहाँ लगभग सभी पहनते हैं। लड़कियाँ भी विवाह से पहले टोपी पहनती हैं। इस टोपी से इनका दुपट्टा लटकता रहता है।

सर्दी के दिनों में आमतौर से लोग ऊनी 'फिरन' पहनते हैं। अधिक सर्दी पड़ने पर

ये लोग 'काँगड़ी' का प्रयोग करते हैं। काँगड़ी मिट्टी का एक छोटा-सा कटोरा होता है। इसके चारों ओर बेंत की टोकरी-सी बनी होती है। काँगड़ी में कोयले जलाकर कश्मीरी लोग आग सेंकते हैं।
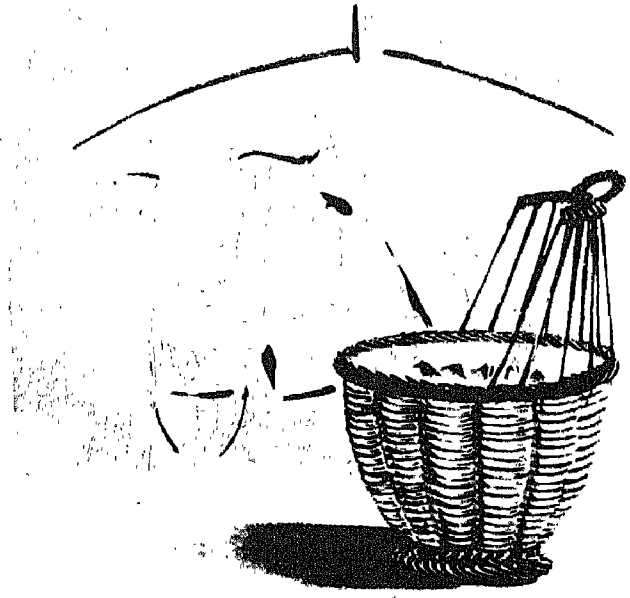
काँगड़ी

कश्मीर की घाटी की भूमि उपजाऊ है। लोग चावल और मक्का की खेती करते हैं। यहाँ झीलों में मछलियाँ बहुत मिलती हैं। एक प्रकार का साग पूरे वर्ष मिलता है। इस साग को ये लोग 'कड़म' का साग कहते हैं। इसीलिए यहाँ के लोगों का मुख्य भोजन चावल, मछली और कड़म का साग है। सर्दी के दिनों में घाटी में बर्फ़ पड़ती है और कुछ भी पैदा नहीं होता। लोग सब्जियाँ सुखाकर रख लेते हैं और उन्हें सर्दी के मौसम में काम में लाते हैं। यहाँ एक विशेष प्रकार की हरी चाय होती है। इसी चाय को यहाँ के लोग पीते हैं। चाय को गर्म रखने के लिए एक बर्तन होता है, जिसे 'समोवार' कहते हैं।

समोवार

ज़रा कश्मीर की घाटी में बने मकानों को तो देखो ! सभी मकानों की छतें ढलवाँ हैं। सर्दी के दिनों में जब कश्मीर में बर्फ़ पड़ती है तो लोग घर से बाहर नहीं निकल पाते। उस समय ये अपने घरों में बैठकर कई प्रकार की दस्तकारी का काम करते हैं। यहाँ के जंगलों में पाई जानेवाली लकड़ी की ये लोग बहुत-सी वस्तुएँ बनाते हैं। उन पर सुंदर तथा बारीक खुदाई का काम करते हैं। अखरोट की लकड़ी पर तो यह खुदाई बहुत ही अच्छी लगती है। कागज़ की लुगदी से बहुत-सी चीज़ें तैयार कर उन पर रंग-बिरंगी चित्रकारी करते हैं। चाँदी के बर्तन और ज़ेवर भी बहुत सुंदर बनाते हैं। इन पर भी बहुत सुंदर खुदाई का काम होता है। तुमने कश्मीर के कंबल, कालीन और शाल देखे होंगे। बारीक सुंदर कढ़ाईवाले पश्मीने के कश्मीरी शाल बहुत लोकप्रिय हैं।

कश्मीर में भी देश के अन्य भागों की भाँति सभी धर्मों के लोग मिल-जुलकर रहते हैं। सभी लोग कश्मीरी भाषा बोलते हैं। कुछ लोग डोगरी और उर्दू भाषा भी बोलते हैं। हिन्दू और मुसलमान दोनों के ही कश्मीर में कई तीर्थस्थान हैं। हर साल हज़ारों लोग पहाड़ों पर बने अमरनाथ मंदिर के दर्शन करने जाते हैं। इसी प्रकार बहुत-से लोग यहाँ की प्रसिद्ध हज़रत बल मस्जिद में नमाज़ पढ़ने जाते हैं। कुछ त्योहार हिन्दू-मुसलमान दोनों मनाते हैं। इनमें बसंत बहुत प्रसिद्ध है। कश्मीरी लोगों को नाच-गाने का भी शौक है। इनका 'रोफ़' नृत्य बहुत प्रसिद्ध है।

कश्मीर में मई से अगस्त तक मौसम बहुत अच्छा रहता है। इन दिनों में लोग श्रीनगर से गुलमर्ग और पहलगाँव जैसे ऊँचे स्थानों पर चले जाते हैं। यहाँ ये लोग डेरे लगाकर रहते हैं।

आओ, अब जम्मू-कश्मीर राज्य के उत्तर-पूर्वी भाग लद्दाख चलें। लद्दाख में लोगों का जीवन घाटी के जीवन से बिलकुल भिन्न है। लद्दाख एक बहुत ऊँचा पठार है। हम टट्टू द्वारा लद्दाख जाएँगे। हमें श्रीनगर से लद्दाख जाने में लगभग तीन-चार दिन लगेंगे। आजकल लद्दाख जाना आसान हो गया है क्योंकि इस क्षेत्र में सड़कें बन गई हैं। यहाँ ठंड बहुत पड़ती है इसलिए बहुत कम लोग रहते हैं। बहुत-से लद्दाखी लोग बौद्ध धर्म मानते हैं। ये लोग ऊनी कपड़े पहनते हैं। इनका जीवन सादा होता है। इनकी बड़ी टोपियाँ और मोटे मज़बूत जूते इन्हें यहाँ की ठंड से बचाते हैं। लद्दाख के लोग नाच-गाने के बहुत शौकीन होते हैं। यहाँ के बौद्ध भिक्षु 'लामा' कहलाते हैं। ये नकली चेहरे लगाकर नाच करते हैं। अगले पृष्ठ पर दिए गए चित्र में लामा की वेशभूषा देखो।

हमारे इस सुंदर राज्य के कुछ भाग पर चीन और पाकिस्तान ने ज़बरदस्ती अधिकार कर लिया है। पाकिस्तान ने 1965 में हमारे इस राज्य पर फिर हमला किया। हमारी फौज़ों ने दुश्मन को पीछे भगा दिया। यहाँ के सब लोगों ने देश की फौज़ों का साथ दिया

मुखौटा लगाए लामाओं का नृत्य

और हमलावरों को देश से निकालने में मदद दी। अपने देश की सीमाओं की रक्षा करना हम सभी का कर्तव्य है।

अब बताओ

1. कश्मीर को प्रकृति ने किस प्रकार सुंदर बनाया है ?
2. झेलम नदी से कश्मीर की घाटी को क्या लाभ है ?
3. लद्दाख, कश्मीर की घाटी और जम्मू क्षेत्र में रहनेवाले लोगों के जीवन में क्या अंतर है ?
4. कुछ ऐसे उदाहरण दो जिनसे पता चलता है कि कश्मीर में सभी धर्मों के लोग मिल-जुलकर रहते हैं।

5. कश्मीर की घाटी में रहनेवाले लोगों के गर्मी और सर्दी के जीवन में क्या अंतर होता है ?

कुछ करने को

1. मानचित्र में देखकर कश्मीर राज्य की सीमाओं से लगे हुए देशों और राज्यों के नाम लिखो।
2. कश्मीर के कुछ चित्र इकट्ठे करो और इन्हें चिपकाकर एक अलबम बनाओ।
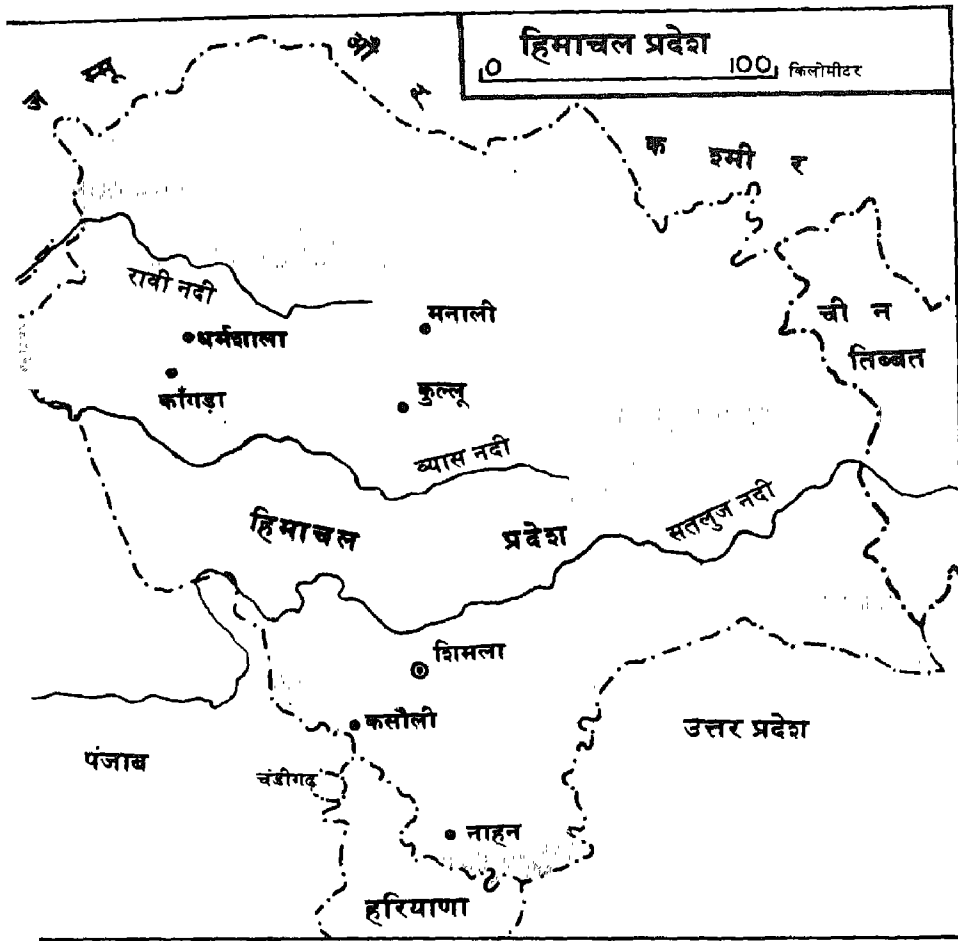
2. हिमाचल प्रदेश

राणा की आयु आठ वर्ष है। वह हिमाचल प्रदेश के एक गाँव में रहता है। हिमाचल प्रदेश एक संघीय क्षेत्र है।

मानचित्र में देखो। हिमाचल प्रदेश का सारा क्षेत्र हिमालय पर्वत में स्थित है। यहाँ कई नदियाँ हैं। मानचित्र में इनके नाम पढ़ो। हिमाचल के पड़ोसी राज्यों के नाम भी मालूम करो।

हिमाचल प्रदेश में सुंदर घाटियाँ और ऊँचे पर्वत हैं। निर्मल पानी के झरने और नदियाँ हैं। राणा का गाँव एक सुंदर घाटी में बसा है। उसके गाँव तक पहुँचने के लिए

ऊँची पहाड़ियों और कई नदियों को पार करके जाना पड़ेगा।

सर्दियों में यहाँ बहुत ठंड पड़ती है। कई घाटियाँ तो बर्फ़ से ढक जाती हैं। ऐसे मौसम में राणा के गाँव तक पहुँचना बहुत कठिन होता है। हिमाचल प्रदेश में सड़कें बहुत ही कम हैं। बहुत-से लोग एक स्थान से दूसरे स्थान को जाने के लिए घोड़ा, खच्चर आदि काम में लाते हैं।

यह राणा का गाँव है। तुम देखते हो कि गाँव के सभी मकानों की छतें ढालदार हैं। सर्दी में जब बर्फ़ पड़ती है, तो वह ढालदार छतों के ऊपर से आसानी से बह जाती है।

हिमाचल प्रदेश में बहुत-से बाग़ और चरागाह हैं। राणा के पिताजी फलों के एक बड़े बाग़ में काम करते हैं। इस बाग़ में सेब, नाशपाती, आलूबुख़ारा, आड़ू, ख़ूबानी आदि के पेड़ हैं। ये फल देश के दूसरे भागों को भी भेजे जाते हैं।

इस राज्य में वन बहुत अधिक हैं। चीड़ और वंजु के पेड़ तो स्थान-स्थान पर मिलते हैं। राणा के गाँव के बहुत-से लोग वन में काम करते हैं। वे लकड़ी काटते हैं। वे मेज़, कुर्सी, छड़ियाँ आदि लकड़ी की कई प्रकार की वस्तुएँ बनाकर बेचते हैं। अन्य पहाड़ी लोगों की तरह, उन्हें अपनी रोटी कमाने के लिए कठोर मेहनत करनी पड़ती है।

गाँव के पास ही राणा के चाचाजी के खेत हैं। उनके खेतों में मक्का, जौ, गेहूँ और

'नटी' लोक-नृत्य का दृश्य

आलू पैदा होते हैं। खेतों की सिंचाई के लिए वह पास की नदी से पानी लेते हैं। राणा का पड़ोसी एक गड़रिया है। उसके पास बहुत-सी भेड़ें हैं। भेड़ों से उसको ऊन मिलती है। घर की स्त्रियाँ ऊन कातकर कपड़ा बनाती हैं।

अधिक सर्दी के दिनों में राणा के घर के सब लोग इकट्ठे बैठकर आग सेंकते हैं। वे सूखे चनों और आलू की सब्ज़ी से मक्का की रोटी खाते हैं। वे पहाड़ी और हिन्दी भाषा बोलते हैं।

हिमाचल प्रदेश में पुरुष ढीला-ढाला ऊनी कोट, चूड़ीदार पायजामा और टोपी पहनते हैं। कमर के चारों ओर वे एक कपड़ा बाँधते हैं जिसे 'दड़ा' कहते हैं। त्योहार आदि के अवसर पर ये लोग बढ़िया कपड़े और रंग-बिरंगी पगड़ियाँ पहनते हैं।

जब राणा की बहिन का विवाह हुआ था तो वह बहुत बढ़िया घाघरा, चोली, कमीज़ और दुपट्टा पहने थी। भारी-भारी गहने पहनकर वह कितनी सुंदर लगती थी! गुलूबंद, कंगन, चूड़ियाँ और नथ आदि उसके सभी गहने चाँदी के बने हुए थे।

अब राणा की बहिन शिमला में रहती है। वहाँ उसका पति एक दफ़्तर में काम करता है। शिमला हिमाचल प्रदेश की राजधानी है। गर्मी के दिनों में देश के अन्य भागों के बहुत-से लोग शिमला जाते हैं। कुछ लोग हिमाचल की सुंदर घाटियों में स्थित ठंडे स्थानों में भी जाकर रहते हैं।

राणा के गाँव के बाहर एक मंदिर है। गर्मी और बसंत के मौसम में इस मंदिर के पास कई मेले लगते हैं। शिवरात्रि के प्रसिद्ध मेले पर राणा अपने मित्रों के साथ मिलकर गाता और नाचता है। 'नटी' यहाँ का प्रसिद्ध लोक-नृत्य है। 'नटी' नाच में बहुत-से लोग एक दूसरे के हाथ पकड़कर गोल दायरे में खड़े होते हैं और नाचते हैं। स्त्रियाँ और लड़कियाँ 'गिद्धा नृत्य' में भाग लेती हैं।

राणा के गाँव में एक नया स्कूल खुला है। राणा इसी स्कूल में पढ़ता है। वह हिन्दी पढ़ता है। क्या तुम जानते हो कि उसके स्कूल में सर्दियों में लंबी छुट्टियाँ होती हैं ? बता सकते हो क्यों ?

अब बताओ

1. हिमाचल प्रदेश में सर्दी के दिनों में एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाना क्यों कठिन होता है ?
2. हिमाचल प्रदेश में सड़कें क्यों कम हैं ?
3. हिमाचल प्रदेश के लोगों के मुख्य धंधे क्या हैं ?
4. हिमाचल प्रदेश के लोग शिवरात्रि का त्योहार किस प्रकार मनाते हैं ?
5. सही उत्तर के सामने (✓) निशान लगाओ।
   हिमाचल प्रदेश में मकानों की छतें ढालदार बनाई जाती हैं, क्योंकि :
   (   ) ढालदार छतें बनाना आसान होता है।
   (   ) ढालदार छतें दूसरी छतों से अधिक मज़बूत होती हैं।
   (   ) ढालदार छतों के ऊपर से बर्फ़ आसानी से नीचे बह जाती है।

कुछ करने को

1. भारत के बड़े मानचित्र में देखकर, हिमाचल प्रदेश के नगरों, नदियों और घाटियों की सूची बनाओ।
2. हिमाचल प्रदेश के लोगों के वस्त्र, भोजन, लोक-नृत्य और प्राकृतिक दृश्यों के चित्र एकत्र करो और उन्हें अपनी अलबम में लगाओ।
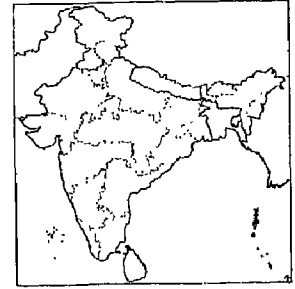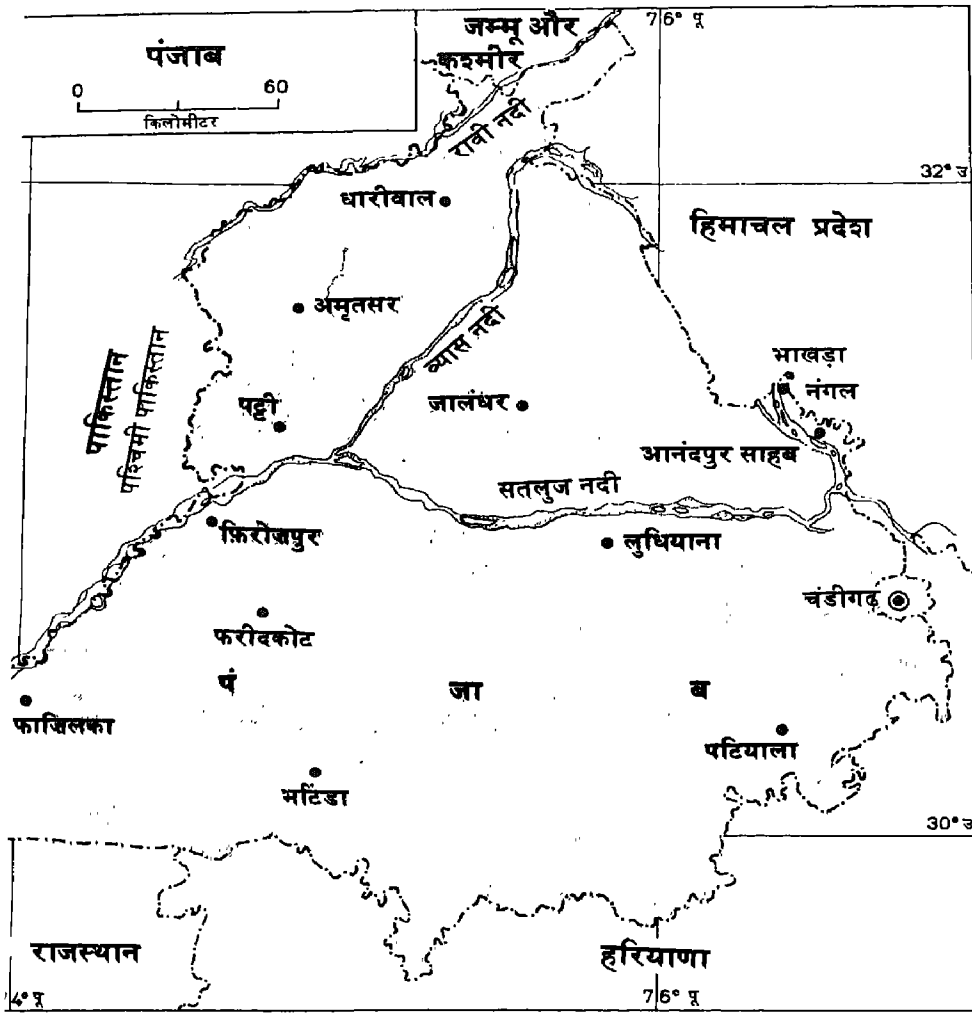
3. पंजाब

ऊपर के मानचित्र में देखो। पंजाब भारत का एक महत्त्वपूर्ण सीमावर्ती राज्य है। पश्चिम में इस राज्य की सीमाएँ दूर तक पश्चिमी पाकिस्तान से मिलती हैं। उत्तर, पूर्व और दक्षिण में पंजाब के पड़ोसी राज्य जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा और राजस्थान हैं।

क्या तुम जानते हो कि इस राज्य का नाम पंजाब कैसे पड़ा? 'पंज' का अर्थ है पाँच और 'आब' का अर्थ है पानी या नदी—अर्थात् पाँच नदियों का प्रदेश। ये पाँच

नदियाँ हैं---सतलुज, व्यास, रावी, चिनाब और झेलम। ये सभी नदियाँ हिमालय पर्वत से निकलती हैं। क्या तुम इनको मानचित्र में ढूँढ़ सकते हो? भारत के स्वतंत्र होने से पहले पंजाब राज्य बहुत बड़ा था और ये सभी नदियाँ इसमें बहती थीं।

15 अगस्त, सन् 1947 ई. को भारत स्वतंत्र हुआ और देश का बँटवारा हुआ। उस समय पंजाब का एक बड़ा भाग पाकिस्तान में चला गया। सन् 1966 ई. में पंजाब को दो भागों में बाँटकर हरियाणा और पंजाब दो राज्य बनाए गए। इसी समय पंजाब का कुछ भाग हिमाचल प्रदेश में मिला दिया गया। आज के पंजाब राज्य में केवल तीन नदियाँ हैं---सतलुज, व्यास और रावी।

हिमाचल प्रदेश की घाटियों और ऊँची पहाड़ियों को पार करती हुई सतलुज और व्यास नदियाँ पंजाब के मैदानी भाग में प्रवेश करती हैं। ये पंजाब की भूमि को उपजाऊ बनाती हैं। इनके पानी से खेतों की सिंचाई होती है। पंजाब में अधिकतर लोग खेती करते हैं। वे अपने खेतों में गेहूँ, जौ, चना, ज्वार, बाजरा, मक्का, गन्ना और कपास पैदा करते हैं। पंजाब का गेहूँ तो सारे देश में प्रसिद्ध है। पंजाब में अधिकतर वर्षा जुलाई और अगस्त के महीनों में होती है। थोड़ी-सी वर्षा सर्दी के मौसम में भी होती है। यहाँ पर गर्मियों में बहुत गर्मी और सर्दियों में बहुत सर्दी पड़ती है।

पंजाब की भूमि उपजाऊ है। तुम कभी पंजाब के किसी गाँव में जाओ तो हरे-भरे लहलहाते खेत देखने को मिलेंगे। किसानों को खेतों में काम करते हुए पाओगे। आजकल पंजाब के किसान खेती के नए तरीक़े अपना रहे हैं। कुछ किसान खेती के लिए ट्रैक्टरों का प्रयोग करने लगे हैं और नलकूपों से सिंचाई करते हैं। ये नलकूप बिजली से चलते हैं। क्या तुम जानते हो कि यह बिजली कहाँ से आती है?

तुमने प्रसिद्ध भाखड़ा बाँध का नाम तो सुना होगा। यह बाँध सतलुज नदी पर बनाया गया है। यहाँ पर एक बहुत बड़ा बिजलीघर है, जहाँ बिजली पैदा की जाती है। यह बिजली पंजाब, हरियाणा, दिल्ली और राजस्थान राज्यों में दूर-दूर के गाँवों और शहरों तक पहुँचाई गई है। इन राज्यों में खेतों को पानी पहुँचाने के लिए भाखड़ा बाँध से नहरें भी निकाली गई हैं। खेती के अच्छे साधनों के कारण अब पंजाब के किसान पहले से अधिक
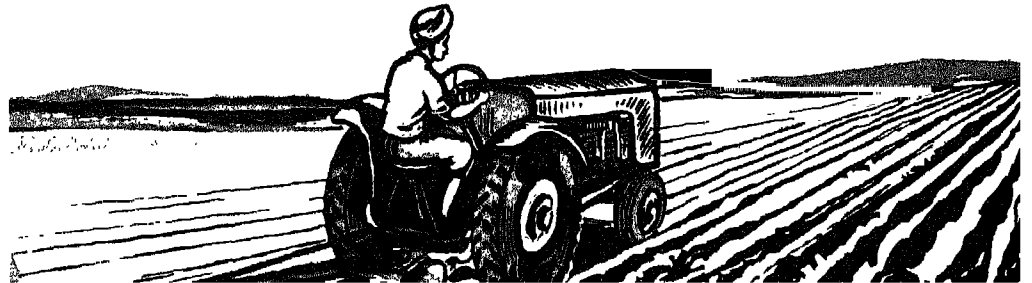
लोक-नृत्य 'भंगड़ा'

फसलें उगाते हैं।

पंजाब के पुरुष अक्सर पगड़ी, कुर्ता और तहमद या पायजामा पहनते हैं। स्त्रियाँ सलवार, कमीज़ और चुन्नी पहनती हैं। ये लोग दूध और लस्सी के शौकीन होते हैं। इनकी गाएँ और भैंसें काफ़ी दूध देती हैं। ये अधिकतर दाल या सब्ज़ी के साथ गेहूँ की रोटी खाते हैं। ये मक्का की रोटी और सरसों का साग खाना भी बहुत पसंद करते हैं। कुछ लोग मांस भी खाते हैं।

त्योहारों पर पंजाब के लोग बहुत खुशी मनाते हैं। लोहड़ी, बसंत पंचमी, बैसाखी, राखी, दशहरा, दीवाली और गुरुपर्व उनके मुख्य त्योहार हैं। 'भंगड़ा' इनका प्रसिद्ध लोक-नृत्य है। ये पंजाबी लोक-गीतों के साथ 'भंगड़ा' करते हैं। स्त्रियाँ 'गिद्धा' नाच में भाग लेती हैं। ये लोग पंजाबी और हिन्दी भाषा बोलते हैं।

पंजाब राज्य के लोगों का जीवन आजकल तेज़ी से बदल रहा है। बहुत-से छोटे-बड़े उद्योग राज्य में स्थापित किए गए हैं। लुधियाना तो एक बड़ा औद्योगिक नगर बन गया है। यहाँ साइकिलें, सिलाई की मशीनें, मोज़े और बनियान आदि बनते हैं। धारीवाल ऊनी कपड़े के लिए सारे देश में प्रसिद्ध है। पंजाब के इन बढ़ते हुए उद्योगों में हज़ारों लोग काम करते हैं।

चंडीगढ़ पंजाब और हरियाणा दोनों की राजधानी है। यह नगर कुछ वर्ष हुए नए ढंग से बसाया गया है। सारा नगर तीस सैक्टरों में बाँटा गया है। प्रत्येक सैक्टर में एक बाज़ार, एक डाकघर, एक स्कूल और एक पुलिस चौकी का प्रबंध है।

इस नगर में मकान बहुत खुले और हवादार हैं। नगर में जहाँ-तहाँ बहुत-से पार्क
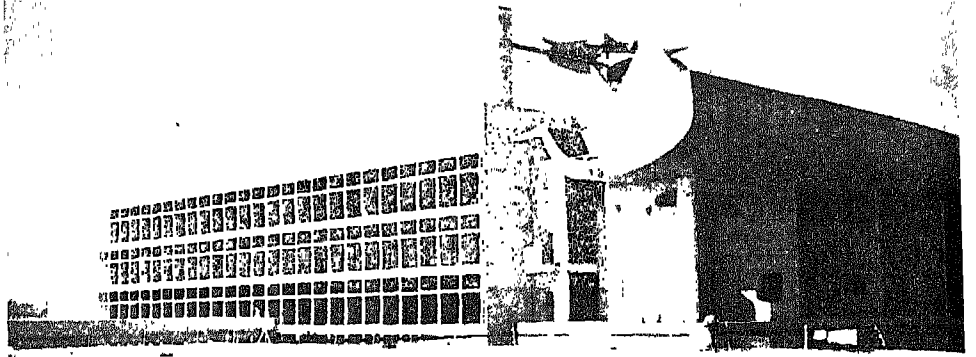
चंडीगढ़ में हाई कोर्ट का भवन

और खेल के मैदान बनाए गए हैं। सड़कों के दोनों ओर छायादार पेड़ हैं। हिमालय पर्वत की बर्फ़ से ढकी चोटियाँ यहाँ से साफ़ दिखाई देती हैं।

चंडीगढ़ में कई अच्छे-अच्छे भवन हैं। इनमें 'सचिवालय' और 'हाई कोर्ट' के भवन देखने योग्य हैं।

अमृतसर और आनंदपुर साहब सिक्खों के तीर्थस्थान हैं। अमृतसर का स्वर्ण-मंदिर संसार-प्रसिद्ध है।

पंजाब के लोग बहुत ताकतवर और मेहनती होते हैं। ये खेती, व्यापार, नौकरी आदि

अमृतसर का स्वर्ण-मंदिर
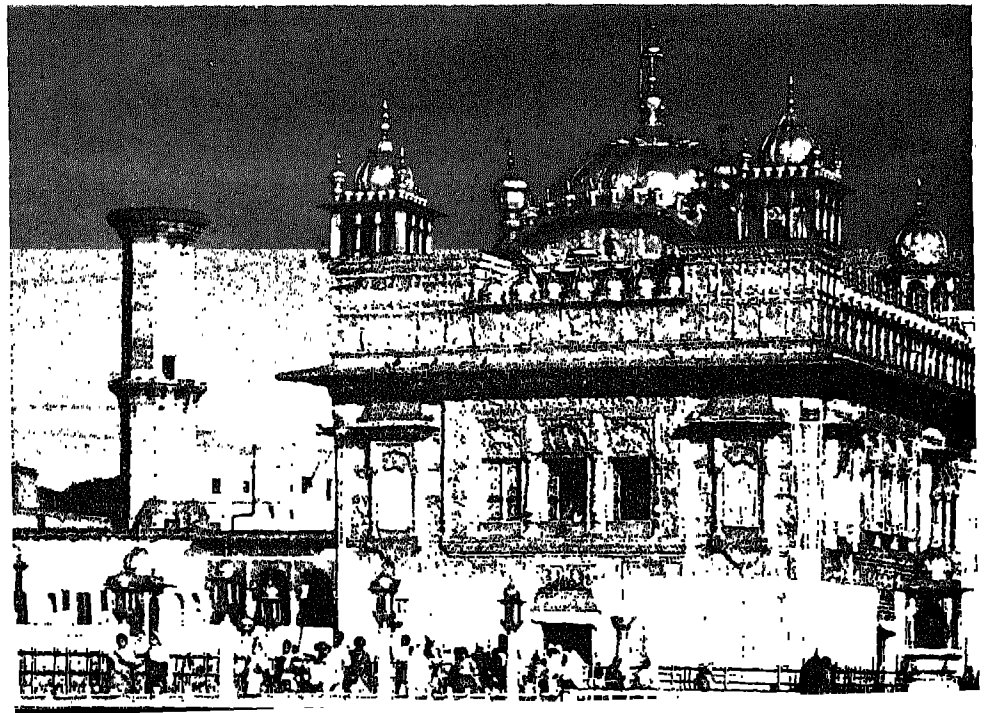
सभी तरह का काम कर लेते हैं। आजकल बहुत-से लोग कारखानों में भी काम करते हैं। ये सेना में भरती होना पसंद करते हैं और बहुत अच्छे सैनिक सिद्ध होते हैं।

अब बताओ

1. क्या तुम जानते हो कि पंजाब राज्य का नाम 'पंजाब' कैसे पड़ा ? पंजाब राज्य की कहानी तीन या चार वाक्यों में सुनाओ।
2. क्या कारण है कि पंजाब के लोग अच्छी फसलें उगाते हैं ?
3. कोई ऐसी तीन चीजें बताओ जिनके लिए पंजाब प्रसिद्ध है।
4. पंजाब के लोगों के मुख्य धंधे क्या-क्या हैं ?
5. नीचे एक ओर कुछ स्थानों के नाम दिए गए हैं। दूसरी ओर यह बताया गया है कि वे क्यों प्रसिद्ध हैं। प्रत्येक स्थान के प्रसिद्ध होने का सही कारण छाँटकर उसका नंबर कोष्ठक में लिखो :

( ) चंडीगढ़ 1. यहाँ भारत का सबसे बड़ा बाँध है।
( ) धारीवाल 2. यह पंजाब की राजधानी है।
( ) अमृतसर 3. यहाँ मोजे, बनियान आदि अच्छे बनते हैं।
( ) भाखड़ा 4. ऊनी कपड़े के लिए देश-भर में प्रसिद्ध है।
( ) लुधियाना 5. सिक्खों का तीर्थस्थान है।

कुछ करने को

1. पंजाब के लोगों के पहनावे, त्योहार और लोक-नृत्यों से संबंधित चित्र एकत्र करो।
2. गुरु नानक और गुरु गोबिन्द सिंह की कहानी पढ़ो।
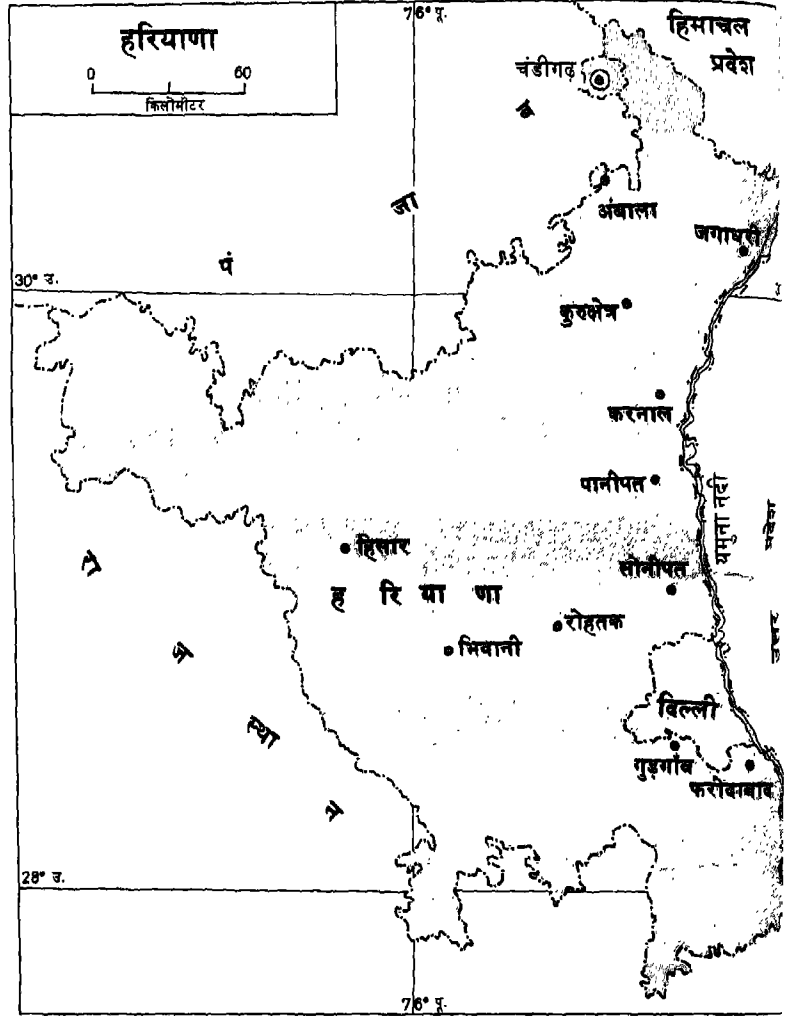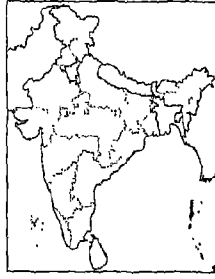
4. हरियाणा

पिछले पाठ में तुमने चंडीगढ़ के बारे में पढ़ा। यह हरियाणा और पंजाब दोनों राज्यों की राजधानी है। पंजाब के बारे में तुम बहुत-सी बातें जानते हो। हरियाणा पंजाब का पड़ोसी राज्य है। आओ, अब हरियाणा के बारे में पढ़ें।

ऊपर दिए हरियाणा के मानचित्र में इसके पड़ोसी राज्यों के नाम पढ़ो। पृष्ठ

8 पर दिए गए भारत के मानचित्र में हरियाणा की स्थिति देखो।

हरियाणा एक छोटा राज्य है। इसमें केवल सात ज़िले हैं। यहाँ के अधिकतर लोग गाँवों में रहते हैं और खेती-बाड़ी करते हैं। इस पृष्ठ पर दिए गए चित्र में हरियाणा के एक गाँव का दृश्य दिखाया गया है। इससे हमें हरियाणा के लोगों के रहन-सहन के बारे में कई बातों का पता चलता है। इस चित्र को ज़रा ध्यान से देखो।

सुबह का समय है। सूरज अभी-अभी निकला है। तुम इस चित्र में गाँव के एक पुरुष, एक स्त्री और एक लड़की को देख रहे हो। आदमी खेतों में हल चलाने जा रहा है। स्त्री कुएँ से पानी ला रही है। लड़की पशुओं को चारा दे रही है। ऐसा लगता है कि गाँव के सभी लोग अपना-अपना काम करने में लगे हैं।

अब ज़रा इनके कपड़ों की ओर देखो। क्या तुम भी ऐसे कपड़े पहनते हो? इनके पहनावे तथा कश्मीर और पंजाब के लोगों के पहनावे में क्या अंतर है? हरियाणा में लोग अधिकतर धोती-कुर्ता और पगड़ी या टोपी पहनते हैं। स्त्रियाँ और लड़कियाँ लहँगा-ओढ़नी और सलवार-कमीज़ पहनती हैं। अधिक सर्दी के मौसम में वे ऊनी या मोटे कपड़े पहनते हैं। हरियाणा की स्त्रियाँ चाँदी के गहने चाव से पहनती हैं। तुम चित्र में इस स्त्री के गले, हाथ और पैर के गहने देख सकते हो।
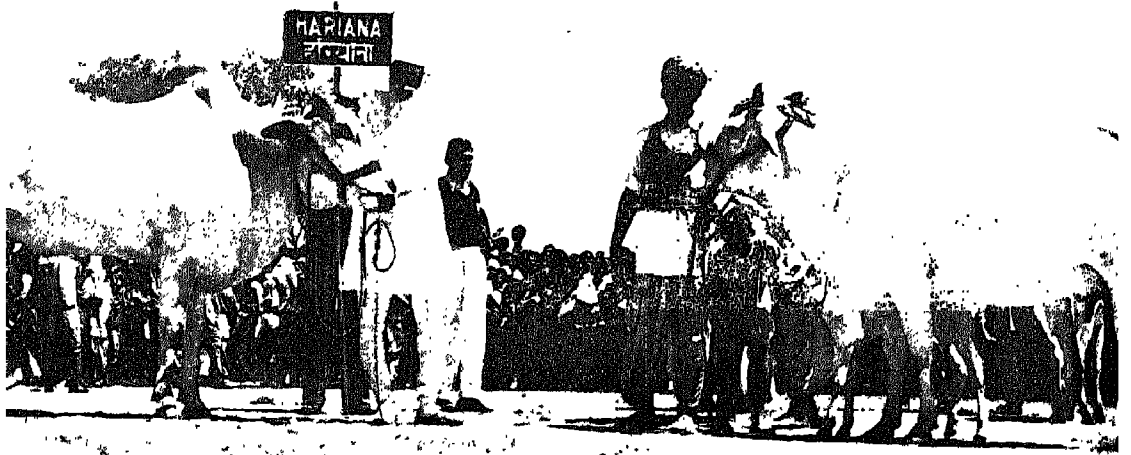
हरियाणा के एक पशु मेले का दृश्य

पंजाब की तरह हरियाणा में भी वर्षा अधिकतर जुलाई और अगस्त में होती है। यहाँ गर्मियों में बहुत गर्मी और सर्दियों में काफ़ी सर्दी पड़ती है।

हरियाणा की लगभग सारी भूमि मैदानी है। यह भूमि उपजाऊ है। यहाँ गेहूँ, ज्वार, बाजरा, जौ और चने की उपज होती है। आजकल कुछ किसान गन्ना, कपास और सब्ज़ियाँ भी उगाते हैं। बहुत-से गाँवों में अब बिजली पहुँच गई है। किसान धीरे-धीरे खेती के नए तरीक़े अपना रहे हैं। वे खेतों में ट्रैक्टर का प्रयोग करते हैं और नलकूपों से सिंचाई करते हैं। वे पहले की अपेक्षा अधिक अनाज और सब्ज़ियाँ पैदा करने लगे हैं।

इस राज्य में बहुत अच्छी नसल के पशु पाए जाते हैं। हिसार के बैल और गाएँ प्रसिद्ध हैं। यहाँ पर पशुओं का एक बड़ा फार्म है जिसमें पशुओं को अच्छी तरह पाला जाता है और देश के अन्य स्थानों को भेजा जाता है। लगभग सभी किसान अपने घरों में गाय-भैंस अवश्य रखते हैं। वे अपने पशुओं को प्रतिवर्ष पशु मेलों में भेजते हैं। सबसे अच्छे और स्वस्थ पशुओं को पुरस्कार मिलते हैं। हरियाणा की गाएँ और भैंसें बहुत दूध देती हैं। यहाँ से बहुत-सा दूध रोज़ दिल्ली भेजा जाता है। करनाल में दूध की एक बहुत बड़ी डेरी है।

हरियाणा में बहुत-से उद्योग हैं। फ़रीदाबाद एक बड़ा औद्योगिक नगर बन गया है। यहाँ छोटे-बड़े बहुत-से कारखाने हैं। जगाधरी काग़ज़ बनाने के कारखानों के लिए प्रसिद्ध है। भिवानी में सूती कपड़े की मिलें हैं और पानीपत में हाथकरघे का कपड़ा

अच्छा बनता है। सोनीपत में साइकिलें बनाने का एक बड़ा कारखाना है। यहाँ पर सिलाई की मशीनें भी बनाई जाती हैं।

कुरुक्षेत्र भी हरियाणा का एक प्रसिद्ध नगर है। यहाँ एक विश्वविद्यालय है। सूर्यग्रहण के समय यहाँ भारी मेला लगता है। लाखों यात्री यहाँ के तालाबों में स्नान करने आते हैं। कहते हैं यह वही स्थान है जहाँ बहुत प्राचीन समय में महाभारत की लड़ाई हुई थी और यहीं श्रीकृष्ण ने अर्जुन को 'गीता' का उपदेश दिया था।
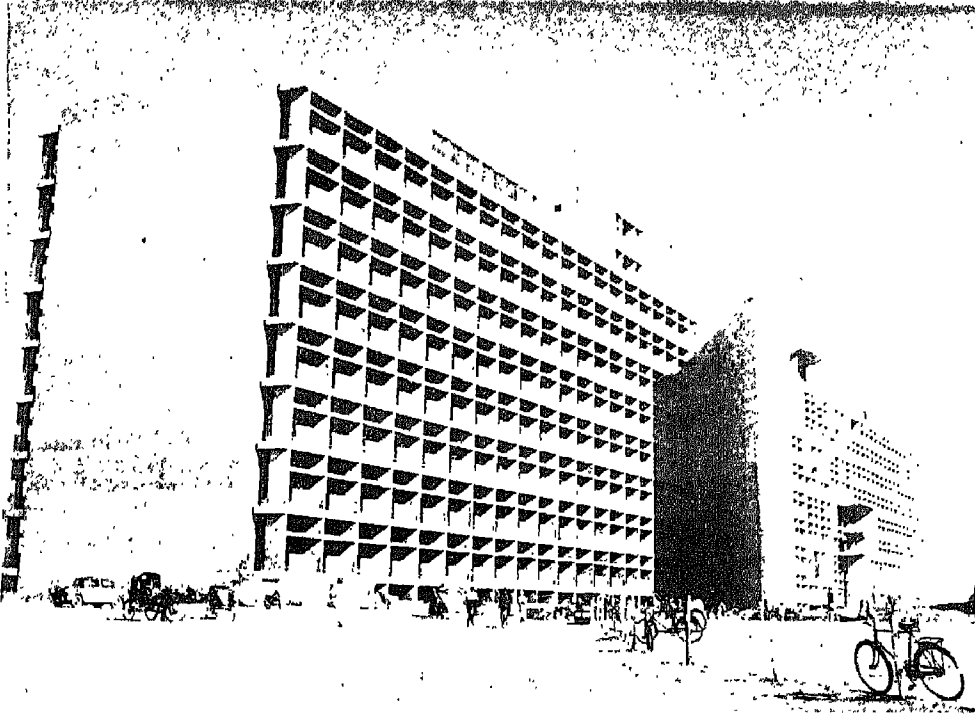
सचिवालय भवन, चंडीगढ़

हरियाणा के लोग हिन्दी बोलते हैं। वे स्वस्थ और ताकतवर होते हैं। वे अपने खेतों में बड़ी मेहनत से काम करते हैं। हरियाणा के युवक अक्सर सेना में भरती होना पसंद करते हैं। वे देश के बहादुर सैनिक बनते हैं।

स्त्रियाँ और लड़कियाँ गाने-नाचने में रुचि लेती हैं। अपने त्योहारों के अवसर पर वे बहुत खुशी मनाती हैं। लोहड़ी, बसंत-पंचमी, होली, तीज, राखी, दशहरा, दीवाली और ईद हरियाणा के बड़े त्योहार हैं।

अब बताओ

1. हरियाणा के लोगों के मुख्य धंधे क्या हैं ?
2. इस राज्य की मुख्य उपज क्या है ?
3. हरियाणा के कुछ प्रसिद्ध उद्योगों के नाम बताओ।
4. कोई ऐसी दो चीज़ें बताओ जिनके लिए हरियाणा प्रसिद्ध है।
5. नीचे एक ओर कुछ स्थानों के नाम दिए गए हैं। दूसरी ओर यह बताया गया है कि वे क्यों प्रसिद्ध हैं। प्रत्येक स्थान के प्रसिद्ध होने का सही कारण छाँटकर उसका नंबर कोष्ठक में लिखो :

( ) हिसार 1. सूर्यग्रहण पर मेला लगता है।
( ) फ़रीदाबाद 2. पशुओं का फार्म है।
( ) चंडीगढ़ 3. हरियाणा की राजधानी है।
( ) सोनीपत 4. साइकिलें बनाने का कारखाना है।
( ) जगाधरी 5. कागज़ बनाने का कारखाना है।
( ) भिवानी 6. कपड़े की मिलें हैं।
( ) कुरुक्षेत्र 7. हाथकरघे का कपड़ा अच्छा बनता है।
( ) पानीपत 8. एक औद्योगिक नगर है।

कुछ करने को

1. मानचित्र में देखकर हरियाणा के पड़ोसी राज्यों के नाम बताओ। नीचे लिखे स्थानों को भी मानचित्र में ढूँढ़ो :
   फ़रीदाबाद, जगाधरी, भिवानी, सोनीपत, कुरुक्षेत्र और चंडीगढ़।
2. आकाशवाणी दिल्ली से प्रतिदिन शाम को प्रसारित होनेवाला हरियाणा कार्यक्रम सुनो।
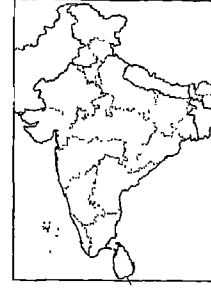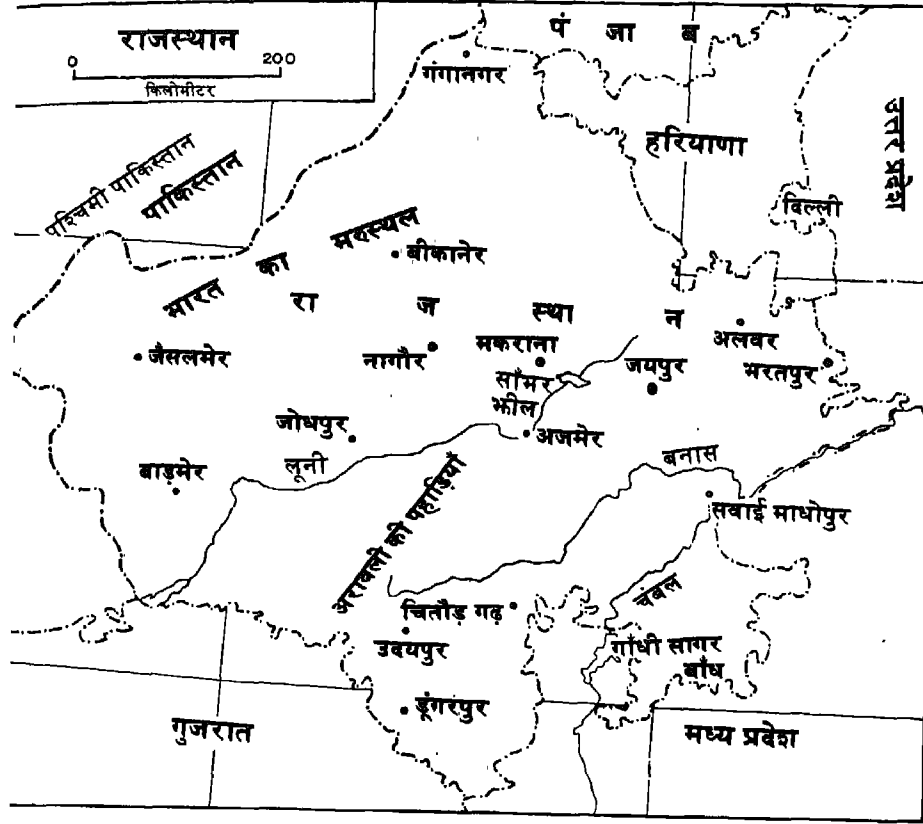
5. राजस्थान

क्या तुमने कभी 'गुलाबी नगर' के बारे में सुना है ? यह कौन-सा नगर है ? इसे 'गुलाबी नगर' क्यों कहते हैं ?

यह 'गुलाबी नगर' हमारे देश में ही है। इसका नाम जयपुर है। यह नगर राजस्थान की राजधानी है। इस नगर में राजमहल की दीवारें और भवन तथा दुकानें गुलाबी रंग की हैं। इसीलिए इसको 'गुलाबी नगर' कहते हैं।

जयपुर एक सुंदर नगर है। आज से लगभग ढाई सौ वर्ष पहले राजा जयसिंह ने इसे बसाया था। यह नगर आयताकार है और अलग-अलग भागों में बँटा है। पूर्व से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण की ओर इसमें कई सड़कें बनी हैं। जयपुर का हवामहल, राजमहल, संग्रहालय और जंतर-मंतर देखने योग्य हैं। जयपुर के पास ही पहाड़ी पर आमेर का किला बहुत सुंदर है।
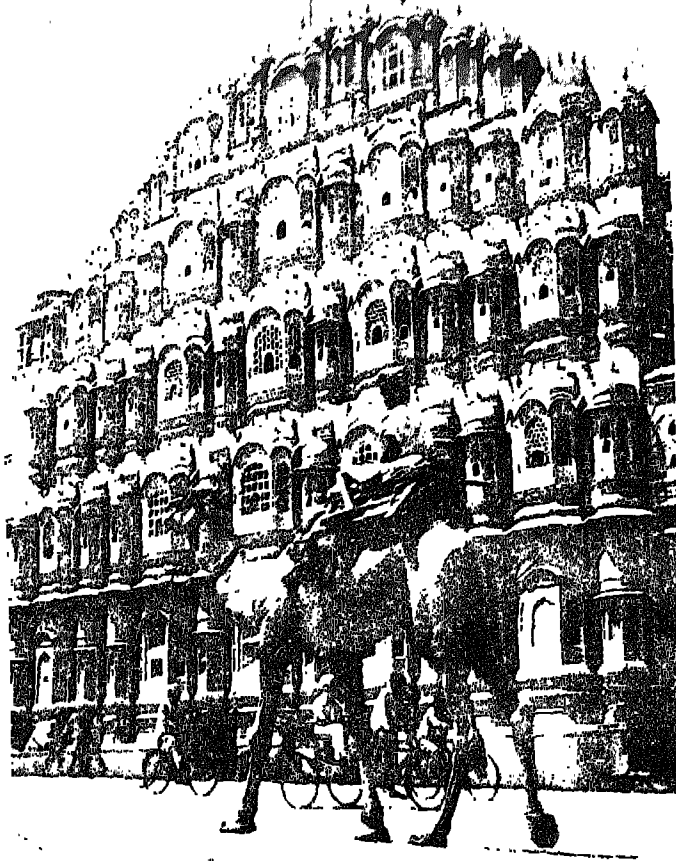
जयपुर का हवामहल

अब राजस्थान का मानचित्र देखो। यह हमारे देश का एक बहुत बड़ा राज्य है। पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और गुजरात इसके पड़ोसी राज्य हैं। राजस्थान हमारे देश का एक सीमावर्ती राज्य है। पश्चिम में इसकी सीमा पश्चिमी पाकिस्तान से मिलती है।

राजस्थान के किसान ज्वार, बाजरा, गेहूँ, मक्का, कपास, तिलहन, दालें, तंबाकू आदि की खेती करते हैं। यहाँ पानी की कमी है। वर्षा भी बहुत कम होती है। भूमि अधिकतर खुश्क है।

इस राज्य के कुछ भाग में दूर तक फैली हुई अरावली की पहाड़ियाँ और छीदे

वन हैं। मानचित्र में देखो अरावली की पहाड़ियाँ किस भाग में हैं। चंबल, लूनी और बनास यहाँ की बड़ी नदियाँ हैं। साँभर झील खारे पानी की एक बड़ी झील है। इसके पानी से नमक बनाया जाता है। तुम ये नदियाँ और झील मानचित्र में ढूँढ़ सकते हो।

राजस्थान का पश्चिमी भाग एक शुष्क मरुस्थल है। यहाँ पर गाँवों और शहरों की संख्या कम है। सड़कें और रेलें भी बहुत कम हैं। एक स्थान से दूसरे स्थान को आने-जाने और सामान ढोने के लिए लोग ऊँट का प्रयोग करते हैं। ऊँट को 'मरुस्थल का जहाज़' कहा जाता है।

कुछ समय पहले जैसलमेर जिले में भूमि के नीचे बहुत गहराई पर पानी का एक बड़ा भंडार मिला है। यहाँ पर गहरे नलकूप लगाए गए हैं। इन नलकूपों से पानी निकालते हैं। यह पानी मीठा है और पीने और सिंचाई करने के काम में लाया जाता है।

भाखड़ा बाँध से निकाली गई नहर का पानी अब राजस्थान के गंगानगर ज़िले तक पहुँच गया है। जब राजस्थान नहर और चंबल योजना पूरी हो जाएगी तब इस राज्य में पानी की कमी नहीं रहेगी और राजस्थान की मरुभूमि उपजाऊ बन जाएगी।

इस राज्य में अबरक और यूरेनियम मिलता है। मकराना और नागौर का संगमरमर प्रसिद्ध है। लखेरी और सवाई माधोपुर में सीमेण्ट बनाने के कारखाने हैं। यहाँ चूने का

पत्थर खूब मिलता है। इससे सीमेण्ट बनती है।

राजस्थान के बहुत-से लोग छोटे और घरेलू उद्योगों में काम करते हैं। यहाँ हाथी-दाँत का काम, लकड़ी के खिलौने और संगमरमर की मूर्तियाँ बनाने का काम अच्छा होता है। जयपुर की ज़रीदार जूतियाँ, रंग-बिरंगी चुनरियाँ और लहरियादार साड़ियाँ बहुत लोकप्रिय हैं।

राजस्थान की भूमि सूखी और रेतीली है लेकिन यहाँ के लोग बड़े रसिक हैं। वे रंग-बिरंगे वस्त्र पहनना पसंद करते हैं। पुरुष कुर्ता, धोती और पगड़ी पहनते हैं। विशेष अवसरों पर वे चूड़ीदार पायजामा, अचकन और पगड़ी पहनते हैं। स्त्रियाँ घाघरा और काँचली या ब्लाउज़ पहनती हैं। उनकी ओढ़नी सारे शरीर को ढक लेती है। वे गहने पहनना बहुत अधिक पसंद करती हैं। कुछ स्त्रियाँ तो सिर से पैर तक गहनों से लदी रहती हैं। चित्र में इस स्त्री के गहने देखो। वह कितनी सुंदर लगती है।

चित्तौड़गढ़ का विजय-स्तंभ
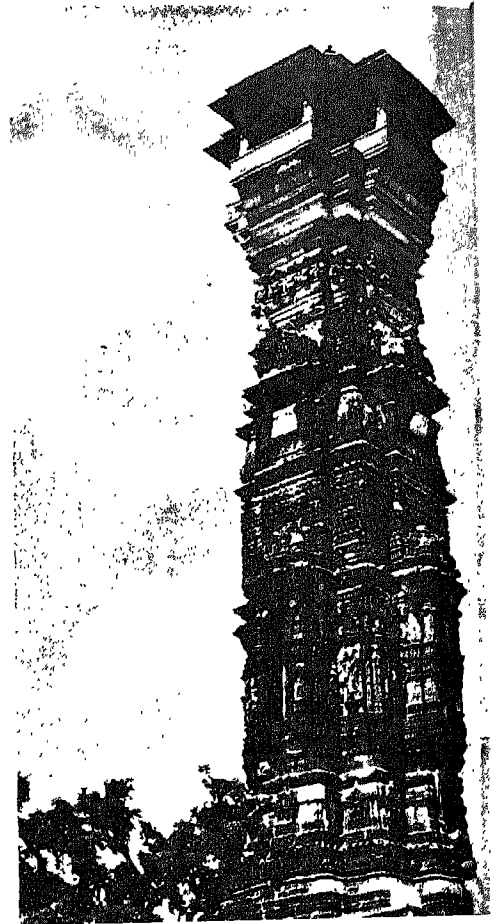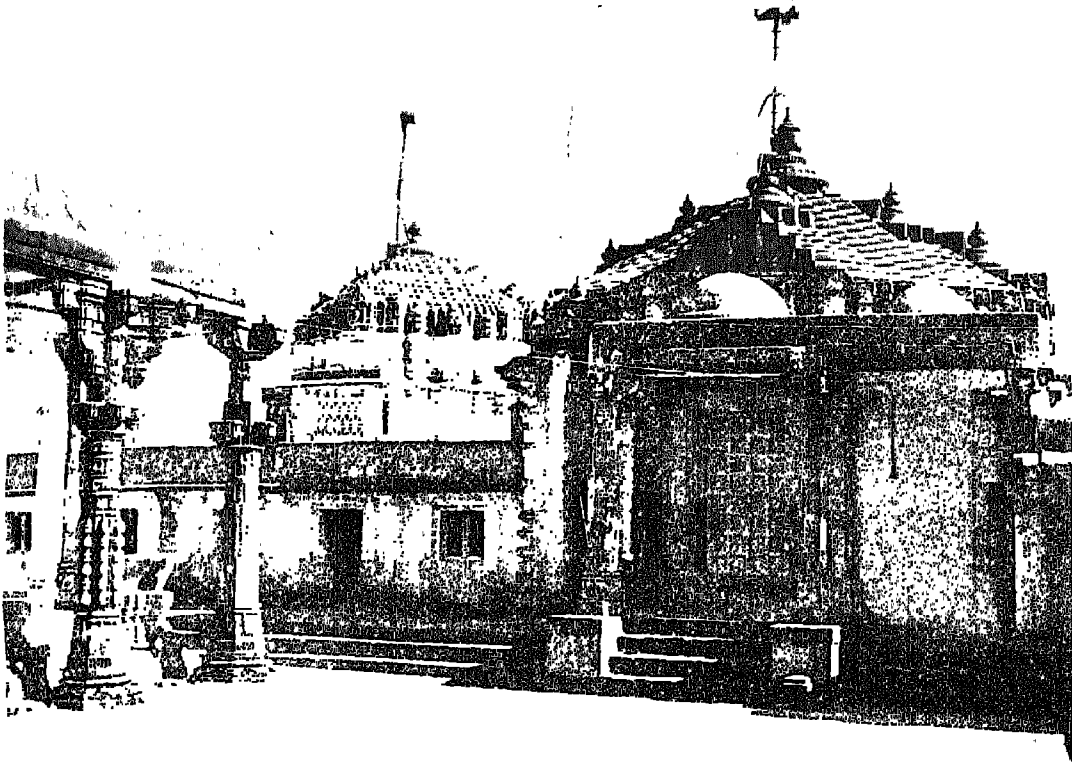
दिलवाड़ा का जैन मंदिर

राजस्थान के लोग हरियाणा और पंजाब के लोगों की तरह ही दशहरा और दीवाली मनाते हैं। 'गनगौर' उनका प्रसिद्ध त्योहार है। स्त्रियाँ और लड़कियाँ 'तीज' का त्योहार मनाती हैं। वे रंग-बिरंगे वस्त्र पहनती हैं, नाचती-गाती हैं और खुशी मनाती हैं।

राजस्थान में बहुत-से प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थान हैं। राज्य के लगभग सभी बड़े नगरों के साथ वीर राजपूतों की बहादुरी की कहानियाँ जुड़ी हैं। राजपूत लोग अपनी वीरता और देश-प्रेम के लिए सदा से ही प्रसिद्ध हैं। इनमें राणा साँगा, महाराणा प्रताप और वीर दुर्गादास के नाम तो सभी जानते हैं।

चित्तौड़गढ़ का किला और इसका विजय-स्तंभ देखने के लिए बहुत लोग आते हैं। मीराबाई की भक्ति की कहानियाँ तथा पद्मिनी और जयमल के बलिदानों की कहानियाँ इससे जुड़ी हैं उदयपुर यहाँ का एक बहुत सुंदर नगर है। इसमें कई बाग़, मंदिर, महल और झीलें हैं। इसे 'झीलों का नगर' भी कहते हैं। उदयपुर का जलमहल देखने योग्य है। माउंट आबू में दिलवाड़ा का जैन मंदिर है। यह सुंदर कारीगरी के लिए प्रसिद्ध है। माउंट आबू हमारे देश का एक अति सुंदर पहाड़ी स्थान है।

जोधपुर, जैसलमेर, बीकानेर, अलवर और भरतपुर के महल और किले भी देखने योग्य हैं। अजमेर शरीफ़ दरगाह की यात्रा के लिए हज़ारों मुसलमान अजमेर जाते हैं। अजमेर के पास ही हिन्दुओं का तीर्थ स्थान पुष्कर है।

अब बताओ

1. राजस्थान के लोगों के मुख्य काम-धंधे क्या हैं ?
2. नीचे लिखे स्थान क्यों प्रसिद्ध हैं ?
   जयपुर, उदयपुर, चित्तौड़गढ़, अजमेर, बीकानेर और जोधपुर।
3. जयपुर को 'गुलाबी नगर' क्यों कहते हैं ?
4. राजस्थान में कौन-कौन-से खनिज मिलते हैं ?
5. खाली स्थानों को भरो :
   (अ) ____________ अपनी वीरता और देश-प्रेम के लिए प्रसिद्ध हैं।
   (आ) ____________ को 'झीलों का नगर' कहते हैं।
   (इ) मकराना और नागौर ____________ के लिए प्रसिद्ध हैं।
   (ई) ____________ और ____________ राजस्थान के लोगों के मुख्य त्योहार हैं।

कुछ करने को

1. राजस्थान के बड़े-बड़े नगरों की सूची बनाओ।
2. राणा साँगा, मीराबाई, महाराणा प्रताप और वीर दुर्गादास की कहानी पुस्तकालय से कोई पुस्तक लेकर पढ़ो।
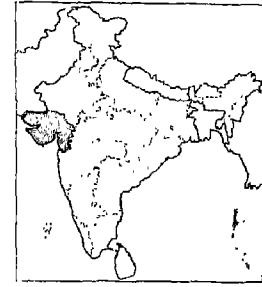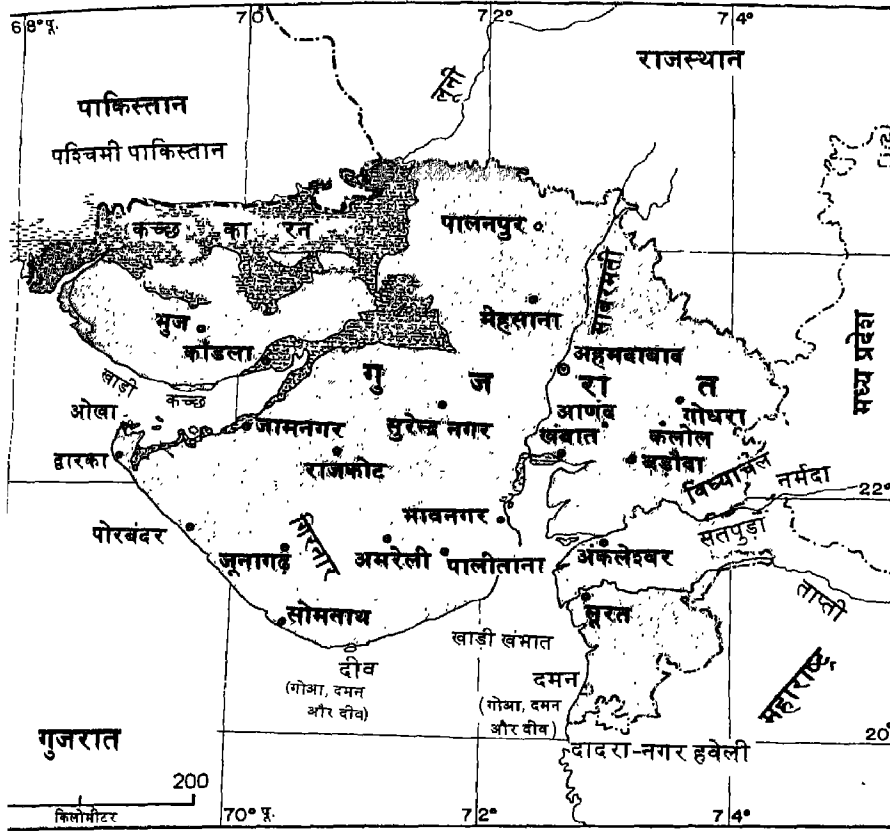
6. गुजरात

धन्ना पटेल का परिवार एक गाँव में रहता है। यह गाँव गिरनार की पहाड़ियों के पास है। राधा इस परिवार की सबसे छोटी बालिका है। वह लगभग तुम्हारी ही आयु की है। गिरनार की पहाड़ियों पर घने वन हैं। इनमें शीशम, सागोन, पीपल, बड़ और बाँस के पेड़ मुख्य रूप से मिलते हैं। गिर जंगल बबर शेरों के लिए प्रसिद्ध है।

राधा का गाँव सौराष्ट्र में है। सौराष्ट्र गुजरात राज्य का भाग है। यह अरब सागर से लगा हुआ है।

अब जरा मानचित्र में देखो। गुजरात राज्य के दक्षिण और पश्चिम में अरब सागर है। महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश और राजस्थान इसके पड़ोसी राज्य हैं। उत्तर में इसकी सीमा

पश्चिमी पाकिस्तान से मिलती है। मानचित्र में तुम इस राज्य की नदियाँ––साबरमती, नर्मदा और ताप्ती––ढूँढ़ सकते हो।

राधा के पिताजी एक किसान हैं। गाँव के पास ही उनके खेत हैं। उनके खेतों की भूमि कपास की उपज के लिए बहुत अच्छी है। वह बाजरा, गेहूँ, मूँगफली और कुछ दूसरी फसलें भी उगाते हैं। राधा के पिताजी की कपास की फसल तो प्रतिवर्ष बहुत ही बढ़िया होती है। राधा और उसकी माँ घर में काम करती हैं। वे अपने खाली समय में खेतों में काम करने जाती हैं। राधा को कपास के डोडे चुनना बहुत अच्छा लगता है।

अहमदाबाद में सूती कपड़े के कई कारखाने हैं। इन कारखानों में बहुत-से लोग काम करते हैं। अहमदाबाद सूती कपड़े के लिए सारे भारत में प्रसिद्ध है। बड़ौदा में दवाइयाँ और खाद बनाने के कारखाने हैं।

बड़ौदा के पास तेल साफ़ करने के कारखाने का एक दृश्य
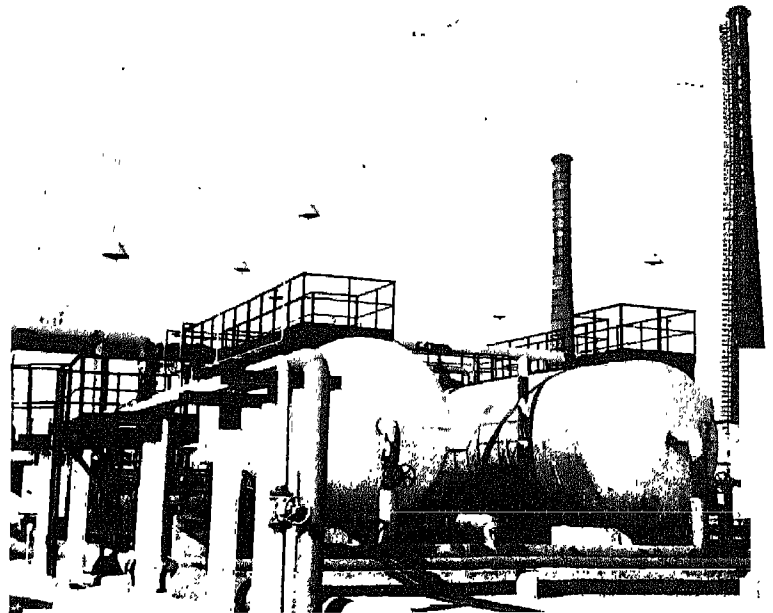
अपने खाली समय में राधा की माँ चरखा चलाती हैं। वे बहुत महीन सूत कातती हैं। राधा के पिताजी सदा हाथ के कते सूत के कपड़े पहनते हैं। गुजरात में बहुत-सी स्त्रियाँ 'अंबर चरखा' काम में लाती हैं। इससे सूत तेज़ी से काता जाता है।

गुजरात राज्य का कुछ उत्तर पश्चिमी भाग शुष्क है। बरसात में इस भाग में दलदल हो जाती है। यह भाग खेती के लिए बेकार है। इसे 'कच्छ का रन' कहते हैं। इसे मानचित्र में ढूँढ़ो।

गुजरात में कैम्बे, अंकलेश्वर और कलोल में तेल के बहुत-से कुएँ हैं। कच्चे तेल को साफ़ करने के लिए बड़ौदा के पास तेल साफ़ करने का एक बड़ा कारखाना बन रहा है।

आणंद के पास दूध की एक बड़ी डेरी है। इसका नाम 'अमुल सहकारी डेरी' है। यह डेरी दूध से बनी वस्तुओं के लिए सारे भारत में प्रसिद्ध है।

राधा के गाँव में एक स्कूल है। राधा प्रतिदिन स्कूल जाती है। वह तीसरी कक्षा में पढ़ती है। वह गुजराती भाषा पढ़ती है। वह हिन्दी पढ़ना भी सीख रही है। गुजरात के लोग अधिकतर गुजराती भाषा बोलते हैं। वे हिन्दी भाषा भी जानते हैं।

नाचने और गाने में राधा की बड़ी रुचि है। स्कूल में वह 'गरबा नृत्य' में भाग लेती है। 'गरबा' गुजरात का प्रसिद्ध लोक-नृत्य है। सभी गुजराती स्त्रियाँ नवरात्रि और शरद् पूर्णिमा पर 'गरबा' नाच करती हैं। 'रास-नृत्य' भी इस राज्य में लोकप्रिय है।

राधा का बड़ा भाई एक 'ओवरसियर' है। वह गाँधी नगर में नौकरी करता है। गाँधी नगर एक नया नगर है। यह नगर अहमदाबाद के पास साबरमती नदी के किनारे बनाया जा रहा है। इस नगर में गुजरात राज्य की नई राजधानी होगी। आजकल गुजरात राज्य की राजधानी अहमदाबाद है। यहीं पर गाँधी जी का साबरमती आश्रम है।

गुजरात का एक लोक-नृत्य

गाँधी नगर राधा के गाँव से बहुत दूर है। उसका भाई वर्ष में एक या दो बार ही अपने परिवार से मिलने गाँव आता है। अक्सर किसी त्योहार के आस-पास ही उसका आना होता है। होली, नवरात्रि, दशहरा, दीवाली और ईद गुजरात के कुछ बड़े त्योहार हैं।

जब राधा का भाई गाँव आता है तो वह राधा के लिए 'मगज' और 'घारी' का एक डिब्बा अवश्य लाता है। ये गुजरात की प्रसिद्ध मिठाइयाँ हैं। राधा को घारी बहुत पसंद है।

इस चित्र में देखो, पटेल परिवार के लोग भोजन कर रहे हैं। आज राधा की माँ ने बड़ी मज़ेदार चीज़ें बनाई हैं। वे चावल, दाल, पूरी, सब्ज़ी, दही, चटनी और पापड़ परोस रही हैं। गुजरात के लोग ऐसा भोजन बड़े चाव से खाते हैं। उन्हें तरह-तरह के खट्टे-मीठे अचार और मुरब्बे भी बहुत अच्छे लगते हैं।

चित्र में राधा के माता-पिता और भाई का पहनावा देखो। गुजरात के लोग अक्सर इसी तरह का धोती-कुर्ता और 'गाँधी टोपी' पहनते हैं। कुछ लोग चूड़ीदार पायजामा, जैकिट और रंगीन पगड़ी पहनते हैं। स्त्रियाँ साड़ी-ब्लाउज़ या घाघरा-चोली पहनती हैं।

गुजरात में बहुत-से तीर्थस्थान हैं। द्वारिका और सोमनाथ में हिन्दुओं के प्रसिद्ध मंदिर हैं। पालीताना के पास शत्रुंजय पहाड़ी पर बने जैन मंदिर बहुत प्रसिद्ध हैं। हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी का जन्म-स्थान पोरबंदर भी इसी राज्य में है।

गुजरात भारत का एक समुद्र-तटीय और सीमावर्ती राज्य है। गुजरात के समुद्र-तट पर कई बंदरगाह हैं। इनमें ओखा, जामनगर, काँडला और सूरत मुख्य हैं। तुम इन बंदरगाहों को मानचित्र में ढूँढ़ सकते हो।

अब बताओ

1. गुजरात की मुख्य उपज क्या है ?
2. कोई ऐसी तीन चीज़ें बताओ जिनके लिए गुजरात प्रसिद्ध है।
3. नीचे लिखे स्थान क्यों प्रसिद्ध हैं ?
   अहमदाबाद, बड़ौदा, आणंद, अंकलेश्वर, कैम्बे और जामनगर।
4. गुजरात के लोगों के मुख्य काम-धंधे क्या हैं ?
5. नीचे कुछ लोक-नृत्यों के नाम दिए गए हैं। प्रत्येक के सामने संबंधित राज्य का नाम लिखो :
   रोफ ____________
   नटी ____________
   भंगड़ा ____________
   गिद्धा ____________
   गरबा ____________

कुछ करने को

1. मानचित्र में देखकर गुजरात के सभी बड़े-बड़े बंदरगाहों के नामों की सूची बनाओ।
2. अपने अध्यापकजी से सोमनाथ और शत्रुंजय के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करो।
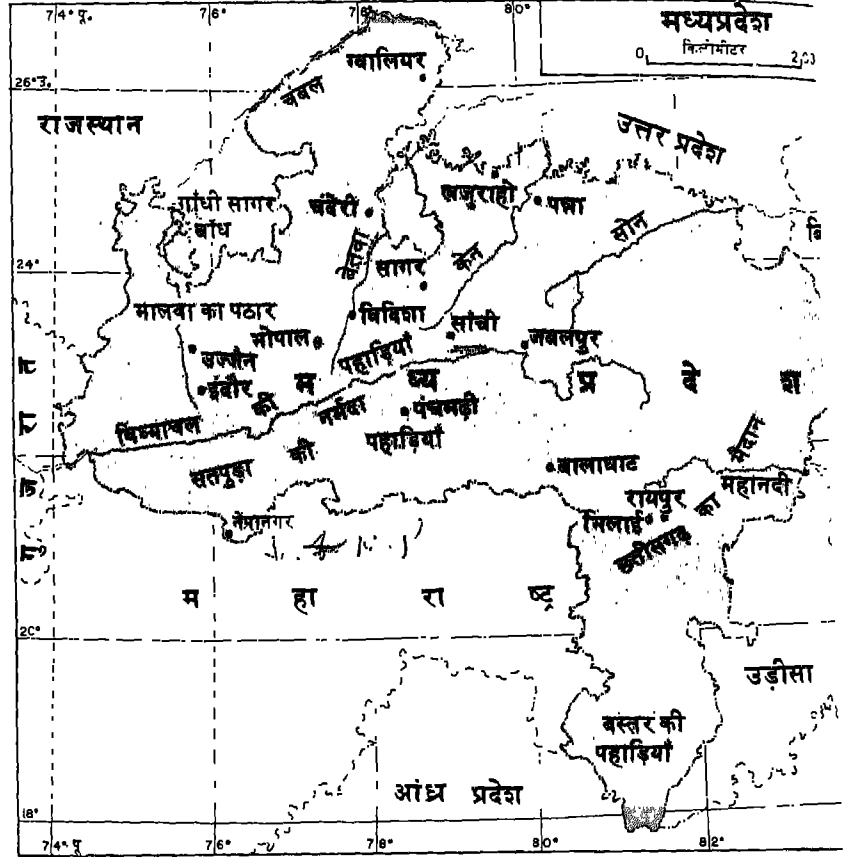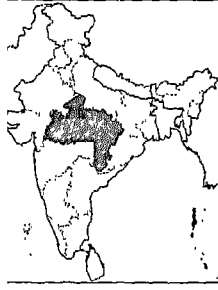
7. मध्य प्रदेश

ऊपर दिया गया मध्य प्रदेश का मानचित्र देखो। मध्य प्रदेश लंबाई-चौड़ाई में हमारे देश का सबसे बड़ा राज्य है। मानचित्र में तुम यह भी देखोगे कि इस राज्य की सीमाएँ हमारे देश के अन्य सात राज्यों को छूती हैं। इन राज्यों के नाम बताओ।

इस राज्य में धरातल सब जगह एक-जैसा नहीं है। कहीं भूमि समतल है, कहीं पहाड़ी। इसके उत्तरी भाग में चंबल, बेतवा, केन और सोन नदियाँ बहती हैं। उत्तरी-पश्चिमी भाग में मालवा का पठार है। यहाँ मिट्टी काली है और खेती के लिए अच्छी है। परंतु यहाँ बड़े-बड़े और गहरे खड्ड हैं, इसलिए कुछ भूमि खेती योग्य नहीं है। बाकी भूमि उपजाऊ है। यहाँ गेहूँ, कपास, तिलहन, ज्वार और बाजरा पैदा किया जाता है।

राज्य के उत्तर-पूर्वी भाग की भूमि पथरीली है। यहाँ खेती कम होती है, परंतु यहाँ पर कई खनिज पदार्थ पाए जाते हैं। इनमें कोयला, लोहा तथा मैंगनीज़ मुख्य हैं।

पृष्ठ 44 पर दिए गए मानचित्र में विन्ध्याचल और सतपुडा पहाड़ियों की श्रेणियाँ देखो। इन दोनों श्रेणियों के बीच नर्मदा की सँकरी घाटी है। इसे नर्मदा नदी ने उपजाऊ बना दिया है। दक्षिण पूर्वी भाग में 'छत्तीसगढ़ का मैदान' है। इस मैदान को महानदी ने उपजाऊ बनाया है। यहाँ चावल बहुत पैदा होता है। छत्तीसगढ़ मैदान के दक्षिण में बस्तर की पहाड़ियाँ हैं। यहाँ घने वन हैं।

मध्य प्रदेश के उत्तरी भाग में गर्मियों में काफ़ी गर्मी और सर्दी के मौसम में काफ़ी ठंड पड़ती है। परंतु दक्षिणी भाग में सर्दी कम पड़ती है। वर्षा भी मध्य प्रदेश में सब जगह एक-जैसी नहीं होती।

इस राज्य का लगभग एक तिहाई भाग जंगलों से ढका है। पश्चिमी भाग में जंगल घने नहीं हैं, परंतु पूर्व की ओर ये बहुत घने होते जाते हैं। इनमें साल, सागौन, हड़, बहेड़ा और आँवले के पेड़ मिलते हैं। इनकी लकड़ी हमारे बहुत काम आती है। जंगलों में पाए जानेवाले 'तेंदू' नाम के पेड़ के पत्तों से लोग बीड़ी बनाते हैं।

नर्मदा की घाटी में लोग चावल की खेती करते हैं। इस राज्य के पश्चिमी भाग में ज्वार, गेहूँ, मक्का, मूँगफली और कपास की खेती की जाती है। पश्चिमी भाग में वर्षा कम होती है, इसलिए सिंचाई की जरूरत पड़ती है। इस भाग की नदियाँ अधिकतर बरसाती हैं। इनमें बरसात के दिनों में पानी बहुत होता है। इस पानी को बाँध बनाकर सिंचाई के लिए रोक लिया जाता है। चंबल नदी पर एक बड़ा बाँध बनाया गया है। इससे सिंचाई के लिए पानी तो मिलता ही है साथ ही बिजली भी बनाई जाती है।

मैदानी भाग में रहनेवाले लोग ईंट, पत्थर, चूने और सीमेण्ट के पक्के मकान बनाते हैं। पठारी भाग में मकानों की दीवारें मिट्टी अथवा पत्थर की बनाई जाती हैं। इनकी ढलवाँ छतें खपरैल की होती हैं।

यहाँ के पुरुष धोती और कमीज़ पहनते हैं। गाँव की स्त्रियाँ घाघरा और चोली पहनती हैं, परंतु शहरों में स्त्रियाँ साड़ी पहनती हैं।

इस राज्य में रहनेवाले हिन्दी बोलते हैं। इन लोगों का मुख्य भोजन गेहूँ की रोटी, चावल, दाल और सब्ज़ी है। ये लोग होली, दीवाली, दशहरा, ईद आदि त्योहार मनाते हैं। इन्हें नाच-गाने का भी शौक है।

छत्तीसगढ़ मैदान और बस्तर के पहाडी क्षेत्र में आदिवासी लोग रहते हैं। ये शरीर से मज़बूत, निडर और अच्छे शिकारी होते हैं। ये अधिकतर तीर-कमान से शिकार करते हैं। छोटी-छोटी झोपड़ियों में रहते हैं और बहुत ही कम कपड़े पहनते हैं। ये लकड़ी

काटकर अथवा मज़दूरी करके अपना पेट भरते हैं। अब कुछ लोग खेती भी करने लगे हैं। इन लोगों का भोजन सादा है। ये ज्वार-बाजरे की मोटी रोटी खाते हैं। इन्हें नाच-गाने का भी बहुत शौक है। ये अक्सर अपने सिर पर पशुओं के सींग आदि बाँधकर गोल दायरे में नाचते हैं। देखने में इनका नाच बहुत ही सुंदर लगता है। हमारी सरकार आदिवासियों के रहन-सहन को सुधारने के लिए कई प्रकार के काम कर रही है।

मानचित्र में भोपाल नगर देखो। यह सुंदर नगर मध्य प्रदेश की राजधानी है। इस नगर के समीप बिजली का सामान बनाने का एक बहुत बड़ा कारखाना है। इसका नाम 'हेवी इलेक्ट्रिकल्स' है।
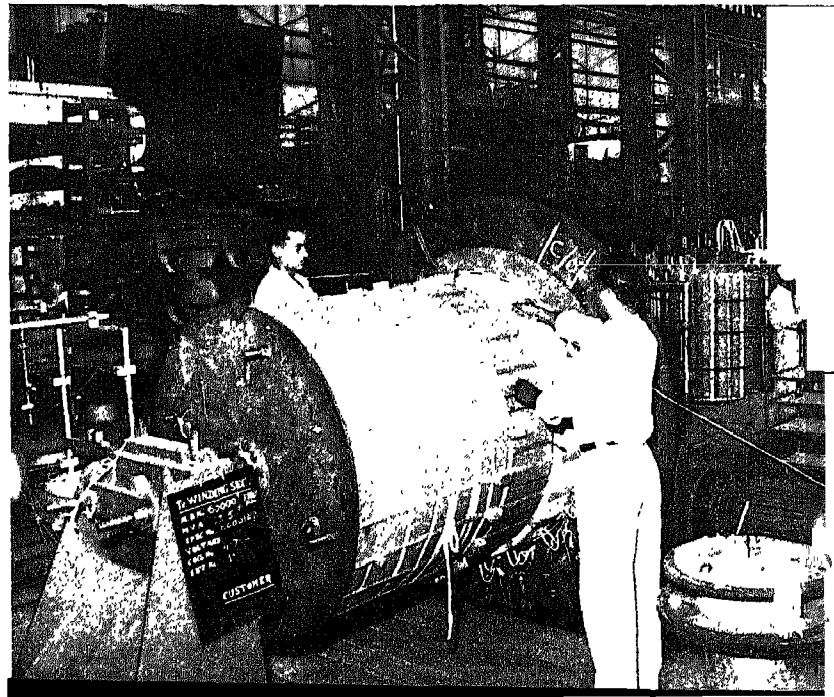
'हेवी इलेक्ट्रिकल्स' कारखाने का एक दृश्य

मानचित्र में उज्जैन और इंदौर नगर देखो। उज्जैन पुराने समय में 'उज्जयिनी' कहलाता था। यहाँ महाकालेश्वर का पुराना मंदिर है। उज्जैन और इंदौर में सूती कपड़ा बनाने के कई कारखाने हैं। इनमें हज़ारों लोग काम करते हैं। मध्य प्रदेश के नेपानगर में अखबार का कागज़ बनाने का एक बड़ा कारखाना है।

भोपाल के उत्तर में ग्वालियर नगर है। इसे भी मानचित्र में देखो। यह एक पुराना नगर है। यहाँ का किला तथा झाँसी की रानी की समाधि देखने योग्य है। अब यह एक बड़ा औद्योगिक नगर बन गया है। यहाँ पर सूती और नकली रेशम का कपड़ा बनाने के कारखाने हैं। इनके अलावा चीनी मिट्टी के बर्तन और बिस्कुट बनाने के भी कारखाने हैं। चंदेरी की साड़ियों के बारे में तुमने सुना होगा। ये साड़ियाँ चंदेरी नगर में हाथकरघे से बनाई जाती हैं।

सरकार ने रायपुर के समीप भिलाई में इस्पात का प्रसिद्ध कारखाना बनाया है। इस्पात बनाने के लिए इस कारखाने में लौह अयस्क बड़ी-बड़ी मशीनों और भट्ठियों से पिघलाया जाता है। इस काम के लिए लौह अयस्क और कोयला राज्य के उत्तर-पूर्वी भाग से आता है। इसी भाग में पन्ना नाम के स्थान पर हीरे की खानें हैं। कई और खनिज पदार्थ जैसे मैंगनीज़ और बाक्साइट भी इस क्षेत्र में मिलते हैं। जबलपुर के समीप संगमरमर की चट्टानें हैं, जिन्हें देखने बहुत-से लोग जाते हैं।

इस राज्य में प्राचीन समय के कई प्रसिद्ध स्थान हैं। साँची के स्तूप, खजुराहो के मंदिर और विदिशा की गुफाओं के नाम प्रसिद्ध हैं।

ग्वालियर का किला
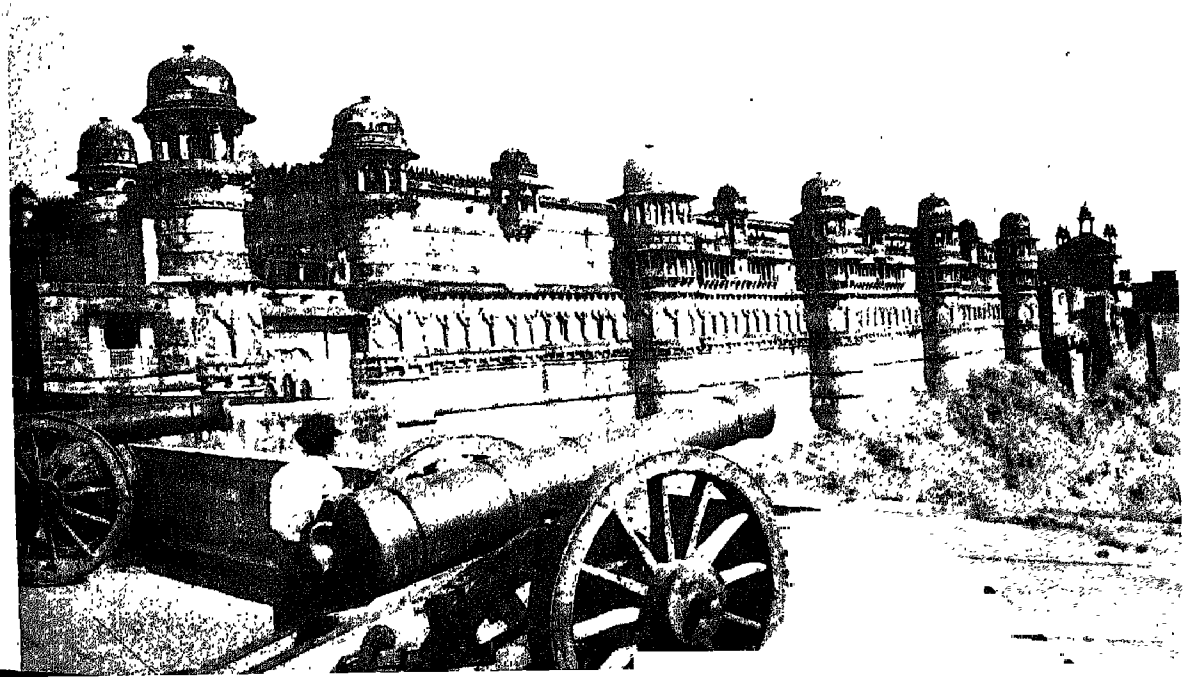
अब बताओ

1. मध्य प्रदेश की सीमाओं को छूनेवाले कौन-कौन-से राज्य हैं ?
2. मध्य प्रदेश की मुख्य उपज के नाम बताओ।
3. इस राज्य के चार प्रसिद्ध उद्योगों के नाम लिखो।
4. मध्य प्रदेश के उत्तर-पूर्वी भाग में खेती कम क्यों होती है ?
5. नीचे कुछ बातें लिखी गई हैं। जो बातें मध्य प्रदेश के लिए सही हैं उनके सामने (✓) निशान लगाओ :
   - (   ) मध्य प्रदेश की भूमि अधिकतर समतल है।
   - (   ) मध्य प्रदेश खनिज पदार्थों के लिए प्रसिद्ध है।
   - (   ) मध्य प्रदेश में चीड़ और देवदार के वन मिलते हैं।
   - (   ) इस राज्य की अधिकांश भूमि वनों से ढकी है।

कुछ करने को

1. मध्य प्रदेश के मानचित्र में दिखाओ :
   - (क) प्रदेश की सीमाएँ।
   - (ख) प्रदेश की प्रमुख नदियाँ : चंबल, बेतवा, केन, सोन और नर्मदा।
   - (ग) प्रदेश के प्रसिद्ध स्थान : इंदौर, उज्जैन, नेपानगर, भोपाल, भिलाई, ग्वालियर, जबलपुर और पंचमढ़ी।
2. विदिशा की गुफ़ाओं, खजुराहो के मंदिरों और साँची स्तूप के चित्र इकट्ठे करो और अपने अध्यापक से इनके विषय में अधिक जानकारी प्राप्त करो।
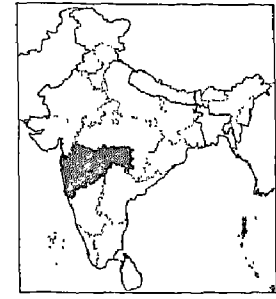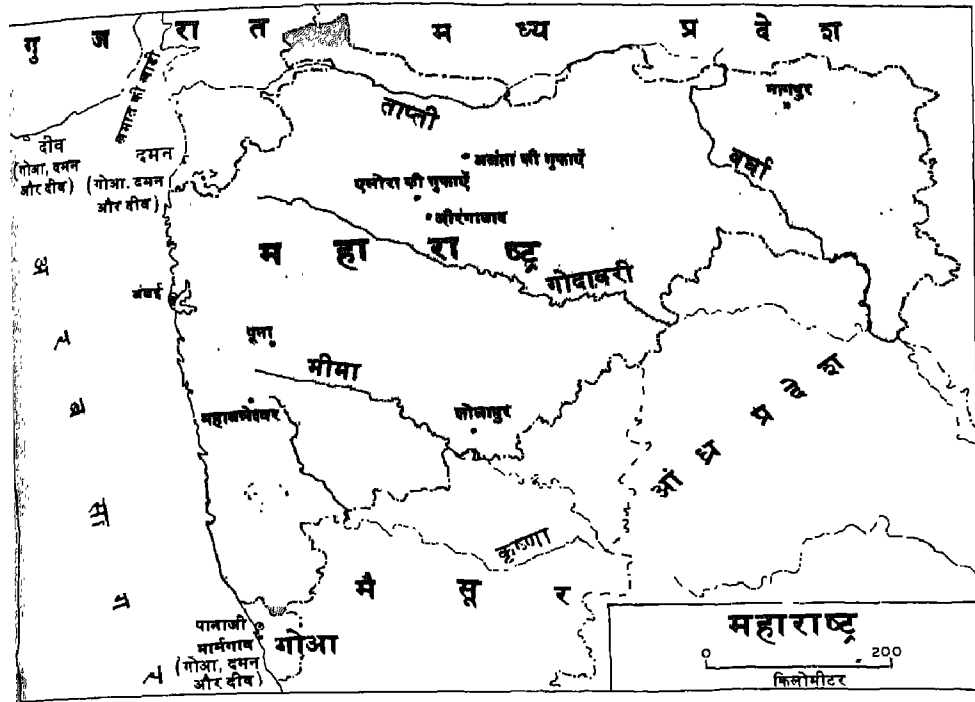
8. महाराष्ट्र

ऊपर का मानचित्र देखो। यह हमारे देश के महाराष्ट्र राज्य का मानचित्र है। इसके पश्चिम में अरब सागर है। गुजरात, मध्य प्रदेश, आंध्र प्रदेश, मैसूर और गोआ इसके पड़ोसी राज्य हैं।

महाराष्ट्र एक बड़ा राज्य है। इसका एक लंबा समुद्र-तट है। समुद्र-तट के साथ-साथ एक सँकरा मैदान है। यह मैदान बहुत उपजाऊ है। यहाँ गर्मी के मौसम में भारी वर्षा होती है। यहाँ न अधिक गर्मी होती है और न ही अधिक सर्दी। इस मैदान के साथ ही पश्चिमी घाट की पहाड़ियाँ हैं। इस भाग में नारियल और साल के घने वन हैं। पश्चिमी घाट की पहाड़ियों पर बहुत-से किले हैं। ये किले प्रसिद्ध मराठा सरदारों की वीरता की कहानियाँ कहते हैं। इन मराठा सरदारों में शिवाजी सबसे प्रसिद्ध हुए हैं। उन्होंने सतपुड़ा और पश्चिमी घाट की पहाड़ियों पर कई किले बनवाए थे।

पश्चिमी घाट के पूर्व में पठार हैं। यहाँ गर्मियों में गर्मी और सर्दियों में सर्दी पड़ती है। इस पठार में ताप्ती, गोदावरी, कृष्णा, भीमा और वर्धा आदि कई नदियाँ बहती हैं। तुम इन नदियों को मानचित्र में ढूँढ़ सकते हो। ये नदियाँ पठार की भूमि को उपजाऊ

बनाती हैं। यहाँ पर कपास, मूँगफली और गन्ना पैदा होता है। समुद्र-तट के पास मैदान में किसान लोग चावल की खेती करते हैं। आम, केले और नारियल भी यहाँ पैदा होते हैं। हज़ारों लोग समुद्र और नदियों से मछलियाँ पकड़ने का काम करते हैं।

महाराष्ट्र के लोग बड़े परिश्रमी होते हैं। वे चावल, गेहूँ की रोटी, दाल, सब्ज़ी और दही अधिक खाते हैं। कुछ लोग मछली और मांस भी खाते हैं। पुरुष धोती, कुर्ता और टोपी पहनते हैं। महाराष्ट्र के किसान विशेष प्रकार की पगड़ी बाँधते हैं। बूढ़े लोग अधिकतर लंबा सूती अँगरखा पहनते हैं। स्त्रियाँ साड़ी और ब्लाउज़ पहनती हैं। चित्र में महाराष्ट्र की स्त्री का साड़ी पहनने का ढंग देखो। यह दूसरे राज्यों की स्त्रियों के साड़ी

पहनने के ढंग से बिलकुल भिन्न है। महाराष्ट्र की स्त्रियाँ बहुत मेहनती होती हैं। वे खेतों और कारखानों में पुरुषों के साथ मिलकर खूब काम करती हैं।

इस राज्य के लोगों की मुख्य भाषा मराठी है। यह देवनागरी लिपि में लिखी जाती है। बहुत-से लोग हिन्दी भी बोलते हैं।

महाराष्ट्र की राजधानी बंबई है। यह एक बहुत बड़ा नगर है। यहाँ चौड़ी-चौड़ी सड़कें और ऊँची-ऊँची इमारतें हैं। बंबई में बहुत-से देखने योग्य स्थान हैं। इनमें 'गेट वे ऑफ़ इंडिया' प्रसिद्ध है। यह समुद्र के किनारे बना एक बहुत बड़ा द्वार है। सैलानी लोग यहाँ आते हैं और 'मोटर बोट' द्वारा एलीफैण्टा की गुफाएँ देखने जाते हैं। कमला नेहरू पार्क (हैंगिंग गार्डन), मेरीन ड्राइव, चिड़िया घर, संग्रहालय और मछलीघर भी देखने योग्य हैं।

बंबई में बहुत-सी बसें और बिजली से चलनेवाली रेलें हर समय मिलती हैं। ये लोगों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक लाती और ले जाती हैं। बंबई का 'सांता क्रुज़' का हवाई अड्डा बहुत बड़ा है। यहाँ से तुम्हें भारत और संसार के किसी भी भाग को जाने के लिए हवाई जहाज़ मिल सकते हैं। बंबई एक बंदरगाह भी है। देश-विदेश के समुद्री जहाज़ यहाँ रोज़ ही आते हैं।

बंबई एक बड़ा औद्योगिक नगर है। यह सूती कपड़ा बनाने का एक बहुत बड़ा

बंबई का एक दृश्य
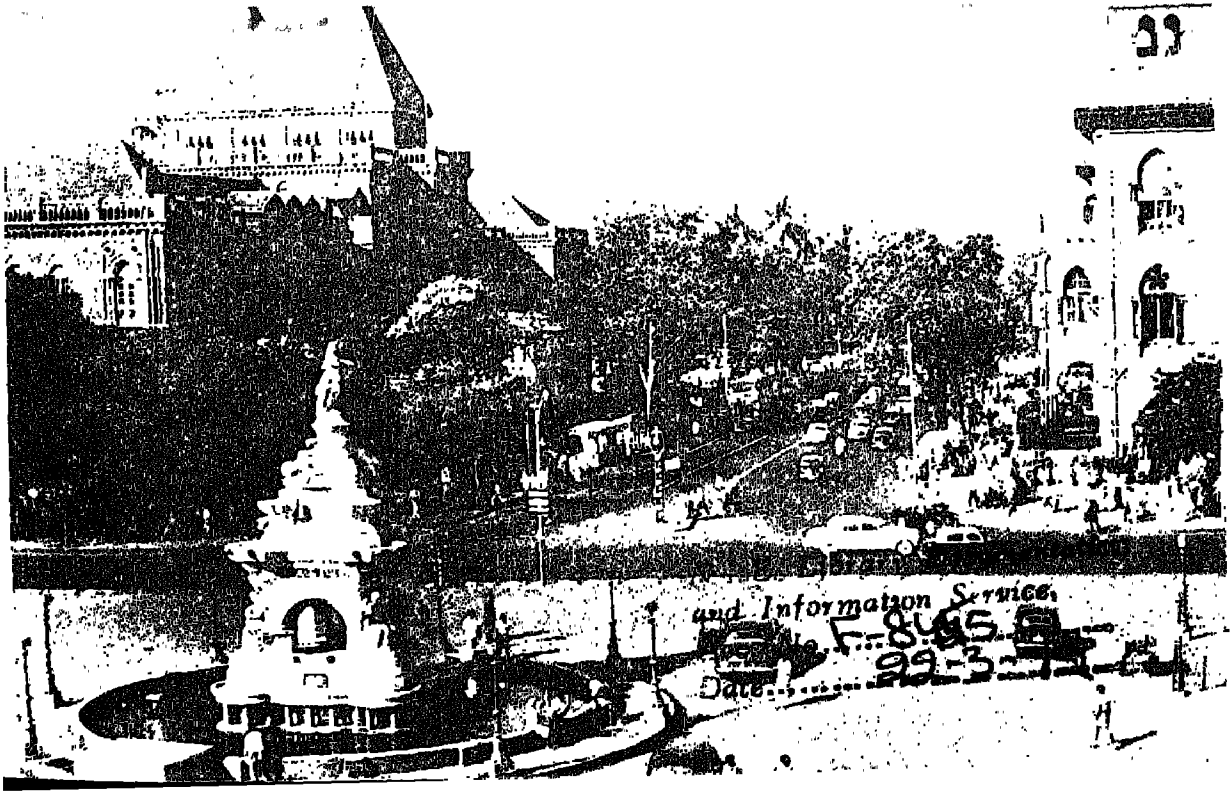
केन्द्र है। ट्रांबे में तेल साफ़ करने का कारखाना और भाभा अणु शक्ति केन्द्र है। बंबई फ़िल्म बनाने का मुख्य स्थान है। यहाँ बहुत-से फ़िल्म स्टूडियो हैं। पिम्परी में पेनिसिलीन बनाने का कारखाना है। शोलापुर सूती कपड़े के कारखानों के लिए प्रसिद्ध है। नागपुर के संतरे मशहूर हैं। क्या तुमने कभी नागपुर के संतरे खाए हैं ?

महाराष्ट्र में बहुत-से धार्मिक स्थान हैं। गोदावरी के किनारे स्थित नासिक के मंदिर और स्नान-घाट प्रसिद्ध हैं।

पूना महाराष्ट्र का एक अन्य महत्त्वपूर्ण स्थान है। पहाड़ियों के बीच में बसा यह एक सुंदर नगर है। महाबलेश्वर एक पहाड़ी नगर है। यहाँ एक बहुत सुंदर झील है

अजंता की गुफ़ाएँ
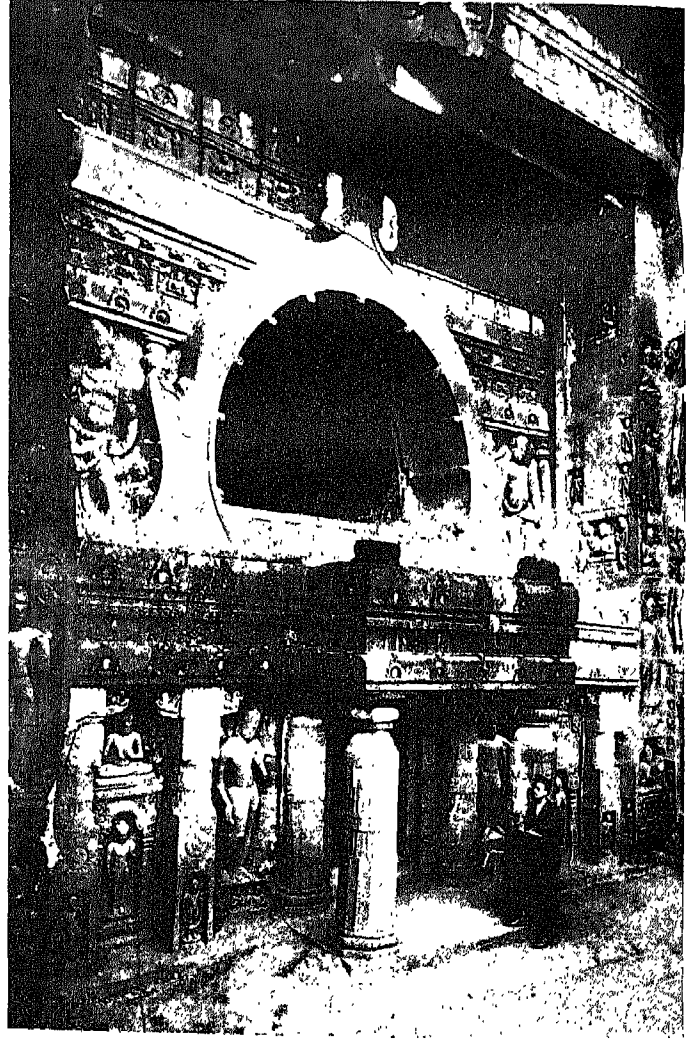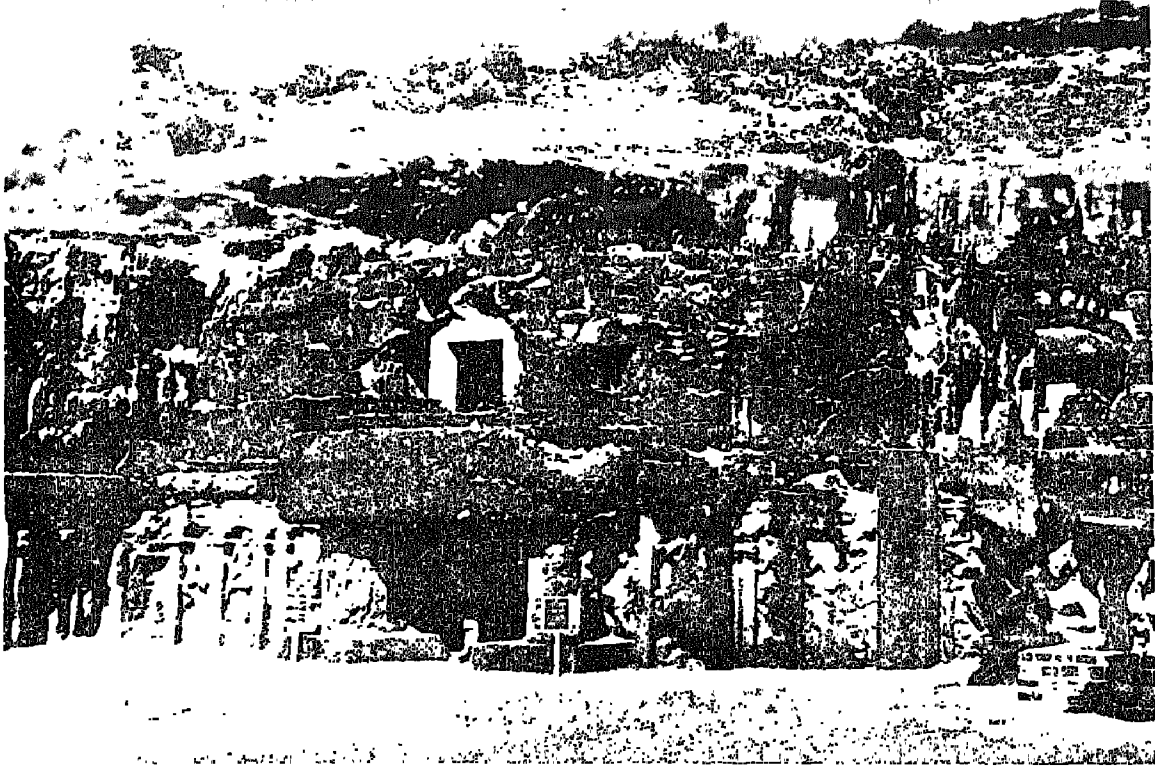
एलोरा की गुफ़ाएँ

और कई बाग़ हैं। नांदेड़ में गुरु गोबिन्द सिंह की समाधि है। यह सिक्खों का धार्मिक स्थान है।

प्रसिद्ध 'सेवाग्राम' वर्धा के पास है। महात्मा गाँधी इस गाँव में कई वर्ष रहे थे। यहाँ रहकर उन्होंने भारत की स्वतंत्रता के लिए काम किया था। सेवाग्राम में गाँधीजी की झोंपड़ी, कलम, घड़ी, छड़ी और पुस्तकें आज भी देखी जा सकती हैं।

अजंता और एलोरा की गुफ़ाएँ सुंदर चित्रकारी और मूर्तिकला के लिए प्रसिद्ध हैं। प्रतिवर्ष हज़ारों सैलानी इन स्थानों को देखने के लिए जाते हैं।

गोआ, दमन और दीव

भारत के मानचित्र में गोआ, दमन और दीव ढूँढ़ो। देखो ये कितने छोटे हैं। इन तीनों को मिलाकर हमारे देश का एक अलग राज्य बनता है। यह एक संघीय क्षेत्र है।

गोआ अरब सागर के साथ भारत के पश्चिमी तट पर स्थित है। दमन गुजरात के

सेण्ट फ्रांसिस ज़ेवियर के गिरजाघर का भीतरी दृश्य

दक्षिण में समुद्र-तट के पास है। दीव सौराष्ट्र के दक्षिण में तट के पास एक छोटा-सा द्वीप है।

गोआ, दमन और दीव चार सौ साल से भी अधिक पुर्तगाली शासन के अधीन रहे। जब भारत सन् 1947 ई. में स्वतंत्र हुआ, तब भी पुर्तगालियों ने गोआ को स्वतंत्र नहीं किया। गोआ, दमन और दीव सन् 1961 ई. में स्वतंत्र हुए। यहाँ पर केवल कुछ लाख लोग रहते हैं। पानाजी गोआ, दमन और दीव की राजधानी है।

मोटर, रेल, हवाई तथा समुद्री मार्गों द्वारा गोआ भारत के अन्य भागों से मिला हुआ है। पानाजी से बेलगाम जानेवाली सड़क बहुत अच्छी है। पूना और 'वास्को-ड-गामा' के बीच रेलें आम चलती हैं। बंबई से पानाजी जाना हो तो स्टीमर द्वारा समुद्र के रास्ते जा सकते हो। मार्मगाव गोआ का एक सुंदर प्राकृतिक बंदरगाह है।

गोआ में कई छोटी-छोटी नदियाँ हैं। इनके द्वारा यात्री और सामान एक स्थान से दूसरे स्थान को जा सकते हैं। अब यहाँ पर नई-नई सड़कें और पुल भी बन रहे हैं

गोआ के लोगों का मुख्य भोजन चावल है, लेकिन इस राज्य में काफ़ी चावल पैदा नहीं होता। देश के अन्य राज्य गोआ को चावल भेजते हैं। गोआ में काजू, नारियल, सुपारी और आम खूब होते हैं। ये वस्तुएँ यहाँ से अन्य राज्यों को भेजी जाती हैं। लौह अयस्क और मैंगनीज़ भी गोआ से दूसरे राज्यों को जाता है।

गोआ के बहुत-से लोग समुद्र से मछली पकड़ने का काम करते हैं। कुछ लोग कारखानों में काम करते हैं और कुछ अन्य व्यापार करते हैं।

गोआ में बहुत-से सुंदर और दर्शनीय स्थान हैं। सेण्ट फ्रांसिस जेवियर का गिरजाघर बहुत प्रसिद्ध है। यह पानाजी के निकट है।

पानाजी एक सुंदर नगर है। यहाँ बहुत-से भवन और पार्क हैं। मारगोआ व्यापार का बड़ा केन्द्र है। वास्को-ड-गामा भी एक प्रसिद्ध नगर है।

गोआ के लोग कई भाषाएँ बोलते हैं। इनमें कोंकनी, मराठी, अंग्रेज़ी और पुर्तगाली मुख्य हैं। आजकल हिन्दी भी लोकप्रिय होती जा रही है।

अब बताओ

1. महाराष्ट्र के लोगों के मुख्य धंधे क्या हैं ?
2. महाराष्ट्र और गोआ की मुख्य उपज क्या है ?
3. बंबई नगर के कुछ दर्शनीय स्थानों और मुख्य कारखानों के नाम बताओ।
4. तुम अपने राज्य से गोआ जाने के लिए किन-किन साधनों का प्रयोग कर सकते हो ?
5. नीचे लिखे स्थान क्यों प्रसिद्ध हैं ?
   महाबलेश्वर, अजंता, एलोरा, पूना, शोलापुर, सेवाग्राम, बंबई, मार्मगाव, पानाजी।

कुछ करने को

1. महाराष्ट्र और गोआ के मानचित्र में नीचे लिखी नदियाँ और स्थान ढूँढो:
   (क) गोदावरी, कृष्णा, वर्धा, भीमा और ताप्ती।
   (ख) पूना, बंबई, सेवाग्राम, नासिक, नागपुर, पानाजी, मार्मगाव।
2. अपने अध्यापकजी से गोआ की स्वतंत्रता की कहानी सुनो।
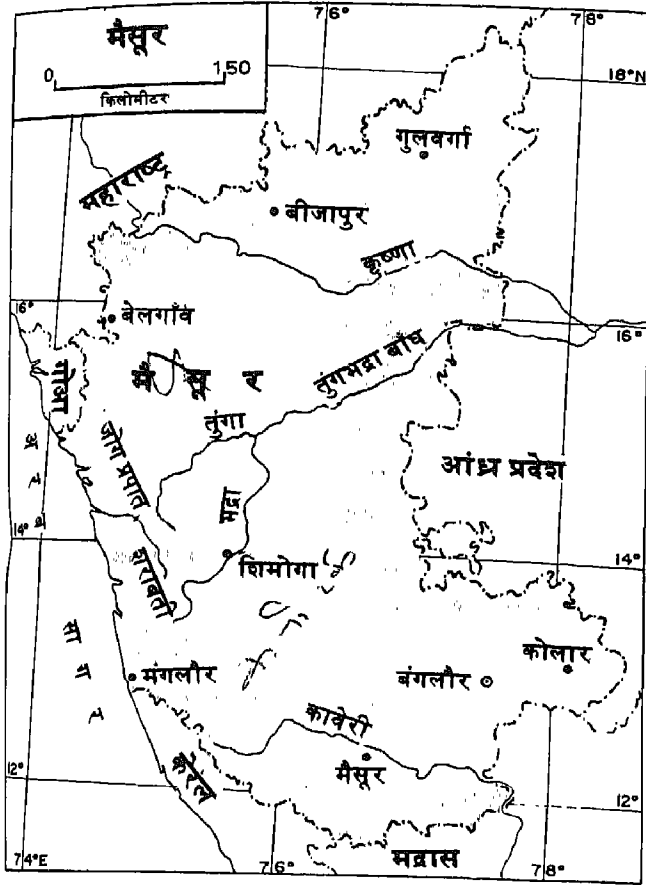
9. मैसूर

कल्याणी और मेरी दो भारतीय लड़कियाँ हैं। मेरी बंबई में रहती है और कल्याणी बँगलोर में। आजकल वे गोआ की सैर करने आई हुई हैं। अभी पानाजी में उनकी भेंट हुई है।

कल्याणी का गोआ आने का यह दूसरा अवसर है। इससे पहले वह बंबई भी जा चुकी है। गोआ और महाराष्ट्र के बारे में उसे बहुत-सी बातों की जानकारी है। तुम भी इन राज्यों के बारे में पढ़ चुके हो।

बँगलोर मैसूर राज्य की राजधानी है। मेरी बँगलोर नगर कभी नहीं गई। उसे

मैसूर राज्य के बारे में बहुत कम जानकारी है। तुम भी मैसूर राज्य और उसके लोगों के बारे में शायद अधिक नहीं जानते हो।

तो फिर आओ, मेरी और कल्याणी की बातचीत सुनें।

मेरी : गोआ का मौसम तो बड़ा सुहावना है।

कल्याणी : हाँ, मैसूर का मौसम भी बहुत सुहावना होता है।

मेरी : क्या तुम मैसूर राज्य में रहती हो?

कल्याणी : हाँ, और तुम महाराष्ट्र राज्य की रहनेवाली हो। क्यों ठीक है ना?

मेरी : हाँ, वैसे तो हम सब भारतीय हैं। लेकिन हमारा देश इतना बड़ा है कि हम एक दूसरे के राज्य के विषय में कम जानते हैं। मैं तुम्हारे राज्य के बारे में ही बहुत कम जानती हूँ। क्या तुम मुझे मैसूर के बारे में कुछ बातें बताओगी?

कल्याणी : अवश्य, बड़ी खुशी के साथ। देखो, यह मैसूर राज्य का मानचित्र है। आओ, इसे देखें। अच्छा बताओ मैसूर के पड़ोसी राज्य कौन-कौन-से हैं।

मेरी : मैसूर के पड़ोसी राज्य हैं—केरल, मद्रास, आंध्र, महाराष्ट्र और गोआ।

कल्याणी : ठीक है। अच्छा, आओ अब देखें कि मानचित्र में महाराष्ट्र और मैसूर राज्यों में क्या समानता दिखाई देती है।

मेरी : मानचित्र से एक तो यह पता चलता है कि महाराष्ट्र की तरह मैसूर भी अरब सागर के साथ लगता है।

कल्याणी : यह बात तो बिलकुल ठीक है। मैसूर का लंबा समुद्र-तट है। यहाँ पर समुद्र में मछलियाँ बहुत अधिक मिलती हैं। मैसूर के हज़ारों लोग मछलियाँ पकड़ने का धंधा करते हैं।

मेरी : मैसूर के किसान क्या-क्या फसलें उगाते हैं?

कल्याणी : मैसूर राज्य में अधिकतर लोगों का धंधा खेती-बाड़ी है। वे चावल, रागी, गन्ना और कपास उगाते हैं। इसके अतिरिक्त वे कॉफ़ी, तंबाकू, सुपारी, मूँगफली, नारियल और अंगूर की खेती भी करते हैं।

मेरी : इतनी सारी फसलें होती हैं मैसूर में? इसका अर्थ है कि वर्षा भी खूब होती होगी।

कल्याणी : हाँ, वर्षा हमारे यहाँ बहुत होती है। किसान बड़े-बड़े तालाबों में वर्षा का पानी जमा कर लेते हैं। इसी पानी से वे बाद में खेतों की सिंचाई करते हैं।

मेरी : क्या वे कुएँ और नलकूपों से सिंचाई नहीं करते?

कल्याणी : शायद तुमको मालूम होगा कि मैसूर राज्य की भूमि पथरीली और पहाड़ी है। वहाँ कुएँ खोदना या नलकूप लगाना कठिन होता है और मँहगा भी

पड़ता है। आजकल कुछ किसान बिजली से चलनेवाले पंप से तालाब का पानी खेतों में पहुँचाते हैं।

मेरी : क्या मैसूर के सभी गाँवों में बिजली पहुँच गई है ?

कल्याणी : सभी में तो नहीं, लेकिन मैसूर राज्य के अधिकतर गाँवों में बिजली है। यही नहीं, बिजली तो हम अपने पड़ोसी राज्यों को भी देते हैं। तुंगभद्रा बाँध और महात्मा गाँधी हाईड्रो-इलेक्ट्रिक वर्क्स, मैसूर में बिजली बनाने के दो बड़े केन्द्र हैं।

मेरी : मैसूर राज्य के गाँव कैसे होते हैं ?

कल्याणी : मैसूर के गाँव अक्सर बहुत साफ़-सुथरे होते हैं। अधिकतर गाँवों और शहरों के बीच में पक्की सड़कें हैं। मकान मिट्टी या पत्थर से बने होते हैं। लगभग प्रत्येक गाँव में एक तालाब, एक विश्राम-घर, मंदिर और स्कूल अवश्य होता है।

मेरी : तुम स्कूल में सामाजिक अध्ययन किस भाषा में पढ़ती हो ?

कल्याणी : सामाजिक अध्ययन तो हमें कन्नड़ भाषा में पढ़ाते हैं, लेकिन हम हिन्दी और अंग्रेज़ी भी पढ़ते हैं। हमारे राज्य के अधिकतर लोग कन्नड़ बोलते हैं। कुछ लोग तमिल, तेलुगू और मराठी भी बोलते हैं।

मेरी : मैसूर के लोगों का मुख्य भोजन क्या है ?

कल्याणी : अधिकतर लोग चावल और रागी खाते हैं। 'हितु' हमारा मन-पसंद भोजन है। हम दोसा और इडली भी चाव से खाते हैं।

मेरी : क्या तुम लोग मछली बिलकुल नहीं खाते ? तुम्हारे यहाँ तो तालाबों, नदियों और समुद्र में काफ़ी मछली मिलती है।

कल्याणी : क्यों नहीं। हमारे राज्य में बहुत-से लोग मछली खाते हैं। मछली तो हम भारत के अन्य भागों को भी भेजते हैं।

मेरी : क्या यह बात सच है कि मैसूर में तरह-तरह की सब्जियाँ, फल और फूल बहुत होते हैं ?

कल्याणी : यह तो बिलकुल सच है। हमारे राज्य में फलों के बहुत-से बाग़ हैं। इनमें बहुत-से लोग काम करते हैं। यहाँ अंगूर, संतरे, केले आदि फल बहुत होते हैं। इलायची के भी यहाँ बहुत-से बाग़ हैं। फूलों की तो हमारे राज्य में सदा बहार ही रहती है। मैसूर का 'वृंदावन बाग़' और बँगलोर का 'लाल बाग़' बहुत ही सुंदर दर्शनीय स्थान हैं। इन्हें हज़ारों लोग देखने जाते हैं।

मेरी : अच्छा, बहिन ! अब मैसूर के लोगों के पहनावे के बारे में कुछ बताओ।
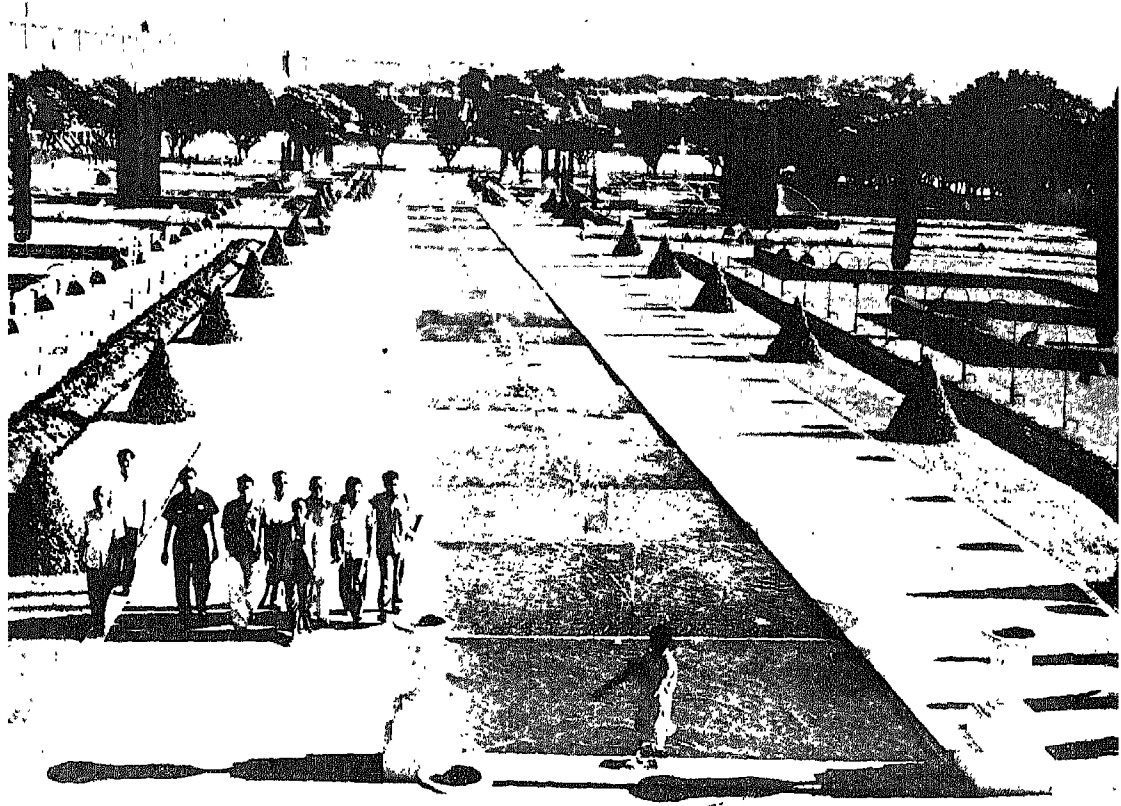
मैसूर का वृंदावन बाग़

कल्याणी :	मैसूर में स्त्रियाँ साड़ी के साथ बिना आस्तीन के तंग ब्लाउज़ पहनती हैं। उन्हें 'कुपसा' कहते हैं। अधिकतर स्त्रियाँ रेशम या रेशम और सूत के मिलेजुले कपड़े के 'कुपसे' पहनना पसंद करती हैं। पुरुष सूती धोती, कुर्ता पहनते हैं और कंधों पर 'अंगवस्त्र' डालते हैं। उनकी पगड़ी बड़ी शानदार होती है। वे इसे 'पेटा' कहते हैं।
मेरी :	तुम्हारे राज्य में रेशम बहुत होता है न ?
कल्याणी :	हाँ, कुछ भागों में लोग शहतूत के पत्तों पर रेशम के कीड़े पालते हैं और उनसे रेशम प्राप्त करते हैं।
मेरी :	यह तो मुझे मालूम है। मैसूर का हाथ का बुना रेशम बहुत ही प्रसिद्ध है। मेरी बड़ी बहिन के पास मैसूर के रेशम की बनी कई साड़ियाँ हैं।
कल्याणी :	केवल रेशम ही नहीं, मैसूर की कई और चीज़ें भी प्रसिद्ध हैं। चंदन के पेड़ों का तो यहाँ घर है। मैसूर का चंदन का साबुन, चंदन का तेल, चंदन के बने
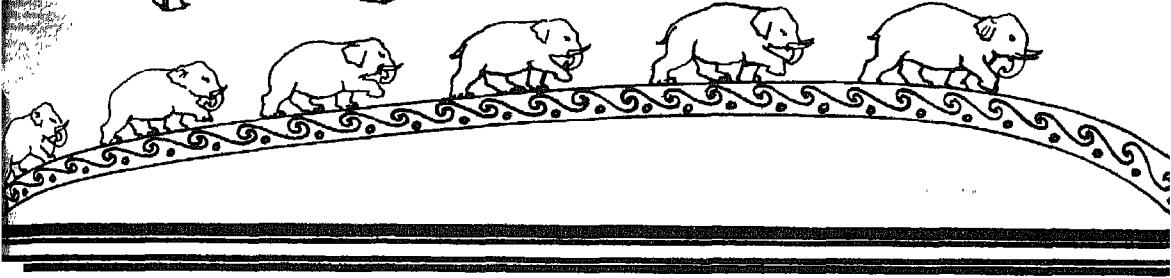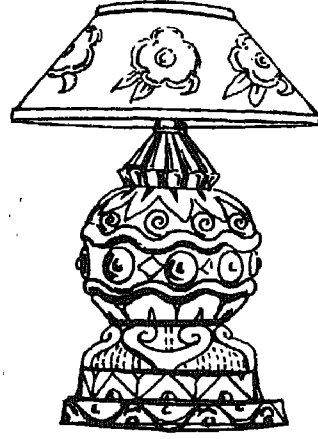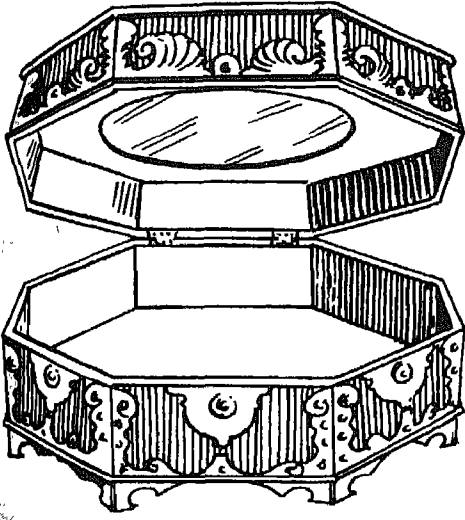
मैसूर की घरेलू दस्तकारी का सामान

खिलौने और अगरबत्तियाँ बहुत लोकप्रिय हैं। हमारे यहाँ हाथी-दाँत की सुंदर-सुंदर चीज़ें बनती हैं। बहुत-से लोग इन घरेलू दस्तकारियों में काम करते हैं।

हमारे यहाँ बड़े-बड़े कारखाने भी हैं। बँगलोर में 'हिन्दुस्तान मशीन टूल्स' तथा हवाई जहाज़ और टेलीफ़ोन बनाने के कारखाने हैं। इन कारखानों में हज़ारों लोग काम करते हैं। इनमें भारत के भिन्न-भिन्न राज्यों के लोग भी हैं। कुछ लोग दूसरे देशों के भी हैं। ये सब लोग बँगलोर में रहते हैं। बँगलोर एक बहुत साफ़-सुथरा और सुंदर नगर है।

मेरी : बँगलोर नगर तथा मैसूर राज्य के अन्य भागों को देखने की मेरी बड़ी इच्छा है।

कल्याणी : बहिन, जब भी तुम्हारा आने का मन हो मुझे पत्र लिख देना।

मेरी : अच्छा बहिन, यह तो बताओ कि मैसूर राज्य की सैर करने के लिए सब से अच्छा समय कौन-सा है ?

कल्याणी : मैसूर की रौनक दशहरे के आस-पास देखने योग्य होती है। दशहरा मैसूर राज्य का सबसे प्रसिद्ध और रंगीन त्योहार है। मैसूर नगर का दशहरा देखने के बाद या इससे पहले तुम दूसरे स्थानों की सैर कर सकती हो। कोलार में सोने की खानें हैं। यह स्थान बँगलोर के पास ही है। कोलार की सोने की खानें संसार में सबसे गहरी हैं।

मेरी : बहिन, इतनी सारी बातें बताने के लिए तुम्हारा बहुत-बहुत धन्यवाद ! मैं कभी न कभी मैसूर अवश्य आऊँगी। अच्छा नमस्ते !

कल्याणी : नमस्ते !

बँगलोर का हवाई जहाज बनाने का कारखाना

अब बताओ

1. मैसूर राज्य के लोगों के मुख्य धंधे क्या हैं?
2. मैसूर की मुख्य फसलों के नाम बताओ।
3. मैसूर में लोग खेतों की सिंचाई किस प्रकार करते हैं?
4. किन्हीं ऐसी चार चीज़ों के नाम बताओ जिनके लिए मैसूर प्रसिद्ध है।
5. नीचे लिखे वाक्यों में खाली स्थान भरो:
   (क) मैसूर का चंदन और ———— बहुत प्रसिद्ध हैं।
   (ख) मैसूर की रौनक ———— के आस-पास देखने योग्य होती है।
   (ग) कोलार की सोने की खानें संसार में ———— हैं।
   (घ) मैसूर में समुद्र-तट के पास रहनेवाले लोगों को ———— खाना बहुत पसंद है।
   (ङ) मैसूर राज्य से ———— और ———— अन्य राज्यों को भेजे जाते हैं।

कुछ करने को

1. मैसूर नगर का दशहरा, वृंदावन बाग़, चौमुंडी हिल और मैसूर राज्य के प्रसिद्ध कारखानों के चित्र इकट्ठे करो।
2. मेरी और कल्याणी की बातचीत का नाटक खेलो।
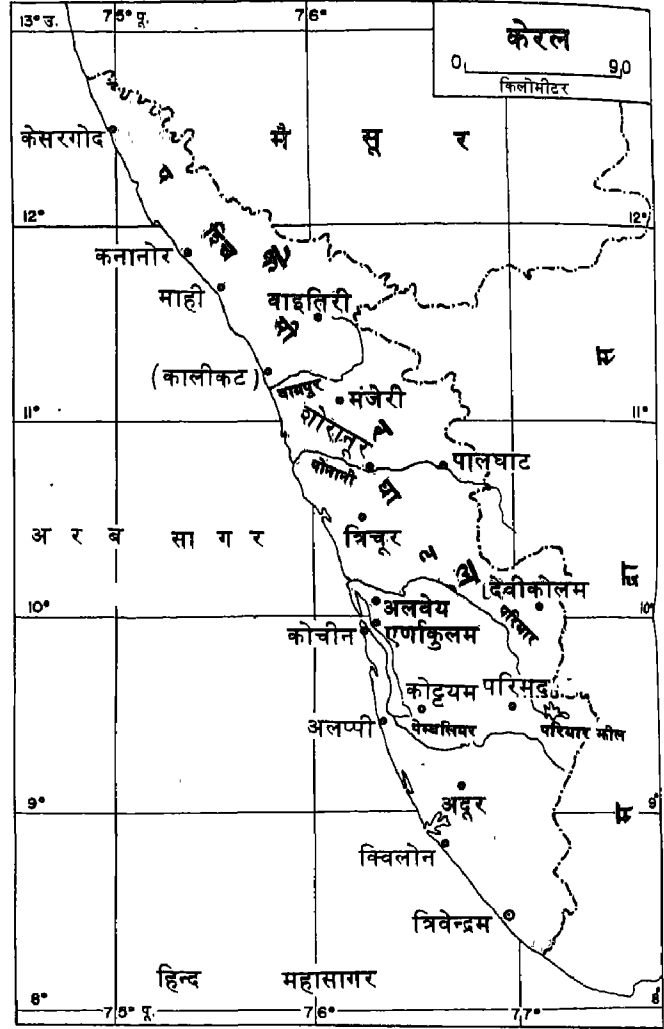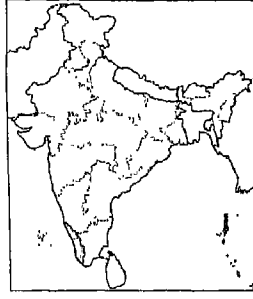
10. केरल

दूर दक्षिण में अरब सागर से लगा हुआ हमारा केरल राज्य है। यह एक छोटा-सा राज्य है। इस प्रदेश में सभी जगह हरियाली दिखाई देती है। यहाँ की पहाड़ियों, घाटियों,

झीलों तथा समुद्र-तट ने इसे बहुत सुंदर बनाया है।

आओ, आज हम केरल में रहनेवाले एक बालक से तुम्हारा परिचय कराएँ। तुम्हारे इस मित्र का नाम है---कृष्णन नायर। मेरे पत्र के उत्तर में कृष्णन नायर ने अपने दैनिक जीवन के बारे में तुम्हें एक पत्र लिखा है। इससे तुम्हें पता चलेगा कि उसके जीवन में और तुम्हारे जीवन में कितनी समानता है और कितनी भिन्नता है। लो, यह पत्र पढ़ो :

प्रिय मित्रो,

मेरा नाम कृष्णन नायर है। मैं केरल राज्य में रहता हूँ। यह छोटा-सा राज्य अरब सागर और पश्चिमी घाट के पहाड़ों के बीच है। हमारे इस राज्य में कोचीन से त्रिवेन्द्रम तक तट के पास जगह-जगह पर रुका हुआ पानी दिखाई देगा। देखने में यह झीलों की कतार मालूम पड़ता है। वास्तव में ये झीलें नहीं हैं। यह समुद्र का पानी है। हम इन्हें 'अनूप' कहते हैं। ये अनूप नहरों द्वारा आपस में मिले हुए हैं। राज्य के विभिन्न भाग अनूपों और नहरों द्वारा मिले हुए हैं। इनमें नावें चलती हैं। नाव द्वारा लोग एक स्थान से दूसरे स्थान को आते-जाते हैं। सामान भी नावों द्वारा भेजा जाता है। अनूपों का पानी खारा है, इस कारण यह पीने के काम नहीं आता। परंतु अनूपों से हमें बहुत

एक अनूप

लाभ हैं। मछली के तो ये भंडार हैं। बहुत-से लोग यहाँ से मछली पकड़कर बाज़ार में बेचते हैं। ये लोग मछली पकड़ने के लिए एक विशेष प्रकार का जाल काम में लाते हैं। इस जाल को हम 'चीनी जाल' कहते हैं। मैं एक चित्र भेज रहा हूँ। इस चित्र में मछली पकड़ते हुए लोग दिखाए गए हैं।

अनूपों के दोनों ओर नारियल के पेड़ों की कतारें हैं। कहीं-कहीं तो पेड़ एक-दूसरे की ओर इतने झुके हुए हैं कि मानो गले मिल रहे हों। मेरा मकान भी ऐसे ही नारियल के पेड़ों के बीच बना है। मकान कच्चा है। इसकी छत ढालदार छप्पर की है। आँगन में तुलसी का पौधा और केले के पेड़ हैं। यहाँ अधिकतर ऐसे ही मकान बनते हैं।

मेरा घर छोटा है। हम झाड़-पोंछकर अपने घर को साफ़ रखते हैं। हमारे यहाँ गर्मी खूब पड़ती है, ठंडा फ़र्श अच्छा लगता है। हम फ़र्श पर बैठकर भोजन करते हैं और फ़र्श पर ही चटाई बिछाकर सोते हैं।

हम लोग सफ़ाई बहुत पसंद करते हैं। अधिकतर लोग दिन में दो बार नहाते हैं। नहाते समय हम कपड़े भी धोते हैं। हम लोग अधिकतर सफ़ेद कपड़े पहनना पसंद करते हैं। मेरी माताजी सफ़ेद धोती और ब्लाउज़ पहनती हैं। कभी-कभी रंगीन धोती भी पहनती हैं। उनको गहनों का शौक नहीं है। वे बालों के जूड़े में फूल अवश्य लगाती हैं। मेरे पिताजी लुंगी की तरह छोटी धोती पहनते हैं। इसे हम 'मुंडु' कहते हैं। जब पिताजी शहर जाते हैं तो धोती और कुर्ता पहनते हैं।

मैं तुम्हारी तरह नेकर और कमीज़ पहनता हूँ। मैं तुम्हें अपने यहाँ की वेश-भूषा का चित्र भेज रहा हूँ। इस चित्र को देखकर तुम समझ जाओगे कि तुम्हारी वेश-भूषा में और हमारी वेश-भूषा में क्या अंतर है।

सवेरे नहा-धोकर और नाश्ता करके मैं स्कूल चला जाता हूँ। मेरे बड़े और छोटे भाई-बहिन भी स्कूल चले जाते हैं। घर पर माताजी और मेरी बड़ी बहिन भात, साँभर, रसम, इडली, दोसा आदि बनाती हैं। स्कूल से आते ही मुँह-हाथ धोकर खाने के लिए तैयार हो जाता हूँ। माताजी मुझे केले के पत्ते पर मछली, चावल आदि खाने को देती हैं। खाने की ये चीज़ें मुझे बहुत अच्छी लगती हैं। हमारे भोजन में नारियल का कई प्रकार से प्रयोग होता है। मछली नारियल के तेल में पकाई जाती है। कभी-कभी माताजी नारियल के दूध में चावल-मेवा आदि डालकर खीर बनाती हैं। यह खाने में बहुत अच्छी लगती है। इसे हम 'पायसम' कहते हैं। भोजन के बाद मुझे कभी-कभी आम खाने को मिलता है। आम यहाँ के बाग़ों में खूब होता है। केला तो हम कई प्रकार से खाते हैं। पके हुए केले को भाप में भूनकर खाने में बड़ा आनंद आता है। हम पानी को उबालकर पीते हैं। मैं सोडा-लेमन नहीं पीता। मुझे 'नीरा' पसंद है। यह ताड़ के पेड़ से मिलती है।

हमारे यहाँ अधिकतर लोग चावल की खेती करते हैं। चावल की खेती के लिए अधिक पानी की आवश्यकता होती है। पानी की यहाँ कमी नहीं, क्योंकि वर्षा तो पूरे साल भर होती है। रुके हुए पानी में धान बोया जाता है। जब धान का पौधा पानी के ऊपर थोड़ा-सा दिखाई देने लगता है, तब उसे दूसरे स्थान पर लगा दिया जाता है।

मेरे गाँव के समीप काली मिर्च, इलायची, लौंग, अदरक, सुपारी और काजू के बाग़ हैं। मेरे चाचा काजू के बाग़ में काम करते हैं। अन्य लोग भी बाग़ों में काम करने आते हैं। बाग़ों में पैदा होनेवाली चीज़ें नाव द्वारा बड़े-बड़े शहरों तक पहुँचाई जाती हैं। वहाँ से ये चीज़ें देश के अन्य भागों को भेजी जाती हैं। ये चीज़ें विदेशों को भी जाती हैं।

हमारे राज्य में रबड़ के पेड़ों के बाग़ लगाए गए हैं। रबड़ के पेड़ के तने को चाकू से काट देने पर रस निकलता है। इस रस को बर्तनों में इकट्ठा करते हैं। फिर इस रस को कारखाने में भेज देते हैं। कारखाने में इस रस
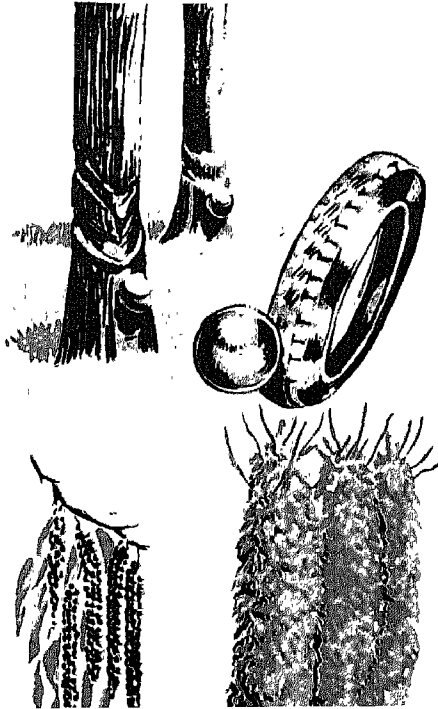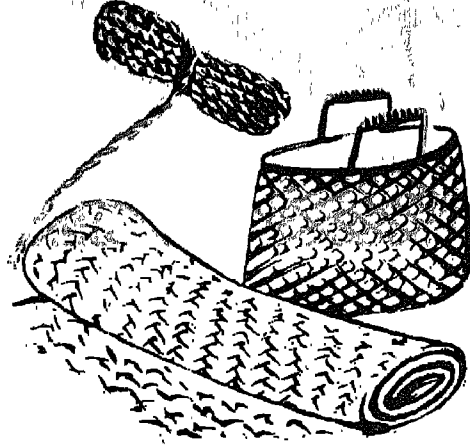
से रबड़ तैयार किया जाता है। रबड़ से बनी बहुत-सी चीज़ों का तुम रोज़ इस्तेमाल करते हो। रबड़ के काम में हज़ारों लोग लगे हैं। अब हमारे राज्य में सरकार ने कागज़ और खाद के बड़े कारखाने भी खोल दिए हैं।

केरल को 'नारियल का घर' कहा जाता है। यहाँ नारियल बहुत पैदा होता है। हमारा कच्चा नारियल और गोला देश के सभी बाज़ारों में बिकता है। नारियल के रेशे से रस्सी, चटाई, टोकरी आदि बनाते हैं। अब तो नारियल के रेशे से कारखानों में 'मैटिंग' बनाई जाती हैं। बहुत-से लोग अपनी रोज़ी नारियल से ही कमाते हैं।

हमारे यहाँ सभी लोग 'मलयालम' बोलते हैं। यहाँ पर अंग्रेज़ी का भी खूब प्रचार है। आजकल हमारे स्कूलों में हिन्दी भी पढ़ाई जाती है। मैंने भी हिन्दी सीखना शुरू

ओणम पर नौका-दौड़
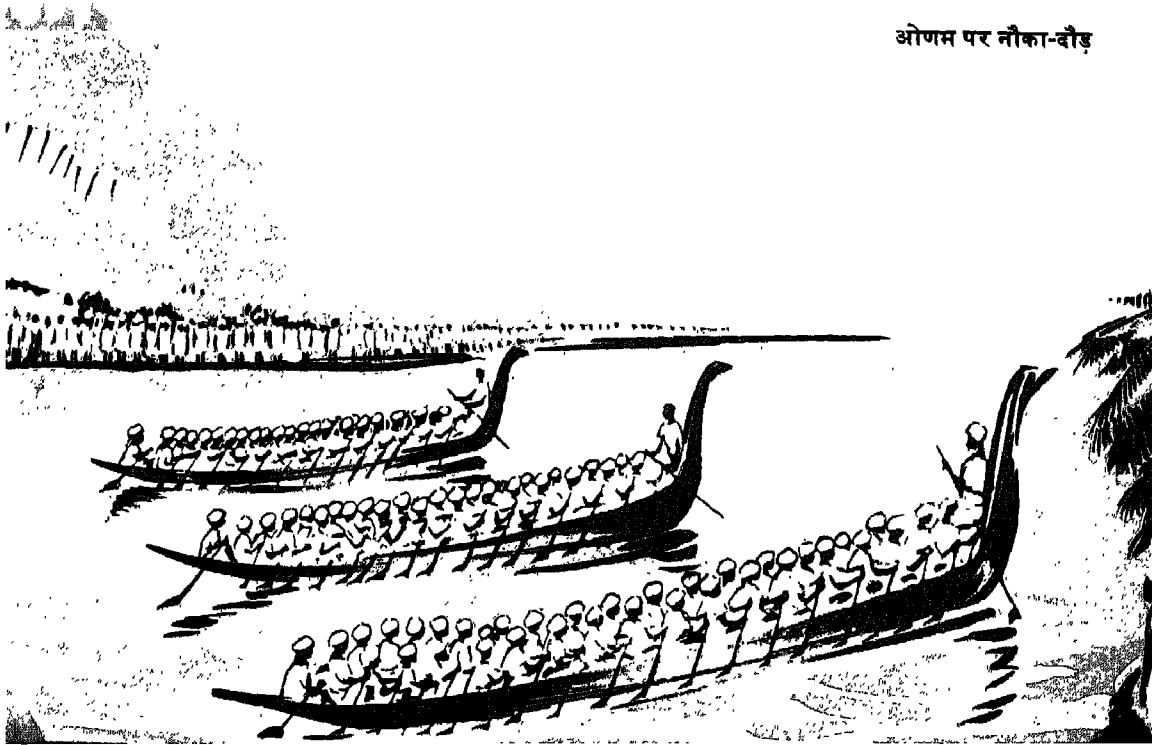
कर दिया है, इसलिए अपना पत्र हिन्दी में लिखा है।

हमारे राज्य की राजधानी त्रिवेन्द्रम समुद्र के किनारे पहाड़ी पर स्थित है। यह नगर देखने में बहुत सुंदर है। यहाँ बहुत-से सरकारी दफ़्तर हैं, जिनमें हज़ारों लोग काम करते हैं। यहाँ का चित्रालय, अजायबघर और चिड़ियाघर तो देखने योग्य हैं।

जिस प्रकार तुम होली, दीवाली, दशहरा आदि त्योहार मनाते हो, उसी प्रकार हम भी कई त्योहार मनाते हैं। हमारा सबसे प्रसिद्ध त्योहार 'ओणम' है। ओणम का त्योहार कई दिन तक चलता है। इस त्योहार को मनाने के लिए मैं और मेरे छोटे बहिन-भाई फूल इकट्ठे करते हैं। अगले दिन लक्ष्मी की पूजा करने के लिए घर के बाहर गोबर से लीपते हैं। मेरी बहनें फूलों से रँगोली बनाती हैं। फूलों से बनी रँगोली बहुत सुंदर लगती है।

त्योहार के दिन हम सब नए-नए कपड़े पहनते हैं और नौका की दौड़ देखने जाते हैं। अनूप के किनारे खड़े होकर सर्पाकार नावों को दौड़ते हुए देखने में बड़ा आनंद आता है। सायंकाल मेरी बहिनें ताली बजाकर नाचती और गाती हैं। तुम्हारी तरह हम भी दशहरा मनाते हैं। इस दिन हम सरस्वती की पूजा करते हैं। कहीं-कहीं लोग नागपूजा भी करते हैं।

नाचना-गाना तो हमारे जीवन का अंग है। इसे लगभग सभी लोग जानते हैं। हमारे लोकगीतों में प्रकृति की सुंदरता का वर्णन होता है। 'कथकली' के विषय में तुमने सुना ही होगा। यह हमारे यहाँ का मुख्य नृत्य है और सारे भारत में प्रसिद्ध है। इस नाच में नाचनेवाले नकली चेहरा लगाते हैं।

क्या तुम केरल राज्य देखना चाहोगे ?

तुम्हारा मित्र,
कृष्णन नायर

कथकली-नर्तक

अब बताओ

1. केरल को 'नारियल का घर' क्यों कहते हैं ?
2. अनूप किसे कहते हैं ? केरलवासियों को अनूप से क्या लाभ है ?
3. केरल में अधिकतर मकान किस चीज़ के बनाए जाते हैं ? क्यों ?
4. केरल के लोगों के मुख्य धंधे बताओ ।
5. जम्मू-कश्मीर और केरल राज्यों के संबंध में नीचे कुछ बातें दी गई हैं। इनमें से जो केरल राज्य के लिए सही हैं उनके बाईं तरफ दिए स्थान में 'केरल' लिखो और जो कश्मीर के लिए सही हों, उनके सामने 'कश्मीर' लिखो । जो दोनों के लिए सही हों उनके सामने 'दोनों' लिखो :

   ____________ यहाँ मीठे पानी की झीलें हैं।
   ____________ यहाँ नारियल के पेड़ होते हैं।
   ____________ यहाँ के पहाड़ों पर बर्फ़ जमी रहती है ।
   ____________ यहाँ मछली पकड़ने का धंधा होता है ।
   ____________ यहाँ प्रकृति का सौन्दर्य देखने को मिलता है।
   ____________ यहाँ केले और उससे बनी चीज़ें बहुत खाई जाती हैं।

कुछ करने को

1. केरल राज्य के जीवन से संबंधित चित्र इकट्ठे करो ।
2. केरल राज्य का मिट्टी से मॉडल बनाकर उसके अनूप और उन्हें मिलानेवाली नहरें दिखाओ । साथ ही साथ यह भी दिखाओ कि अनूपों में पानी कहाँ से आता है ।
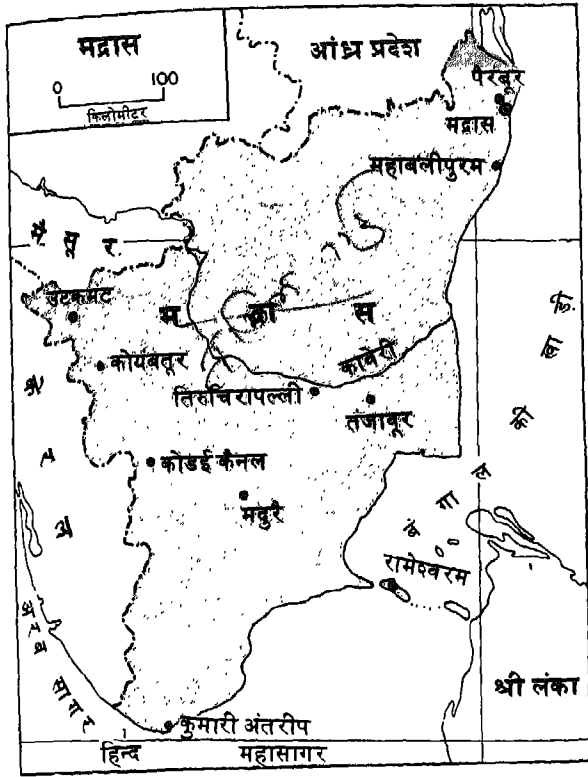
11. मद्रास

गणेशन मद्रास में रहता है। उसकी आयु लगभग दस वर्ष है। लक्ष्मी उसकी बहिन है। उसकी आयु आठ वर्ष है। उसके बाल लंबे तथा काले हैं और आँखें चमकीली हैं। वह ब्लाउज़ और रंगीन पेटीकोट में सुंदर लगती है। इस पेटीकोट को यहाँ के लोग 'पवाडे' कहते हैं। गणेशन कमीज़ और नेकर पहनता है। उसके पिताजी कमीज़ पहनते हैं और लुंगी जैसी छोटी धोती बाँधते हैं। माँ गहरे रंग की सूती या रेशमी साड़ी पहनती हैं।

लक्ष्मी और गणेशन सुबह नाश्ते में 'इडली' या 'उपमा' खाते हैं और कॉफ़ी पीते हैं। दोसा भी उन्हें बहुत पसंद है। इडली और दोसे चावल और दाल के बनाए जाते हैं। ये नारियल की चटनी और साँभर से खाने में अच्छे लगते हैं। भोजन के समय लक्ष्मी और गणेशन चावल, साँभर और रसम खाते हैं। भोजन में अक्सर घी, दही और केला भी होता है। मद्रास में रहनेवालों का ऐसा ही भोजन है। उन्हें कॉफ़ी पीने का भी शौक है।

अब पीछे दिया गया मानचित्र देखो। यह मानचित्र मद्रास राज्य का है। इसमें इसके पड़ोसी राज्य केरल, मैसूर और आंध्र प्रदेश भी दिखाए गए हैं। भारत के मानचित्र में तुम देखोगे कि मद्रास राज्य दक्षिण में बंगाल की खाड़ी से लगा हुआ है। इस मानचित्र में तुम यह भी देखोगे कि भारत का सबसे दक्षिणी सिरा कुमारी अंतरीप है। इसे कन्या कुमारी भी कहते हैं। इसकी स्थिति उस स्थान पर है जहाँ अरब सागर, हिन्द महासागर और बंगाल की खाड़ी मिलते हैं।

मद्रास राज्य में समुद्र-तट लंबा है। इसी भाग में मद्रास नगर है। मद्रास ही राज्य की राजधानी है। गणेशन और लक्ष्मी को मद्रास नगर अच्छा लगता है। यह नगर सुंदर और बड़ा है। यहाँ ऊँचे-ऊँचे भवन और चौड़ी सड़कें हैं। भारत में सबसे लंबा समुद्र-तट यहाँ पर ही है। बहुत-से लोग समुद्र-तट पर घूमने जाते हैं। गणेशन और लक्ष्मी को तट पर बालू में घूमना और समुद्र की लहरें देखना अच्छा लगता है।

मद्रास राज्य की जलवायु अधिकतर गर्म है। पूरे साल लोग सूती कपड़े पहनते हैं। गर्म कपड़े पहनने की यहाँ जरूरत नहीं होती। वर्षा लगभग पूरे साल होती है लेकिन अधिक वर्षा अक्तूबर और नवंबर में होती है।

गणेशन और लक्ष्मी साल में एक या दो बार अपने दादा-दादी से मिलने जाते हैं।

धान कूटती हुई स्त्रियाँ

वे गाँव में रहते हैं। गाँव तंजावूर के समीप कावेरी नदी के किनारे है। गाँव में उनका घर ईंट और मिट्टी का बना है। बहुत-से लोग कच्चे मकानों में रहते हैं। ये मकान बाँस और नारियल के पत्तों से बनाए जाते हैं।

मद्रास राज्य में अधिकतर लोग गाँव में रहते हैं और खेती करते हैं। उनकी मुख्य उपज चावल है। ये लोग ज्वार-बाजरा, तिल, कपास, गन्ना, तंबाकू और मूँगफली भी खेतों में पैदा करते हैं। नारियल, केला और आम यहाँ के मुख्य फल हैं। आजकल कुछ स्थानों पर अंगूर भी पैदा किया जाने लगा है। सिंचाई के लिए वर्षा का पानी तालाबों में इकट्ठा किया जाता है। क्या तुम इसका कारण जानते हो ? कुछ स्थानों पर कुओं से भी खेतों की सिंचाई की जाती है।

मद्रास राज्य में समुद्र-तट के समीप नारियल बहुत होता है। यहाँ के लोग नारियल का कई प्रकार से प्रयोग करते हैं। वे कच्चा नारियल खाते हैं और सूखे नारियल से तेल बनाते हैं। नारियल के रेशे से चटाई और ब्रुश बनाए जाते हैं।

समुद्र-तट के समीप रहनेवाले लोग मछली पकड़कर बेचते हैं और अपना निर्वाह करते हैं। आजकल मछली पकड़ने के लिए मशीन से चलनेवाली नाव का प्रयोग किया जाता है।

गणेशन के पिता पैरंबूर में 'इंटीग्रल कोच फ़ैक्टरी' में काम करते हैं। यहाँ रेल के

इंटीग्रल कोच फ़ैक्टरी का एक दृश्य
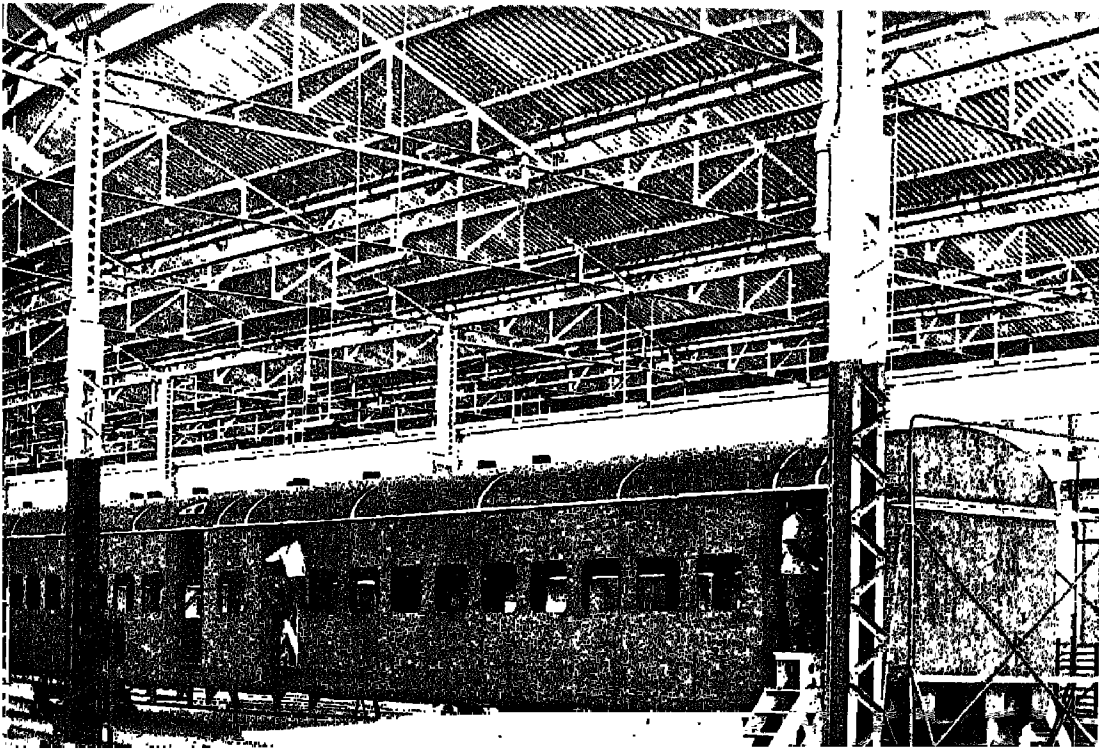
डिब्बे बनाए जाते हैं। मद्रास राज्य में नेयवेली एक बड़ा औद्योगिक केन्द्र है। यहाँ के छोटे-बड़े कारखानों में हज़ारों लोग काम करते हैं। इन कारखानों में काम करने के लिए लोग दूसरे राज्यों से भी आते हैं।

गणेशन और लक्ष्मी राज्य के सभी बड़े-बड़े प्रसिद्ध स्थान देख चुके हैं। महाबलीपुरम के मंदिर तो वे कई बार देख आए हैं। उन्होंने मदुराइ का मीनाक्षी मंदिर, तंजावूर और रामेश्वरम् के शिव मंदिर भी देख लिए हैं। पिछले महीने वे तिरुचिरापल्ली का श्रीरंगम मंदिर देखने गए थे। अगली गर्मियों में वे कोडेक्कानल (कोडईकैनल) अथवा ओत्तकमंदू (उटकमंड) जाएँगे। ये दोनों मद्रास राज्य के पहाड़ी स्थान हैं। ओत्तकमंदू को ऊटी भी कहते हैं। यह स्थान नीलगिरि की पहाड़ियों में है। देखने में यह एक बड़ा-सा बाग़ मालूम पड़ता है। इन पहाड़ियों की ऊँची ढालों पर चाय और नीची ढालों पर कॉफ़ी पैदा की जाती है।

मद्रास राज्य का सबसे बड़ा त्योहार पोंगल है। यह फसल काटने के बाद मनाया जाता है और तीन दिन तक चलता है। किसान अपने घरों की मरम्मत और सफ़ेदी भी करवाते हैं। स्त्री, पुरुष और बच्चे सभी नए-नए कपड़े पहनते हैं, नाचते-गाते हैं और आनंद मनाते हैं। पोंगल के अवसर पर लोग दूध चावल और गन्ने के रस से खीर बनाते

महाबलीपुरम में सागर तीर पर मंदिर
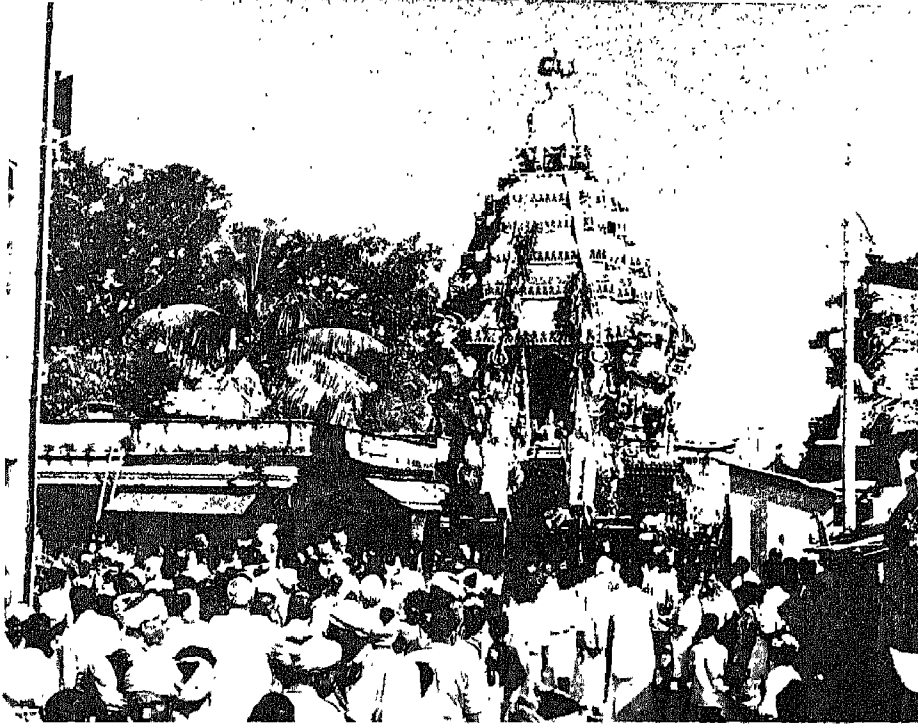
एक मंदिर के सामने उत्सव

हैं। इस अवसर पर पशुओं को सजाया जाता है। उनके शरीर पर रंगों से चित्रकारी की जाती है। त्योहार के अंतिम दिन सायंकाल पशुओं का एक जुलूस निकाला जाता है। गणेशन और लक्ष्मी को पोंगल त्योहार में भाग लेना अच्छा लगता है। नवरात्रि और दीवाली यहाँ के दूसरे बड़े त्योहार हैं।

मद्रास का 'भरत नाट्यम' नृत्य देश के सभी भागों में प्रसिद्ध है।

भरत नाट्यम की एक मुद्रा

अब बताओ

1. मद्रास राज्य में रहनेवाले लोगों के मुख्य धंधे कौन-कौन-से हैं ?
2. मद्रास राज्य की मुख्य फसलों और फलों के नाम बताओ।
3. मद्रास में रहनेवालों को नारियल से क्या लाभ है ?
4. मद्रास राज्य का भ्रमण करते समय तुम कौन-से स्थान देखना पसंद करोगे और क्यों ?
5. नीचे लिखे वाक्यों को पूरा करो :
   (क) ———— भारत भूमि का अंतिम सिरा है।
   (ख) मद्रास का प्रसिद्ध नृत्य ———— है।
   (ग) मद्रास का सबसे प्रसिद्ध त्योहार ———— है।
   (घ) ———— मद्रास का एक बड़ा औद्योगिक केन्द्र है।

कुछ करने को

1. मद्रास राज्य के मानचित्र में निम्नलिखित देखो :
   मद्रास, उटकमंड, पैरंबूर, कोडईकैनल, महाबलीपुरम, कुमारी अंतरीप, कावेरी, तिरुचिरापल्ली और तंजावूर।
2. अपने आप को मद्रास में रहनेवाला बालक या बालिका समझकर कश्मीर में रहनेवाले अपने मित्र को पत्र लिखो जिसके द्वारा उसे मद्रास के जीवन के विषय में जानकारी कराओ।
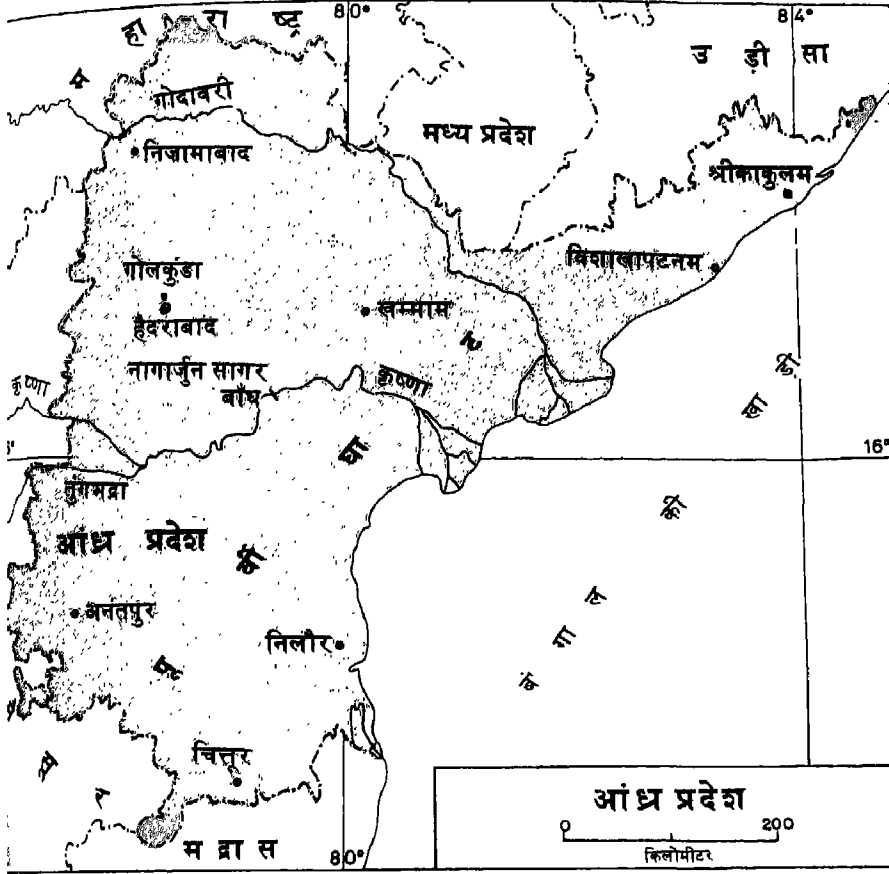
12. आंध्र प्रदेश

राघव रेड्डी की आयु बारह वर्ष है। वह अपने माता-पिता के साथ दिल्ली में रहता है। उसके दादा-दादी आंध्र प्रदेश के निज़ामाबाद नगर में रहते हैं। पिछले महीने वह पहली बार अपने दादाजी से मिलने गया था। वहाँ उसने अपने राज्य आंध्र प्रदेश के बारे में बहुत-सी बातें जानीं। आओ, राघव से उसकी यात्रा का वर्णन सुनें।

"मैं अभी आंध्र प्रदेश की यात्रा करके आया हूँ। मैं इसे यात्रा ही कहता हूँ क्योंकि मैं राज्य के सभी महत्त्वपूर्ण स्थान देखकर आया हूँ।

आंध्र प्रदेश हमारे देश का एक बड़ा राज्य है। इस राज्य के उत्तर में उड़ीसा, मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र राज्य हैं। पश्चिम में मैसूर राज्य है, दक्षिण में मद्रास राज्य है। इस राज्य के पूर्व में बंगाल की खाड़ी है। इसका समुद्र-तट लंबा है, परंतु इस राज्य

का अधिक भाग पूर्वी घाट और पठारी क्षेत्र में है।

आंध्र प्रदेश में कई नदियाँ बहती हैं। ये पश्चिम से पूर्व की ओर बहकर बंगाल की खाड़ी में गिरती हैं। गोदावरी यहाँ की सबसे बड़ी नदी है। दूसरी बड़ी नदी कृष्णा है। इन नदियों के डेल्टे की भूमि बहुत उपजाऊ है। यहाँ चावल बहुत होता है। यहाँ से चावल देश के दूसरे राज्यों को भी भेजा जाता है। कृष्णा नदी पर नागार्जुनसागर बाँध बनाया जा रहा है। इसका पानी सिंचाई करने और बिजली बनाने के काम में लाया जाएगा।

आंध्र की सभी नदियों का बहाव तेज़ है। बरसात के दिनों में इनमें अक्सर बाढ़ आ जाती है। वैसे इन नदियों में पानी की कमी रहती है। इसलिए बरसात में लोग तालाबों में वर्षा का पानी इकट्ठा कर लेते हैं। तालाब हर गाँव में होता है। आंध्र प्रदेश की राजधानी हैदराबाद में ऐसे तीन-चार तालाब हैं। ये तालाब बड़े हैं और सागर कहलाते हैं। हैदराबाद का हुसैन सागर बहुत प्रसिद्ध है।

निज़ामाबाद में जहाँ मेरे दादा-दादी रहते हैं, मैंने कई बड़ी-बड़ी इमारतें देखीं। इनमें से कुछ की दीवारें पत्थर की और छतें खपरैल की बनी थीं। मेरी दादी मुझे बहुत प्यार करती हैं। नाश्ते के लिए वे मुझे बहुत मज़ेदार दोसे और इडली बनाकर देती थीं। भोजन में मुझे चावल, साँभर और सब्ज़ी मिलती थी। रसम, पापड़ और आम का अचार
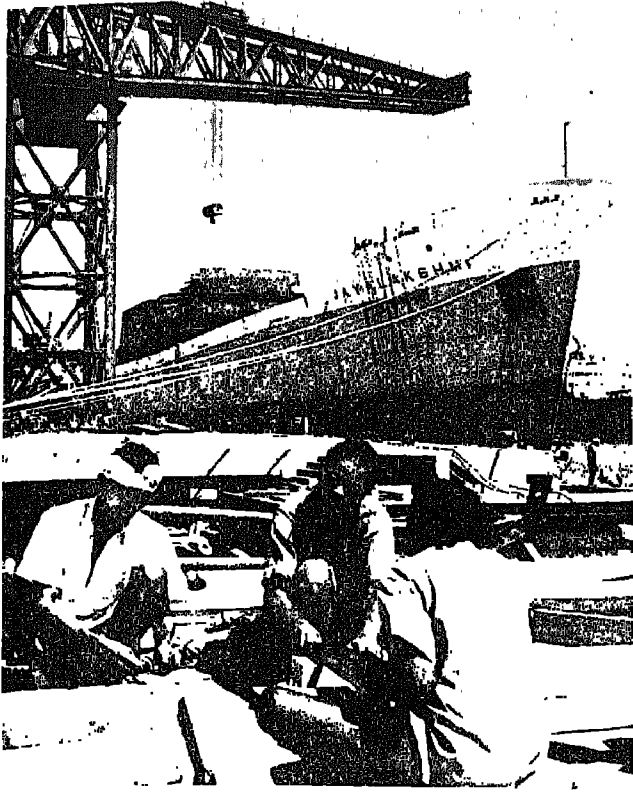
विशाखापटनम और वहाँ बना 'जयलक्ष्मी' जहाज़

मुझे बहुत अच्छा लगता था। एक दिन हम अपने एक संबंधी से मिलने गाँव गए। वहाँ उन्होंने मुझे ज्वार की रोटी, चटनी और तली हुई मछली खाने के लिए दी।

मुझे कुछ दूसरे गाँवों में जाने का अवसर भी मिला। वहाँ मैंने नीम, साल, इमली, आम और केले के पेड़ और अंगूर की बेलें देखीं। आंध्र प्रदेश में अधिकतर लोग खेती करते हैं। वे अपने खेतों में चावल, ज्वार, तंबाकू, गन्ना, मूँगफली, मिर्च और हल्दी पैदा करते हैं। वे गाय, भैंस, भेड़ और बकरी भी पालते हैं। स्त्रियाँ खेती के काम में भी पुरुषों की सहायता करती हैं। तटीय क्षेत्र में लोग मछली पकड़ते हैं। यहाँ से सूखी मछली देश के भिन्न-भिन्न भागों को भेजी जाती हैं।

आंध्र की स्त्रियाँ रंगीन धोती और चोली पहनती हैं। वे अपने बालों को फूलों से सजाती हैं। लड़कियाँ स्कर्ट और ब्लाउज़ में सुंदर लगती हैं। उन्हें ज़ेवर पहनने का भी शौक है। पुरुष धोती बाँधते हैं और कुर्ता पहनते हैं। हैदराबाद में बहुत-से लोग पायजामा और अचकन पहनते हैं।

एक दिन मेरा एक मित्र मुझे एक प्राइमरी स्कूल में ले गया। उस स्कूल में लड़के

गोलकुंडा का किला

तेलुगू भाषा पढ़ रहे थे। आंध्र राज्य में अधिकतर लोग तेलुगू भाषा ही बोलते हैं। कुछ लोग उर्दू भी बोलते हैं। यहाँ कुछ लोग तमिल, कन्नड़, मराठी, उड़िया और हिन्दी भी बोलते हैं।

आंध्र प्रदेश की यात्रा में मुझे विशाखापटनम जाने का अवसर भी मिला था। विशाखापटनम एक बंदरगाह है। मैंने यहाँ के जहाज़ बनाने और तेल साफ़ करने के प्रसिद्ध कारखाने देखे हैं। हैदराबाद तंबाकू और सूती कपड़ा उद्योग के लिए प्रसिद्ध है। मेरी दादी ने यहाँ से मेरे लिए लकड़ी के खिलौने और बीदरी के कामवाले फूलदान खरीदे। मेरी माताजी के लिए उन्होंने हाथकरघे की बनी साड़ियाँ खरीदीं। हम यहाँ चारमीनार, गोलकुंडा का किला और सालारजंग का अजायब घर भी देखने गए। मेरे दादा भगवान वेंकटेश्वर के भक्त हैं। वे मुझे तिरुपति का वेंकटेश्वर मंदिर दिखाने ले गए।

आंध्र प्रदेश के लोग कई त्योहार मनाते हैं। इनमें संक्रांति, विनायक-चतुर्थी, दशहरा, दीवाली और ईद मुख्य हैं। त्योहार के दिन लोग नए कपड़े पहनते हैं और पकवान खाते हैं।

आंध्र की यात्रा में मुझे बड़ा आनंद आया। यहाँ सभी बड़े-बड़े नगर रेल और सड़क द्वारा एक दूसरे से मिले हुए हैं। मेरे दादाजी ने मुझसे वादा किया है कि अगली बार वे मुझे सिंगरेनी की कोयले की खानें, निलोर में अभ्रक की खानें और अनंतपुर में सोने की खानें दिखाने ले जाएँगे।"

अब बताओ

1. आंध्र प्रदेश के रहनेवाले लोगों के मुख्य धंधे क्या हैं?
2. आंध्र प्रदेश के कुछ प्रसिद्ध उद्योगों के नाम बताओ।
3. आंध्र प्रदेश के किस भाग की भूमि चावल की खेती के लिए अच्छी है? क्यों?
4. नीचे लिखे वाक्यों को पूरा करो :
   (क) आंध्र प्रदेश की सबसे बड़ी नदी ———— है।
   (ख) ———— आंध्र राज्य की राजधानी है।
   (ग) ———— आंध्र राज्य की नदी घाटी योजना है।
   (घ) ———— हैदराबाद का प्रसिद्ध अजायबघर है।
   (ङ) समुद्री जहाज़ बनाने का कारखाना ———— में है।

कुछ करने को

1. आंध्र प्रदेश राज्य के मानचित्र में निम्नलिखित देखो :
   गोदावरी, कृष्णा, हैदराबाद और विशाखापटनम।
2. चारमीनार, गोलकुंडा, सालारजंग अजायबघर और तिरुपति के वेंकटेश्वर मंदिर के चित्र एकत्र करो।
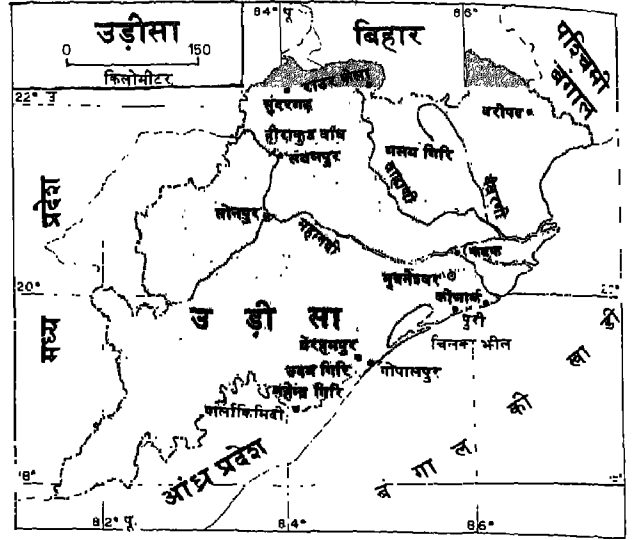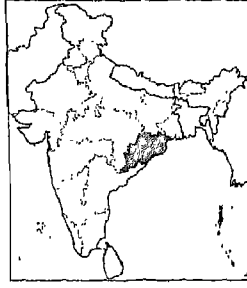
13. उड़ीसा

ऊपर दिए गए मानचित्र को देखो। यह मानचित्र हमारे उड़ीसा राज्य का है। यह राज्य पूर्व में बंगाल की खाड़ी से लगा हुआ है। बिहार, पश्चिमी बंगाल, मध्य प्रदेश और आंध्र प्रदेश इसके पड़ोसी राज्य हैं।

इस राज्य में भूमि सब जगह एक-सी नहीं है। इसके पश्चिमी भाग में पहाड़ियाँ हैं। ये पहाड़ियाँ उत्तर से दक्षिण की तरफ़ फैली हुई हैं। इन्हें पूर्वी घाट की पहाड़ियाँ कहते हैं। राज्य का उत्तरी और मध्य भाग पठारी है।

उड़ीसा राज्य में कई नदियाँ हैं। इन नदियों को मानचित्र में देखो। तुम देखोगे कि महानदी इस राज्य की सबसे बड़ी नदी है। यह नदी पूर्वी घाट में से होती हुई दक्षिण-पूर्व की ओर बहती है। नदियों ने पहाड़ियों और पठार को घिस-घिसकर घाटियाँ बना ली हैं। अधिकतर लोग इन्हीं घाटियों में रहते हैं और खेती करते हैं। नदियाँ बंगाल की खाड़ी में गिरने से पहले डेल्टा बनाती हैं। यह डेल्टा क्षेत्र पूर्वी समुद्र-तटीय मैदान का भाग है। इस मैदान की भूमि उपजाऊ है। आम और नारियल यहाँ बहुत होते हैं।

नदी-घाटियों की भूमि को छोड़कर सारा पूर्वी घाट और पठारी क्षेत्र जंगलों से घिरा हुआ है। हाथी, चीता, जंगली भैंसा जैसे जानवर इन जंगलों में रहते हैं। इन जंगलों से लाख प्राप्त होती है। लाख कुसुम नाम के पेड़ से प्राप्त होती है।
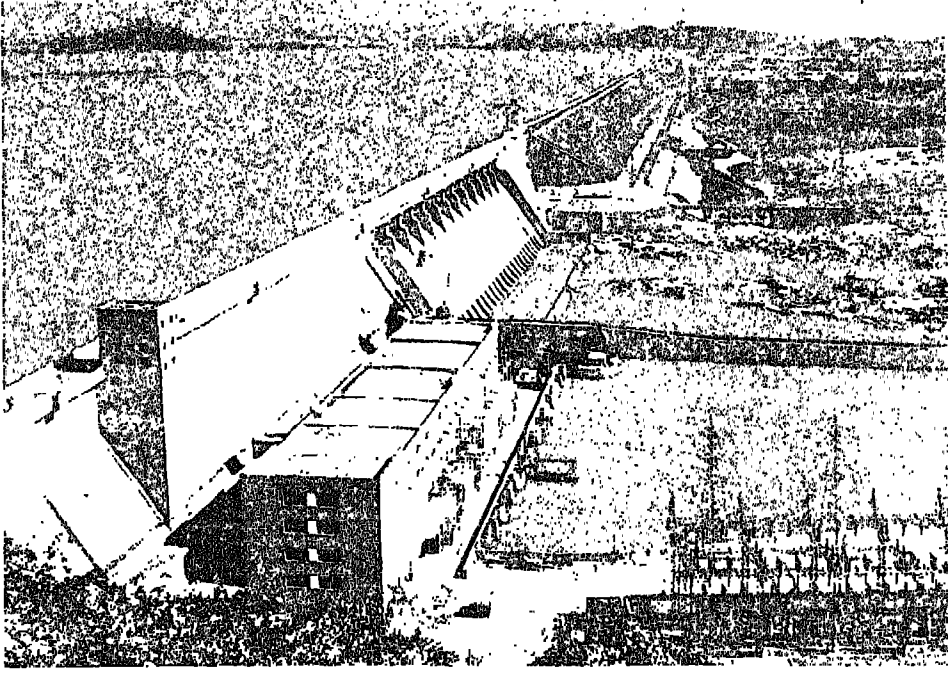
हीराकुड बाँध

उड़ीसा की जलवायु गर्मी के दिनों में गर्म और सर्दी के दिनों में ठंडी है। वर्षा अधिकतर जून से सितंबर तक होती है।

घाटियों में रहनेवाले लोग मुख्य रूप से चावल और शकरकंद की खेती करते हैं। तटीय मैदान की मुख्य उपज चावल, ज्वार और दालें हैं। आजकल यहाँ पटसन भी पैदा किया जाने लगा है। इस मैदान का उत्तरी भाग खेती के लिए अच्छा नहीं है। जानते हो क्यों ? यहाँ की मिट्टी में खार (नमक) है इसलिए पेड़-पौधे नहीं उग पाते। यहाँ केवल बेंत, सरकंडे और झाड़ियाँ उगती हैं। चिलका झील इसी भाग में है। इसका पानी खारा है। इस झील में मछली बहुत हैं। कुछ लोग झील और समुद्र से मछली पकड़कर बेचते हैं।

उड़ीसा में सिंचाई तालाबों, कुओं और नहरों से की जाती है। बरसात के दिनों में यहाँ नदियों में बाढ़ आ जाती है। बाढ़ रोकने के लिए महानदी पर संबलपुर के पास हीराकुड बाँध बनाया गया है। यह एक बहुत बड़ा बाँध है। इससे नदी का पानी रोककर सिंचाई करने और बिजली बनाने के लिए काम में लाया जाता है।

उड़ीसा में अधिकतर लोग गाँवों में रहते हैं। यहाँ नगर कम हैं। अधिकतर मकानों की छत ढलवाँ है। साधारणतया मकान छोटे होते हैं। परंतु लोग इन्हें झाड़-पोंछकर साफ़ रखते हैं।
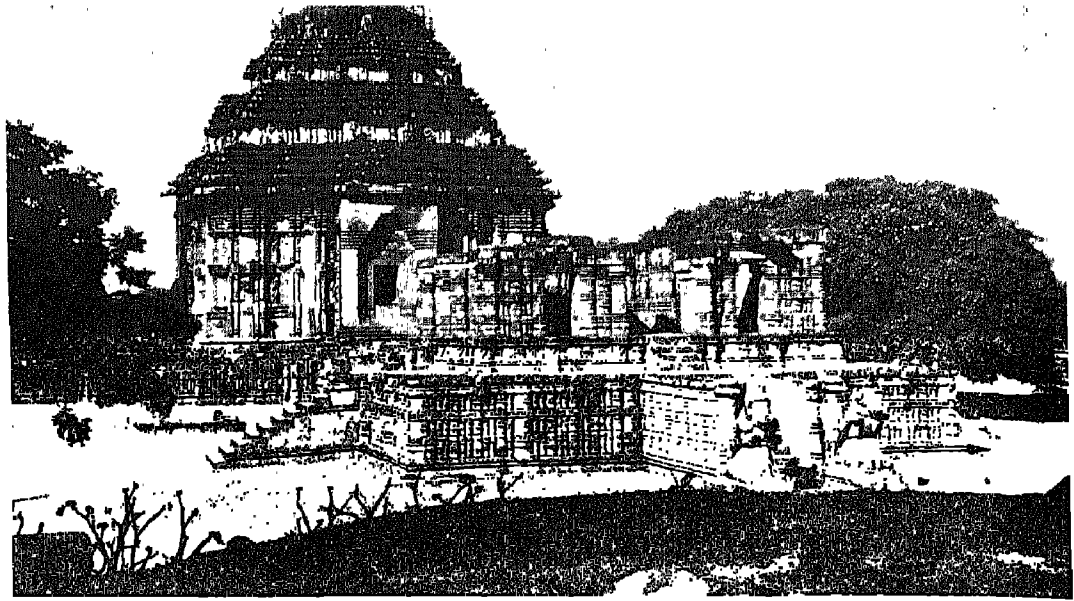
कोणार्क का सूर्य मंदिर

यहाँ के पुरुष धोती-कुर्ता पहनते हैं। स्त्रियाँ साड़ी पहनती हैं। उन्हें ज़ेवर पहनने का भी शौक है। उड़ीसा के लोगों का मुख्य भोजन दाल, चावल और सब्ज़ी है। बहुत-से लोग मांस और मछली भी खाते हैं।

उड़ीसा के लोगों को नाच-गाने का शौक है। रथ-यात्रा, रक्षा-बंधन, दशहरा और दीवाली इनके प्रसिद्ध त्योहार हैं।

बहुत-से आदिवासी भी उड़ीसा में रहते हैं। वे खेती करते हैं। उनकी मुख्य फसलें चावल और शकरकंद हैं। कुछ लोग शिकार करके भी अपना जीवन-निर्वाह करते हैं। परंतु आजकल उनमें से बहुत-से लोग कारखानों और खानों में काम करते हैं। पुरुष धोती पहनते हैं और गले में माला पहनते हैं। स्त्रियाँ सूती साड़ी पहनती हैं। उन्हें ज़ेवर पहनने का भी शौक है। वे नाक में लौंग, कान में बाली, गले में मनकों की माला, हार, हाथों में कड़े और पैरों में पाज़ेब पहनती हैं। वे बालों में फूल लगाती हैं। आदिवासी लोगों को नाच-गाने का शौक है। प्रत्येक जाति की अपनी अलग-अलग बोली है।

भुवनेश्वर उड़ीसा की राजधानी है। यह नगर समुद्र-तटीय मैदान में स्थित है। यह सड़क, रेल और हवाई मार्ग द्वारा कलकत्ता और मद्रास से जुड़ा हुआ है। यहाँ बहुत-से पुराने मंदिर हैं। इनमें लिंगराज का मंदिर सबसे अधिक प्रसिद्ध है।

भुवनेश्वर के समीप उदयगिरि और खंडगिरि की पहाड़ियाँ हैं। ये पहाड़ियाँ गुफ़ाओं के लिए प्रसिद्ध हैं। कुछ गुफ़ाएँ प्राकृतिक हैं और कुछ को मनुष्य ने बनाया है।

कोणार्क का सूर्य मंदिर प्रसिद्ध है। पुरी एक तीर्थ स्थान है। यहाँ का जगन्नाथ
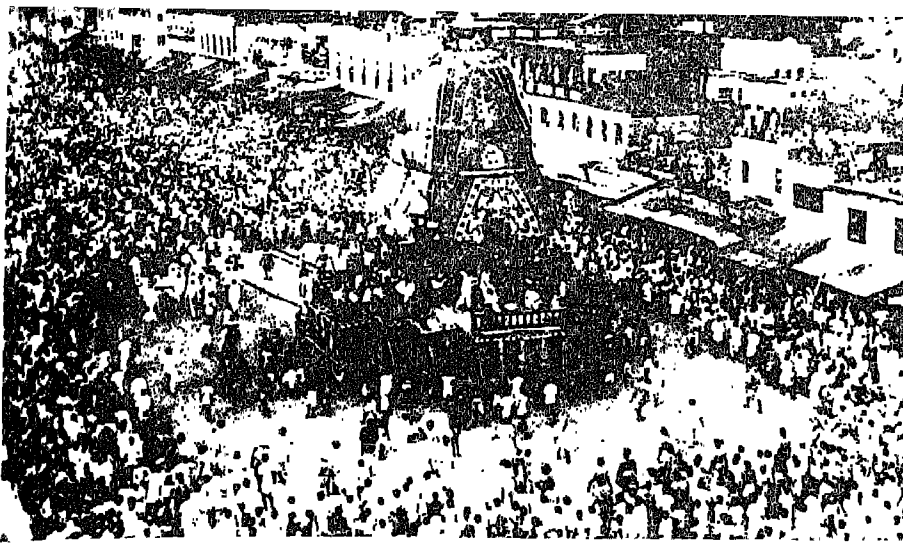
पुरी की 'रथ-यात्रा' का एक दृश्य

मंदिर प्रसिद्ध है। रथ-यात्रा के अवसर पर श्री जगन्नाथ, बलभद्र और सुभद्रा की मूर्तियों को रथ पर सजाकर नगर में घुमाया जाता है। यह रथ-यात्रा देशभर में प्रसिद्ध है।

राज्य का दूसरा बड़ा नगर कटक है। यह एक पुराना नगर है। यहाँ चाँदी के ज़ेवरों पर बारीक और सुंदर खुदाई का काम अच्छा होता है।

उड़ीसा में बहुत-से खनिज पदार्थ पाए जाते हैं। लोहा, कोयला, मैंगनीज़ और बाक्साइट यहाँ के प्रमुख खनिज हैं। इन खनिजों का प्रयोग इस्पात बनाने के लिए किया जाता है। हमारे देश का इस्पात का एक बड़ा कारखाना राउरकेला में है। मानचित्र में राउरकेला देखो।
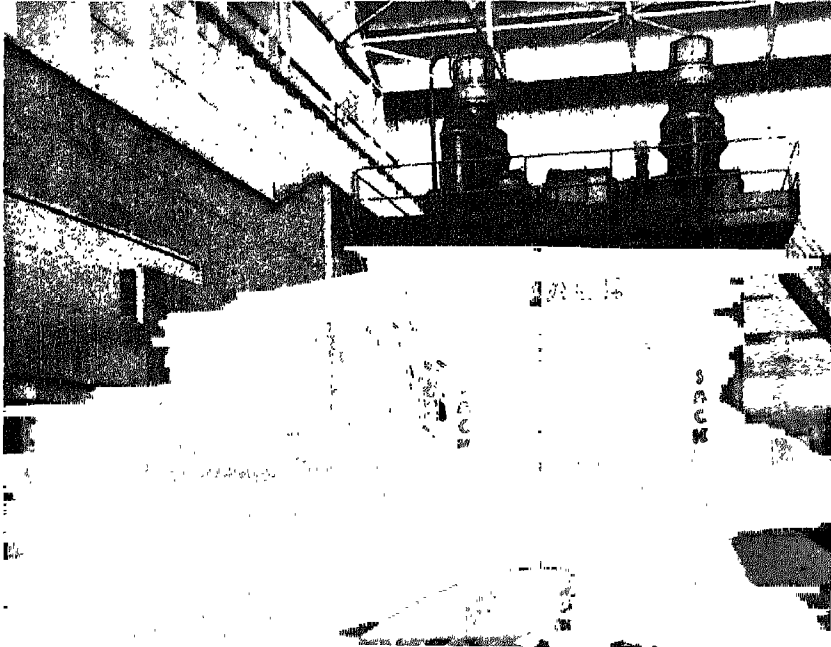
राउरकेला के इस्पात-संयंत्र का एक विभाग

अब बताओ

1. उड़ीसा के पड़ोसी राज्यों के नाम बताओ।
2. उड़ीसा में अधिकतर लोग नदी-घाटियों और समुद्र-तटीय मैदान में क्यों रहते हैं?
3. उड़ीसा राज्य की मुख्य उपज के नाम बताओ।
4. उड़ीसा राज्य का उत्तरी भाग खेती के योग्य क्यों नहीं है?

कुछ करने को

1. मानचित्र में निम्नलिखित दिखाओ :
   (क) महानदी, ब्राह्मणी और वैतरणी।
   (ख) चिलका झील।
   (ग) भुवनेश्वर, कटक, पुरी, राउरकेला, गोपालपुर और संबलपुर।
2. उड़ीसा राज्य के प्रसिद्ध मंदिरों के चित्र एकत्र करो।
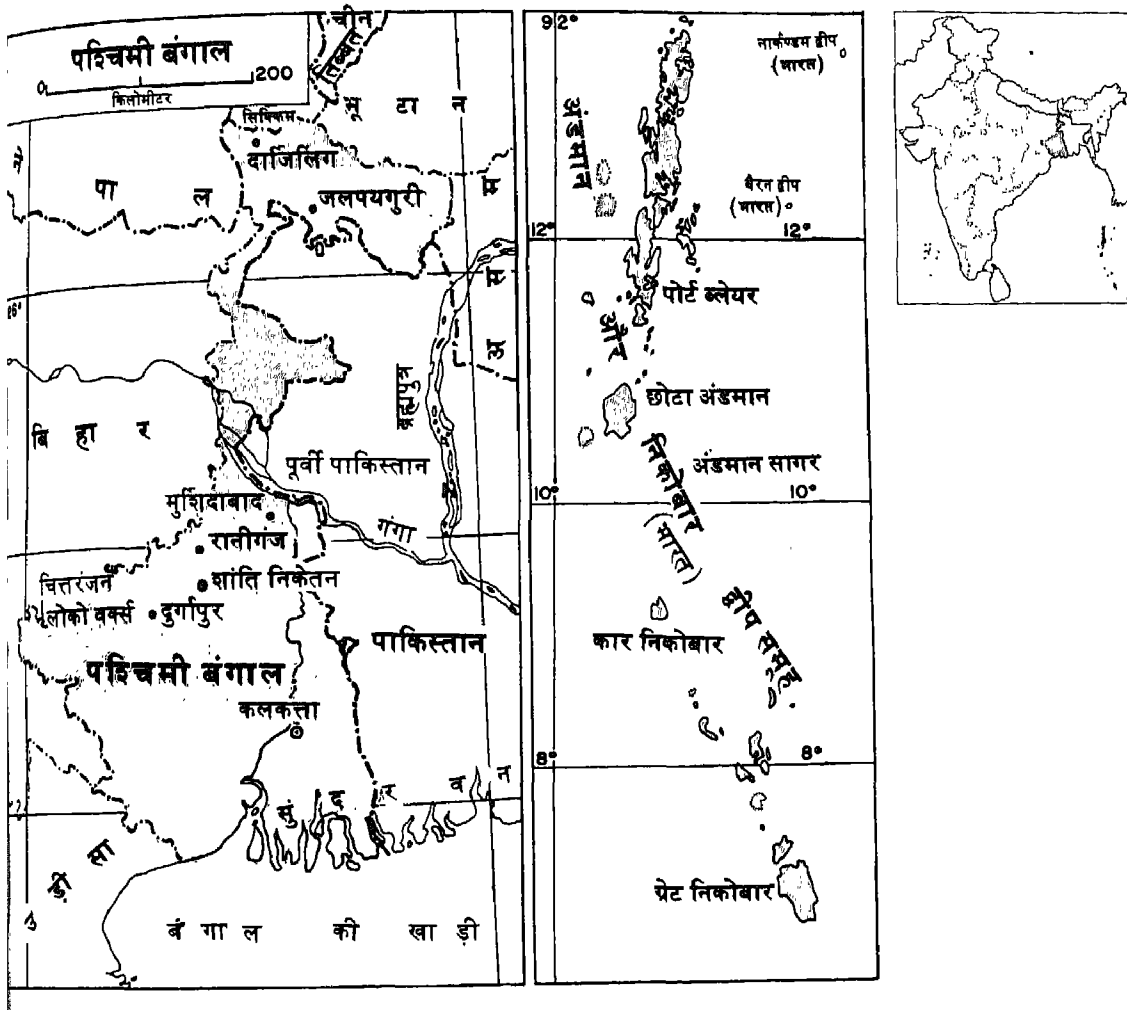
14. पश्चिमी बंगाल

पश्चिमी बंगाल और पूर्वी पाकिस्तान की सीमाएँ मानचित्र में देखो। सन् 1947 ई. से पहले इन दोनों को मिलाकर बंगाल प्रदेश कहते थे। जब भारत स्वतंत्र हुआ तो बंगाल प्रदेश को दो भागों में बाँट दिया गया। इसका पूर्वी भाग पूर्वी पाकिस्तान कहलाने लगा है। यह पाकिस्तान का एक भाग है। दूसरा भाग जो भारत के हिस्से में आया, पश्चिमी बंगाल कहलाने लगा।

इस राज्य के अलग-अलग भागों में भिन्न-भिन्न प्रकार के प्राकृतिक दृश्य देखने को मिलते हैं। पश्चिमी बंगाल की उत्तरी सीमा भूटान और सिक्किम से मिलती है।

यह उत्तरी भाग हिमालय पर्वत में स्थित है। यहाँ पर बहुत-सी पहाड़ियाँ और छोटी-छोटी घाटियाँ हैं। ये पहाड़ियाँ और घाटियाँ वनों से ढकी हैं। इनमें बाँस, चीड़ आदि बहुत-से पेड़ मिलते हैं। इन वनों में कई जंगली पशु जैसे---हाथी, चीता और गैंडा पाए जाते हैं। दार्जिलिंग नगर इसी पहाड़ी भाग में है। इसे मानचित्र में ढूँढ़ो। दार्जिलिंग एक सुंदर पहाड़ी नगर है। कुछ लोग इसकी सुंदरता की तुलना कश्मीर से करते हैं। दार्जिलिंग चाय के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ पर चाय के बहुत-से बाग़ हैं।

राज्य का दक्षिणी भाग समुद्र से लगा हुआ है। इसे 'डेल्टा' क्षेत्र कहते हैं। इस क्षेत्र में नदियों की छोटी-छोटी शाखाएँ और झीलें बन गई हैं। अधिकांश भूमि दलदल है। 'डेल्टा' क्षेत्र के कुछ भाग में घने वन हैं। इन्हें 'सुंदर वन' कहते हैं। इन वनों में शेर मिलते हैं। कई प्रकार की काम की लकड़ी और अन्य चीज़ें भी इन वनों से प्राप्त होती हैं। यहाँ बहुत-से लोग काम करके अपनी रोज़ी कमाते हैं।

पश्चिमी बंगाल का शेष भाग एक नीचा मैदान है। इस भाग में कई नदियाँ और तालाब हैं। लगभग सभी गाँव किसी न किसी नदी या तालाब के किनारे बसे हैं। मानचित्र में उन नदियों को ढूँढ़ो जो पश्चिमी बंगाल में बहती हैं। मुख्य नदियों के नाम हैं---गंगा, हुगली और दामोदर। नदियों के कारण यहाँ की भूमि बड़ी उपजाऊ है। चावल और

पटसन इस क्षेत्र की मुख्य उपज है। गन्ना, तंबाकू और दालें भी पैदा होती हैं। चावल की खेती के लिए बहुत पानी की आवश्यकता होती है। यहाँ वर्षा खूब होती है। किसान नदियों के पानी से भी सिंचाई करते हैं। दामोदर घाटी योजना और मयूराक्षी योजना से भी खेतों के लिए पानी मिलता है।

अधिकतर लोग गाँवों में रहते हैं। उनका रहन-सहन सादा है। धान की खेती करनेवाले किसान घुटनों तक धोती पहनते हैं और पसीना पोंछने के लिए कंधे पर एक अँगौछा डालते हैं। गाँवों में अक्सर लोग मिट्टी से बनी फूस की छत वाली झोंपड़ियों में रहते हैं। प्रत्येक गाँव में एक छोटा-सा तालाब जिसे 'पुकुर' कहते हैं, एक मंदिर और कुछ केले के पेड़ भी मिलते हैं। आजकल कुछ गाँवों में बिजली भी पहुँच गई है।

आओ, अब शहर में रहनेवाले एक बंगाली परिवार से तुम्हारा परिचय कराएँ। यह एक बड़ा परिवार है। बहुत-से लोग इस परिवार में मिलकर रहते हैं। वे बँगला बोलते हैं। वे अपनी दादीजी को 'ठाकुरमाँ' और दादाजी को 'ठाकुरदा' कहकर बुलाते हैं। वे अपनी माताजी को 'माँ' और पिताजी को 'बाबा' कहते हैं। बाबा धोती और कुर्ता पहनते हैं। 'माँ' बंगाली ढंग से साड़ी बाँधती हैं। वह साड़ी के एक सिरे को कंधे पर डालती हैं। इसी सिरे से चाबियों का गुच्छा बँधा होता है। उनकी साड़ियाँ किनारीदार होती

दुर्गा पूजा
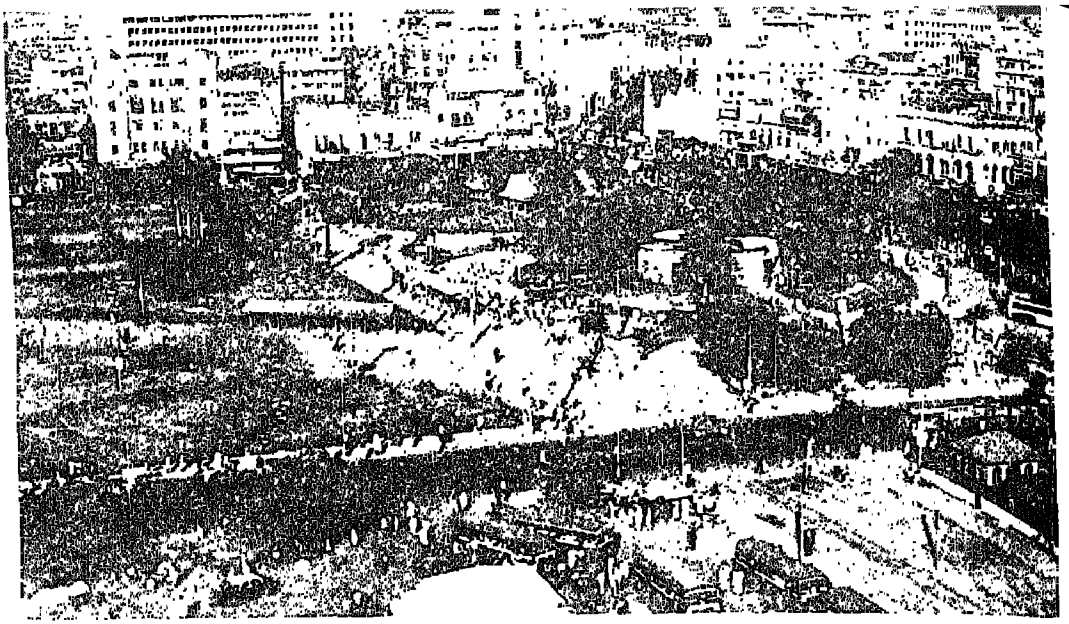
महानगर कलकत्ता

हैं। माँ अपनी माँग में सदा सिन्दूर लगाती हैं। इसका अर्थ है उनके पति जीवित हैं।

पश्चिमी बंगाल के लोगों का मुख्य भोजन चावल और मछली है। वे कई प्रकार की मिठाइयाँ भी खाते हैं। इनमें 'संदेश' और 'रसगुल्ला' प्रमुख हैं। आजकल ये मिठाइयाँ हमारे देश के सभी भागों में लोकप्रिय हो गई हैं। शायद तुमने भी खाई होंगी।

पश्चिमी बंगाल के लोग नाचने-गाने के बहुत शौकीन होते हैं। सरस्वती पूजा, लक्ष्मीपूजा, कालीपूजा आदि कई त्योहार वे मनाते हैं। दुर्गापूजा तो उनका सबसे बड़ा त्योहार है। यह त्योहार दस दिन तक चलता है। लोग बहुत पहले से ही इसकी तैयारी शुरू कर देते हैं। वे अपने मकानों में सफ़ेदी कराते हैं, नए वस्त्र बनवाते हैं और तरह-तरह के पकवान आदि बनाते हैं। स्त्रियाँ दुर्गा देवी की पूजा के लिए विशेष तैयारी करती हैं। वे 'काली बाड़ी' में पूजा करने जाती हैं। अंतिम चार दिनों में पूजा के साथ-साथ खेल संगीत, नाटक आदि भी होते हैं। दसवें दिन शाम के समय देवी की सवारी निकाली जाती है। सवारी के बाद देवी की मूर्ति को नदी में बहा देते हैं।

पश्चिमी बंगाल की राजधानी कलकत्ता है। कलकत्ता पहुँचने के लिए पहले हमें हावड़ा उतरना पड़ता है। यहाँ हुगली नदी पर बने प्रसिद्ध 'हावड़ा पुल' को पार करके हम कलकत्ता पहुँचते हैं। दुर्गापूजा के अवसर पर कलकत्ते में बड़ी चहल-पहल रहती है। कलकत्ता भारत के सबसे बड़े नगरों में से एक है। इस नगर में बहुत-सी बड़ी-बड़ी इमारतें हैं। सड़कों और बाज़ारों में बस, ट्राम, टैक्सी, रिक्शा आदि सवारियों और पैदल चलनेवाले लोगों की हर समय भीड़ रहती है। कलकत्ता बंदरगाह भी प्रसिद्ध है। यहाँ से पटसन, चाय और कई दूसरी चीज़ें विदेशों को भेजी जाती हैं।
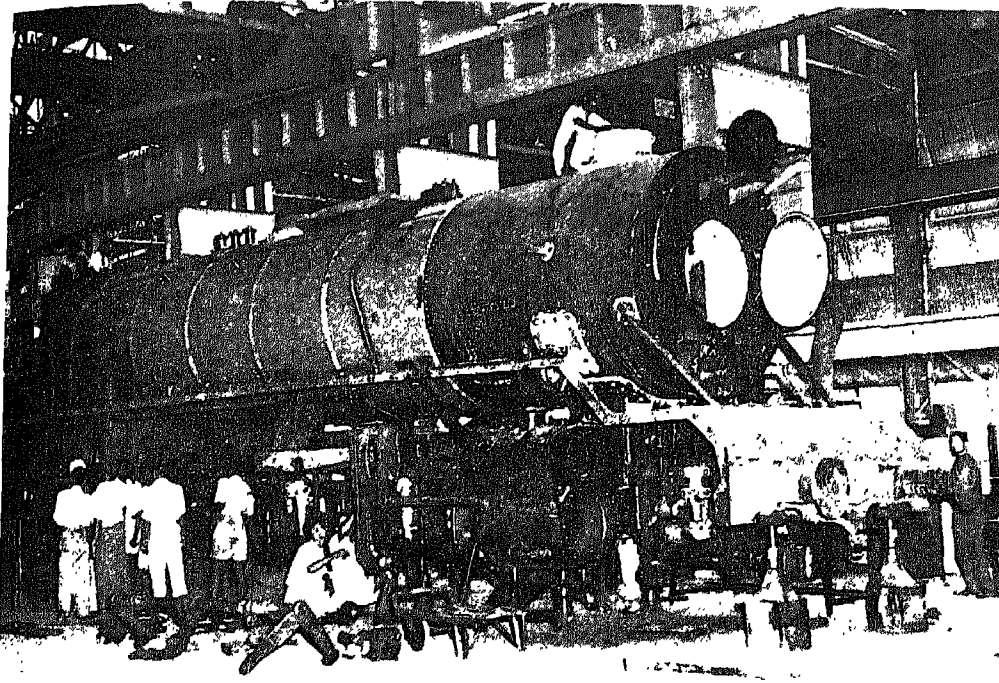
चित्तरंजन में इंजन-निर्माण

इस राज्य के अधिकतर लोग खेती करते हैं। यहाँ पर बहुत-से कारखाने भी हैं। पटसन, कागज़ और सूती कपड़े के कारखाने प्रसिद्ध हैं। दुर्गापुर में इस्पात बनाने का एक बड़ा कारखाना है। इस कारखाने में बहुत-से लोग काम करते हैं। कुछ अन्य लोग रानीगंज की कोयले की प्रसिद्ध खानों में काम करते हैं। चित्तरंजन लोको वर्क्स में रेल के इंजन बनाए जाते हैं।

पश्चिमी बंगाल दस्तकारियों के लिए भी प्रसिद्ध है। देश के दूसरे भागों के लोग बंगाल की दस्तकारी की वस्तुएँ, मुर्शिदाबाद की रेशमी साड़ियाँ, मिट्टी व लकड़ी के खिलौने और मूर्तियाँ पसंद करते हैं। कश्मीर की सुंदर कशीदाकारी के बारे में तुम पढ़ चुके हो। पश्चिमी बंगाल में शांतिपुर की हाथकरघे पर बनी रेशमी साड़ियाँ भी उतनी ही सुंदर होती हैं।

अंडमान और निकोबार द्वीप समूह

मानचित्र में देखो। बंगाल की खाड़ी में बहुत-से छोटे-छोटे द्वीप हैं। इन्हें 'अंडमान और निकोबार द्वीप समूह' कहते हैं। छोटे-बड़े सब द्वीपों को मिलाकर ये लगभग दो
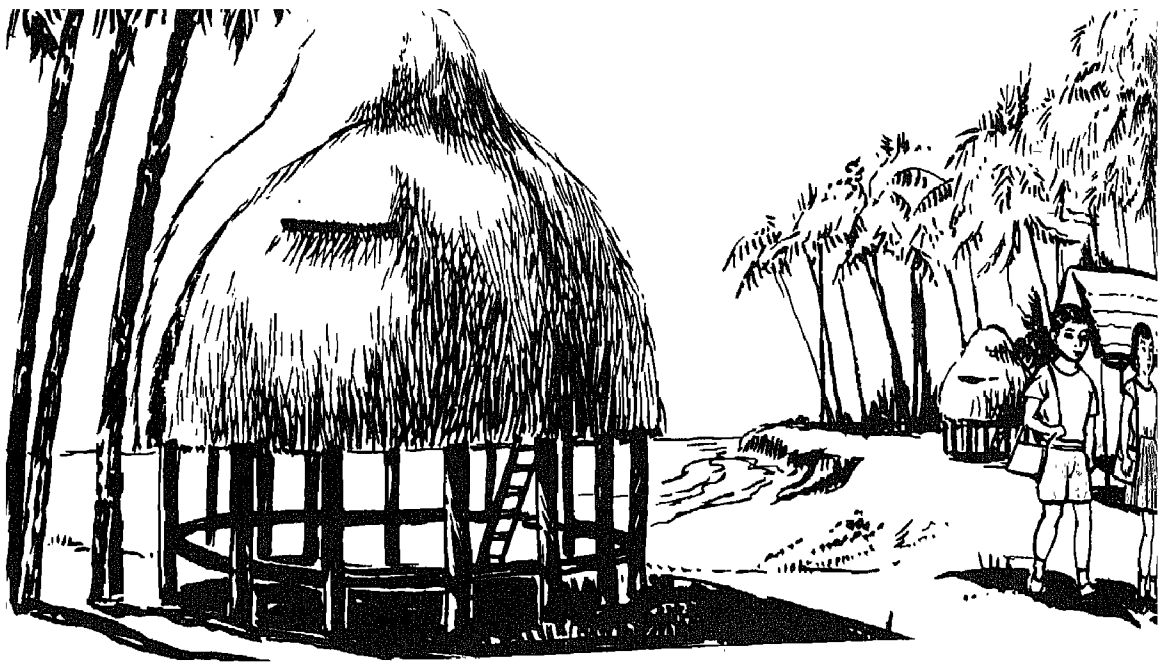
सौ द्वीप हैं। यह द्वीप समूह भारत का एक अंग है। अंडमान और निकोबार द्वीप समूह एक संघीय क्षेत्र है, जिसकी राजधानी पोर्ट ब्लेयर है। पोर्ट ब्लेयर एक बंदरगाह है। यह नगर भारत के अन्य भागों के साथ समुद्री और हवाई मार्गों द्वारा मिला हुआ है।

इन द्वीपों में बहुत-सी छोटी-छोटी पहाड़ियाँ और घाटियाँ हैं। हरे-भरे वन हैं। यहाँ की जलवायु सदा ही गर्म और आर्द्र रहती है। वर्षा लगभग सारे साल होती है। निकोबार द्वीप में तो भारी गरज के साथ आँधियाँ और तूफ़ान आते हैं। लेकिन सभी द्वीपों में बहुत सुंदर प्राकृतिक दृश्य देखने को मिलते हैं। समुद्र-तट के पास पानी में मूँगे की चट्टानें और छोटे-छोटे द्वीप बहुत सुंदर लगते हैं। समुद्री हवा के कारण यहाँ मौसम सुहावना रहता है।

अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में शहर और गाँव अधिक नहीं हैं। यहाँ पर कुछ हज़ार लोग ही रहते हैं। कुछ द्वीपों में तो कोई भी नहीं रहता। अब भारत के अन्य भागों से कुछ लोग इन द्वीपों में जाकर बस गए हैं।

चित्र में इस क्षेत्र के मकानों की बनावट देखो। ये मकान लकड़ी और फूँस के बने हैं और बल्लियों पर खड़े हैं। निकोबार के लोग सबके साथ मित्रता का व्यवहार करते हैं और अतिथियों का आदर करते हैं। अतिथियों के ठहरने के लिए उनके गाँव में विशेष झोंपड़ियाँ होती हैं। इनको 'आलपानम' कहते हैं।

अंडमान की भूमि बहुत उपजाऊ है। धान यहाँ की मुख्य उपज है। वर्षा का पानी धान उगाने के लिए काफ़ी होता है। समुद्र-तट के साथ-साथ नारियल के बड़े-बड़े बाग़ हैं। अनन्नास, काजू, आम और पपीता भी यहाँ खूब होते हैं।

मुर्गी पालना और मछली पकड़ना अंडमान और निकोबार के लोगों का प्रिय धंधा है। गाँवों में बहुत-से लोग मछली पकड़कर गुज़ारा करते हैं। अंडमान समुद्र-तट के पास कई तरह की मछलियाँ पाई जाती हैं। ये अधिकतर भारत के अन्य भागों को भेजी जाती हैं।

अंडमान और निकोबार के लोगों का जीवन बहुत सादा है। वे कुश्ती लड़ना, नाचना-गाना और नौका दौड़ाना पसंद करते हैं। उनकी भाषा अलग ही है। इसमें हिन्दुस्तानी, अंग्रेज़ी और बर्मी शब्द मिले रहते हैं।

अब बताओ

1. पश्चिमी बंगाल के पड़ोसी राज्यों तथा उसकी सीमाओं को छूनेवाले दूसरे देशों के नाम बताओ।
2. पश्चिमी बंगाल में रहनेवाले लोगों के मुख्य धंधे क्या हैं ?
3. पश्चिमी बंगाल की मुख्य फ़सलें क्या हैं ?
4. ऐसी तीन चीज़ों के नाम बताओ जिनके लिए पश्चिमी बंगाल प्रसिद्ध है।
5. अंडमान और निकोबार में रहनेवाले लोगों के मुख्य धंधे कौन-कौन-से हैं ?
6. क्या तुम अंडमान और निकोबार में जाकर रहना पसंद करोगे ? यदि हाँ, तो क्यों ?

कुछ करने को

1. अपनी कक्षा को टोलियों में बाँटकर नीचे लिखे मॉडल मिट्टी से बनाओ :
   (क) बंगाल का एक गाँव।
   (ख) दार्जिलिंग का एक मकान।
   (ग) निकोबार में रहनेवालों की एक झोंपड़ी।
2. अपने अध्यापक जी से प्रार्थना करो कि वे रवीन्द्रनाथ टैगोर के विषय में तुम्हें जानकारी कराएँ।
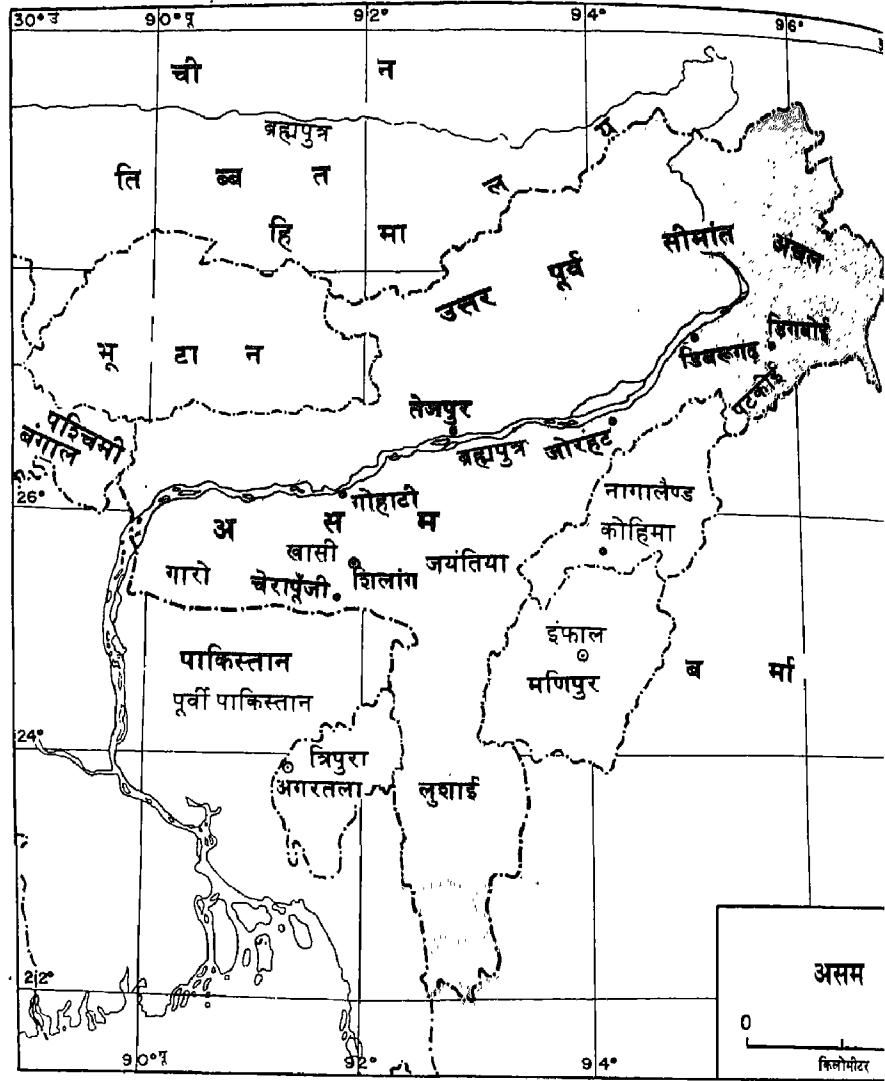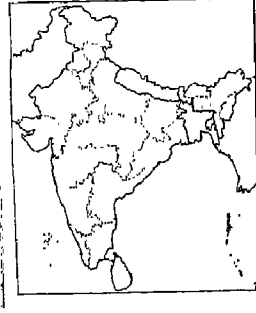
15. असम

ऊपर असम के मानचित्र को देखो। यह राज्य भारत के उत्तर-पूर्वी भाग में है। यह भी एक प्रमुख सीमावर्ती राज्य है। चीन, बर्मा, पूर्वी पाकिस्तान और भूटान देश इस राज्य की सीमाओं से लगे हुए हैं। मानचित्र में देखो ये देश असम राज्य को तीन ओर से घेरे हुए हैं। मानचित्र में असम के पड़ोसी राज्यों के नाम भी मालूम करो।

असम हमारे देश का एक बहुत सुंदर राज्य है। यह हिमालय पर्वतमाला की छोटी-बड़ी पहाड़ियों से घिरा है। इसका उत्तर-पूर्वी भाग 'उत्तर पूर्व सीमांत अंचल' कहलाता है। इसे 'नेफ़ा' भी कहते हैं। यह भाग पहाड़ी है। मध्य भाग में पहाड़ों के बीच से ब्रह्मपुत्र नदी बहती है। इसने पहाड़ियों को घिसकर और काटकर ब्रह्मपुत्र घाटी बनाई है। इसी में अधिकतर लोग रहते हैं।

असम राज्य में वर्षा बहुत होती है। चेरापूँजी के समीप मौसीनराय स्थान पर संसार भर में सबसे अधिक वर्षा होती है। घाटी में गर्मी के मौसम में साधारण गर्मी और सर्दी के मौसम में साधारण ठंड होती है। पहाड़ी भागों में सर्दी के दिनों में ठंड अधिक होती है।

यहाँ वर्षा अधिक होती है, इस कारण पहाड़ियाँ घने जंगलों से ढकी रहती हैं। पूर्व में तो जंगल इतने घने हैं कि सूर्य की किरणें ज़मीन तक पहुँच ही नहीं पातीं। कहीं-कहीं दलदल भी है। इन घने जंगलों में मनुष्य का पहुँचना तो बहुत ही कठिन है। हाँ, बाघ, चीते, गैंडे, हाथी और भयंकर साँप इन जंगलों और दलदलों में अवश्य रहते हैं। यहाँ के जंगलों में लोग हाथी पकड़ते हैं। गैंडे तो असम से देश-विदेश के चिड़ियाघरों को भेजे जाते हैं। जंगलों के कुछ भाग में बाँस और बेंत के पेड़ मिलते हैं। असम के लोग बाँस और बेंत की बहुत-सी वस्तुएँ बनाते हैं।

ब्रह्मपुत्र यहाँ की प्रमुख नदी है। वर्षा के दिनों में इसमें पानी बहुत बढ़ जाता है। इसका रूप समुद्र जैसा हो जाता है। इसमें अक्सर बाढ़ आ जाती है। पानी दोनों ओर बहुत दूर तक फैल जाता है। इससे फसलें नष्ट हो जाती हैं और बहुत लोग बेघर हो जाते हैं। परंतु इसका एक लाभ यह अवश्य होता है कि नदी द्वारा लाई गई मिट्टी सारी घाटी में फैल जाती है। नदी ने सारी घाटी को उपजाऊ बना दिया है। घाटी में रहनेवाले लोग चावल और पटसन की खेती करते हैं।
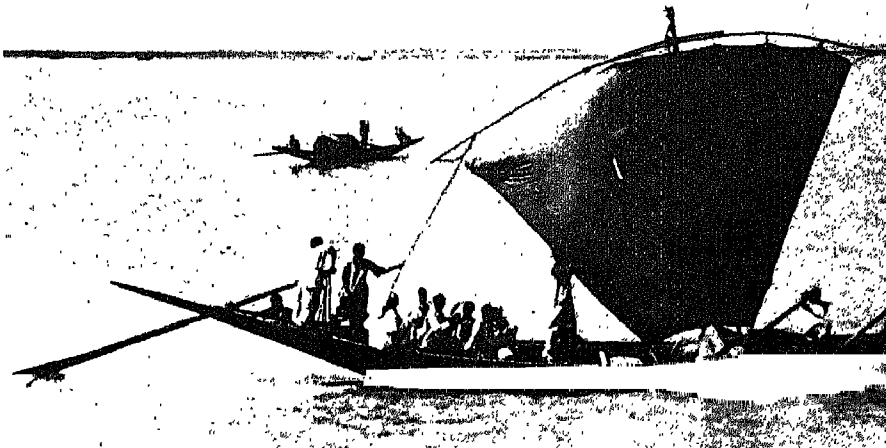
ब्रह्मपुत्र का एक दृश्य

असम के मकान

असम राज्य का अधिक भाग पहाड़ी है और घने जंगलों से घिरा हुआ है। इन पहाड़ों को काटकर, जंगलों को साफ़ करके सड़कें बनाना अथवा रेल-लाइन बिछाना कठिन काम है। इसलिए यहाँ सड़क और रेल-मार्ग कम हैं। ब्रह्मपुत्र नदी आने-जाने का एक मुख्य साधन है। इस नदी में नाव और स्टीमर चलते हैं। अधिकतर नगर इसी नदी के किनारे पर बसे हैं। क्या तुम इसका कारण बता सकते हो ?

शिलाँग असम की राजधानी है। यह एक पहाड़ी नगर है। इस नगर के आसपास खूब हरियाली है। अधिकतर चीड़ के पेड़ हैं। इससे यह नगर सुंदर बन गया है। राज्य का दूसरा बड़ा नगर गोहाटी है।

असम के लोग 'असमिया' भाषा बोलते हैं। अधिकतर लोग लकड़ी के मकानों में रहते हैं। चित्र में देखो ये मकान भूमि से कुछ ऊँचे बल्लियों पर खड़े हैं। इनकी ढालदार छतें टीन और फूस की बनी हैं।

यहाँ के लोग दाल, चावल और सब्ज़ियाँ खाते हैं। ये मछली और मांस भी खाते हैं। बतख़, मुर्गाबी आदि यहाँ की झीलों में खूब मिलती हैं। बहुत-से लोग बतख़ और मुर्गियाँ घर में भी पालते हैं।

चाय का बाग़

यहाँ स्त्रियाँ ऊँचा घाघरा और सीनाबंद कमीज़ पहनती हैं। इन्हें 'मेखला' और 'रिहा' कहते हैं। पुरुष धोती और कुर्ता पहनते हैं। सर्दी के दिनों में वे कंधे पर चादर डालते हैं।

असम के लोगों का मुख्य धंधा चाय की खेती है। यहाँ पहाड़ियों के ढालों पर चारों ओर चाय के बाग़ ही बाग़ हैं। देश के कुल चाय के बाग़ों का लगभग आधा भाग इसी राज्य में है। इस धंधे में लाखों स्त्री-पुरुष लगे हुए हैं। इन बाग़ों में काम करने के लिए भारत के दूसरे राज्यों से भी हज़ारों स्त्री-पुरुष आते हैं।

इन बाग़ों में स्त्रियाँ चाय की पत्तियाँ तोड़-तोड़कर अपनी पीठ पर बँधी टोकरियों में इकट्ठा करती हैं। चाय की ये पत्तियाँ मशीनों से सुखाई जाती हैं। फिर ये पत्तियाँ डिब्बों और लकड़ी के बक्सों में भरी जाती हैं। चाय के ये बक्स कलकत्ता पहुँचाए जाते हैं और वहाँ से देश-विदेश को भेजे जाते हैं।

असम राज्य मूँगा रेशम के लिए प्रसिद्ध है। घरों में स्त्रियाँ इस रेशम को कातकर तथा बुनकर कपड़ा बनाती हैं।

मानचित्र में देखो, उत्तर-पूर्व में डिगबोई नगर है। इसके आसपास मिट्टी का तेल मिलता है। यहाँ तेल के बहुत-से कुएँ हैं। नलों द्वारा कुओं से तेल ऊपर लाया जाता है। गोहाटी के पास तेल साफ़ करने का कारखाना है। इसमें मशीनों से तेल साफ़ किया जाता है। साफ़ तेल को पेट्रोल कहते हैं।

बिहु नृत्य

असम के लोग बहुत-से त्योहार मनाते हैं। वे त्योहारों को 'बिहु' कहते हैं। बैशाख के महीने में फसल काटने के बाद ये लोग 'बोहाग बिहु' मनाते हैं। इस त्योहार पर लड़के-लड़कियाँ रातभर नाचते हैं। इनके नाच को 'बिहु नृत्य' कहते हैं और गाने को 'बिहु गीत'।

नेफ़ा में रहनेवालों का जीवन घाटी में रहनेवालों से भिन्न है। चित्र में नेफ़ा के लोगों के वस्त्र और आभूषण देखो।

असम में पहाड़ियों पर कई जनजातियाँ रहती हैं। इनमें गारो, जयंतिया, मिज़ो, लुशाई, मोंपा, आबोर और दफला मुख्य हैं। हर एक जनजाति के लोगों की बोली, रहन-सहन और रीति-रिवाज अलग-अलग हैं। अब इन जनजातियों की शिक्षा और दूसरी सुविधाओं का अच्छा प्रबंध किया जा रहा है।

मणिपुर

मणिपुर राज्य एक संघीय क्षेत्र है। इंफाल इसकी राजधानी है। असम और नागालैण्ड इसके पड़ोसी राज्य हैं। दक्षिण और पूर्व में इसकी सीमा बर्मा से छूती है।

मणिपुर में अधिकतर भूमि पहाड़ियों, जंगलों और झीलों से घिरी हुई है। कहीं-कहीं दलदल भी हैं। पहाड़ियों की ढालों पर भिन्न-भिन्न प्रकार के पेड़-पौधे और रंग-बिरंगे फूल बहुत सुंदर दिखाई देते हैं।

घाटी में और पहाड़ियों पर दोनों जगह गाँव बसे हैं। घाटी में रहनेवाले लोग 'मेटीज' कहलाते हैं। इनके मकान लकड़ी के बने होते हैं। लकड़ी की दीवारों के दोनों ओर लेप किया जाता है। यह लेप मिट्टी, भूसा और घास को मिलाकर बनाया जाता है। इनके मकान मजबूत होते हैं। मकान एक दूसरे से कुछ दूरी पर बनाए जाते हैं। पहाड़ों पर बसे गाँवों में जाने के लिए सीधी चढ़ाई चढ़कर जाना पड़ता है। यहाँ पर लोग अपने मकान लकड़ी और बाँस से बनाते हैं।

मणिपुरी नृत्य की एक मुद्रा

मणिपुर में शायद ही कोई ऐसा घर होगा जिसमें कपड़ा न बनाया जाता हो। गाँव में स्त्रियाँ प्रायः कताई-बुनाई का काम करती हैं। वे भिन्न-भिन्न प्रकार के रंग-बिरंगे और सुंदर सूती कपड़े बनाती हैं। फसल बोने और काटने के समय वे खेतों में भी काम करती हैं।

मणिपुर के लोगों का मुख्य धंधा खेती है। खेती के लिए वर्षा काफ़ी होती है। चावल, ज्वार, बाजरा, गन्ना, कपास, तंबाकू, आलू और गोभी यहाँ की मुख्य उपज हैं। यहाँ से गोभी डिगबोई और कलकत्ता हवाई जहाज़ द्वारा भेजी जाती है।

मणिपुर के लोग अधिकतर दाल, चावल, मछली और सब्ज़ी खाते हैं। 'मेटीज़' लोगों को नाच-गाने का शौक है। ये लोग अधिकतर श्रीकृष्ण की भक्ति के गीत गाते हैं। यहाँ का मणिपुरी नाच सारे देश में प्रसिद्ध है।

घाटी में रहनेवाले लोग होली, दुर्गापूजा, सरस्वतीपूजा, राधासप्तमी और ईद मनाते हैं। पहाड़ियों पर रहनेवालों को शिकार खेलने और मछली पकड़ने का शौक है।

त्रिपुरा

त्रिपुरा पूर्व में हमारे देश का एक सीमावर्ती राज्य है। यह एक संघीय क्षेत्र है। अगरतला इसकी राजधानी है। पृष्ठ 94 पर दिए गए मानचित्र में देखो। त्रिपुरा असम का एक पड़ोसी राज्य है। इसकी सीमा तीन ओर से पूर्वी पाकिस्तान से लगी है।

त्रिपुरा राज्य में बहुत-सी पहाड़ियाँ और घाटियाँ हैं। यहाँ की जलवायु गर्म और आर्द्र है। पहाड़ियों पर कई जनजातियाँ रहती हैं। ये लोग अधिकतर घूमते हुए जंगलों को काटकर और जलाकर खेती के लिए भूमि प्राप्त करते हैं। इन खेतों में चावल, तिल, कपास और सब्ज़ियाँ पैदा होती हैं। इस प्रकार की खेती को 'झूमिंग' कहते हैं। ये किसान अक्सर झूमिंग के लिए नई भूमि की खोज में घूमते-फिरते हैं। आजकल इनमें से कुछ लोग स्थायी रूप से खेती करने लगे हैं। मैदानी भाग में लोगों के स्थायी खेत हैं। ये लोग खेती के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान को घूमा-फिरा नहीं करते। इन खेतों की उपज चावल, गन्ना, मूँगफली और कई प्रकार की सब्ज़ियाँ हैं। अनन्नास, लीची, केला, कटहल और आम यहाँ के मुख्य फल हैं।

त्रिपुरा में कुछ लोग मछली पकड़कर बाज़ार में बेचते हैं। यहाँ 'रुद्र सागर' झील में बहुत मछलियाँ हैं। कुछ लोग मुर्गी और सूअर पालते हैं।

अब बताओ

1. असम राज्य की अधिकतर भूमि खेती के योग्य क्यों नहीं है ?
2. असम, मणिपुर और त्रिपुरा के लोगों के मुख्य धंधे क्या हैं ?
3. असम के रहनेवालों को ब्रह्मपुत्र नदी से क्या लाभ है ?
4. 'झूमिंग' खेती से तुम क्या समझते हो ? यह खेती स्थायी खेती से किस प्रकार भिन्न है ?
5. नीचे लिखे वाक्यों में खाली स्थानों को सही शब्दों से भरो :
   असम में तेल के कारखाने ———— में हैं।
   संसार में सबसे अधिक वर्षा ———— में होती है।
   असम का ———— रेशम प्रसिद्ध है।
   त्रिपुरा की राजधानी ———— है।
   असम के दो प्रमुख जंगली जानवर ———— हैं।

कुछ करने को

1. मानचित्र में निम्नलिखित दिखाओ :
   (क) असम के पड़ोसी राज्य और देश।
   (ख) ब्रह्मपुत्र नदी।
   (ग) शिलाँग, डिगबोई, गोहाटी, चेरापूँजी, इंफाल और अगरतला।
2. असम के मकान का गत्ते का एक मॉडल बनाओ।
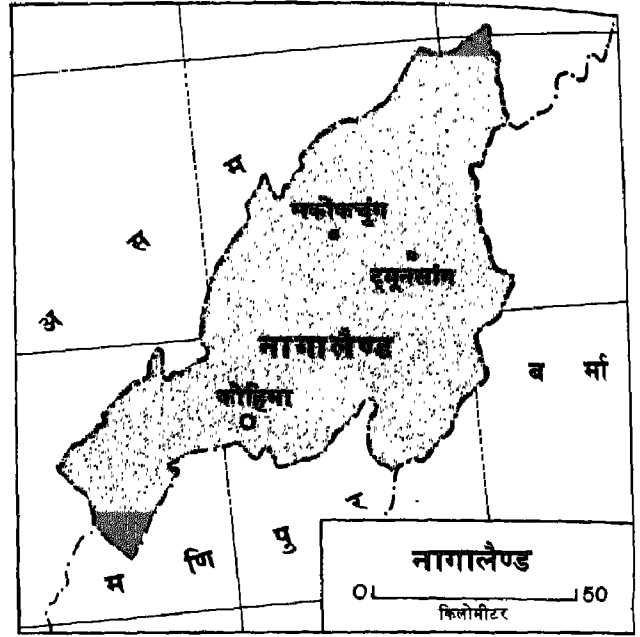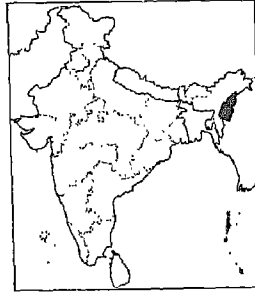
16. नागालैण्ड

भारत के पूर्वी भाग में हमारा नागालैण्ड राज्य है। यह राज्य बहुत छोटा है। इसमें केवल तीन ज़िले हैं––कोहिमा, मकोकचुंग और ट्यूनसाँग। कोहिमा नागालैण्ड की राजधानी है।

अब ऊपर के मानचित्र में देखो। इसमें नागालैण्ड और इसके पड़ोसी राज्य, असम और मणिपुर के कुछ भाग दिखाए गए हैं। पूर्व में नागालैण्ड की सीमा बर्मा से मिलती है।

नागालैण्ड का लगभग सारा भाग पहाड़ी है। इन पहाड़ियों पर वन हैं, जिनमें जंगली भैंसे, हाथी, शेर, चीते और रीछ मिलते हैं। यहाँ वर्षा खूब होती है। कई छोटे-छोटे नाले और नदियाँ बहती हैं। विशेष बात यह है कि इस राज्य में कोई झील या तालाब नहीं है।

नागालैण्ड के लोगों को 'नागा' कहते हैं। नागा लोगों में लगभग एक दर्जन मुख्य जातियाँ हैं। अलग-अलग जातियों के लोग अलग-अलग बोली बोलते हैं। अधिकतर नागा लोग पहाड़ियों की चोटियों पर मकान बनाते हैं। मैदान में बहुत कम गाँव हैं। पहाड़ी के ऊपर बसा हुआ नागा गाँव एक पहाड़ी किले की तरह दिखाई देता है।
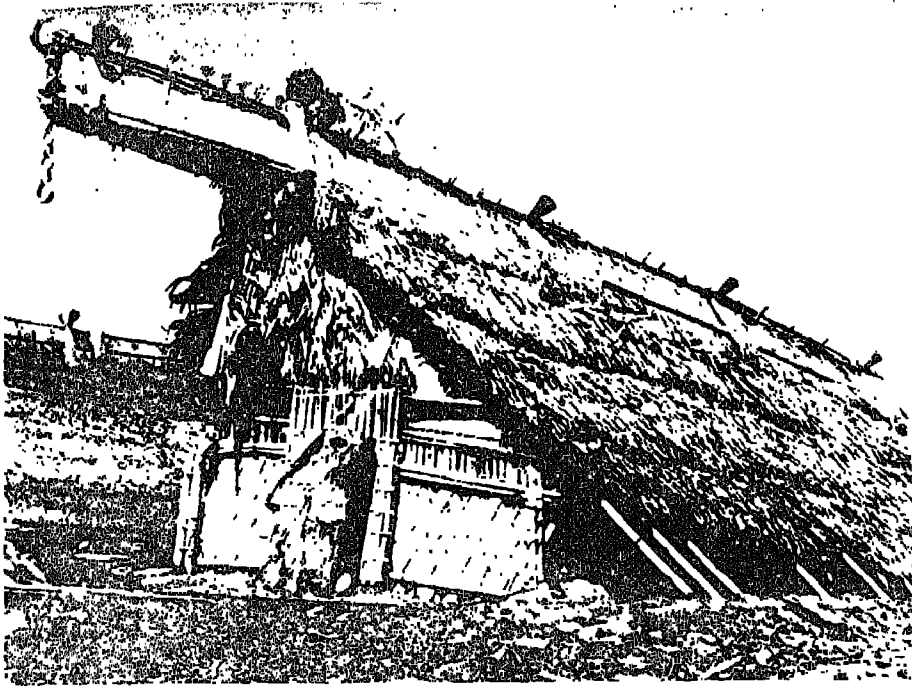
मोरंग

नागा लोगों के गाँव अक्सर बड़े होते हैं। उनके घर भी बहुत बड़े होते हैं। वे अपने मकान लकड़ी और बाँस से बनाते हैं। मकानों की छतें टीन की बनी होती हैं।

सभी नागा गाँवों में एक 'मोरंग' अवश्य होता है। 'मोरंग' एक मकान होता है। इसमें गाँव के सभी अविवाहित लड़के खेलते हैं और रात को वहीं सोते हैं।

नागा लोग चावल खाते हैं। वे अपने लिए काफ़ी चावल उगाते हैं। अक्सर वे झूमिंग खेती करते हैं। आजकल बहुत-से नागा लोग स्थायी खेती करने लगे हैं। वे खेती के नए तरीक़े भी सीख रहे हैं। अच्छे बीज, खाद और खेती करने के नए औज़ार अब उन्हें अपने पास के विकास-खंड से मिल जाते हैं। इस प्रकार अब नागा लोग अधिक चावल, सब्ज़ियाँ और अन्य चीज़ें पैदा करते हैं।

नागा लोग वनों में शिकार करते हैं और नदियों से मछलियाँ पकड़ते हैं। वे मांस और मछली खाना पसंद करते हैं। वे चावल से बना एक प्रकार का रस पीते हैं। इसे 'ज़ू' कहते हैं। यह उन्हें शक्ति देता है। वे चाय और दूध भी पीते हैं।

नागा लोग बड़े वीर और लड़ाकू होते हैं। वे अपने साथ बरछी, दाव, बंदूक आदि हथियार रखते हैं। दाव तो उनके बहुत ही काम की चीज़ होती है। वे इससे कई प्रकार के काम लेते हैं और सदा अपने साथ रखते हैं। वे अक्सर 'मिथून' नाम का पशु पालते हैं। यह पशु उनके बहुत काम का है।
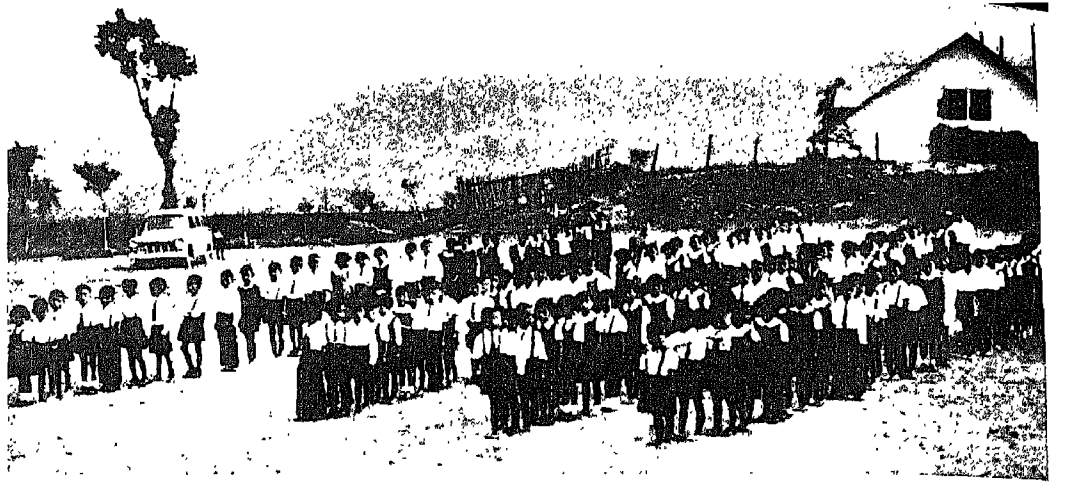
कोहिमा के एक स्कूल में नागा बच्चे

नीचे का चित्र नागाओं का है। देखो, इन्होंने कैसे वस्त्र पहने हैं। अलग-अलग नागा-जातियों की वेश-भूषा भिन्न-भिन्न होती है। नागा स्त्रियाँ और पुरुष वस्त्रों के साथ पक्षियों के पंख, बकरियों के बाल, कौड़ियाँ, सींग, हड्डियाँ, हाथी-दाँत आदि भी काम में लाते हैं।

भारत की स्वतंत्रता के बाद नागालैण्ड ने बहुत उन्नति की है। वहाँ पर बहुत-से नए स्कूल और प्रशिक्षण केन्द्र खोले गए हैं। इन स्कूलों में बहुत-से लड़के-लड़कियाँ

पढ़ते हैं। लड़के कमीज़, नेकर और कोट पहनते हैं। लड़कियाँ स्कर्ट और कोट पहनती हैं। वे अंग्रेज़ी, हिन्दी और अन्य विषय पढ़ते हैं। योग्य लड़के-लड़कियों को छात्रवृत्ति दी जाती है। वे भारत के किसी भी कालिज अथवा विश्वविद्यालय में पढ़ सकते हैं।

नागालैण्ड के लोग अब भारत के अन्य राज्यों के लोगों के समीप आते जा रहे हैं। राज्य में अच्छी-अच्छी सड़कें बनाई जा रही हैं। मुख्य-मुख्य नगर सड़कों द्वारा एक दूसरे से मिले हैं। नागालैण्ड में इमारती लकड़ी बहुत होती है। यह भारत के अन्य प्रदेशों को भेजी जाती है। आजकल भारत के अन्य राज्य भी नागालैण्ड को बहुत-सी वस्तुएँ भेजते हैं। नागालैण्ड के लोग अब अपने घरों में मेज़, कुर्सी आदि का प्रयोग करते हैं। वे बढ़िया जूते, हैट, बरसाती आदि पहनते हैं। स्त्रियाँ और लड़कियाँ ब्लाउज़ और स्कर्ट पहनती हैं। वे छतरियाँ भी काम में लाती हैं। नागा लोग पहले बाँस और लकड़ी के बर्तन प्रयोग करते थे। अब वे धीरे-धीरे धातु के बने बर्तन काम में लाने लगे हैं। सभी बड़े शहरों और बहुत-से गाँवों में अस्पताल खोले गए हैं। कोहिमा और कुछ अन्य नगरों में बिजली भी है।

नागालैण्ड में बहुत-सी घरेलू दस्तकारियाँ हैं। नागा स्त्रियाँ कातने-बुनने में बहुत चतुर होती हैं। वे छोटी-छोटी खड्डियों पर सुंदर नमूने वाले कपड़े बुनती हैं। बहुत-सी स्त्रियाँ और लड़कियाँ सरकारी तकनीकी स्कूलों में जाती हैं। वे वहाँ पर कपड़ा बुनना, स्वेटर बनाना, कागज़ बनाना और सिलाई आदि का काम सीखती हैं। लड़के बढ़ई का काम, लोहार का काम, मकान बनाना और लकड़ी पर खुदाई का काम सीखते हैं।

नागा लोगों में ऊँच-नीच का कोई विचार नहीं होता। वे स्वभाव से बड़े निडर और मस्त होते हैं। बहादुरी और साहस तो उनमें कूट-कूटकर भरा होता है। वे नाचना-गाना बहुत पसंद करते हैं।
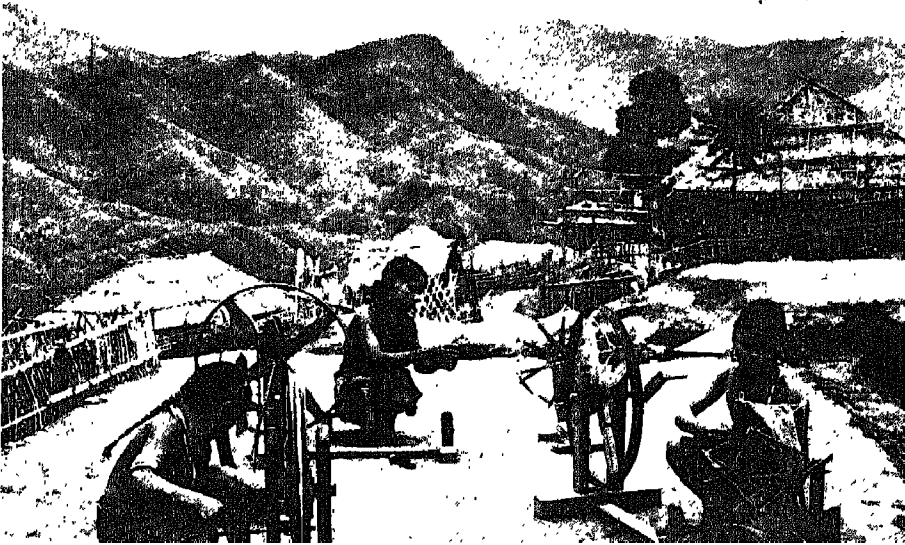
नागा लड़कियाँ बुनाई सीखती हुई

अब बताओ

1. नागा गाँव दूर से किस तरह् का लगता है ?
2. नागा लोगों का मुख्य भोजन क्या होता है ?
3. स्वतंत्रता के बाद नागालैण्ड ने जो उन्नति की है, उसे अपने शब्दों में सुनाओ।
4. नागा लोगों के मुख्य काम धंधे और घरेलू दस्तकारियों के नाम बताओ।
5. नीचे लिखे अधूरे वाक्यों को पूरा करो :
   (क) दाव नागा लोगों का एक ———— होता है।
   (ख) 'जू' ———— का रस होता है।
   (ग) नागालैण्ड की राजधानी ———— है।
   (घ) नागा स्त्रियाँ ———— में निपुण होती हैं।

कुछ करने को

1. नागालैण्ड जो चीज़ें दूसरे राज्यों को भेजता है अथवा उनसे प्राप्त करता है, उनकी सूची बनाओ।
2. अपने को नागालैण्ड का एक लड़का मान कर बताओ कि नागालैण्ड किस तरह् बदल रहा है।

बिहार

0 100

किलोमीटर

नेपाल

उत्तर प्रदेश

दरभंगा

कोसी बाँध

पूर्णिया

कोसी

सोनपुर

पटना

गंगा

भागलपुर

बिहार

गया

डाल्टनगंज

हजारीबाग

बोकारो बाँध

सिन्दरी

दामोदर

राँची

पश्चिमी बंगाल

जमशेदपुर

उड़ीसा

24°

22°

84°

86°

88°
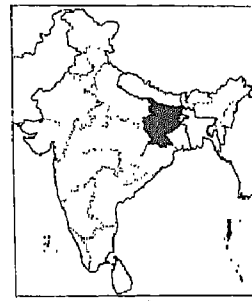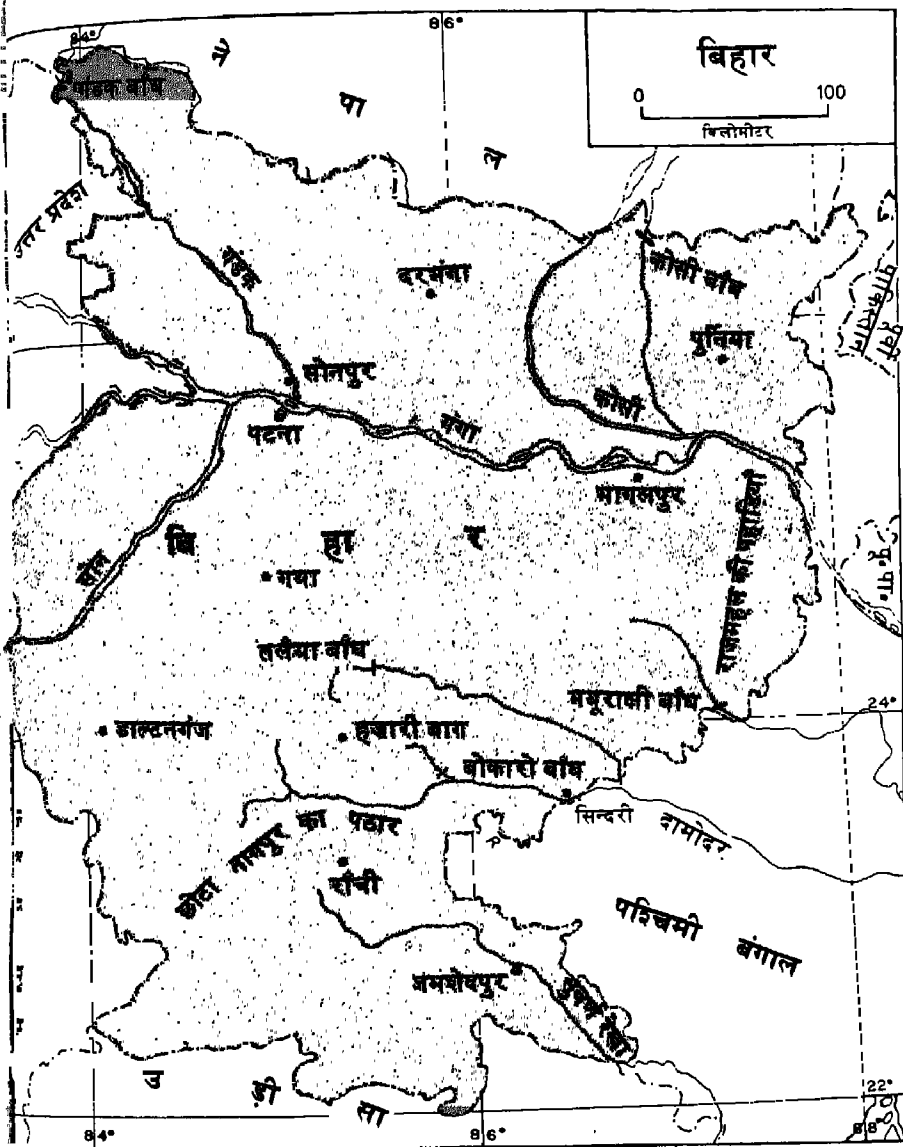
17. बिहार

ऊपर दिए मानचित्र को देखो। यह हमारा बिहार राज्य है। इस राज्य की उत्तरी सीमा नेपाल से मिलती है। हमारे देश के चार राज्यों की सीमाएँ इससे लगी हैं। इन पड़ोसी राज्यों के नाम बताओ।

मानचित्र में देखो कि इस राज्य के उत्तरी भाग में कौन-कौन-सी नदियाँ बहती हैं। इनमें प्रमुख नदी गंगा है। नदियों ने इस भाग को उपजाऊ बना दिया है। यहाँ भूमि समतल है। इस मैदान के दक्षिण में पहाड़ी भाग है। यहाँ की नदियों ने पहाड़ियों को घिस-घिसकर घाटियाँ बना ली हैं। इन घाटियों में रहनेवाले लोग चावल की खेती करते हैं।

इस राज्य के दक्षिणी भाग में घाटियों को छोड़कर लगभग सब भूमि जंगलों से ढकी हुई है। इनमें चीता, भालू, हिरन आदि जंगली जानवर रहते हैं। इन जंगलों से इमारती लकड़ी और लाख मिलती है। यहाँ एक प्रकार की लकड़ी और घास भी मिलती है जिससे कागज़ और गत्ता बनाया जाता है। इस राज्य का दक्षिणी भाग हमारे देश में खनिज का बड़ा भंडार है। लोहा, कोयला, मैंगनीज़ और अभ्रक जैसे खनिज यहाँ भूमि के नीचे दबे मिलते हैं। हमारे देश में लोहे का तो यह सबसे बड़ा भंडार है। इस्पात बनाने के लिए लोहा, कोयला और मैंगनीज़ बहुत ही आवश्यक हैं।

मानचित्र में दामोदर नदी देखो। इस नदी में अक्सर बाढ़ आती है, जिससे बहुत हानि होती है। अब दामोदर घाटी योजना के अधीन कई छोटे-बड़े बाँध बना दिए गए हैं। बाँध से पानी इकट्ठा किया जाता है। यह पानी सिंचाई करने और बिजली बनाने के काम आता है।

इस राज्य के मैदानी भाग में भी कभी-कभी नदियों में बाढ़ आ जाती है। इससे भारी हानि होती है। यहाँ भी नदियों पर कई छोटे-बड़े बाँध बनाए गए हैं। इनमें कोसी और गंडक बाँध प्रमुख हैं। ये बाढ़ को तो रोकते ही हैं, साथ ही साथ इनसे सिंचाई के लिए भी पानी मिल जाता है।
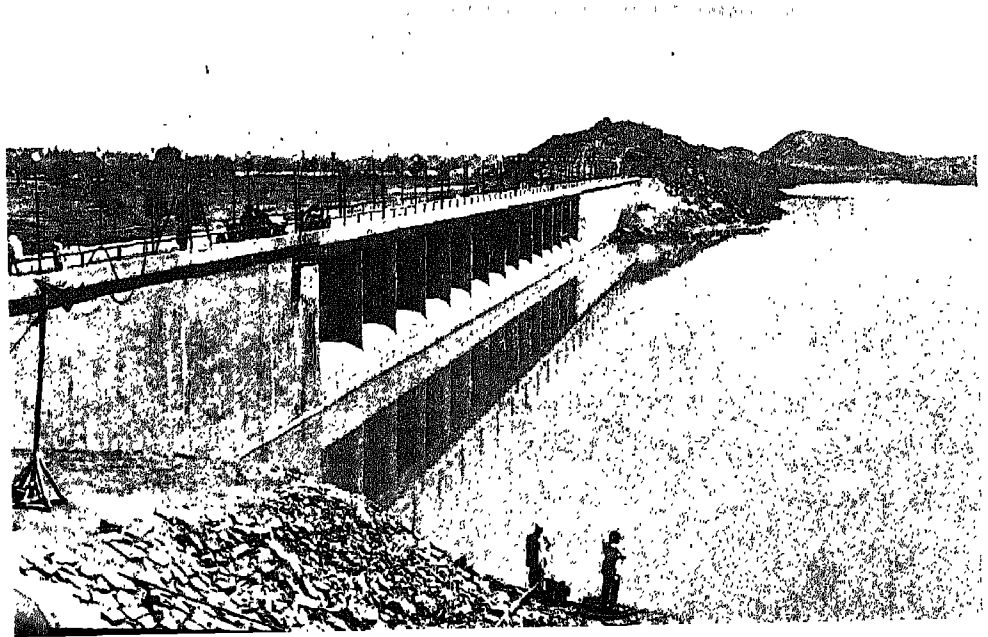
तिलैया बाँध

नालंदा के खँडहर
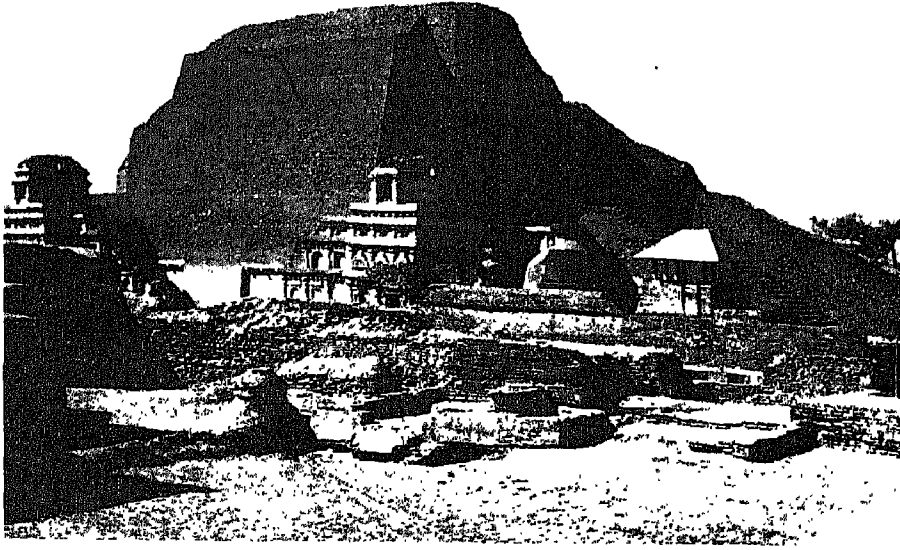
इस राज्य में गर्मी के मौसम में काफ़ी गर्मी और सर्दी में काफ़ी ठंड होती है। पश्चिमी भाग की अपेक्षा पूर्वी और दक्षिणी भाग में वर्षा अधिक होती है।

घाटियों और मैदान में रहनेवाले लोग अधिकतर खेती करते हैं। वे अपने खेतों में चावल, गेहूँ, मक्का, गन्ना और तंबाकू पैदा करते हैं। उत्तरी मैदान में आम, लीची और केला खूब होता है।

मैदानी भाग के नगरों में पक्के मकान बनाए जाते हैं। गाँव के मकानों की दीवारें मिट्टी अथवा ईंटों की होती हैं और इनकी ढलवाँ छतें छप्पर अथवा खपरैल की होती हैं। यहाँ के लोगों का मनभाता भोजन दाल, चावल और सब्ज़ी है। ये लोग मांस और मछली भी खाते हैं। आमतौर से पुरुष धोती और कुर्ता पहनते हैं। स्त्रियाँ साड़ी और ब्लाउज़ पहनती हैं। स्त्रियों को ज़ेवर पहनने का भी शौक है।

बिहार के लोग हिन्दी भाषा बोलते हैं। कुछ लोग उर्दू भी बोलते हैं। ये लोग नाच-गाने के शौकीन होते हैं। ये होली, दीवाली, दशहरा, ईद आदि सभी त्योहार मनाते हैं।

मानचित्र में छोटा नागपुर पठार देखो। यहाँ आदिवासी लोग रहते हैं। ये लोग शरीर से मज़बूत होते हैं। अधिकतर लोग खेती करते हैं। कुछ लोग शिकार करते हैं। अब बहुत-से लोग कारखानों और खानों में काम करके अपनी रोज़ी कमाते हैं। इनका रहन-सहन और भोजन सादा है। प्रत्येक जाति की अपनी अलग बोली है। अब इन लोगों के विकास के लिए सरकार कई प्रकार से सहायता कर रही है।
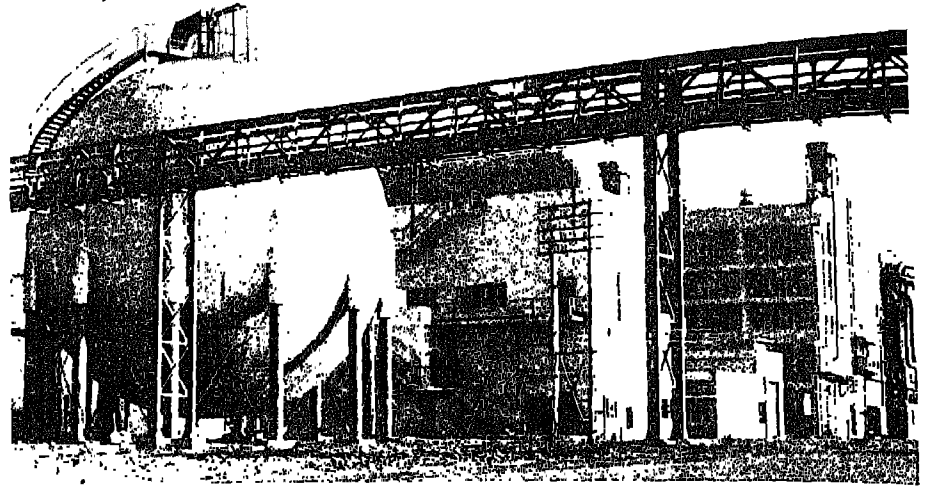
सिंदरी का कारखाना

मानचित्र में पटना नगर देखो। यह नगर गंगा नदी के किनारे बसा हुआ है। यह बिहार की राजधानी है। पटना एक पुराना नगर है। पुराने समय में यह पाटलिपुत्र कहलाता था। यहाँ 'गोलघर', 'अजायबघर' और 'हर मंदिर' देखने योग्य हैं। 'हर मंदिर' गुरु गोबिन्द सिंह का जन्मस्थान है।

सोनपुर में हर वर्ष नवंबर के महीने में एक बड़ा पशुमेला होता है। इस मेले में दूर-दूर से अच्छे-अच्छे पशु लाए जाते हैं। यहाँ छोटे पक्षी से लेकर हाथी तक बिकता है।

इस राज्य का एक और बड़ा नगर गया है। यह हिन्दुओं का तीर्थ स्थान है। इसके समीप ही 'बुद्ध गया' है। यहाँ का महाबोधि मंदिर प्रसिद्ध है। देश-विदेश से लोग इस मंदिर को देखने आते हैं। नालंदा के खँडहर भी बहुत प्रसिद्ध हैं। नालंदा पुराने समय में शिक्षा का एक बड़ा केन्द्र था।

बिहार शरीफ़ मुसलमानों का पवित्र स्थान है। इसके समीप ही जैनियों का पवित्र स्थान पावापुरी है। राजगिरि में गर्म पानी के चश्मे हैं। इन्हें देखने हज़ारों लोग आते हैं। कहते हैं कि पुराने समय में महात्मा बुद्ध बहुत समय तक यहाँ रहे थे। हज़ारीबाग क्षेत्र अभ्रक की खानों के लिए प्रसिद्ध है। हज़ारीबाग के दक्षिण में राँची है। यह एक सुंदर पहाड़ी नगर है। अब यह एक औद्योगिक नगर बन रहा है।

मानचित्र में जमशेदपुर देखो। यहाँ का टाटा आयरन एंड स्टील वर्क्स देशभर में प्रसिद्ध है। बोकारो नाम के स्थान पर एक दूसरा लोहा-इस्पात कारखाना स्थापित किया जा रहा है।

सिंदरी नामक स्थान पर खाद बनाने का बड़ा कारखाना है। बरौनी में तेल साफ़ करने का कारखाना है।

अब बताओ

1. बिहार राज्य की सीमाओं से लगे हुए राज्यों और देशों के नाम बताओ।
2. बिहार राज्य में कौन-कौन-से खनिज पदार्थ पाए जाते हैं ?
3. बिहार के लोगों के मुख्य धंधे बताओ।
4. बिहार राज्य में लोहे और इस्पात के कारखाने क्यों बनाए गए हैं ?
5. नीचे तालिका 1 में कुछ नगरों के नाम दिए गए हैं। तालिका 2 में दिए गए तथ्यों के सामने सही स्थान का नाम लिखो :

1	2
पटना	खाद का कारखाना
जमशेदपुर	बौद्ध तीर्थ स्थान
बुद्ध गया	सुंदर पहाड़ी नगर
सिंदरी	लोहा और इस्पात का कार-खाना।
सोनपुर	बिहार राज्य की राजधानी
राँची	पशु मेला

कुछ करने को

1. बिहार राज्य के मानचित्र में दिखाओ :
   (क) नदियाँ : गंगा, गंडक, कोसी, सोन, दामोदर, सुवर्णरेखा।
   (ख) नगर : पटना, भागलपुर, गया, हज़ारीबाग, राँची, जमशेद-पुर, सिंदरी।
2. दामोदर घाटी योजना से संबंधित चित्र एकत्र करो और अपने अध्यापक से इस योजना के संबंध में अधिक जानकारी प्राप्त करो।
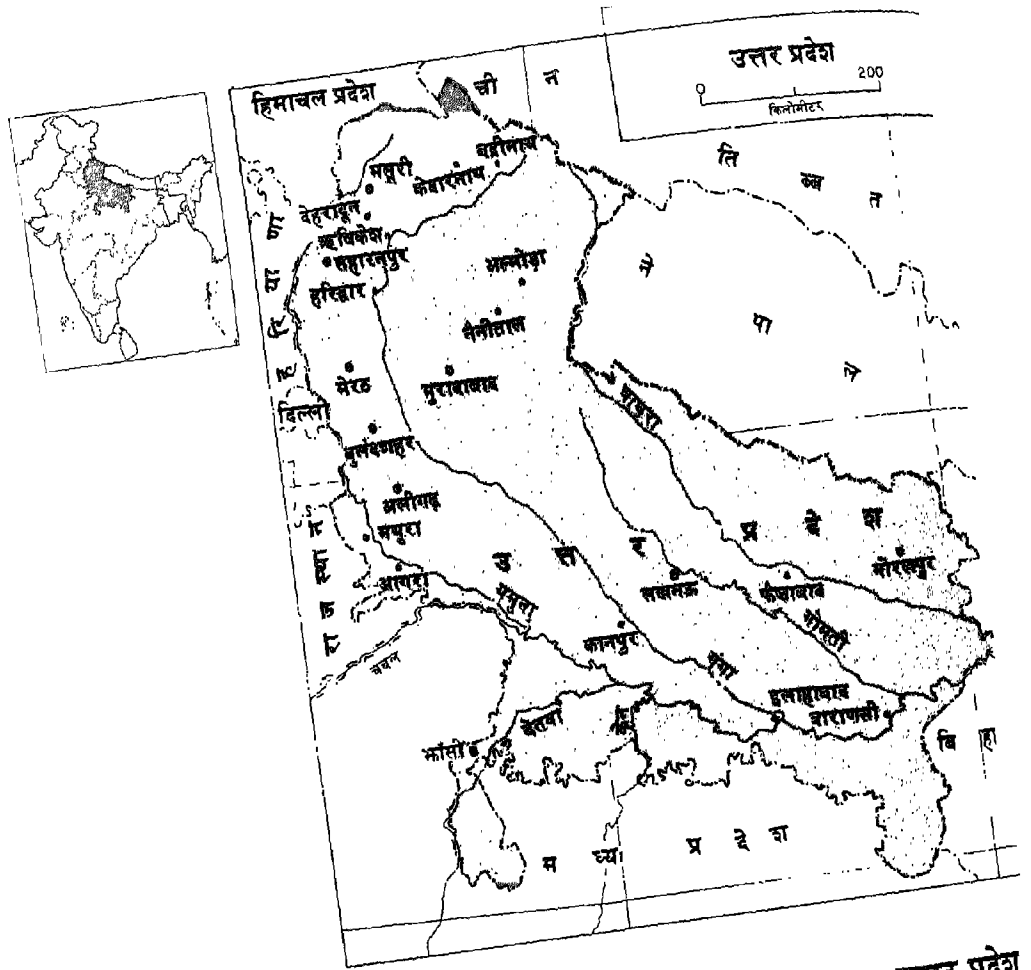
18. उत्तर प्रदेश

ऊपर दिए गए उत्तर प्रदेश के मानचित्र को देखो। हमारे इस राज्य के उत्तर में नेपाल और चीन देश हैं। उत्तर प्रदेश की सीमाओं को छूनेवाले भारत के अन्य राज्यों के नाम मानचित्र में पढ़ो।

उत्तर प्रदेश हमारे देश का एक बहुत बड़ा राज्य है। जनसंख्या में तो यह भारत के सभी राज्यों से बड़ा है। जानते हो कितने लोग इसमें रहते हैं ?

मानचित्र में देखो। सारे उत्तर प्रदेश में नदियों का जाल-सा बिछा हुआ है। गंगा

और यमुना दो बड़ी नदियाँ इसके बीच से होकर बहती हैं। इन बड़ी नदियों में कई छोटी-छोटी नदियाँ आकर मिलती हैं। ये गंगा, यमुना की सहायक नदियाँ हैं। इनमें घाघरा, बेतवा और गोमती मुख्य हैं। तुम इन्हें मानचित्र में ढूँढ़ सकते हो।

उत्तर प्रदेश में हज़ारों गाँव हैं। इन गाँवों के रहनेवाले लोग अधिकतर खेती-बाड़ी करते हैं। तुम कभी उत्तर प्रदेश के किसी गाँव में जाओ तो देखोगे कि गाँव के आसपास खेतों में किसान काम कर रहे हैं। दूर-दूर तक हरे-भरे खेत लहलहा रहे हैं। जगह-जगह पर आम, अमरूद, जामुन, नीम और महुवा के पेड़ हैं। कहीं कोई किसान अपने खेत में हल चला रहा है, तो कोई रहट चलाकर खेतों की सिंचाई कर रहा है। आजकल बहुत-से किसान खेती के नए तरीक़े अपना रहे हैं। वे ट्रैक्टरों से खेती करते हैं। बहुत-से गाँवों में नलकूपों से सिंचाई होती है। नदियों से बहुत-सी नहरें भी निकाली गई हैं। इनके पानी से भी खेतों की सिंचाई की जाती है। रासायनिक खाद और अच्छे बीजों का प्रयोग लोकप्रिय हो रहा है।

उत्तर प्रदेश की भूमि बहुत उपजाऊ है। यहाँ पैदावार खूब होती है। गेहूँ और गन्ने की भारी उपज के लिए तो यह राज्य सारे भारत में प्रसिद्ध है। जौ, चना, आलू आदि की खेती भी यहाँ होती है। इलाहाबाद के अमरूद और लखनऊ के आम तुमने अवश्य खाए होंगे। उत्तर प्रदेश में जगह-जगह पर बड़े-बड़े बाग़ हैं जिनमें आम, अमरूद, जामुन और लीची खूब होते हैं।

तुम यदि उत्तर प्रदेश के किसी गाँव के पनघट पर जाओ तो साड़ी-ब्लाउज़ या लहँगा-ओढ़नी पहने स्त्रियाँ पानी भरती हुई मिलेंगी। गाँवों में कच्चे-पक्के घर होंगे और धोती-कुर्ता और टोपी पहने हुए पुरुष दिखाई देंगे। गाँवों में अधिकतर मकान कच्ची या पक्की ईंटों से बनाए जाते हैं। मकानों की छतें पत्थर या फूँस से बनी होती हैं। यहाँ के सभी लोग हिन्दी बोलते हैं। कुछ लोग उर्दू भी बोलते हैं।

उत्तर प्रदेश के लोग बहुत-से त्योहार मनाते हैं। इनमें होली, रक्षा-बंधन, कृष्ण-जन्माष्टमी, राम नवमी, दशहरा, दीवाली, ईद और क्रिसमस मुख्य हैं। बरसात के मौसम में स्त्रियाँ और लड़कियाँ तीज मनाती हैं। रामलीला और रासलीला भी बहुत लोकप्रिय हैं।

इस राज्य में कई बड़े उद्योग भी हैं। गन्ने से चीनी बनाने के तो यहाँ बहुत-से कारखाने हैं जिनमें प्रतिवर्ष लाखों क्विंटल चीनी तैयार होती है। यह चीनी विदेशों को भी भेजी जाती है।

बड़े-बड़े कारखाने अधिकतर बड़े शहरों में हैं। कानपुर एक बहुत बड़ा औद्योगिक शहर है। यहाँ पर ऊनी-सूती कपड़े और चमड़े का सामान बनाने के कारखाने बहुत

प्रसिद्ध हैं। यहाँ पर हवाई जहाज बनाने का कारखाना भी है।

आगरे का ताजमहल संसारभर में प्रसिद्ध है। यह सुंदर इमारत सफ़ेद संगमरमर की बनी हुई है। इसे मुग़ल बादशाह शाहजहाँ ने बनवाया था।

उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ एक सुंदर और पुराना नगर है। यह गोमती नदी के किनारे बसा हुआ है। यहाँ पर अवध के नवाबों के समय के कई इमामबाड़े और इमारतें हैं।

इलाहाबाद में गंगा और यमुना का संगम होता है। इसका पुराना नाम प्रयाग है। यह हिन्दुओं का एक बहुत प्रसिद्ध तीर्थस्थान है। प्रति बारह वर्षों के बाद यहाँ कुंभ मेला लगता है। देश के हर भाग से लाखों लोग इस अवसर पर गंगा-स्नान करने आते हैं। क्या तुम्हें मालूम है कि स्वर्गीय चाचा नेहरू का जन्म भी इलाहाबाद में ही हुआ था ?
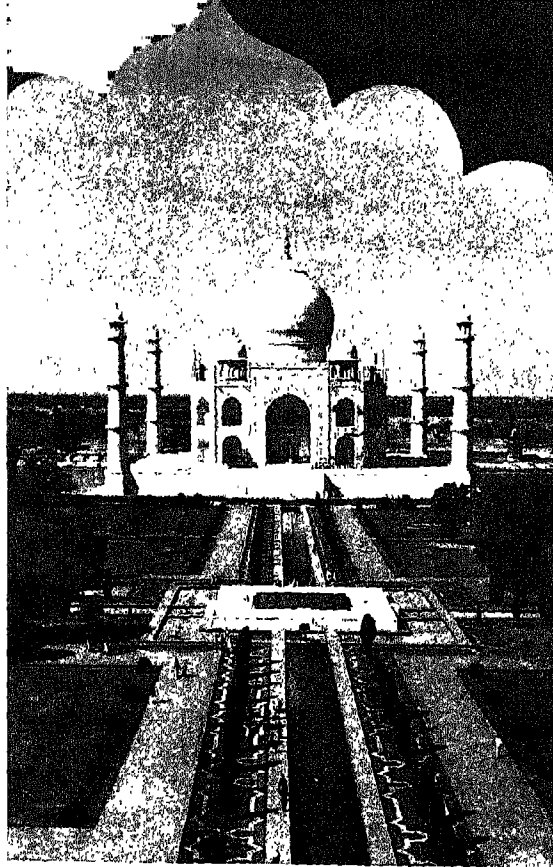
ताजमहल
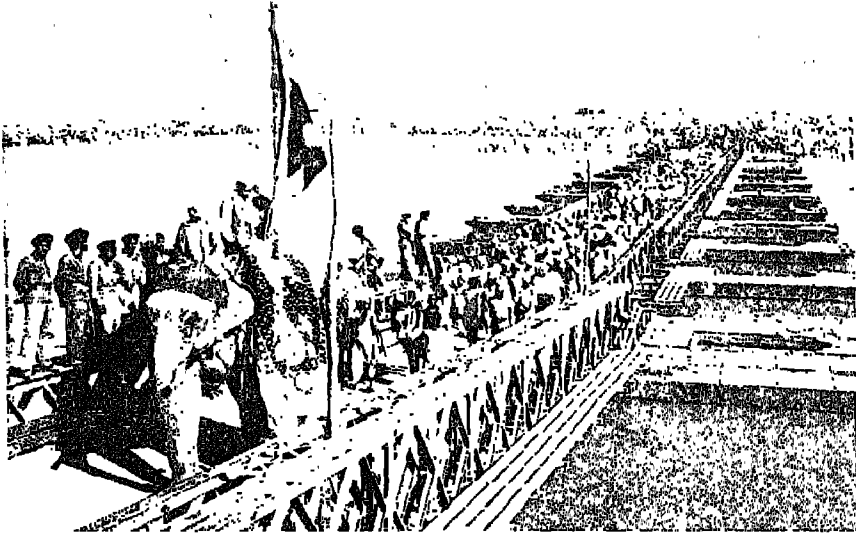
इलाहाबाद का कुंभ मेला

इस राज्य में और भी कई तीर्थस्थान हैं, जैसे मथुरा, वृंदावन, वाराणसी, हरिद्वार, अयोध्या आदि। इन स्थानों पर बहुत-से प्रसिद्ध मंदिर हैं। वाराणसी के पीतल के बरतन और ज़री की रेशमी साड़ियाँ मशहूर हैं। यहाँ पर रेल के डीज़ल इंजिन बनाने का एक कारखाना भी है।

उत्तर प्रदेश के उत्तरी भाग में हिमालय पर्वतमाला है। अलमोड़ा, नैनीताल, मसूरी और देहरादून इसी भाग में हैं। ये सुंदर पहाड़ी स्थान हैं। बहुत-से लोग गर्मियों में इन स्थानों को जाते हैं।

अब बताओ

1. उत्तर प्रदेश की मुख्य उपज क्या हैं ?
2. क्या कारण है कि उत्तर प्रदेश के किसान कई प्रकार की फसलें और फल उगाते हैं ?

3. यहाँ के कुछ प्रसिद्ध उद्योगों के नाम बताओ।
4. नीचे एक ओर कुछ स्थानों के नाम दिए गए हैं। प्रत्येक स्थान के प्रसिद्ध होने का सही कारण छाँटकर उसका अक्षर कोष्ठक में लिखो :

( )	इलाहाबाद	(अ)	यह उत्तर प्रदेश की राजधानी है।
( )	लखनऊ	(आ)	प्रत्येक बारह वर्षों के बाद कुंभ का मेला लगता है।
( )	आगरा	(इ)	यह एक बड़ा औद्योगिक नगर है।
( )	कानपुर	(ई)	यह एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थान है।
( )	हरिद्वार	(उ)	यह पीतल के काम और रेशमी साड़ियों के लिए प्रसिद्ध है।
( )	वाराणसी	(ऊ)	यहाँ पर ताजमहल है।

कुछ करने को

1. उत्तर प्रदेश के बड़े मानचित्र में नीचे लिखे नगरों को ढूँढ़ो। यह भी मालूम करो कि ये नगर किस नदी के किनारे पर स्थित हैं :
   हरिद्वार, कानपुर, मथुरा, लखनऊ, फैज़ाबाद, वाराणसी, इलाहाबाद और आगरा।
2. अपने अध्यापक जी से पूछो कि उत्तर प्रदेश में भारत के अन्य राज्यों की अपेक्षा अधिक जनसंख्या होने के क्या कारण हैं।

19. दिल्ली
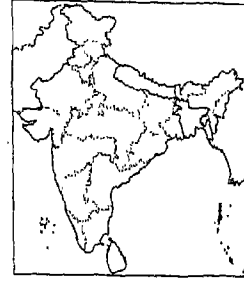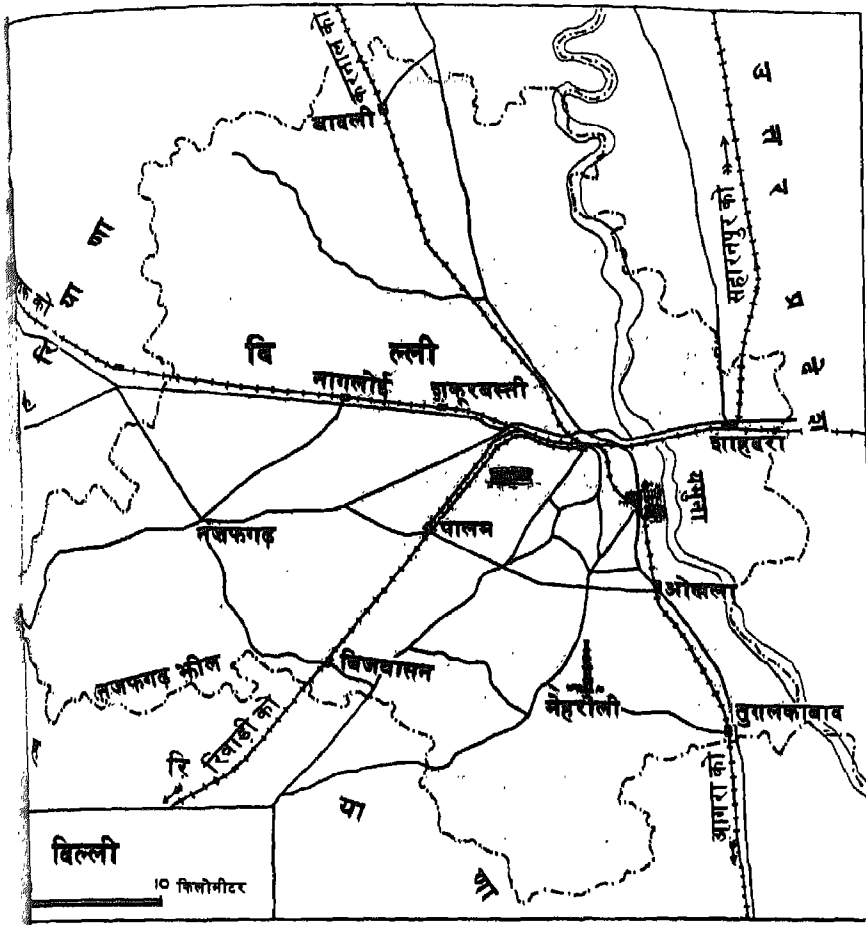
ऊपर दिल्ली राज्य का मानचित्र देखो। यह हमारे देश का एक छोटा राज्य है। यह एक संघीय क्षेत्र है। हरियाणा और उत्तर प्रदेश इसके पड़ोसी राज्य हैं।

दिल्ली राज्य के कुछ भाग में छोटी पहाड़ियाँ हैं। शेष सारा दिल्ली राज्य मैदान है। यमुना नदी इस राज्य में से बहती है। यहाँ की भूमि उपजाऊ है। किसान गेहूँ, जौ, चना, ज्वार, बाजरा, गन्ना और सब्ज़ियाँ पैदा करते हैं। यहाँ पर जुलाई से सितंबर तक वर्षा होती है। यहाँ सर्दियों में बहुत ठंड और गर्मियों के मौसम में बहुत गर्मी पड़ती है।
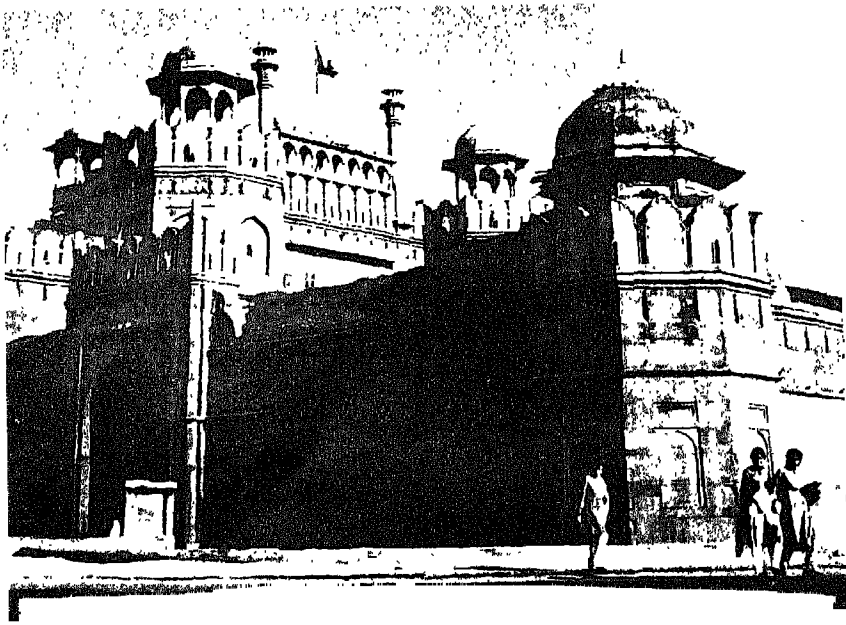
लाल किला

दिल्ली राज्य को हमारे देश में एक विशेष स्थान प्राप्त है। भारत की राजधानी दिल्ली नगर इसी राज्य में है। राज्य के बड़े भाग में दिल्ली नगर फैला हुआ है। शेष भाग में गाँव हैं। ये गाँव बड़ी तेज़ी से दिल्ली नगर का भाग बनते जा रहे हैं।

दिल्ली एक बहुत पुराना नगर है। इस नगर की कहानी पुरानी और लंबी है। यह नगर कई बार बसा, कई बार उजड़ा है और उजड़कर फिर बसा है। यही नहीं, दिल्ली नगर की कहानी के साथ हमारे पूरे देश की कहानी जुड़ी हुई है। पुराने समय के कई किले और महल, मीनार और मकबरे, मंदिर और मस्जिद, आज भी यहाँ देखे जा सकते हैं।

दिल्ली पुराने समय में कई बार हमारे देश की राजधानी रह चुकी है। कहते हैं, महाभारत के समय पांडवों की राजधानी भी यहीं थी। उस समय इसका नाम इंद्रप्रस्थ था। इसके बाद कई राजाओं ने दिल्ली को नए सिरे से बसाया और सबने अपने नए नगर का नया नाम रखा।

आज से लगभग तीन सौ वर्ष पहले मुग़ल सम्राट शाहजहाँ ने यमुना के किनारे शाहजहानाबाद नाम का नगर बसाया। आजकल इसे पुरानी दिल्ली कहते हैं। इसके चारों ओर एक दीवार है। प्रसिद्ध लाल किला और जामा मस्जिद पुरानी दिल्ली में ही हैं।

नई दिल्ली में कई बड़े-बड़े भवन और दफ़्तर हैं। इनमें राष्ट्रपति भवन सबसे महत्त्वपूर्ण है। हमारे देश के राष्ट्रपति इसी विशाल भवन में रहते हैं। राष्ट्रपति हमारे देश के सबसे बड़े अधिकारी हैं।
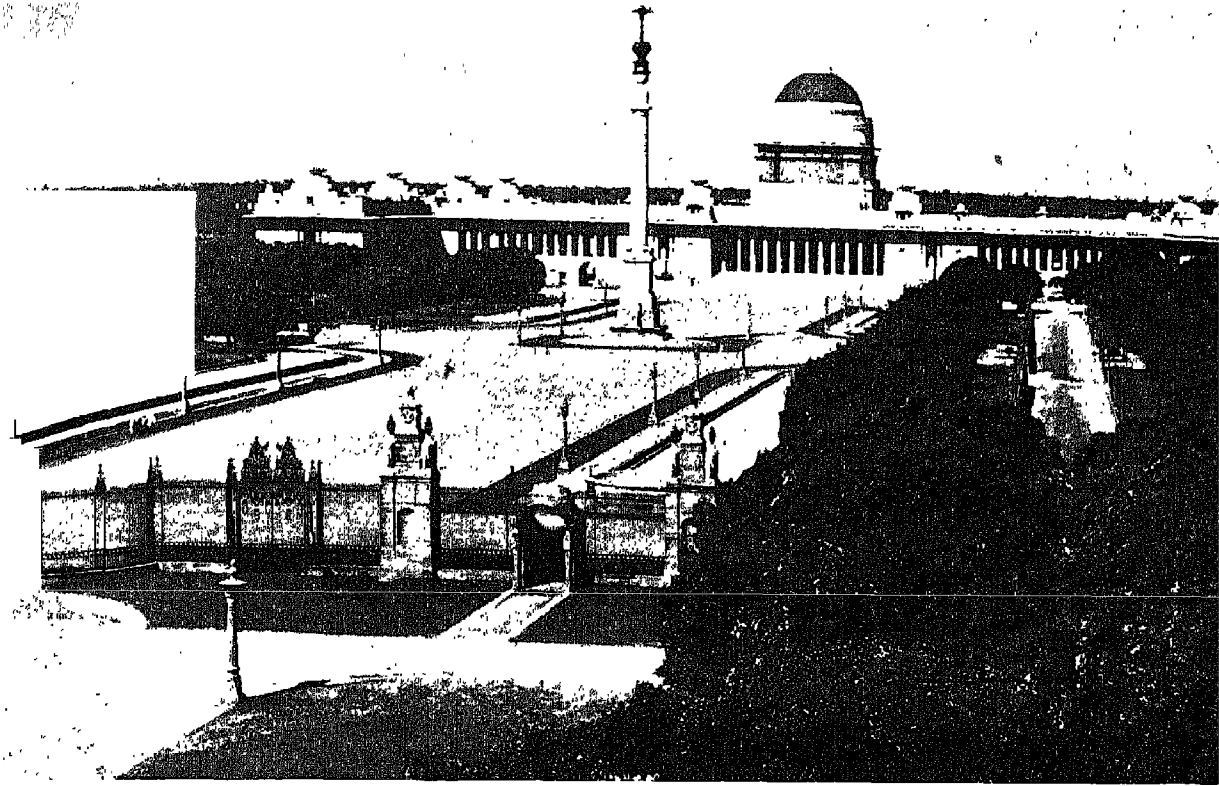
राष्ट्रपति भवन

देश की सरकार का बड़ा कार्यालय भी यहीं पर है। इसे केन्द्रीय सचिवालय कहते हैं। इसमें केन्द्रीय सरकार के लाखों कर्मचारी काम करते हैं। हमारे प्रधान मंत्री और अन्य मंत्रियों के दफ़्तर भी इसी भवन में हैं।

केन्द्रीय सचिवालय
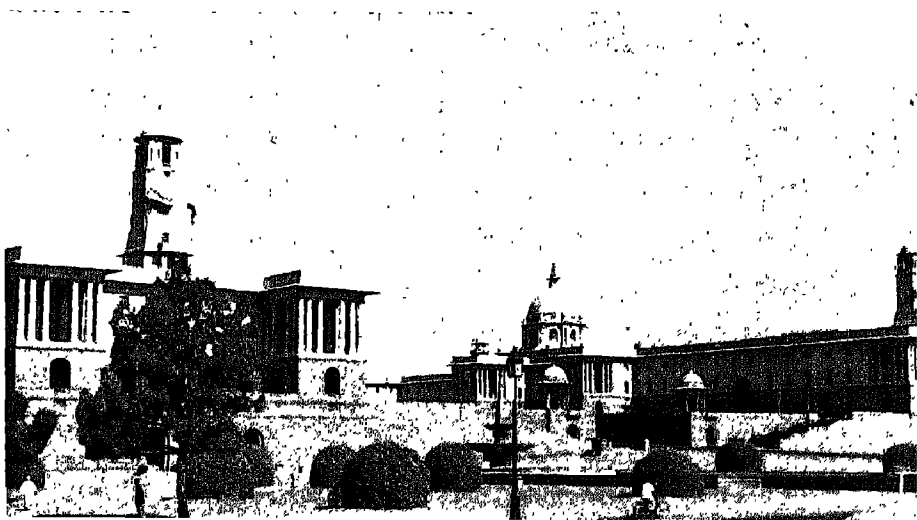
संसद भवन
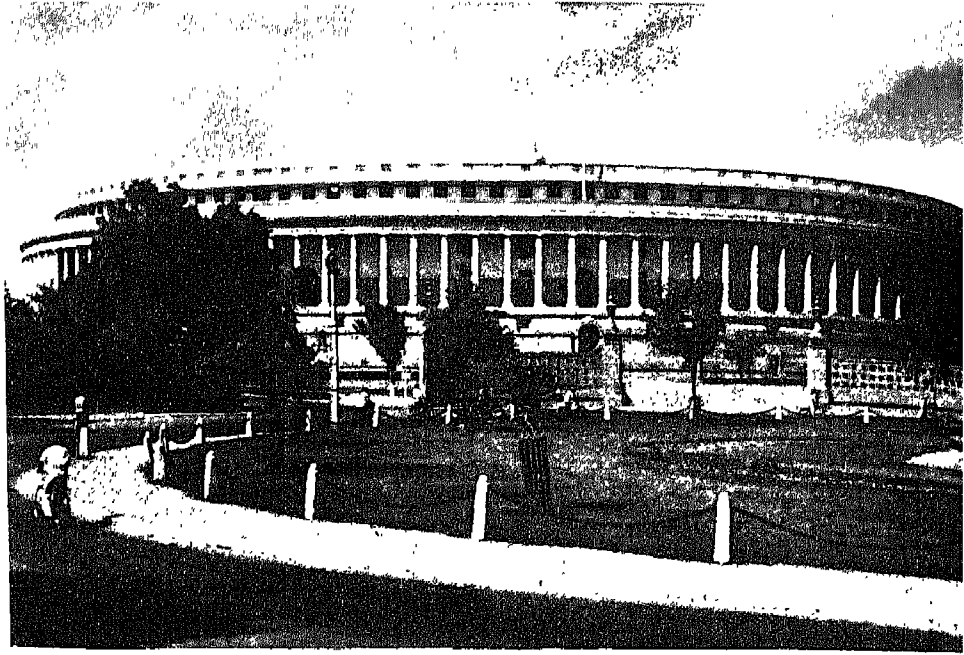
केन्द्रीय सचिवालय के पास ही एक और विशाल भवन है। इसका नाम है 'संसद भवन'। यह भवन गोलाकार बना है। बाहर के बरामदे में बड़े-बड़े खंभे हैं। देखने में यह भवन बहुत सुंदर है। हमारे देश की संसद की बैठकें इसी भवन में होती हैं। संसद के सदस्य भारत के सभी राज्यों और संघीय क्षेत्रों से चुने जाते हैं। वे देश के लिए कानून बनाते हैं। हम अपने देश के कानूनों का आदर करते हैं।

'सुप्रीम कोर्ट' का भवन भी महत्त्वपूर्ण है। सुप्रीम कोर्ट देश का सर्वोच्च न्यायालय है। भारत के सर्वोच्च न्यायाधीश की अदालत इसी भवन में है।

दिल्ली नगर भारत के अन्य राज्यों की राजधानियों और बड़े शहरों से रेल, मोटर अथवा हवाई जहाज़ से जुड़ा हुआ है। संसार के अन्य देशों से भी इसका संबंध है।

दिल्ली में तुम्हें भारत के सभी राज्यों के लोग मिलेंगे। कुछ लोग यहाँ नौकरी और व्यापार करने के लिए आते हैं। कुछ लोग सैर-सपाटे के लिए आते हैं। इनके रहन-सहन, रंग-रूप और पहनावे में अपने-अपने राज्य की झलक दिखाई देती है। संसार के दूसरे देशों के दूतावास भी दिल्ली में हैं। इनमें काम करनेवाले विदेशी राजदूत और उनके कर्मचारी भी दिल्ली में रहते हैं। रहन-सहन, रंग-रूप और पहनावे की दृष्टि से ये विदेशी लोग भारतीयों से भिन्न हैं। इस प्रकार हमें राजधानी में पूरे भारत और सारे संसार की एक सुंदर झलक मिलती है।
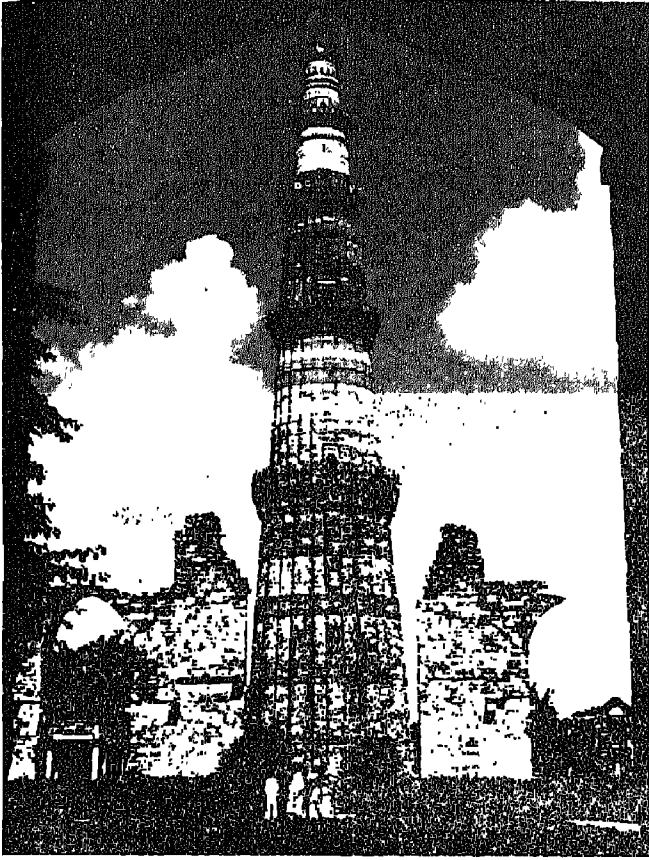
कुतुब मीनार

वैसे तो दिल्ली में हर समय ही बड़ी चहल-पहल रहती है। लेकिन स्वतंत्रता दिवस (15 अगस्त) और गणतंत्र दिवस (26 जनवरी) पर इस नगर की रौनक और भी बढ़ जाती है। ये दो दिन सारे देश में हर साल राष्ट्रीय त्योहार के रूप में मनाए जाते हैं। राजधानी दिल्ली में इन त्योहारों को बड़ी धूम-धाम से मनाया जाता है। 15 अगस्त को हमारे प्रधान मंत्री लाल किले पर राष्ट्रीय झंडा फहराते हैं और भाषण देते हैं। प्रतिवर्ष 26 जनवरी को राष्ट्रपति गणतंत्र दिवस परेड की सलामी लेते हैं। इन राष्ट्रीय त्योहारों में सभी लोग भाग लेते हैं।

कुतुब मीनार, राजघाट, चिड़ियाघर, बिड़ला मंदिर आदि दिल्ली के अन्य देखने योग्य स्थान हैं। यदि तुम कभी दिल्ली जाओ तो इन स्थानों को अवश्य देखो।

अब बताओ

1. शाहजहानाबाद किसने बसाया था ? आजकल इसे किस नाम से पुकारते हैं ?
2. दिल्ली हमारे देश का महत्त्वपूर्ण नगर क्यों है ?
3. उन चार स्थानों के नाम बताओ जो तुम दिल्ली जाने पर देखना चाहोगे।
4. दिल्ली में भारत के सभी राज्यों और विदेशों के लोग क्यों दिखाई देते हैं ?
5. नीचे लिखे वाक्यों के सामने सही भवन का नाम लिखो :
    (क) जहाँ भारत के राष्ट्रपति रहते हैं ———————
    (ख) जहाँ भारतीय संसद की बैठक होती है ———————
    (ग) जहाँ भारत के सर्वोच्च न्यायाधीश की अदालत है ———————
    (घ) जहाँ केन्द्रीय सरकार के दफ़्तर हैं ———————

कुछ करने को

1. दिल्ली के देखने योग्य स्थानों और लोगों के जीवन से संबंधित चित्र एकत्र करो।
2. अपने देश की राजधानी की एक काल्पनिक यात्रा का वर्णन अपने शब्दों में करो।

इतिहास की कहानियाँ

पिछली कक्षा में तुमने अध्यापकजी से कई कहानियाँ सुनी हैं। ये सब कहानियाँ तुम्हें याद होंगी। इनके अलावा कुछ और कहानियाँ भी तुम्हें आती होंगी।

इस भाग में तुम्हें कई नई कहानियाँ पढ़ने को मिलेंगी। ये सब पुराने समय की कहानियाँ हैं। इनको पढ़कर तुम्हें अपने महान् देश के कई प्रसिद्ध राजाओं और महापुरुषों के विषय में जानकारी होगी। पुराने समय के लोगों के जीवन और रहन-सहन के बारे में भी तुम्हें बहुत-सी बातें सीखने को मिलेंगी। इस प्रकार की बहुत-सी कहानियाँ तुम अपने माता-पिता से भी सुन सकते हो।

इन रोचक कहानियों को पढ़ो, याद करो और दूसरों को सुनाओ।

20. रामायण की कहानी

बहुत पुराने समय की बात है। अयोध्या में राजा दशरथ राज करते थे। उनके तीन रानियाँ थीं। उनसे चार पुत्र हुए। सबसे बड़े मुत्र राम की माता कौशल्या थीं। भरत की माता कैकेयी और लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न की माता सुमित्रा थीं।

राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न एक दूसरे से बहुत प्रेम करते थे। राम बड़े थे, इसलिए उनके तीनों भाई उनका बहुत आदर करते थे। इन चारों भाइयों को बचपन से बड़े लाड़-प्यार से पाला गया। राजा दशरथ ने इनको गुरु वशिष्ठ के आश्रम में पढ़ने के लिए भेजा। कुछ समय में चारों राजकुमारों ने अपनी शिक्षा समाप्त कर ली। उन्होंने धनुष-बाण चलाने और युद्ध करने की शिक्षा भी प्राप्त की।

अयोध्या के पड़ोस में ही एक और राज्य था 'मिथिला'। उस समय वहाँ राजा जनक राज करते थे। उन्होंने अपनी पुत्री सीता के विवाह के लिए स्वयंवर रचा। स्वयंवर में लड़की स्वयं अपना पति चुनती है। स्वयंवर की शर्त यह थी कि जो राजा 'शिव के धनुष' को उठाकर डोरी चढ़ाएगा, उसी से सीता का विवाह होगा। सभी राजाओं ने बारी-बारी से धनुष को उठाने की कोशिश की। जब कोई भी राजा धनुष को उठा तक

न सका तब गुरु विश्वामित्र के कहने पर राम धनुष की ओर बढ़े। राम ने आसानी से धनुष को उठा लिया। डोरी चढ़ाने के लिए उन्होंने धनुष को झुकाया ही था कि वह टूटकर दो टुकड़े हो गया। सीता ने राम के गले में वरमाला डाल दी। इस प्रकार राम और सीता का विवाह हुआ। राम के तीनों छोटे भाइयों का विवाह भी बाद में सीता की बहिनों के साथ मिथिला में ही हुआ।

राजा दशरथ अब बूढ़े हो चले थे। वह अपने बड़े पुत्र राम को युवराज बनाना चाहते थे, लेकिन रानी कैकेयी अपने पुत्र भरत को युवराज बनाना चाहती थी। एक बार राजा दशरथ ने प्रसन्न होकर रानी कैकेयी को उसकी दो मनचाही इच्छाओं को पूरा करने का वचन दिया था। उसी वचन के अनुसार कैकेयी ने राम को चौदह वर्ष का वनवास दिलवाया और अपने पुत्र भरत के लिए राजगद्दी माँग ली। भरत उस समय वहाँ पर नहीं थे। यदि वे होते तो शायद ऐसा न होता।

पिता की आज्ञा सुनते ही राम वन चले गए। सीता और लक्ष्मण भी उनके साथ गए। राजा दशरथ को इस घटना से इतना अधिक दुख हुआ कि उनकी मृत्यु हो गई।

अयोध्या लौटने पर भरत यह जानकर बहुत दुखी हुए। भरत राम से बहुत प्रेम करते थे। वे चाहते थे कि राम ही को राजगद्दी मिले। इसलिए उन्होंने राजा बनना स्वीकार नहीं किया और वे राम से वन में मिलने गए। वहाँ उन्होंने राम को मनाने की बहुत कोशिश की, लेकिन राम राजा बनने के लिए राजी नहीं हुए और पिता के वचन का पालन करने के लिए वन में ही रहे। भरत ने एक अच्छे भाई की तरह राम की पादुका राज सिंहासन पर रख दी और उन्हीं के नाम पर राज्य की देखभाल करने लगे।

राम, लक्ष्मण और सीता वनों में चलते-चलते पंचवटी स्थान पर जा पहुँचे। यह स्थान महाराष्ट्र में नासिक के पास है। उन्होंने वहाँ घास-फूँस की एक सुंदर कुटिया बनाई और उसी में रहकर अपने वनवास के दिन पूरे करने लगे।

एक दिन राम और लक्ष्मण वन में शिकार खेलने गए हुए थे और सीता कुटिया में अकेली थी। सीता को अकेला देखकर रावण एक साधु के भेष में भीख माँगने आया और सीता को उठाकर ले गया। रावण लंका का राजा था।

राम और लक्ष्मण जब वापस आए तो सीता को कुटिया में न पाकर बड़े दुखी हुए। वे सीता को ढूँढ़ने निकले, तो बानरों के राजा सुग्रीव से उनकी मित्रता हो गई। उन्होंने सुग्रीव तथा उसके वीर साथी अंगद और हनुमान की सहायता से एक बड़ी सेना तैयार की। अपनी सेना के साथ राम ने रामेश्वरम् के पास समुद्र पर पुल बाँधा और लंका पर चढ़ाई कर दी। बड़ा भयंकर युद्ध हुआ। इस युद्ध में रावण के सभी बड़े-बड़े सरदार मारे गए। रावण स्वयं भी इस युद्ध में मारा गया। इस प्रकार राम ने सीता को छुड़ा

लिया। रावण का छोटा भाई विभीषण था। राम ने लंका का राज्य उसे सौंप दिया।

इस समय तक वनवास के चौदह वर्ष पूरे हो चुके थे। राम, लक्ष्मण और सीता अयोध्या लौट आए। भरत ने राम का बड़ा स्वागत किया और राज्य उनको सौंप दिया। श्री रामचंद्र जब अयोध्या के राजा बने तो सारी प्रजा ने घर-घर दीप जलाए और खुशियाँ मनाईं।

राम बहुत समय तक राज करते रहे। उनके राज्य में प्रजा बहुत सुखी थी। कोई भी अनपढ़ या ग़रीब न था। चोर-डाकुओं का तो नाम भी नहीं सुनाई पड़ता था। चारों ओर शांति थी। हमारे प्रिय बापू गाँधी जी भारत में ऐसा ही 'राम-राज्य' लाना चाहते थे।

हमारे करोड़ों देशवासी राम की पूजा करते हैं। उनकी लंका-विजय और राजगद्दी पर बैठने की याद में आज भी हमारे देश में दशहरा और दीवाली के त्योहार प्रतिवर्ष बड़ी धूमधाम से मनाए जाते हैं। दशहरे के दिन तुमने देखा होगा कि रावण का कागज़ का पुतला बनाकर जलाया जाता है। गाँव-गाँव और नगर-नगर में रामलीलाएँ होती हैं और रामायण की कहानी को नाटक के रूप में दिखाया जाता है। तुमने रामलीला अवश्य देखी होगी।

रामायण की कथा सबसे पहले बाल्मीकि ने संस्कृत में लिखी थी। फिर तुलसीदास जी ने इसे हिन्दी में लिखा। इस पुस्तक को 'रामचरितमानस' कहते हैं।

अब बताओ

1. सीता के स्वयंवर की क्या शर्त थी ?
2. राम को वनवास क्यों जाना पड़ा ?
3. रावण कौन था ? राम ने रावण से युद्ध क्यों किया ?
4. राम के वनवास से लौटने पर भरत ने उन्हें राज्य क्यों लौटा दिया ?
5. हमारे देश में दशहरा क्यों मनाया जाता है ?

कुछ करने को

1. रामायण की कहानी के किसी भाग का नाटक अपनी कक्षा में खेलो।
2. अपने अध्यापक जी से मालूम करो कि भारत के भिन्न-भिन्न राज्यों में दशहरा और दीवाली किस प्रकार मनाए जाते हैं।
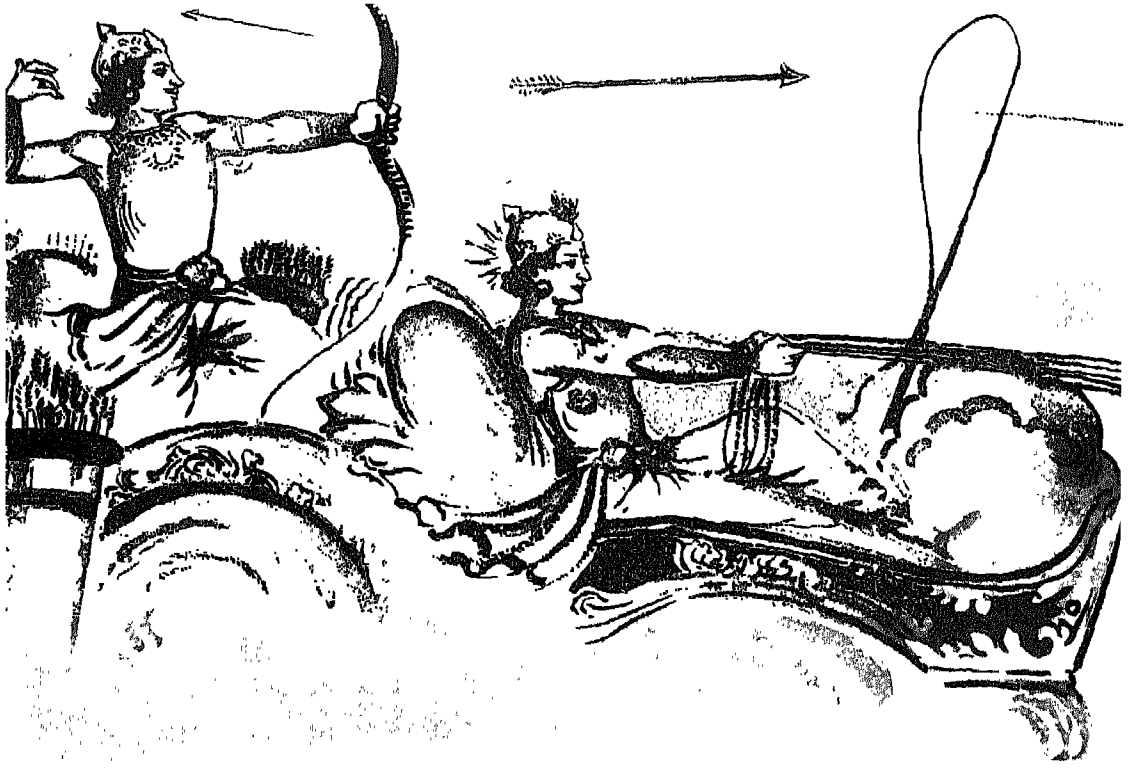
21. महाभारत की कहानी

महाभारत की कहानी भी बहुत पुराने समय की है। उन दिनों आज के दिल्ली शहर के पास कुरु नाम का एक राज्य था। हस्तिनापुर उस राज्य की राजधानी थी। यहाँ के राजा के दो पुत्र थे। धृतराष्ट्र और पांडु। धृतराष्ट्र जन्म से अंधे थे, इसलिए पिता के मरने पर पांडु राजा हुए।

धृतराष्ट्र के सौ पुत्र थे। उनको 'कौरव' कहते थे। उनमें दुर्योधन सबसे बड़ा था। पांडु के पाँच पुत्र थे–युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव। इनको 'पांडव' कहते थे।

कुछ दिनों के बाद पांडु की मृत्यु हो गई। पांडव तब छोटे थे। इसलिए धृतराष्ट्र राजा हुए। उन्होंने कौरवों और पांडवों को गुरु द्रोणाचार्य से शिक्षा दिलवाई। थोड़े ही दिनों में सभी राजकुमार बाण, गदा, तलवार, भाला आदि चलाना सीख गए। बड़े होकर अर्जुन अपने समय के सबसे अच्छे तीर चलाने वाले हुए। गदा चलाने में भीम का मुकाबला कोई नहीं कर सकता था।

दुर्योधन सोचने लगा कि पांडव बड़े होकर राज्य माँगेंगे। इसलिए उसने उनको मार डालने के लिए कई चालें चलीं, परंतु वे बचते रहे। एक बार उसने पांडवों को लाख के महल में ठहराया और रात को उसमें आग लगवा दी। पांडव किसी तरह से बच

निकले और वन में भाग गए। राजा धृतराष्ट्र को जब दुर्योधन के इन बुरे कामों का पता चला तो उन्होंने पांडवों को हस्तिनापुर वापस बुला लिया और राज्य के दो हिस्से करके कौरवों और पांडवों में बाँट दिए।

पांडवों ने अपने हिस्से के राज्य में एक नया नगर बसाया और उसका नाम इंद्रप्रस्थ रखा। कहते हैं इंद्रप्रस्थ उसी स्थान पर था जहाँ आज दिल्ली बसी हुई है।

दुर्योधन पांडवों से मन ही मन बहुत जलता था। उसने पांडवों का राज्य छीनने के लिए एक और चाल चली। उसने युधिष्ठिर को जुआ खेलने के लिए बुलाया। युधिष्ठिर बहुत सच्चे, सीधे और ईमानदार व्यक्ति थे। वह दुर्योधन की चाल में आ गए। दुर्योधन ने जुआ खेलते समय भी छल किया और पांडवों का सारा राजपाट जीत लिया। जुए की शर्त के अनुसार पांडवों को तेरह वर्ष तक वन में रहना पड़ा।

पांडव बेचारे तेरह वर्ष का वनवास काटने के बाद वापस आए और उन्होंने दुर्योधन से अपना राज्य माँगा। दुर्योधन ने सुई की नोक के बराबर भी स्थान देने से इनकार कर दिया। बड़ों ने दुर्योधन को समझाने की कोशिश की परंतु उसने किसी की बात न मानी। वह अपनी हठ पर अड़ा रहा।

द्वारका के राजा श्रीकृष्ण पांडवों और कौरवों के संबंधी थे और अर्जुन के मित्र भी थे। उन्होंने भी झगड़ा निबटाने की कोशिश की, लेकिन दुर्योधन ने उनकी बात भी नहीं मानी।

अंत में कुरुक्षेत्र के विशाल मैदान में कौरव और पांडव के बीच युद्ध ठन गया। इसे 'महाभारत का युद्ध' कहते हैं। इस युद्ध में उस समय के अनेक बड़े-बड़े राजा और वीर योद्धा भाग लेने आए। श्रीकृष्ण ने अपने मित्र अर्जुन का साथ दिया। अर्जुन अपने चचेरे भाइयों के साथ युद्ध करने में झिझक रहे थे। श्रीकृष्ण ने अर्जुन को न्याय के लिए युद्ध करने को कहा। इस युद्ध के समय श्रीकृष्ण ने अर्जुन को जो उपदेश दिया था, इसे 'गीता का उपदेश' कहते हैं। श्रीकृष्ण की भी हमारे देशवासी राम की तरह पूजा करते हैं।

महाभारत का घमासान युद्ध अठारह दिन तक चलता रहा। इसमें लाखों मनुष्य मारे गए और घायल हुए। अंत में सत्य की विजय हुई। इस भयंकर युद्ध में पांडवों की जीत हुई और कौरव हार गए।

महाभारत की कहानी सबसे पहले वेद व्यास ने संस्कृत में लिखी थी। यह एक बहुत बड़ी पुस्तक है। इससे हमें उस समय के जीवन के बारे में बड़ी जानकारी मिलती है।

अब बताओ

1. कौरव और पांडव कौन थे ?
2. महाभारत का युद्ध किनके बीच और क्यों हुआ ?
3. महाभारत के युद्ध में श्रीकृष्ण ने पांडवों का साथ क्यों दिया ?
4. महाभारत की लड़ाई में किसकी जीत हुई ?
5. महाभारत की कहानी किसने लिखी थी ?

कुछ करने को

1. पुस्तकालय से कोई पुस्तक लेकर महाभारत की पूरी कथा पढ़ो।
2. महाभारत की किसी रोचक घटना का नाटक अपनी कक्षा में खेलो।
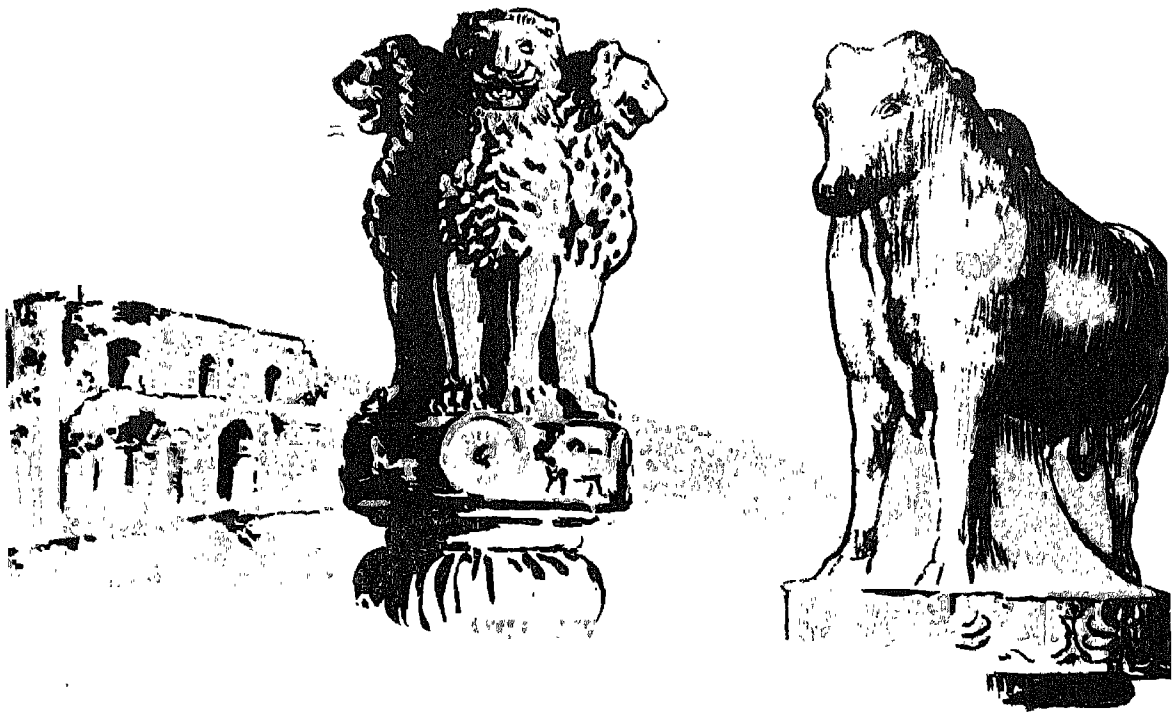
22. अशोक महान

आज से लगभग ढाई हज़ार वर्ष पहले दो राजाओं के बीच में भयंकर युद्ध हुआ। कलिंग के इस युद्ध में हज़ारों लोग मारे गए और इससे भी अधिक घायल हुए या बंदी बना लिए गए। इस भयंकर विनाश को देखकर विजयी राजा के मन को बहुत अधिक दुख हुआ। उसने प्रतिज्ञा की कि वह फिर कभी युद्ध न करेगा। इस महान राजा का नाम था अशोक।

अशोक प्राचीन भारत के अत्यंत प्रसिद्ध राजाओं में से एक था। उसकी राजधानी पाटलिपुत्र थी। आजकल इसे पटना कहते हैं। अशोक का राज्य बहुत बड़ा था। लगभग सारा भारत उसके राज्य में था। कलिंग जिसे आजकल उड़ीसा कहते हैं, अशोक के राज्य में नहीं था। उसने कलिंग को जीतने का निश्चय किया और एक बड़ी सेना लेकर उस राज्य पर हमला कर दिया।

कलिंग का राजा भी बड़ा साहसी और शूरवीर था। वह बड़ी बहादुरी से लड़ा, किन्तु विजय अशोक की हुई और कलिंग उसके राज्य का भाग बन गया।

अशोक की विजय तो हुई, लेकिन वह खुश न था। वह युद्ध के कारण हुआ विनाश देखकर बड़ा दुखी था। युद्ध में मरनेवालों के रक्तपात से उसे बड़ा धक्का लगा। उसने

साँची का स्तूप

फिर कभी युद्ध न करने की प्रतिज्ञा की। उसने साधुओं का-सा जीवन बिताने का निश्चय किया। वह महात्मा बुद्ध के मत को मानने लगा और प्रेम और शांति का संदेश फैलाने लगा। उसने अपने पुत्र और पुत्री को धर्म-प्रचार के लिए लंका भेजा। उसने अपने विशाल राज्य में स्थान-स्थान पर पत्थर के खंभे और लाटें लगवाईं। इन लाटों और कुछ चट्टानों पर उसने अच्छे-अच्छे उपदेश खुदवा दिए। इनमें से कई आज भी देखी जा सकती हैं। इलाहाबाद की लाट और दिल्ली में फिरोजशाह कोटला की लाट बहुत प्रसिद्ध है।

अशोक ने अपने राज्य में महात्मा बुद्ध की याद में कई स्तूप भी बनवाए। मध्य प्रदेश का साँची-स्तूप बौद्धों का बड़ा तीर्थ स्थान है। अशोक चाहता था कि लोग लाटों और चट्टानों पर लिखे उपदेशों को पढ़ें और उनको मानें। जिस लिपि में ये उपदेश लिखे हैं, उसे 'ब्राह्मी लिपि' कहते हैं। इस लिपि का एक नमूना नीचे दिया गया है। देखो यह लिपि कैसी दिखाई देती है।

अशोक ने जनता की भलाई के लिए बहुत-से काम किए। उसने अपने विशाल राज्य में सड़कें बनवाईं और उनके किनारे छायादार पेड़ लगवाए। यात्रियों के आराम के लिए स्थान-स्थान पर सराएँ बनवाईं और कुएँ खुदवाए। उसने बूढ़ों, बीमारों और पशुओं के लिए कई अस्पताल खुलवाए।

अशोक बौद्ध भिक्षुओं की तरह सादा जीवन बिताता था। वह राज्य का काम करने के लिए हर समय तैयार रहता था। उसकी आज्ञा थी कि सरकारी काम की सूचना उसे सोने या भोजन के समय भी दी जाए। वह लोगों को हर प्रकार से सुखी बनाना चाहता था और प्रजा के साथ संतान का-सा व्यवहार करता था।

अशोक का नाम 'देवानाम् प्रिय' और 'प्रियदर्शी' भी था। इसका अर्थ है 'देवताओं का प्रिय'। उसने चट्टानों पर जो उपदेश लिखवाए थे, उनमें से कुछ इस प्रकार हैं :

सत्य और ईमानदारी का पालन करना चाहिए।

माता-पिता की सेवा करनी चाहिए।

जीवों का आदर करना चाहिए।

विद्यार्थी को गुरु की सेवा करनी चाहिए।

साथियों से उचित बर्ताव करना चाहिए।

यही धर्म की नीति है और मनुष्यों को इसी के अनुसार चलना चाहिए।

आज भी सारा संसार उसे 'अशोक महान' के नाम से पुकारता है। तुम शायद जानते हो कि हमारे राष्ट्रीय झंडे के बीच में अशोक चक्र बना है। हमारा राष्ट्रीय चिह्न भी अशोक की लाट से ही लिया गया है।

अब बताओ

1. अशोक ने कलिंग पर हमला क्यों किया ?
2. अशोक पर कलिंग युद्ध का क्या प्रभाव पड़ा ?
3. अशोक ने बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए क्या किया ?
4. अशोक ने अपनी प्रजा की भलाई के लिए क्या-क्या काम किए ?
5. हम अशोक को 'महान' क्यों कहते हैं ?

कुछ करने को

1. अशोक की बनवाई हुई वस्तुओं से संबंधित डाक-टिकट जमा करो और उन्हें अपनी अलबम में लगाओ।
2. अपने अध्यापकजी से अशोक की सारनाथ की लाट के बारे में मालूम करो।

23. चंद्रगुप्त विक्रमादित्य

तुमने पिछली कहानी में पढ़ा है कि अशोक ने बौद्ध धर्म के उपदेशों को भारत और आसपास के देशों में फैलाया। इस काम के लिए बहुत-से बौद्ध भिक्षु चीन, जापान, लंका और बर्मा आदि देशों में गए। विदेशों के कई यात्री भी बौद्ध धर्म की शिक्षा पाने और तीर्थ यात्रा करने के लिए भारत आए। आज से लगभग सोलह सौ वर्ष पहले चीन का एक यात्री यहाँ आया। उसका नाम फाह्यान था। उसने कई साल तक हमारे देश का भ्रमण किया और लोगों के रहन-सहन के बारे में बहुत-सी बातें लिखीं। उस समय हमारे देश में चंद्रगुप्त विक्रमादित्य राज करता था।

चंद्रगुप्त विक्रमादित्य के राज्य के बारे में फाह्यान ने लिखा है कि देश में शांति थी। प्रजा सुखी थी। लोग सच्चे और ईमानदार थे। चोरियाँ बहुत कम होती थीं। लोग घोड़ों, बैलगाड़ियों और नावों द्वारा व्यापार के लिए दूर-दूर स्थानों को जाते थे। देश में स्थान-स्थान पर मंदिर और बौद्ध-विहार बने हुए थे। लोग जिस धर्म को चाहें मान

सकते थे। सड़कें, सराएँ, बाग़ आदि बहुत थे। अस्पतालों में दवा और भोजन मुफ़्त मिलते थे। राजा अपनी प्रजा के दुखों को दूर करने का पूरा प्रयत्न करता था।

चंद्रगुप्त विक्रमादित्य बड़ा वीर और न्यायकारी राजा था। कहा जाता है कि वह वेष बदलकर अपने राज्य में घूमा करता था और लोगों के दुखों को जानने और दूर करने का प्रयत्न करता था। उसके न्याय और वीरता की कहानियाँ अभी तक कही जाती हैं।

चंद्रगुप्त ने कई विजय प्राप्त कीं। इनके बाद उसने 'विक्रमादित्य' की उपाधि ली। इसका अर्थ है 'सूर्य के समान शक्ति वाला'।

विक्रमादित्य स्वयं एक बहुत बड़ा विद्वान था। वह गुणी लोगों का आदर करता था। उसके दरबार में उस समय के प्रसिद्ध विद्वान थे, जिन्हें अक्सर लोग 'नवरत्न' कहते हैं। संस्कृत का प्रसिद्ध कवि कालिदास शायद इनमें से एक था। शकुंतला नाटक, मेघदूत आदि पुस्तकें उसी ने लिखी हैं।

विक्रमादित्य के समय में देश की दो राजधानियाँ थीं : पाटलिपुत्र (पटना) और उज्जयिनी (उज्जैन)। दोनों में एक-से-एक सुंदर महल और मंदिर थे। उस समय के बने मंदिर और मूर्तियाँ बहुत सुंदर हैं। बहुत लोगों का विश्वास है कि दिल्ली में मेहरौली का लौहस्तंभ भी विक्रमादित्य के समय का है। यह कई धातुओं को मिलाकर बनाया गया है। सैकड़ों वर्ष बीत जाने पर भी इसमें ज़ंग नहीं लगा। उस समय हमारा देश बहुत उन्नति पर था।

अशोक की तरह विक्रमादित्य भी हमारे देश का एक महान सम्राट कहलाता है।

मेहरौली के निकट लौहस्तंभ

अब बताओ

1. फाह्यान कौन था और वह भारत क्यों आया था ?
2. फाह्यान ने विक्रमादित्य के राज्यकाल में लोगों के जीवन के बारे में क्या लिखा है ?
3. राजा विक्रमादित्य अपनी प्रजा की दशा जानने के लिए क्या करते थे ?
4. नीचे लिखी बातों में से जो अशोक के समय में हुईं, उनके आगे 'अ' और जो चंद्रगुप्त के समय में हुईं, उनके आगे 'च' लिखो :
   (   ) इसने बौद्ध धर्म का प्रचार किया।
   (   ) इसके दरबार में नवरत्न थे।
   (   ) इसने कलिंग युद्ध किया।
   (   ) इसके समय में चीनी यात्री फाह्यान भारत आया।

कुछ करने को

1. यदि तुम दिल्ली जाओ, तो मेहरौली का लौहस्तंभ देखो और इसके बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करो।
2. अध्यापकजी से विक्रमादित्य के सिंहासन से संबंधित कहानी सुनो।

24. हर्षवर्धन

बहुत पुराने समय की बात है। गंगा-यमुना के संगम, प्रयाग में एक बहुत बड़ा मेला लगा हुआ था। ग़रीब, अमीर, बालक, बूढ़े, जवान, स्त्री, पुरुषों की अपार भीड़ थी। देश के कोने-कोने से लोग इस मेले में आए थे। दूर-दूर तक लोगों के रहने के लिए तंबू और फूँस की झोंपड़ियाँ बनी हुई थीं। कहीं भजन-कीर्तन हो रहा था तो कहीं कथा-वार्ता। चारों ओर बड़ी चहल-पहल थी।

इस तरह का मेला अब भी प्रति वर्ष इलाहाबाद में लगता है। अब भी यहाँ लाखों लोग जमा होते हैं, लेकिन उस पुराने समय का यह मेला कुछ अनोखा था। एक राजा इस मेले में साधुओं और ग़रीबों को दान दे रहा था। दान लेनेवाले हिन्दू साधु भी थे और बौद्ध भिक्षु भी। मेला कई दिनों तक चलता रहा। राजा भी हर रोज़ दान देता रहा। यहाँ तक कि उसने अपना सारा ख़ज़ाना दान में दे दिया। सारा सोना-चाँदी और हीरे-जवाहरात बाँट दिए। अंत में उसने अपने तन के कपड़े भी दान कर दिए और अपनी बहिन के पुराने कपड़े माँगकर पहने। फिर वह प्रसन्नमुख एक चीनी बौद्ध भिक्षु से बात करता हुआ अपने तंबू में चला गया।

यह महादानी राजा हर्षवर्धन था। वह हर पाँच वर्ष के बाद प्रयाग के इस मेले में आता था और ग़रीबों, साधुओं आदि को खूब दान देता था। इनमें सभी धर्मों के माननेवाले
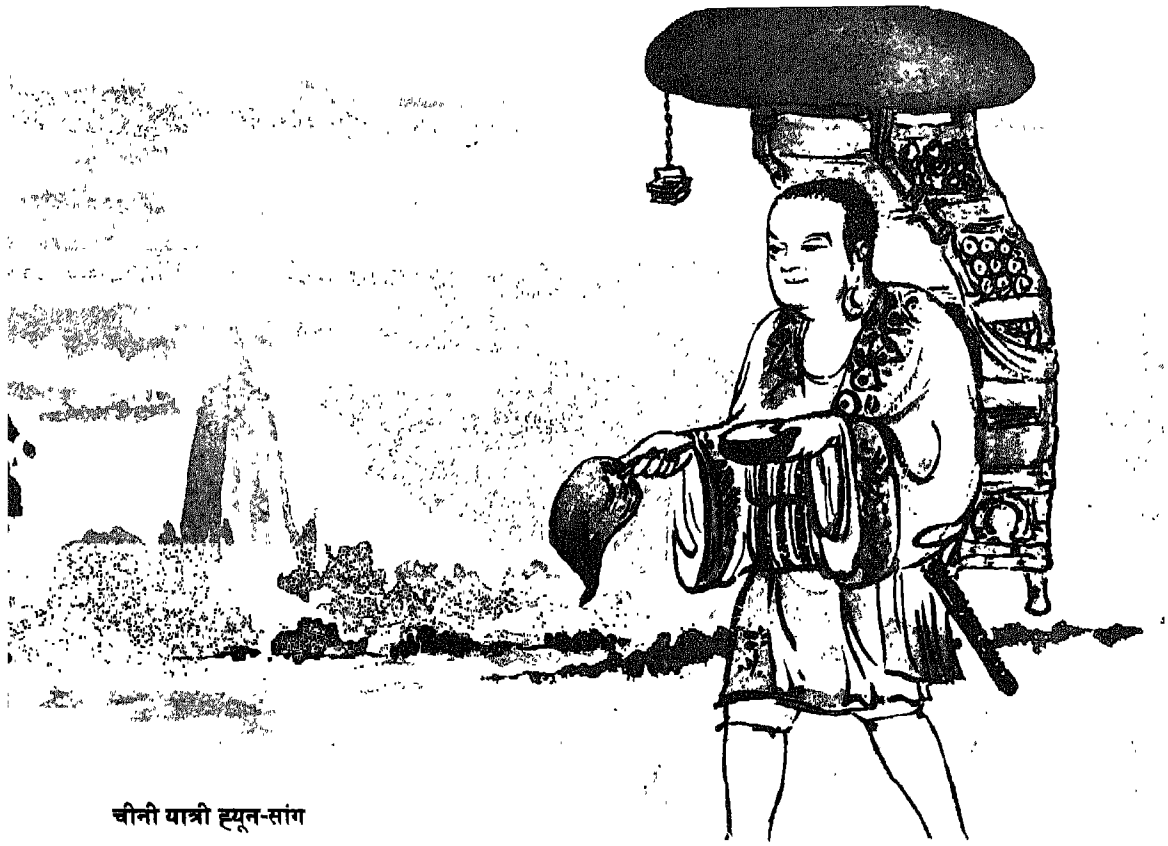
चीनी यात्री ह्यून-सांग

लोग होते थे। इस मेले का बड़ा अच्छा वर्णन चीनी यात्री ह्यून-सांग ने अपनी पुस्तक में किया है। ह्यून-सांग हर्षवर्धन के समय में भारत में बौद्ध धर्म का अध्ययन करने और धार्मिक स्थानों को देखने आया था। उसने यह मेला अपनी आँखों से देखा था।

आज से लगभग तेरह सौ वर्ष पहले हर्षवर्धन हमारे देश पर राज करता था। राजगद्दी पर बैठने के समय हर्ष केवल सोलह साल का था, लेकिन था बड़ा वीर और साहसी। उसके पास एक बड़ी सेना थी जिसमें हज़ारों हाथी, घोड़े और पैदल सिपाही थे। धीरे-धीरे उसने अपने राज्य को बढ़ाना शुरू किया। कुछ समय में उसने आस-पास के बहुत-से छोटे-छोटे राज्यों को जीत लिया। कामरूप (असम) का राजा भी उसका मित्र बन गया। इस प्रकार वह लगभग पूरे उत्तरी भारत का राजा बन गया।

हर्षवर्धन पूरे भारत को जीतना चाहता था। इसलिए उसने दक्षिणी भारत को जीतकर अपने राज्य में मिलाने का निश्चय किया। उन दिनों दक्षिणी भारत के एक बड़े भाग पर पुलकेशिन द्वितीय नाम का राजा राज करता था। वह बड़ा वीर राजा था। वह दक्षिणी भारत में कई लड़ाइयाँ जीत चुका था। हर्षवर्धन ने उसके राज्य को जीतने की कोशिश की, लेकिन जीत न सका।

अशोक और विक्रमादित्य की तरह, हर्षवर्धन भी हमारे देश का एक बड़ा राजा माना जाता है। वह अपनी प्रजा के सुख और भलाई का बहुत ध्यान रखता था। वह सारे देश में घूमता था। वह लोगों के दुखों को स्वयं सुनता था और उनको दूर करने की कोशिश करता था। उसने लोगों के आराम के लिए सराएँ और धर्मशालाएँ भी बनवाई थीं।

चीनी यात्री ह्यून-सांग की पुस्तक से हर्ष के राज्यकाल के बारे में हमें बहुत-सी बातों का पता चलता है। एक स्थान पर उसने लिखा है :

"हर्ष की राजधानी कन्नौज नगर गंगा के किनारे बसा हुआ है। यह एक बहुत सुंदर नगर है। इसमें कई सुंदर बाग़ और पानी के तालाब हैं। दूर-दूर से लाई गई अनोखी वस्तुएँ यहाँ मिलती हैं। कोई कन्नौज-निवासी निर्धन नहीं है। कुछ लोग तो बहुत धनवान हैं। वे रेशमी कपड़े पहनते हैं और आराम से रहते हैं। अक्सर लोग कला और विद्या के प्रेमी हैं।"

हर्षवर्धन विद्या का बड़ा प्रेमी था। वह स्वयं एक अच्छा लेखक था। उसके लिखे नाटक आज भी मिलते हैं। उसके दरबार में कई अच्छे कवि थे। प्रसिद्ध कवि बाणभट्ट इसी समय हुआ था। 'कादंबरी' और 'हर्ष चरित' उसकी दो प्रसिद्ध पुस्तकें हैं। इनसे हमें राजा हर्ष और उसके समय के लोगों के जीवन के बारे में बड़ी जानकारी मिलती है। राजा हर्ष अपने हस्ताक्षर इस प्रकार किया करता था :

(स्वहस्तो मम महाराजाधिराज श्री हर्ष)

इसका अर्थ है 'मैंने स्वयं ये हस्ताक्षर किए हैं––महाराजाधिराज श्री हर्ष'।

हर्षवर्धन एक अच्छा शासक और वीर योद्धा था। वह हमारे देश का एक महान राजा था।

अब बताओ

1. हर्षवर्धन के राज्य की राजधानी कहाँ थी ?
2. हर्ष के समय में कौन चीनी यात्री भारत आया था ? उसने हर्षवर्धन के राज्य के बारे में क्या लिखा है ?
3. पुलकेशिन द्वितीय कौन था ?
4. नीचे लिखी घटनाएँ अशोक, विक्रमादित्य या हर्ष में से जिसके समय में हुई हैं, उसी राजा का नाम घटना के सामने लिखो :
   (क) प्रयाग के मेले में दान देना। (____________)
   (ख) फाह्यान की भारत यात्रा। (____________)
   (ग) साँची के स्तूप का निर्माण। (____________)
   (घ) ह्यून-सांग की भारत यात्रा। (____________)

कुछ करने को

1. प्रयाग के मेले में हर्षवर्धन द्वारा दान देने की घटना का नाटक अपनी कक्षा में खेलो।
2. ह्यून-सांग की भारत यात्रा के विषय में अपने अध्यापक से अधिक जानकारी प्राप्त करो।
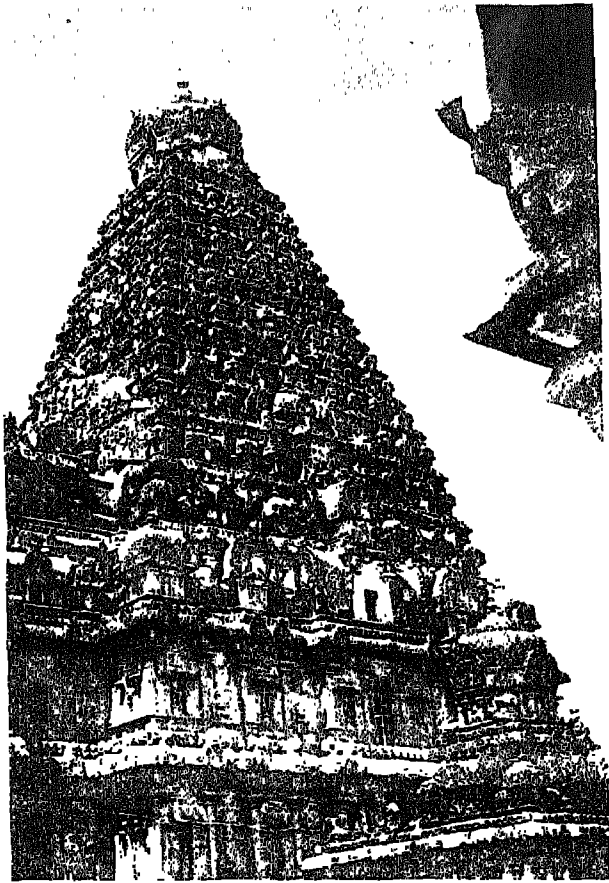
25. राजेन्द्र चोल

ऊपर तुम एक चित्र देख रहे हो। यह तंजौर के प्रसिद्ध मंदिर का चित्र है। इसमें नटराज की मूर्ति है। आज से लगभग एक हज़ार वर्ष पहले इसे दक्षिण भारत के एक प्रसिद्ध राजा ने बनवाया था। उस राजा का नाम राजराज चोल था। राजेन्द्र चोल इसी राजराज चोल का बेटा था। उसकी राजधानी तंजौर थी। आजकल यह नगर मद्रास राज्य में है। इसे तंजावूर कहते हैं।

राजेन्द्र चोल अपने पिता राजराज चोल के समय से ही शासन के कामों में भाग लेने लगा था। राजा बनने से पहले ही वह कई लड़ाइयाँ लड़ चुका था। वह बड़ा साहसी और वीर योद्धा था।

सिंहासन पर बैठते ही उसने अपने राज्य को और अधिक बढ़ाने का निश्चय किया।
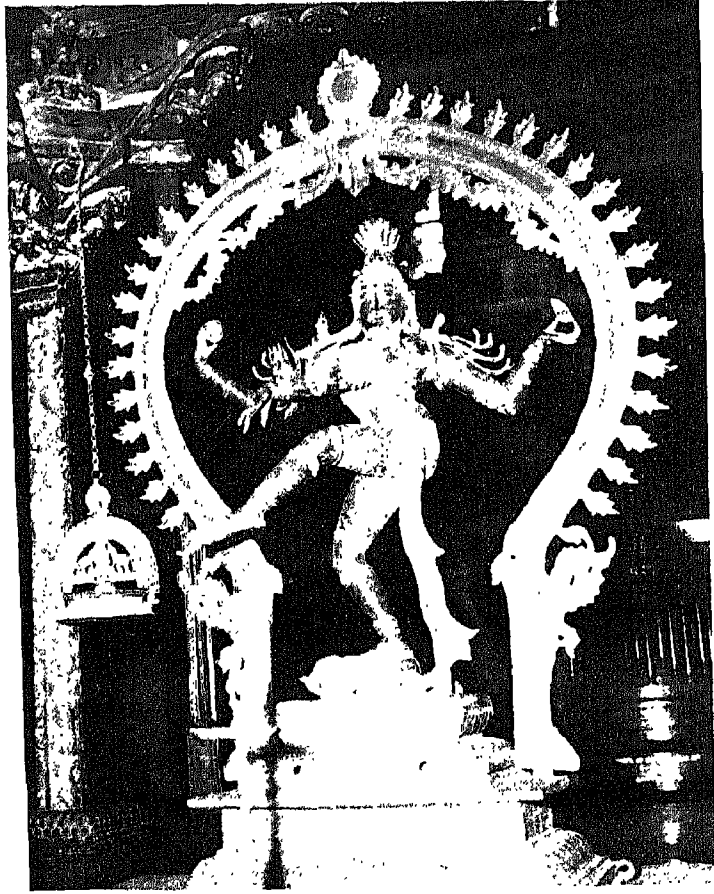
नटराज

उसने एक बड़ी सेना बनाई। इस सेना में हाथी, घुड़सवार और पैदल सैनिक थे। इसी सेना की सहायता से उसने कई लड़ाइयाँ जीतीं। धीरे-धीरे दक्षिणी भारत के एक बड़े भाग पर उसका अधिकार हो गया। उसने लंका पर भी हमला किया और इसे जीत कर अपने राज्य में मिला लिया। कुछ दिनों के बाद उसने बंगाल पर चढ़ाई की। वहाँ कई राजाओं को हराकर उसकी सेनाएँ गंगा नदी तक जा पहुँचीं।

बंगाल-विजय के बाद राजेन्द्र चोल ने 'गंगईकोंडा' की उपाधि ली, जिसका अर्थ है 'गंगा को जीतनेवाला'। इस बड़ी विजय की याद में उसने तिरुचिरापल्ली के पास एक नगर बसाया। इसका नाम उसने 'गंगईकोंडाचोलपुरम' रखा। उसने इसे अपनी राजधानी भी बनाया। इस नगर के खँडहर आज भी मिलते हैं। यह स्थान भी आजकल मद्रास राज्य में है।

राजेन्द्र चोल के राज्य का अधिक भाग समुद्र के किनारे था। इसलिए उसने एक अच्छी जलसेना भी तैयार की थी। बंगाल की खाड़ी में दूर-दूर तक उसके सैनिक जहाज

चक्कर लगाते थे। व्यापार करने के लिए तो उस समय दूर हिन्द महासागर में भी राजेन्द्र चोल के जहाज़ चलते थे। वे व्यापार का सामान लेकर पड़ोसी देशों में भी जाते थे।

भारत और उसके पड़ोसी देशों के बीच समुद्री मार्गों द्वारा आना-जाना इस समय काफ़ी बढ़ गया था। मलाया, सुमात्रा, जावा, बालि, चीन आदि देशों के साथ भारत का व्यापार होता था। भारत के बहुत-से व्यापारी इन देशों में गए। बहुत-से तो वहाँ जाकर बस भी गए।

विदेशों से इस प्रकार संबंध होने के कारण हमें कई लाभ हुए। हमारे देश का व्यापार बढ़ा। हमारे धर्म और कला का प्रभाव इन पड़ोसी देशों पर पड़ा। इन पड़ोसी देशों में आज भी कई मंदिर मिलते हैं, जिनकी दीवारों पर रामायण और महाभारत के दृश्य दिखाए गए हैं। अंकोरवाट और बोरोबदुर के मंदिर तो इसके बहुत ही उत्तम नमूने हैं।

राजेन्द्र चोल का शासन करने का ढंग बहुत अच्छा था। उसने अपने राज्य को छोटे-छोटे भागों में बाँट रखा था। प्रत्येक गाँव या नगर में एक सभा होती थी, जो इस स्थान की देखभाल करती थी। आजकल की पंचायतों की तरह इन सभाओं का चुनाव जनता करती थी। राजा की सहायता के लिए कुछ मंत्री होते थे। वे राजकाज की सभी बातों के बारे में राजा को सलाह देते थे।

इस समय में तमिल और संस्कृत भाषाओं में बहुत-सी अच्छी पुस्तकें लिखी गईं। कई प्रसिद्ध लेखक, कवि और कलाकार राजेन्द्र चोल के दरबार में थे। इसे मंदिर और
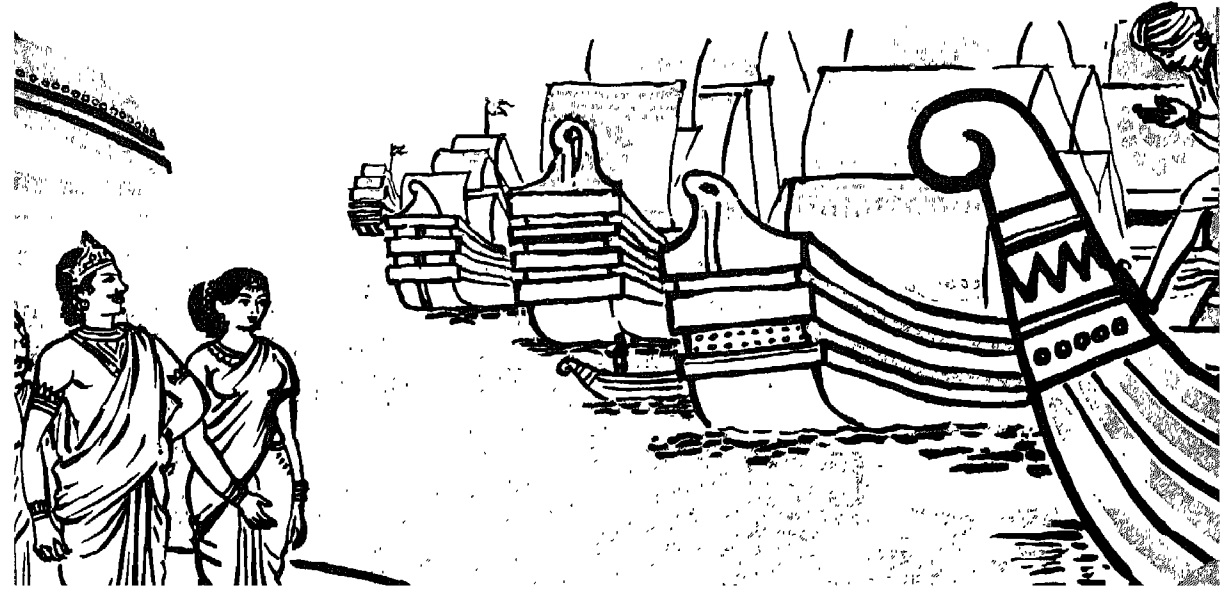
भवन बनवाने का शौक भी था। तंजौर के मंदिर की 'नटराज' की मूर्ति उसी समय की है। यह मूर्ति बहुत ही सुंदर बनी है और संसारभर में प्रसिद्ध है।

राजेन्द्र चोल एक महान विजेता और शक्तिशाली राजा था। उसका राज्य सारे दक्षिण भारत और उत्तरी भारत के कुछ भाग में फैला था। उसने विदेशों के साथ भारत के संबंध स्थापित किए। उसके समय में हमारे धर्म और कला को विदेशों में पहुँचने का अवसर मिला।

अब बताओ

1. राजेन्द्र चोल कहाँ का राजा था ?
2. 'गंगईकोंडा' का क्या अर्थ है ? राजेन्द्र चोल ने यह उपाधि क्यों ली ?
3. राजेन्द्र चोल को महान विजेता क्यों कहते हैं ?
4. राजेन्द्र चोल अपने राज्य का शासन किस प्रकार चलाता था ?

कुछ करने को

1. चोल राजाओं के समय के मंदिर आदि के चित्र एकत्र करके अपनी कापी पर चिपकाओ।

कुछ जानने योग्य बातें

भारत का क्षेत्रफल	3,276,141 वर्ग किलोमीटर
भारत की राजधानी	दिल्ली
भारत की राजभाषा	हिन्दी

भारत के राज्य

(क) राज्य

राज्य का नाम	राजधानी	राज्य का क्षेत्रफल (वर्ग किलोमीटर में)	जनसंख्या	मुख्य भाषा
1. असम	शिलाँग	2,03,389	1,22,09,330	असमिया और बँगला
2. आंध्र प्रदेश	हैदराबाद	2,75,281	3,59,83,447	तेलुगू
3. उत्तर प्रदेश	लखनऊ	2,94,364	7,37,46,401	हिन्दी
4. उड़ीसा	भुवनेश्वर	1,55,825	1,75,48,846	उड़िया
5. केरल	त्रिवेन्द्रम	38,855	1,69,03,715	मलयालम
6. गुजरात	अहमदाबाद	1,87,115	2,06,33,350	गुजराती
7. जम्मू-कश्मीर	श्रीनगर	2,22,800	35,60,976	कश्मीरी, डोगरी और उर्दू
8. नागालैण्ड	कोहिमा	16,488	3,69,200	
9. पश्चिमी बंगाल	कलकत्ता	87,617	3,49,26,279	बँगला
10. पंजाब	चंडीगढ़			पंजाबी
11. बिहार	पटना	1,74,038	4,64,55,610	हिन्दी
12. मद्रास	मद्रास	1,30,357	3,36,86,953	तमिल
13. महाराष्ट्र	बंबई	3,07,477	3,95,53,718	मराठी
14. मध्य प्रदेश	भोपाल	4,43,452	3,23,72,408	हिन्दी
15. मैसूर	बँगलोर	1,92,204	2,35,86,772	कन्नड़
16. राजस्थान	जयपुर	3,42,274	2,01,55,602	राजस्थानी और हिन्दी
17. हरियाणा	चंडीगढ़			हिन्दी

(ख) संघीय राज्य

	राज्य का नाम	राजधानी	राज्य का क्षेत्रफल (वर्ग किलोमीटर में)	जनसंख्या	मुख्य भाषा
1.	अंडमान और निकोबार द्वीप समूह	पोर्ट ब्लेयर	8,327	63,548	
2.	गोआ, दमन और दीव	पानाजी	3,693	6,26,667	
3.	चंडीगढ़	चंडीगढ़			
4.	त्रिपुरा	अगरतला	10,453	11,42,005	
5.	दिल्ली	दिल्ली	1,484	26,58,612	हिन्दी, उर्दू और पंजाबी
6.	दादर-नगर हवेली	सिलवस्सा	489	57,963	
7.	पांडेचिरी	पांडेचिरी	479	3,69,079	तमिल और फ़ांसीसी
8.	मणिपुर	इंफाल	22,347	7,80,037	
9.	लकादीव, मिनिकॉय और अमीन दीवी द्वीप समूह	क्वारथी	29	14,108	
10.	हिमाचल प्रदेश	शिमला			हिन्दी और पहाड़ी

BIBLIOGRAPHY

1. Primary Sources:

Basedow, J.B., *Elementarwerk*. Stuttgart, Verlagsbureau, 1849.

Cubberley, Ellwood P., *Readings in the History of Education*, pp. 436-439. New York, Houghton Mifflin Co., 1920.

2. Secondary Material:

Barnard, Henry, *Great Teachers and Educators*, pp. 457-490, 497-508. Hartford, Brown and Gross, 1878.

Cubberley, Ellwood P., *A Brief History of Education*, pp. 294-296. New York, Houghton Mifflin Co., 1922.

Cubberley, Ellwood P., *The History of Education*, pp. 533-538. New York, Houghton Mifflin Co., 1920.

Duggan, Stephen, *A Student's Textbook in the History of Education*, pp. 216-219. New York, D. Appleton-Century Co., 1936.

Eby, Frederick and Arrowood, Charles F., *The Development of Modern Education*, pp. 512-529. New York, Prentice-Hall, Inc., 1937.

Graves, Frank P., *A History of Education, In Modern Times*, pp. 25-22. New York, The Macmillan Co., 1927.

Graves, Frank P., *A Student's History of Education*, pp. 225-229. New York, The Macmillan Co., 1936.

Monroe, Paul, *A Brief Course in the History of Education*, pp. 297-300. New York, The Macmillan Co., 1909.

Monroe, Paul, *A Text-Book in the History of Education*, pp. 577-583. New York, The Macmillan Co., 1907.

Mulhern, James, *A History of Education*, pp. 403-406. Ronald Press Co., New York, 1946.

CHAPTER XIV

American Education (1700 TO 1830)

Events and Institutions

THE REVOLUTION. The American Revolution was part of a revolution throughout the western world against conservatism. In America it meant the realization that American conditions demanded indigenous institutions. The institutions imported from Europe were not suited to the American scene. It also meant that the entire culture and social life of America was changing.

EARLY 18TH CENTURY SCHOOLS

1. *The Dame Schools:* Private dame schools, primary schools preparing children for the writing and grammar schools, flourished. Some towns had public dame schools.

2. *Public Schools:* New England town schools and parish schools were supported both by tuition fees and some public funds. They were under nominal public control.

3. *Private Schools:* Among private schools of the early 18th century were: private teachers employed by families to teach their children; schools supported by local societies; many private secondary schools in cities, and mathematical and English schools to train boys for business and trades. Some of these were held after working hours for apprentices. Girls were given instruction in some of these schools in English grammar, modern languages, bookkeeping, and needlework.

CHARITY SCHOOLS. Many elementary charity schools were established by the Society for the Propagation of the Gospel in Foreign Parts (S.P.G.). Their first school was in New York City in 1704. Poor children were admitted to these schools without charge. In Pennsylvania the schools sought to teach English to German colonists, but their efforts were resisted even though many schools were established.

THE ACADEMY. Latin Grammar Schools and colleges were not meeting the educational needs of America. Benjamin Franklin (1749) proposed a more useful institution in his *Proposals Relating to the Education of Youth in Pennsylvania*. The school, called an academy, opened in 1715, was chartered in 1753, and was chartered as a college in 1755. Its features were: it stressed the English language and literature, oratory, offered scientific subjects, and was non-sectarian. The first medical school in the United States opened here in 1765. The institution was made the University of Pennsylvania in 1791.

Academies sprang up throughout the country to supplant the Latin schools. They were private institutions, but with some public support. There were academies for boys and for girls and some were coeducational. They taught a variety of subjects and ranged from poor to very good college preparatory institutions. Early academies included: Dummer's (1761), Phillips Andover (1778), Phillips Exeter (1783). Many academies eventually became colleges. The high schools eventually drove most academies out of business.

TEXTBOOKS. The *New England Primer* (1685-1690) was an adaptation of the *Protestant Tutor*. Isaac Greenwood (1729) published the first arithmetic to appear in this country. Webster's *Blue Back Speller* appeared in 1783. Jediah Morse wrote an *American Universal Geography*. Many books were brought to America from England and used until American books appeared. Gradually the American theme and color appeared in textbooks.

American Educational Thought

INTRODUCTION. The philosophy of the American revolutionists was educational. Its basic ideas were: man is capable of improvement; the government must make the people secure in their natural rights so that this improvement can take place; activities of the government must conform to natural law. Education is the chief means for insuring public welfare. Two views of the educational system necessary to accomplish these ends appeared: 1. A highly centralized, government-controlled system indoctrinating all citizens in the particular ideas and ideals of the country. 2. A localized system with government merely making possible and protecting freedom of thought and speech. This emphasized the free cultivation of the mind.

BENJAMIN FRANKLIN (1706-1790). He had little formal schooling, but educated himself to become a leader in many areas of American and world life. He believed in self-education and that education should aim at utility, but not a narrow utility. He was the leader in the founding of the American Philosophical Society, a society for the exchange of information, and the University of Pennsylvania.

THOMAS JEFFERSON (1743-1826). Born on the American frontier, he was well educated and held many important offices, including the Presidency of the United States. As a member of the Virginia House of Burgesses he worked for a state educational system. He sought complete separation of church and state. His plan for a state educational system included free elementary schools in each locality, secondary tuition schools, and a state university. The plan was not adopted by the state. He was the founder of the University of Virginia.

PLANS FOR EDUCATION

1. The American Philosophical Society's prize essay contest produced many schemes for school systems reaching all the people and culminating in a national university. Samuel Knox and Samuel Harrison Smith made such proposals. 2. George Washington attempted to start a national university. 3. The American trend was away from centralization of education toward local control of elementary schools and private control of colleges and universities.

Federal Laws and Education

THE CONSTITUTION. It contains no reference to education, but the first and tenth amendments assure control of education by states and the secularization of public education.

SCHOOLS IN AREAS WEST OF THE APPALACHIANS. As the new land was opened for settlement, laws were passed setting aside land or revenue for the support of schools. The Northwest Ordinance (1787) provided for setting aside lot 16 in each township for support of a school and two townships for a university.

State Laws and Education

STATE CONSTITUTIONS AND EDUCATION. Many state constitutions made direct and liberal provisions for education: Pennsylvania (1776 and 1790), North Carolina (1776), Georgia (1777 and 1798), Massachusetts (1780), New Hampshire (1784), and Vermont (1793). Though other states made no reference to education in their constitutions, many, as New York and Connecticut, were very active educationally.

MASSACHUSETTS. The constitution of 1780 made liberal provisions for Harvard College. The revised school law of 1789 legalized the district system, required the establishing of an elementary school in each town of 50 or more families and a Grammar School in each town of 150 or more families, required teachers to be college graduates or certified by the Congregational ministers, limited teaching to American citizens, set fines for towns neglecting schools, and chartered academies and gave them land. In 1798 academies meeting set standards were given endowments of land and a recognized place in the public school system.

NEW YORK. There was no mention of education in the New York state constitution until 1894, but interest in education was high from early times. A state educational system was begun by Governor Clinton in 1784: 1. Unappropriated lands were surveyed and 690 acres in each township were set aside for the support of schools. 2. The Board of Regents of the University of the State of New York was established to promote and oversee secondary and higher education. 3. King's College was changed

to Columbia University. The Regents chartered academies. In 1790 a state school fund was established and state aid for education inaugurated. In 1795 state aid was increased and machinery was set up for distributing the funds. Elementary education was also encouraged.

Growth of the American College

INTRODUCTION. The early colleges were patterned after English models since they had to meet the requirements of English officials and received their support largely from England. Most administrators and teachers were from English institutions.

HARVARD. This college was founded by the General Court of Massachusetts in 1636 and was established in 1638. Its founders and teachers were English in training and spirit and the institution was dedicated to the training of ministers. Its pattern was Cambridge and Oxford. Students lived in dormitories under masters, attended daily religious services, their conduct was strictly regulated, a master taught his group all subjects, formal discipline of mind and morals was emphasized, and students were listed according to the rank and social standing of their families.

SPREAD OF THE COLLEGE IDEA. Colleges were founded throughout the country by private interests and church groups: William and Mary (1693), Yale (1754), Princeton (1746), Dartmouth (1769), King's College (1754), Brown (1764), Rutgers (1766). Enrollments were small and the work taught was narrow and attracted students of the secondary age level. Gradually these colleges became more liberal, gave up sectarian requirements, and broadened their curricula to include more modern subjects.

Rise of the American University

THE UNIVERSITY. Early institutions of higher education were colleges under church control. The university was secular and aimed at a broad education leading to the professions. States sought to establish state universities offering secular, free education. These included: North Carolina (1776), Virginia (1779), Pennsylvania (1791), Kentucky (1798), Northwest Territory (1802), Louisiana (1805), Michigan (1817). Some plans were proposed to unite all educational activities of a state under a University of the State.

UNIVERSITY OF THE STATE OF NEW YORK. In 1784 the New York legislature passed an act establishing a state university system consisting of all levels of schools. Some hoped that King's College would be the head of this centralized system. This failed, but the rest of the system was established in the present University of the State of New York.

UNIVERSITY OF NEW ORLEANS. In 1805 the Louisiana legislature established

the University of New Orleans and sought to set up a system of education in the state consisting of academies and libraries. The university was established, but the rest of the plan was soon abandoned.

UNIVERSITY OF MICHIGAN. The Act of 1817 established the University of Michigan with power to found educational institutions throughout the state, control teachers and other employees, and pay all salaries from the treasury of the university. Some schools and a college in Detroit were established.

SOURCE OF THE UNIVERSITY IDEA. The French plan of state education was highly influential in America in the 18th century. Many leaders of American education were enthusiastic about this plan: Benjamin Franklin, John Adams, Thomas Jefferson, John Jay, and Ezra L'Hommedieu. They worked for state systems in this country and Jay and L'Hommedieu originated the University of the State of New York. Many French teachers and educational leaders came to America. Dupont de Nemours wrote *National Education in the United States*. Although the French plan was not successful in America, definite contributions were made to education in this country: 1. Institutions of higher learning were called "universities." 2. State support and control of education was recognized as necessary for democratic government. 3. Higher education turned from the exclusive training of ministers to professional training. 4. Secular education began to take the place held before by church-controlled religious training. 5. Education became freer. 6. The educational system was thought of as comprising schools, libraries, museums, etc., and all these articulated into a whole. 7. The curriculum was broadened. 8. A system of schools consisting of elementary, secondary, and higher developed.

BIBLIOGRAPHY

1. Primary Sources:

Dupont de Nemours, *National Education in the United States of America.* Newark, Deleware, University of Deleware Press, 1923.

Ford, Paul L., (editor), *The Works of Thomas Jefferson.* New York, Charles Putnam, 1895.

Cubberley, Ellwood P., *Readings in Public Education in the United States,* pp. 97-128. New York, Houghton Mifflin Co., 1934.

2. Secondary Material:

Arrowood, Charles F., *Thomas Jefferson and Education in a Republic.* New York, McGraw-Hill Book Co., Inc., 1930.

Barnard, H.C., *The French Tradition in Education.* Cambridge, Cambridge University Press, 1922.

Cubberley, Ellwood P., *Public Education in the United States,* pp. 82-116. New York, Houghton Mifflin Co., 1934.

Eby, Frederick and Arrowood, Charles F., *The Development of Modern Education,* pp. 530-573. New York, Prentice-Hall, Inc., 1937.

Graves, Frank P., *A Student's History of Education,* pp. 252-290. New York, The Macmillan Co., 1936.

Monroe, Paul, *Founding of the American Public School System,* pp. 165-221. New York, The Macmillan Co., 1940.

Mulhern, James, *A History of Education,* pp. 273, 279-281, 287-299. Ronald Press Co., New York, 1946.

Tewksbury, D.G., *The Founding of American Colleges and Universities Before the Civil War.* New York, Teachers College, Columbia University, 1932.

Thwing, C.F., *A History of Higher Education in America,* Chs. IX-XV. New York, D. Appleton-Century Co., 1906.

Woody, Thomas, *The Educational Views of Benjamin Franklin.* New York, McGraw-Hill Book Co., Inc., 1931.

CHAPTER XV

Nationalization of Education

Introduction. During the last half of the 18th and the early part of the 19th centuries the individual was attaining a new dignity and sense of worth. Rousseau's plea for the emancipation of the individual from social bondage was taken up by Immanuel Kant (1724-1804) in his famous statement, "Be a person and reverence all others as persons." The right of each individual to develop his capacities was being recognized. Two plans of government to insure an education that would develop the capacities of each individual were proposed: **A Benevolent Despotism** - Influenced by the French Encyclopedists and the Physiocrats, the belief developed that benevolent despots could interpret natural law in the social order. This idea dominated lands east of the Rhine. It implied education for obedient subjects. **Democracy** - Influenced by British and French political thinkers, this conception dominated France and America and implied an education to produce intelligent citizens of a free government.

Nationalization in France. Early French education was controlled by the Jesuits. When the Order was suppressed (1764) many plans for a system of national, highly centralized schools were proposed. These plans, in general, suggested:

CONTROL. Education under control of the state, not the church.

EDUCATION FOR ALL, not divisions as to the amount. The common people should have education, but not beyond their needs. Primary education should be universal and free.

THE AIMS OF EDUCATION are enlightenment, development of a national spirit, and creation of the ability to protect one's rights and serve the state.

INSTRUCTION should be secular, not religious indoctrination.

GRADES OF SCHOOLS should include primary, secondary, institutes or colleges, professional, and a National Society of Sciences and Arts.

FREE EDUCATION. Writers differed as to how high free education should go.

COMPULSORY EDUCATION. Some would regiment all children in Spartan fashion.

FREEDOM OF TEACHING, uniformity of instruction, adult education, and scholarship were emphasized.

Popular interest in a national system of primary and secondary schools was high by 1790. Napoleon (1806) established the University of France, a

national system of secondary education as an instrument of national propaganda.

Nationalization in Germany

THE ENLIGHTENMENT IN GERMANY. In Germany the Enlightenment, Physiocracy, and Naturalism were confined to the ruling classes and did not reach the masses. The German nobility copied French life and customs, and some were benevolent rulers.

THE RISE OF PRUSSIA

1. *Frederick William I:* He was influenced by Francke to work for better schools and more efficient teaching. He made education compulsory in 1717.

2. *Frederick William II:* He was a freethinker and an enlightened despot, wanted to improve the lot of his subjects, and supported the work of Hecker who wrote a general code for the regulation of rural schools (1763). This code provided for: compulsory attendance, supervision, child accounting, free education for the poor, religious and secular instruction, and the licensing and regulating of teachers.

THE NEW HUMANISM. The old Humanism of the Renaissance had become formal when Johann Winckelmann (1717-1768) aroused new interest in the beauty of Greek art. This began a revival of interest in the spirit of the classics and led to a German literature and an ideal of culture emulating the Greek spirit. This new Humanism was introduced into German schools and the profession of teaching began to assume dignity and to demand respect as one of the learned professions. The school law of 1787 put Prussian schools under a supreme school board; established three types of schools - rural, town, and higher gymnasiums; inaugurated "leaving-examinations" for pupils completing the gymnasium and entering the university. The law of 1794 reaffirmed state regulation and centralization of education.

Nationalization in Austria. Maria Theresa (1717-1780) sought to follow the pattern of educational reform set by Frederick the Great in Prussia and enlisted the aid of Felbinger. Joseph, Maria's son, sought to unite the Austrian universities with the elementary and secondary schools of the country into one system under governmental control. The curriculum was revised and teachers made civil servants. This was a highly paternalistic system with considerable censorship.

Nationalization in Sweden and Baden

SWEDEN. Gustavus III sought to introduce the reforms of the Physiocrats into Sweden. He inspired Mercier de la Riviere to write *Of Public Education* (1775).

BADEN. Charles Frederick put into operation the ideas of the Physiocrats

in an effort to raise the economic level of the peasants of his principality.

Nationalization in Spain and in Spanish America. Charles III, influenced by the French Enlightenment, introduced many reforms into 18th century Spain.

EXPERIMENTS IN AGRICULTURAL COLONIES. Ideal communities were established with the clergy excluded and the farmers permitted to live free and under the laws of nature. These had little success and were eventually abandoned.

EDUCATIONAL REFORMS IN SPAIN. Education was taken away from the clergy and put under control of the state with examinations for teachers and other reforms in the system.

EDUCATIONAL REFORMS IN SPANISH AMERICA

1. *In Louisiana:* A "director" and three teachers were sent to Louisiana to open a school in New Orleans. The "director" became a sort of city superintendent.
2. *In California:* Colonies were established in which educational work was done by the Franciscians. Schools were introduced by Father Lazuen (1784). Similar schools were opened elsewhere, notably in Saint Augustine, Florida (1785).

Nationalization in Switzerland. Franz Urs Balthasar (1758) published *The Patriotic Dreams of a Confederate of a Way to Rejuvenate the Old Confederation* in which he recommended a national institute of education. This inspired the Helvetic Society (1762), a member of which was Pestalozzi, an organization workingfor liberty, unity, and education. In 1798 the Helvetic Constitution was adopted and the Swiss Directorate established. Albrecht Stapfer was made minister of arts and sciences and began to centralize education under federal control. Pestalozzi worked with him, published a paper on educational reform, established an orphanage and school at Stanz, and later founded his famous school at Burgdorf. Stapfer organized the Society of the Friends of Education which supported Pestalozzi's work.

Nationalization in England

INTRODUCTION. In the England of 1750 religion was at low tide, but the Methodist church and Unitarianism were about to take form out of the growing evangelical fervor and the liberalism and scientific thinking of the times. Economic conditions were improving and population increasing, literature was attaining high quality and a large reading public was appearing. However, education was poor and largely formal.

THE SOCIAL AND ECONOMIC PATTERN. Inventions ruined the small cottage

workers and made possible the Industrial Revolution. This led to the employment of women and children in factories, bad working conditions, little time for education of the worker, and virtual industrial slavery. A series of acts, beginning in 1802, were passed by Parliament to protect the workers and make their condition better. These acts established the principles that officers of the state have the right to control the lives and training of children and that children have the right to care, food, education, and protection from cruelty. Parliament ceased to be a tool of the privileged few and became representative of the people. The religious revival led by John and Charles Wesley and a group of Oxford students made a strong appeal to the poor. Out of this come the Methodist church. This church led in efforts for popular education, abolition of slavery, temperance, and the emancipation of women.

THE CULTURAL PATTERN. Among the leaders of English scholarship during this period were David Hume (1711-1776), Sir William Blackstone (1723-1780), Jeremy Bentham (1748-1832), Edward Gibbon (1737-1794), Adam Smith (1723-1790). There was also the work of Priestly, Richard Price, and a host of writers and poets. These men produced material which the schools had to consider and include in their curricula.

EDUCATIONAL THEORY. Great concern for education was reflected in the writings of the times. Priestly wrote an *Essay on a Course of Liberal Education for Civil and Active Life* (1765). The theory of utilitarianism (all education must be useful) dominated education in England and spread to America. Richard Lovell Edgeworth and his daughter, Maria Edgeworth, wrote many books of interest to children, presenting information necessary for their education. Among these was *Harry and Lucy*. The Edgeworths also wrote *Early Lessons, Practical Education* (1798), *Parent's Assistant,* and *Popular Tales*.

EDUCATIONAL REFORMS

1. *In Dissenting Academies:* These institutions began to open their doors to young men preparing for many fields of activity and to offer a wide curriculum. The work of Dr. Phillip Doodridge at Northampton and of Joseph Priestley at Warrington was important. Later these academies began a decline.

2. *In Universities:* Leaders were dominating reforms in the universities where corruption and general neglect had been general. Many new subjects were introduced into university curricula.

PHILANTHROPY IN EDUCATION

1. *The Sunday School Movement:* Robert Raikes (1780) opened a school at Gloucester, England, on Sundays for poor children. This was a charity school teaching reading, writing, arithmetic, spelling, hymns, the

catechism, and the Scriptures. The idea spread and the Society for the Establishment and Support of Sunday Schools Throughout the Kingdom was organized in 1785. The Methodists and Baptists supported many such schools. Later these schools gave up secular work and were incorporated into the program of religious education of many churches.

2. *Societies for Education:* The need for elementary education was greater than could be met by the existing schools. The monitorial system solved this problem. Andrew Bell (1753-1832) brought the monitorial system from India and added the idea of military organization. Joseph Lancaster (1778-1838) conceived a similar plan later. These men invented materials for use in schools working under this plan. The Society for the Promotion of Christian Knowledge (S.P.C.K.) and the National Society for Promoting the Education of the Poor in the Principles of the Established Church Throughout England and Wales (1811) established many schools using the monitorial system. Also the British and Foreign School Society entered this field. Government grants for education were usually distributed through these organizations. The monitorial system made possible better elementary schools and better education than was generally available, but it had many defects: It was mechanical in teaching methods; it lacked direct contact on the part of the pupils with well-trained teachers, and the monitors were not paid for their work.

3. *The Infant School Movement:* Robert Owen (1771-1858), a cotton manufacturer at New Lanark, Scotland, opened a school for the free education of children from 5 to 10 years of age. James Buchanan took the idea to London and inspired Samuel Wilderspin to spread the idea in London. In 1824 the Infant School Society was founded with Wilderspin as agent. Many infant schools were established. In 1826 the Glasgow Infant School Society was founded under the leadership of David Stow.

4. *Dame Schools:* These were elementary schools taught by women in their homes. A fee was charged each child. The curriculum consisted of the Lord's Prayer, the Apostles' Creed, the alphabet, the catechism, and simple reading.

STATE SUPPORT OF SCHOOLS. In 1802 Parliament passed a law requiring education for all apprentices in reading, writing, and arithmetic. Teachers were to be paid and school rooms provided by the masters of apprentices. Much agitation for government aid to elementary education culminated in 1833 in financial aid being made available by Parliament.

BIBLIOGRAPHY

1. Primary Sources:

Cubberley, Ellwood P., *Readings in the History of Education*, pp. 370-391, 454-541. New York, Houghton Mifflin Co., 1920.

Wilderspin, Samuel, *Infant Education; or Practical Remarks on the Importance of Educating Infant Poor*. London, Simpkin and Marshall, 1929.

2. Secondary Material:

Adamson, J.W., *English Education (1789-1902)*. Cambridge, Cambridge University Press, 1930.

Allen, W.O.B. and McClure, E., *Two Hundred Years; History of the S.P.C.K., 1698-1898*. London, Christian Knowledge Society, 1898.

Binns, Henry B., *A Century of Education, 1808-1908. History of the British and Foreign School Society*. London, J.M. Dent and Co., 1908.

Cubberley, Ellwood P., *A Brief History of Education*, pp. 239-247, 254-267, 275-284, 308-350. New York, Houghton Mifflin Co., 1922.

Cubberley, Ellwood P., *The History of Education*, pp. 437-458, 472-494, 552-650. New York, Houghton Mifflin Co., 1920.

Eby, Frederick and Arrowood, Charles F., *The Development of Modern Education*, pp. 575-617. New York, Prentice-Hall, Inc., 1937.

Graves, Frank P., *A History of Education, In Modern Times*, pp. 35-75. New York, The Macmillan Co., 1927.

Graves, Frank P., *A Student's History of Education*, pp. 232-249. New York, The Macmillan Co., 1936.

Graves, Frank P., *Great Educators of Three Centuries*, Chapter XII. New York, The Macmillan Co., 1912.

Harris, J. Henry, *Robert Raikes; the Man and His Work*. New York, E.P. Dutton and Co., 1899.

Jones, Lloyd, *The Life, Times, and Labours of Robert Owen*. London, Swan, Sonnenschein and Co., 1905.

Melvin, A. Gordon, *Education, A History*, pp. 278-287. New York, The John Day Co., 1946.

Montmorency, J.E.G. de, *The Progress of Education in England*, Chapter IV. London, Knight and Co., 1904.

Mulhern, James, *A History of Education*, pp. 281-282, 305-332, 395-411. Ronald Press Co., New York, 1946.

Salmon, D., and Hindshaw, W., *Infant Schools, Their History and Theory*. London, Longmans, Green and Co., 1904.

Salmon, D., *Joseph Lancaster*. London, Longmans, Green and Co., 1904.

Wilds, Elmer H., *The Foundations of Modern Education*, pp. 404-450. New York, Rinehart & Co., Inc., 1942.

Johann Heinrich Pestalozzi (1746-1827)

His Life Story

EARLY PERIOD. Born at Zurich, the son of a capable physician and a gifted mother, Pestalozzi's father died when he was 5 and he was reared by his mother and an old servant and in strained financial circumstances. This emphasized the feminine characteristics of Pestalozzi. He attended the customary elementary and Latin schools, but was unhappy and did not distinguish himself. Visits with his grandfather, Andrew Pestalozzi, at Honegg impressed upon him the degradation of the poor and awakened in him a desire to help.

COLLEGE YEARS. He attended the *Collegium Humanitatis* and the *Collegium Carolinum* at Zurich. Here his teachers inspired him with a passionate love for justice and liberty and a deep asceticism. His attainment in scholastic fields here was not high.

THE UNCERTAIN YEARS. Pestalozzi determined to devote his life to helping the poor. He tried the ministry, but failed. Then he turned to law and politics, but was branded a radical and was feared by those he wanted to help. Then he turned to agriculture, hoping to operate a model farm and teach the people how to raise their standard of living through more scientific farming. He borrowed money, bought a 100-acre farm near Birr, and established Neuhof (1769). He married and in 1770 his son was born. By 1775 the venture was a failure. Neuhof then became an orphanage, but this also failed.

YEARS OF DECISION. Pestalozzi had been interested in education since his college days. The *Emile* had influenced him tremendously. At Neuhof he sought to combine intellectual and vocational training. *Leonard and Gertrude* appeared in 1782. It was a success as a novel but not as a portrayal of his educational ideas. After 10 years of poverty, he met Fichte (1792) and Immanuel Kant. At the suggestion of Fichte he wrote *My Investigations Into the Course of Nature in the Development of the Human Race*. This work convinced him that teaching was his field and he determined to be a schoolmaster. Put in charge of an orphanage at Stanz (1798) he began to work out his conviction that by awakening in each individual self-respect and a sense of power he could regenerate society. He moved to Burgdorf where he conducted a boarding school for boys from 1800 to 1804, and then to Yverdun where he worked from 1805 to 1825.

YEARS OF TRIUMPH. At Yverdun he operated a boarding school for boys

from all countries of Europe. The atmosphere was that of a home. Discipline was mild and no coercion to learn was evident. The school became world famous and thinkers, educators, and rulers from all parts of the world visited it and some enrolled as students to learn from the master.

YEARS OF DECLINE. After 1810 Yverdun began to decline. Pestalozzi's wife died and he seemed to weaken mentally. His assistant, Schmidt, drove his best teachers away, lawsuits and disputes increased, and eventually the institution was closed. Pestalozzi retired to Neuhof, then owned by his grandson, and died in 1827.

His Educational Principles

INTRODUCTION. Pestalozzi worked against inexpressibly bad conditions among the poor. Poverty, ignorance, disease, fear, and vice were rampant. Teachers were untrained and many cared nothing for their work. Pestalozzi desired to aid these people. He believed that the way lay along the lines of better education. Thus, he laid down three basic principles of relief:

1. Reform must begin with the individual rather than with the social pattern. To change society will be useless unless each individual is given a sense of personal dignity and of ethical importance.
2. Reform of the individual comes only by giving him the power to help himself. Philanthropy is weakening. We must teach the individual to help himself.
3. The means to this end is development of the innate powers of the individual. Education merely furnishes the situation for the unfolding of the child's nature.

HIS THEORY OF ORGANIC DEVELOPMENT. The individual is a natural organism that may unfold its inner nature according to definite laws if given the proper environment. Though an organic whole, the individual has three aspects:

1. *The Intellectual* (head): This develops in terms of the experiences furnished through sense impressions.
2. *The Physical* (hand): Motor activities growing out of wants.
3. *Moral and Religious* (heart): Relationships with other individuals and with God.

Each develops in its own way, but as part of the whole. The educator must discover the laws of this development and use them in teaching. This leads to his general principles and methods: 1. All three aspects must develop together and in harmony with each other. The individual is a unity and an over-development or under-development of one aspect throws the organism out of balance. 2. Education that is general must come before

that which gives one vocational competency. General education uplifts and ennobles the individual. To neglect this for the development of skills is degrading. 3. Education must aim at the increase of the child's power to make his own judgments rather than knowledge of the judgments of others. Intellectual training rather than the mere increase of knowledge is the aim. 4. The child's powers grow from within as his inner nature develops. We must not force the child before he is ready. We must study the laws of this development. 5. Work must be graded in terms of this development. The teacher must move by slow steps from the easy to the more difficult and insist upon mastery at each step. 6. All method must follow the plan of nature. The educator is like a gardener who supplies nothing, but follows the plan of the nature of the plant and provides the environment which will stimulate full development of that nature.

DEVELOPMENT OF THE "HEAD". Knowledge comes through sense impressions. Thus, the child must experience objects. The mind is active, dealing with sense impressions and building concepts. This is the basis of Pestalozzi's "object lessons." All instruction begins with form, number, and language. These are the "elementary means of instruction." From these he builds his curriculum. Intellectual instruction must: 1. Proceed from the known to the unknown, and 2. Proceed from the concrete to the abstract. Pestalozzi sought a logical order of subject-matter and failed to recognize that the child learns psychologically rather than logically. This is seen in his methods of teaching language and drawing.

However, Pestalozzi made many important changes in the teaching of many subjects:

1. *Arithmetic:* He began with concrete objects and moved to an understanding of symbols, insisting upon drill and mastery at each step. Thus, he brought arithmetic down to the first grade and developed mental arithmetic.

2. *Geography:* He began with the natural world around the child, made clay models of the surrounding land and rivers, then turned to maps to broaden the child's knowledge.

3. *Drawing:* He held that drawing was an introduction to writing. It trained the child in accurate observation and clear thinking. Further, in drawing he began with simple lines and moved to more complex figures.

4. *Language:* He would teach objects and meanings before words and would begin with the vernacular.

5. *Music:* He would begin with perception of tone and move on to time and melody.

DEVELOPMENT OF THE "HAND". He believed that the child learns by doing

and emphasized the training of skills and development of the ability to produce. He would begin with movements of the limbs and move on to more complicated activities.

DEVELOPMENT OF THE "HEART". He would begin with the instinctive feelings of the child toward his mother. These result in dependence and love, trust and gratitude, patience and obedience. From these develop the higher aspects of man's moral, social, and religious life. Right development results in a feeling of dependence upon others and upon God, sympathy and altruism, and a sense of the ideal and of conscience. Thus, religion is based upon development of the emotions. Consequently, it cannot be taught. The development of the fundamental emotions comes before intellectual growth. We talk about religion after we have experienced it, not before. This development is fundamental and furnishes the power and motive for harmonious development of the "head" and "hand."

His Success Amid Failure

WHY HE FAILED

1. *His Personality:* He had many peculiarities, was talkative, highly emotional, slovenly, a muddled thinker.

2. *Language Difficulty:* Both French and German were spoken at Yverdun.

3. *Great Popularity:* Pestalozzi's fame turned his head and instruction at Yverdun suffered from publicity. The school at Yverdun became a show place.

4. *The original home atmosphere of the school was lost* as it became famous.

5. *Discord increased* among Pestalozzi's assistants.

HIS ENDURING LEGACY. 1. He had a great faith in education as the only means for making better people and a better society. 2. He realized that sound education must rest upon a sound knowledge of the psychology of child development. He began the psychologizing of education. 3. He thought of education as an organic development of the child's nature. 4. He turned attention to the beginnings of all growth and to the necessity of starting education here. 5. He emphasized the necessity of moving from the concrete to the abstract in thinking. 6. He emphasized the need for gradual unfolding of the powers of the child through graded experiences. 7. He saw that religion develops from man's emotions and not from creeds or dogmas. 8. He introduced many new methods and devices for teaching such as letters on cards, use of the slate and pencil, and class instruction. 9. He held that discipline must be based upon the mutual sympathy between teacher and pupil. 10. He stimulated interest in teacher training and in the study of the science of education.

HONORS BESTOWED UPON HIM. 1792 - He was made a Citizen of the French

Republic.

1814 - He was knighted by Tsar Alexander of Russia.

He was reverenced and praised by the great minds of his day.

His Influence in Europe

IN PRUSSIA. Fichte urged a defeated Prussia to adopt the methods of Pestalozzi (1807-1808). The Prussian government sent select young men to be trained at Yverdun. Further, Pestalozzi's methods were employed in many schools of Prussia and teachers were trained in the use of these methods.

IN SWITZERLAND. Cantons adopted Pestalozzian methods in schools and established teacher training schools. Baron von Fellenberg (1771-1844) founded an agricultural and industrial institute at Hofwyl on Pestalozzian ideas.

IN FRANCE. Pestalozzi's ideas were spread in France by M.A. Jullien, Chavennes, and Maine de Biran.

IN ENGLAND. J.P. Greaves introduced Pestalozzianism to England. Dr. Charles Mayo and Elizabeth Mayo spread a mechanized and formalized Pestalozzianism throughout England through the Home and Colonial Training College and their work influenced American education.

His Influence in America

WILLIAM MACLURE (1763-1840) and JOSEPH NEEF (1770-1854). Maclure, a Scotchman who came to the United States and became wealthy, visited Yverdun and Hofwyl and brought Neef to Philadelphia in 1806 to conduct a Pestalozzian school. He discussed Pestalozzi's ideas in the *National Intelligencer* (1806) and in a *Sketch of a Plan and Method of Education* (1808). The school was opened near Philadelphia in 1809. At first a success, the school moved to a place near Chester, Pennsylvania, and soon failed. Meeting Robert Owen at New Lanark, Scotland, Maclure persuaded this philanthropist to cooperate with him in a communal and educational experiment at New Harmony, Indiana. Neef conducted the school. This venture was a failure.

WRITINGS ON PESTALOZZIANISM. *Method of Instructing Children Rationally in the Arts of Reading and Writing* (1813), by Neef. Articles appearing in *The Academician* in 1819. *A Year in Europe* (1823), by John Griscom. *American Annals of Education* (1794-1845), edited by William C. Woodbridge. Published reports of Victor Cousin, Calvin E. Stowe, A.D. Bache, Henry Barnard, Horace Mann.

TEACHING OF SPECIAL SUBJECTS

1. *Geography:* William C. Woodbridge published *Rudiments of Geography* and *Universal Geography*. Arnold H. Guyot (1807-1884) lectured on the

teaching of geography under the auspices of the Massachusetts State Board of Education and wrote texts on the subject.

2. *Music:* Woodbridge influenced Lowell Mason (1792-1872) who developed public school music education to a high level of skill in America.

3. *Drawing and Arithmetic:* William Russell founded the *American Journal of Education* in which appeared many articles on Pestalozzianism. He also brought Hermann Krusi, Jr., son of Pestalozzi's assistant, to this country to teach in his normal school at Lancaster, Pennsylvania.

THE OSWEGO MOVEMENT. Edward A. Sheldon (1823-1897), superintendent of schools at Oswego, New York, learned of Pestalozzi's work through an exhibit of the materials and object lessons employed by the Mayos in the Home and Colonial Training College in London. He employed Miss M.E.M. Jones of the College to introduce the work at Oswego. She was followed by Hermann Krusi, Jr., who continued the work for 25 years. Thus, Oswego became the center of Pestalozzian influence in the United States.

BIBLIOGRAPHY

1. Primary Sources:

Cubberley, Ellwood P., *Readings in the History of Education,* pp. 439-454. New York, Houghton Mifflin Co., 1920.

Pestalozzi, J.H., *How Gertrude Teaches Her Children.* Translated by Lucy E. Holland and Francis C. Turner. Syracuse, C.W. Bardeen, 1894.

Pestalozzi, J.H., *Letters on Early Education,* Addressed to J.P. Greaves. Syracuse, C.W. Bardeen, 1898.

Pestalozzi, J.H., *Leonard and Gertrude.* Translated by Eva Channing. Boston, D.C. Heath and Co., 1897.

2. Secondary Material:

Anderson, Lewis F., *Pestalozzi.* New York, McGraw-Hill Book Co., Inc., 1931.

Bennett, Charles A., *History of Manual and Industrial Education up to 1870,* Chapters IV-VII. Peoria, Ill., Manual Arts Press, 1926.

Biber, E., *Henry Pestalozzi.* London, John Souter, 1831.

Compayre, G., *Pestalozzi and Elementary Education.* Translated by R.P. Jago. New York, Crowell, 1907.

Cubberley, Ellwood P., *A Brief History of Education,* pp. 297-306. New York, Houghton Mifflin Co., 1922.

Cubberley, Ellwood P., *The History of Education,* pp. 539-547. New York, Houghton Mifflin Co., 1920.

Dearborn, Ned H., *The Oswego Movement in American Education.* New York, Teachers College, Columbia University, 1925.

DeGuimps, Roger, *Pestalozzi: His Life and Work.* Translated by J. Russell. New York, D. Appleton-Century Co., 1895.

Duggan, Stephen, *A Student's Textbook in the History of Education,* pp. 225-243. New York, D. Appleton-Century Co., 1936.

Eby, Frederick and Arrowood, C.F., *The Development of Modern Education,* pp. 619-677. New York, Prentice-Hall, Inc., 1937

Graves, Frank P., *Great Educators of Three Centuries,* Chapter IX. New York, The Macmillan Co., 1912.

Graves, Frank P., *A Student's History of Education,* pp. 295-314. New York, The Macmillan Co., 1936.

Graves, Frank P., *A History of Education, In Modern Times,* pp. 120-163. New York, The Macmillan Co., 1927.

Green, J.A., *Pestalozzi's Educational Writings.* London, Edward Arnold, 1916.

Green, J.A., *Life and Works of Pestalozzi.* London, University Tutorial Press, Ltd., 1913.

Green, J.A., *The Educational Ideas of Pestalozzi.* London, University Tutorial Press, Ltd., 1911.

Hollis, Andrew P., *The Contribution of the Oswego Normal School.* Boston, D.C. Heath and Co., 1898.

Holman, H., *Pestalozzi: An Account of His Life and Work.* London, Longmans, Green and Co., 1908.

Knight, Edgar W., *Reports on European Education by John Griscom, Victor Cousin, Calvin E. Stowe.* New York, McGraw-Hill Book Co., 1930.

Krusi, Hermann, Jr., *Pestalozzi; His Life, Work, and Influence.* New York, American Book Co., 1875.

Melvin, A. Gordon, *Education, A History,* pp. 204-224. New York, The John Day Co., 1946.

Monroe, Paul, *A Brief Course in the History of Education,* pp. 307-319. New York, The Macmillan Co., 1909.

Monroe, Paul, *A Text-Book in the History of Education*, pp. 597-622. New York, The Macmillan Co., 1907.

Monroe, Will S., *History of the Pestalozzian Movement in the United States.* Syracuse, C.W. Bardeen, 1907.

Mulhern, James, *A History of Education,* pp. 362-368. Ronald Press Co., New York., 1946.

Parker, Samuel C., *History of Modern Elementary Education,* Chapters XIII-XVI. Boston, Ginn and Co., 1912.

Stettbacher, Hans, ed., *Pestalozzi, a Pictorial Record for the Centenary of His Death.* Zurich, Zentralbibliothek, 1928.

Wilds, Elmer H., *The Foundations of Modern Education,* pp. 457-462. New York, Rinehart & Co., Inc., 1942.

CHAPTER XVII

Education in 19th Century: Europe

The German School System

EVENTS IN GERMAN HISTORY. 1. Prussia was overcome by Napoleon. 2. Fichte (1806) urged the people to adopt the Pestalozzian school system as a basis for national regeneration. 3. Prussia rose to power among the German states and the German Empire emerged in 1870.

THE VOLKSSCHULEN (the common people). Prussia followed Fichte's advice and established the best schools in Europe. Elementary schools were free and public; attendance was made compulsory; teachers were selected carefully; the work of the schools was aimed at building national ideals. The curriculum was enriched to include both tool subjects and cultural materials. There were separate schools for boys and for girls. The *Volksschulen* provided education for the lower classes, but gifted children in these classes could receive higher instruction.

THE SECONDARY SCHOOLS. Secondary education was confined largely to the classical *gymnasium* and the realistic schools were of little importance. By 1850 this state was being challenged by: 1. The demand for inclusion in secondary education of the growing scientific knowledge and its application to industrial production. 2. The Industrial Revolution which led to the vast industrial empire of the Germans and made industrial education necessary. 3. The democratic spirit which led to the Revolution of 1848 and the constitutional government. Thus, the monopoly of the classical *gymnasium* was broken and the *Realgymnasien* rose to prominence. In 1890 William II challenged the gymnasium for its classical aim and urged education to "bring up young Germans and not young Greeks or Romans."

ORGANIZATION AND CURRICULUM. Children taking secondary education began by studying in a special primary school (from 6 to 9 years of age). Then they might enter the gymnasium, taking a classical course and preparing for the learned professions; or, they might enter the *Realgymnasien,* taking a combined modern scientific course and classical course; or, they might enter the *Oberrealschule,* taking a course consisting of modern languages and scientific studies and training for higher technical and commercial vocations. The curricula in all these schools were planned to meet the training needs of those entering vocations.

The English School System

EVENTS IN ENGLISH HISTORY. 1. The reign of Queen Victoria, 1837-

1901. 2. The British Empire was created and became wealthy. 3. England became highly industrialized and dependent upon its empire for raw materials and trade.

ENGLISH EDUCATION BEFORE 1832

1. *Elementary Education:* This was very poor. Some work was being done by school societies and local groups, but the majority of children received no education.

2. *Secondary Education:* There were private schools for middle class children, but many of these were very poor. The school foundations were negligent and the curricula were divorced from the life of the people.

3. *Higher Education:* This met the needs of only a small sector of English youths. The University of London was founded in 1828 with emphasis upon the sciences.

THE DEVELOPMENT OF ELEMENTARY EDUCATION

1. *Progress to 1870:* Money was appropriated by the ministry for educational purposes and Dr. James Kay was made assistant secretary of a Privy Council committee to supervise its allocation. He was instrumental in establishing school inspection, a system of teacher training called the "pupil-teacher system," and certification of teachers. By the Grammar School Act of 1840 charity foundations for education were recognized as elementary schools fitted to the needs of the times. An Educational department was created in 1856 to have responsibility for education and take over the work of the Privy Council Office. The Newcastle Commission (created in 1858 and reported in 1861) recommended grants on the basis of results shown in standard examinations in reading, writing, spelling, and arithmetic. This plan had many evil results and was abandoned in 1904.

2. *Elementary Education Act of 1870:* This grew out of the failure of the voluntary school system and of pressure by the National Education League for a system of free, universal, compulsory, non-sectarian elementary schools. The act required voluntary societies to provide adequate schools in each district. Where this was not done, school boards were established to found and supervise schools supported by taxation and tuition fees. These were called "board schools."

3. *Progress from 1870 to 1902:* The "board schools" gradually took over elementary education and the standards were raised and many attempts made to institute compulsory education. Government grants were increased so that by 1891 elementary education became virtually free. The Board of Education was established in 1899 as a result of the Bryce Commission's recommendation (1894) for consolidation of educational authority.

4. *The Education Act of 1902:* The councils in counties, county boroughs,

and urban districts were made the local school authorities working through school committees approved by the Board of Education. Thus, England had developed a national system of public schools.

DEVELOPMENT OF SECONDARY EDUCATION

1. *Thomas Arnold:* He reformed teaching at Rugby and influenced teaching at the nine English public schools - Eton, Shrewsbury, Harrow, Rugby, Merchant Taylors', St. Paul's, Charterhouse, Westminister, Winchester.

2. *The Clarendon Commission* (1861-1864): This commission studied the nine public schools and made recommendations which resulted in the Public School Act of 1864 reforming administration of these schools.

3. *The Taunton Commission* (1864-1867): This commission uncovered abuses of educational endowments, showed inadequacies in the classical curriculum, and recommended changes in supervision and administration.

4. *Tax Support of Secondary Education:* The Technical Instruction Act of 1889 and the Local Taxation Act of 1890 permitted taxation for manual and technical instruction. This was interpreted freely and many other subjects were encouraged under these acts. Elementary schools extended their courses. The Act of 1902 placed secondary education under the control of the city council.

DEVELOPMENT OF THE UNIVERSITIES. A system of provincial universities was established to further scientific learning and spread liberal education among the people. Oxford and Cambridge became more liberal and their curricula broadened to include the scientific areas.

The French School System

EVENTS IN FRENCH HISTORY

1. *Napoleon Made First Consul* (1799): He gave France an efficient government based upon an administrative system and code of laws that proved sound.

2. *Louis Napoleon Made Emperor in 1852:* This resulted from a series of governmental changes including the constitutional monarchy, the reign of Charles X and Louis Philippe, and the establishment of the republic. France became prosperous under this reactionary government which was eventually overthrown and the Third Republic established. The Republican government was in complete control by 1879.

EDUCATION UNDER NAPOLEON (1799-1815). Napoleon's aim was a system of education that would train loyal and obedient subjects and produce scientific and military leaders. The Law of 1802 left responsibility for primary schools in the hands of the *communes*, provided for the establishment of *lycee* (state secondary schools) and *colleges* (municipal or private secondary schools). Thus, this law laid the foundation for the French educational system. The laws of 1806 and 1808 founded a system

of education under the Imperial University headed by a Grand Master directly responsible to the Emperor. The nation was divided into academies, each headed by a Rector who had charge of all education in the academy. Napoleon also founded technical schools and the Superior Normal School.

EDUCATION UNDER THE RESTORATION MONARCHY (1815-1830). Napoleon's administrative plan was retained; the name of Grand Master was changed to Minister of Education; the Superior Normal School was suspended; and 12 schools for the training of elementary teachers were established.

EDUCATION UNDER THE JULY MONARCHY (1830-1848). Francois Pierre Guillaume Guizot (1787-1874) was made minister of education and Victor Cousin (1792-1867) was made a member of the Council of Public Instruction. Cousin studied the Prussian education system and, in 1830, wrote his *Report on the State of Public Education in Prussia*. This caused wide interest. The Law of 1833 provided for a system of publicly controlled primary schools throughout France. It also provided for normal schools for the training of elementary teachers. These schools were to be supported by tuition fees, taxes, and national grants.

EDUCATION UNDER THE SECOND REPUBLIC AND SECOND EMPIRE (1848-1870). The law of 1850 abolished the state monopoly of secondary and higher education as well as the higher primary schools. In 1852 Napoleon II took control of education and the present administrative machinery in French education was established.

EDUCATION UNDER THE THIRD REPUBLIC (1870-1937). Fees in public lower primary schools were abolished and compulsory attendance instituted. The earlier system of state education was perfected with the minister of education responsible to the Chamber of Deputies and advised by a superior council placed at the head of the system; academies became teaching universities with the Rector at the head; and departments set up headed by a prefect and an advisory council.

BIBLIOGRAPHY

1. Primary Sources:

Cubberley, Ellwood P., *Readings in the History of Education*, pp. 455-541. New York, Houghton Mifflin Co., 1920.

2. Secondary Material:

Adamson, J.W., *English Education, 1789-1902*. Cambridge, Cambridge University Press, 1930.

Alexander, Thomas, *The Prussian Elementary Schools*. New York, The Macmillan Co., 1919.

Alexander, Thomas, and Parker, Beryl, *The New Education in the German Republic*. New York, John Day Co., 1929.

Archer, R.L., *Secondary Education in the 19th Century*. Cambridge, Cambridge University Press, 1921.

Becker, Carl H., *Secondary Education and Teacher Training in Germany*. New York, Teachers College, Columbia University, 1931.

Birchenough, Charles, *History of Elementary Education in England and Wales*. London, W.B. Clive, 1925.

Bolton, F.E., *The Secondary School System of Germany*. New York, D. Appleton-Century Co., 1905.

Butts, R. Freeman, *A Cultural History of Education*, pp. 385-439. New York, McGraw-Hill Book Co., Inc., 1947.

Cubberley, Ellwood P., *A Brief History of Education*, pp. 309-350. New York, Houghton Mifflin Co., 1922.

Cubberley, Ellwood P., *The History of Education*, pp. 552-650. New York, Houghton Mifflin Co., 1920.

De Montmorency, J.E.G., *State Intervention in English Education*. Cambridge, Cambridge University Press, 1902.

Duggan, Stephen, *A Student's Textbook in the History of Education*, pp. 408-448. New York, D. Appleton-Century Co., 1936.

Eby, Frederick, and Arrowood, C.F., *The Development of Modern Education*, pp. 679-704. New York, Prentice-Hall, Inc., 1937.

Farrington, F.E., *French Secondary Schools*. New York, Longmans, Green and Co., 1910.

Farrington, F.E., *The Public Primary School System of France*. New York, Teachers College, Columbia University, 1906.

Graves, Frank P., *A History of Education, In Modern Times*, pp. 256-316. New York, The Macmillan Co., 1927.

Graves, Frank P., *A Student's History of Education*, pp. 433-491. New York, The Macmillan Co., 1936.

Kandel, I.L., *Comparative Education.* Boston, Houghton Mifflin Co., 1931.

Melvin, A. Gordon, *Education, A History,* pp. 257-276. New York, John Day Co., 1946.

Meyer, Adolph, *The Development of Education in the Twentieth Century.* New York, Prentice-Hall, Inc., 1939.

Mulhern, James, *A History of Education,* pp. 429-467. Ronald Press Co., New York, 1946.

Paulsen, Friedrich, *German Universities and University Study.* New York, Charles Scribner's Sons, 1906.

Reisner, E.H., *Nationalism and Education Since 1789.* New York, The Macmillan Co., 1923.

Smith, Frank, *History of English Elementary Education Since 1760.* London, University of London Press, 1931.

CHAPTER XVIII

Education in 19th Century: America

Growth of the Free School System

BACKGROUND MATERIAL

1. Though free school systems were developing throughout the western world during the 19th century, that of the United States differed from others in several respects: The schools were more sensitive to popular demand; social class distinctions were largely abolished; the teaching of religion in the schools was banned; a large number of pupils had access to the higher levels of education; the American plan of control kept the schools close to the people, and there was no national system of education, but 48 different state systems.

2. *Conditions Influencing the Educational Development Included:* Leadership in education was exerted by those areas which were settled earliest; the great diversity of cultural backgrounds in the population; the work of outstanding leaders such as Horace Mann and Henry Barnard; the great wealth of the United States built upon rapid exploitation of natural resources, and the vastness of the country and the diverse living conditions.

3. *Status of Schools at the Beginning of the 19th Century:* Educational opportunities for the masses were varied and often poor and inefficient. The more wealthy employed tutors and private teachers. Though some public money was being distributed among schools, their chief support came from tuition fees. The school buildings were poor and not at all well equipped. Teachers, with few exceptions, were poorly trained and considered teaching as a means to other ends.

4. *The Social Pattern of the Times:* Territorial boundaries of the nation were being extended and the population was increasing rapidly; the country was changing from an agricultural to an industrial economy, and the franchise was being extended under pressure from those wishing to establish wide political democracy.

CONSTRUCTING THE SCHOOL SYSTEM

1. *Beginnings in New York:* The Common School Fund was established in 1805 and the Literary Fund begun in 1813. The New York Free School Society was organized in 1805 and its work prospered under the leadership of DeWitt Clinton (1769-1828). The School Law of 1812 provided for a state superintendent of schools, town school commissioners, district trustees, and distribution of the common school fund. Gideon Hawley was

made the first state superintendent.

2. *Beginnings in Other States:* **Massachusetts** - Under the school law of 1789 town school committees were permitted. In 1826 the towns were required to appoint school committees, but opposition to this was so great that the law was changed the next year. In 1827 support of schools by taxation was made compulsory. **Pennsylvania** - In 1802 a pauper school act was passed permitting overseers and guardians of the poor to collect taxes for the education of their charges. A free school system was established by the law of 1834. **Ohio** - The state received a square mile from each township for education. Laws were passed establishing universities and the district system. The law of 1825 laid the foundation for a school system. In 1827 a school fund was established. **North Carolina** - The school fund was established in 1825 and a system of elementary schools set up in 1839.

3. *Educational Publications:* A vast amount of material on education appeared in America between 1815 and 1860. This included: *Year in Europe* (1819) by John Griscom, *Report on the State of Public Education in Prussia* by Victor Cousin, and reports made by William C. Woodbridge, Calvin E. Stowe, Horace Mann, and Henry Barnard. Also, several educational journals began publication: *The Academician* (1818), *The American Journal of Education* (1826-1831) which was continued after 1831 as the *American Annals of Education* (1832-1839).

4. *Educational Associations:* Many associations propagandizing for education were organized during this period: The Western Academic Institute and the Board of Education, both founded at Cincinnati in 1829, The American Institute of Instruction founded in Boston in 1830. These, and others of similar concern, issued publications, drew up resolutions for legislatures, and organized sentiment for better education.

5. *Education in Massachusetts:* Massachusetts led in the development of a school system. In 1834 the foundation of her system was laid. Leaders in the thought on education of the times included John Quincy Adams, Ralph Waldo Emerson, George Ticknor, and William Prescott. James G. Carter (1795-1849) suggested educational reforms in his *Letters to the Hon. William Prescott on the Free Schools of New England* (1821), founded a private normal school, helped organize the American Institute of Instruction, served in the state legislature, and drafted the law of 1837 which established the Massachusetts State Board of Education. Horace Mann (1796-1859) left the presidency of the state Senate to become Secretary of the Massachusetts State Board of Education, published annual reports dealing with educational problems (his *Seventh Annual Report* is a classic), established the *Massachusetts Common School*

Journal, worked for better teachers, higher salaries, an enriched curriculum, improved school buildings, school libraries, better administrative procedures, and non-sectarian schools.

6. *Education in Connecticut:* Henry Barnard (1811-1900) was the scholar of early American education. He served as secretary of the Connecticut State Board of Education from 1838 to 1842 and also as a member of the state legislature. He established the *Connecticut Common School Journal.* From 1843 to 1849 he helped organize the educational system of Rhode Island. Then he returned to Connecticut to head the school system of that state. He published the *American Journal of Education* (begun in 1855), a storehouse of information about American and European developments in education, served as chancellor of the University of Wisconsin (1858-1860), and became the first United States Commissioner of Education in 1867 and filled that office until 1870.

GROWTH OF THE ELEMENTARY SCHOOL. The Pestalozzian influence in the United States resulted in an increase in the number of elementary schools and in an enriched program at this level. Gradually a graded plan for these schools developed because of the spread of class instruction, the grading of subject matter, the spread of the monitorial system, and the employment of trained teachers. in addition, many leading educators were advocates of having a teacher for each class and a system of grading. John Philbrick (1847) built, in Quincy, Massachusette, the first school with separate rooms for each class. By 1890 the educational system of this country consisted of eight years of elementary schooling and four years of high school work. The work of each unit covered one year.

GROWTH OF THE HIGH SCHOOL. The Latin Grammar School was the early American secondary school. This was supplanted by academies offering courses in English literature, history, mathematics, and the sciences. The Boston English Classical School, established in 1821 for boys planning merchantile and technical careers, offered no Latin nor Greek and emphasized English. In 1827 Massachusetts passed a law requiring a similar school in each town of 500 families. Attempts to establish schools of this type for girls failed. The high school movement spread throughout the country but was opposed in many quarters. The Kalamazoo Case (1872) challenged the right to use tax money for high schools. The Supreme Court of Michigan ruled in favor of taxation for high school support. Thus, higher education was made a proper part of a state's free school system.

The Federal Government and Education

IN THE EARLY YEARS OF THE COUNTRY. There was much interest in a federal system of education but efforts to establish such a system failed. Plans

to endow state colleges from funds obtained by the sale of federal lands were defeated.

THE MORRILL ACT (1892). This law provided for a grant of land to each state on the basis of the number of Congressmen from that state, the proceeds from such land to be used for establishing a state college in which agriculture, the mechanical arts, and military science were to be taught. However, a state might, if it desired, establish departments for teaching these subjects in existing institutions. Schools established under this act are known as "land-grant colleges." In 1890 Congress established a plan for giving direct annual grants to these colleges.

THE UNITED STATES COMMISSIONER OF EDUCATION. This office was established in 1867 by Congress as part of a national department of education. In 1868 this department was put in the Interior Department. Later it became the United States Office of Education.

The Growth of American Colleges

INFLUENCE OF THE GERMAN UNIVERSITIES. German universities at the beginning of the 19th century were centers of free research and teaching. The great minds of Germany were connected with her universities and these institutions put great emphasis upon work in their schools of medicine, law, philosophy, theology. The purpose of the German universities was to produce learned scholars rather than to give a general education or turn out technicians in practical fields.

THE EARLY PERIOD OF GERMAN INFLUENCE (1810-1875). Reports on German education, including that of Victor Cousin, began to appear and stimulate interest in this hitherto unknown area. Many students went to Germany for their advanced training and came back with glowing reports of work done there. Some of these came to hold leading educational posts in this country. Further, a number of German scholars came to this country and were given important educational posts. Dr. Henry P. Tappan (1805-1881), president of the University of Michigan from 1852-1863, sought to build in the west a university on the German model. Charles W. Eliot (1834-1926), president of Harvard University from 1869 to 1909, built a small New England College into one of the great American institutions of learning. These developments and the increased German influence resulted in drawing the line between the college and the university clearly. Harvard and the University of Michigan made gradual reforms in the direction of the German university plan. The inauguration of Eliot at Harvard marks the dominance of German ideals in American university education, the beginning of the modern period. Noah Porter, president of Yale University, attacked this entire concept in his *The American College and the American Public*. He championed the traditional American college

over against the German University.

LATER PERIOD OF GERMAN INFLUENCE (1875 to the present). The elective system and coeducation were established at many colleges. A number of universities became colleges with additional work weakly imitating the German universities. The development of graduate work under the leadership of Johns Hopkins University (opened in 1876) and Clark University, with G. Stanley Hall as president, was evident in many other places. Gradually professional schools grew up around colleges. The result is the American university with a college of arts attacked from below by the secondary schools, from about by the professional schools, and from above by the graduate schools.

Development of the "Educational Ladder"

INTRODUCTION. The present system of education in the United States was not planned. It grew as different units, founded for specific purposes, were gradually articulated into a whole.

GROWTH OF THE ELEMENTARY SCHOOL. The primary school was consolidated with the reading and writing school. Since 14 was generally accepted as the upper limit of free schooling and children began their schooling at approximately 6 years of age, the grades in the elementary school were usually 8. This school was not planned to prepare a pupil for high school, but rather to give a common school education to the great mass of children. It was not thought that the child would go beyond this.

GROWTH OF THE HIGH SCHOOL. The high school was organized to give advanced training for entrance into commercial life. To be admitted a pupil had to be of a certain age, usually from 9 to 12, and had to pass an entrance examination. The course ran for three or four years and was not preparatory for college.

ARTICULATION OF ELEMENTARY AND HIGH SCHOOL. Massachusetts led the way by basing the entrance examinations for high school upon subjects taught in elementary school. After the Civil War admission examinations were abandoned and children were admitted upon completion of the elementary school course. Gradually work of the two schools has been modified so as to form a unified and progressive system of education through the 17th year.

GROWTH OF COLLEGE PREPARATION. Early high schools were not college preparatory, this being cared for by the Latin Grammar School, the academies, or by private instruction. In 1830 and the years following high schools began to prepare for college. Many high schools offered the English Course for general education and the Classical Course for college preparation. Colleges held to entrance examinations so that gradually the high schools undertook to teach subjects upon which pupils

would be examined. In 1870-1871 the University of Michigan established the policy of admitting students who had graduated from accredited high schools. This policy spread and became general. In some instances additional examinations are required. The professional schools became another step in the ladder and based their work upon that done in the colleges.

BIBLIOGRAPHY

1. Primary Sources:

Cubberley, Ellwood P., *Readings in Public Education in the United States*, pp. 129-263. New York, Houghton Mifflin Co., 1934.

Cubberley, Ellwood P., *Readings in the History of Education*, pp. 542-592. New York, Houghton Mifflin Co., 1920.

Eliot, Charles W., "Inaugural Address as President of Harvard College," in *Educational Forum*. New York, Century, 1898.

Porter, Noah, *The American College and the American Public*. New York, Chatfield & Co., 1870.

Tappan, Henry P., *University Education*. New York, Putnam, 1851.

Tappan, Henry P., "The 'New Education,'" in *The Atlantic Monthly*, February and March, 1869.

Wayland, Francis, *Thoughts on the Present Collegiate System in the United States*. Boston, Gould, Kendall & Lincoln, 1842.

2. Secondary Material

Brown, E.E., *The Making of Our Middle Schools*. New York, Longmans, Green and Company, 1905.

Brubacher, John S., *Henry Barnard on Education*. New York, McGraw-Hill Book Company, Inc., 1931.

Butts, R. Freeman, *A Cultural History of Education*, pp. 440-525. New York, McGraw-Hill Book Co., Inc., 1947.

Cubberley, Ellwood P., *A Brief History of Education*, pp. 352-393. New York, Houghton Mifflin Co., 1922.

Cubberley, Ellwood P., *The History of Education*, pp. 653-708. New York, Houghton Mifflin Co., 1920.

Cubberley, Ellwood P., *Public Education in the United States*, pp. 120-287. New York, Houghton Mifflin Co., 1934.

Eby, Frederick, and Arrowood, C.F., *The Development of Modern Education*, pp. 706-752. New York, Prentice-Hall, Inc., 1934.

Fitzpatrick, E.A., *The Educational Views and Influence of DeWitt Clinton*. New York, Teachers College, Columbia University Press, 1911.

Gifford, Walter J., *Historical Development of the New York State High School System*. Albany, J.B. Lyons Co., 1922.

Graves, Frank P., *A Student's History of Education*, pp. 317-371. New York, The Macmillan Co., 1936

Graves, Frank P., *A History of Education, In Modern Times*, pp. 165-189. New York, The Macmillan Co., 1927

Hinsdale, B.A., *Horace Mann and the Common School Revival.* New York, Charles Scribner's Sons, 1898.

Jackson, Sidney L., *America's Struggle for Free Schools.* Washington, American Council on Public Affairs, 1942.

Martin, George H., *The Evolution of the Massachusetts Public School System.* New York, D. Appleton-Century Co., 1894.

Monroe, Paul, *Founding of the American Public School System,* pp. 222-507. New York, The Macmillan Co., 1940.

Mulhern, James, *A History of Education,* pp. 467-497. Ronald Press Co., New York, 1946.

Reisner, E.H., *The Evolution of the Common School.* New York, The Macmillan Co., 1930.

Thursfield, Richard, *Henry Barnard's Journal of Education.* Baltimore, The Johns Hopkins Press, 1946.

Thwing, C.F., *A History of Higher Education in America.* New York, D. Appleton-Century Co., 1906.

Williams, E.I.F., *Horace Mann.* New York, The Macmillan Co., 1936.

Woody, Thomas, *History of Education of Women in the United States,* Lancaster, Ps., Science Press, 1929.

CHAPTER XIX

Johann Friedrich Herbart (1776-1841)

His Life. Born in Oldenburg, Germany, of a brilliant mother and a father who attained success as a lawyer, Herbart was of delicate constitution because of an accident during his childhood. His mother devoted herself wholly to him and to his education. He received elementary schooling under Pastor Ulzen and secondary instruction at the Oldenburg gymnasium. He showed great ability at an early age and in his late teens was matching his talents with the best minds of Germany. He attended the University of Jena from 1794 to 1797 where he mixed with the finest minds and greatest creative geniuses of his day. In 1797 he became private tutor of the three sons of the Governor of Interlaken. This determined his educational theory and set him on the path of teaching. The periods of his university work and productive scholarship are: 1802-1809 - teaching at the University of Gottingen, lecturing on education and philosophy, and writing chiefly on education. 1809-1833 - occupied tne chair of philosophy formerly held by Immanuel Kant at Konigsburg, lectured on philosophy, psychology, and education, conducted a pedagogical seminar, and wrote chiefly in the field of psychology. 1833-1841 - returned to Gottingen and wrote material which is relatively unimportant.

His Approach to a Science of Education. He held that one must first discover the aim of education, and then develop means for the realization of this aim.

THE AIM OF EDUCATION. "The one and the whole work of education may be summed up in the concept - Morality." By morality he meant a steady, dependable moral character. The moral man is one who is intelligently devoted to the highest ethical ideals, who wills the good freely and constantly because it is his nature to do so. Instruction must prepare the individual to desire and will the good and must develop in him the ability to attain it. This demands the broadest possible training, "many-sidedness of interest." This breadth of experience will make it possible for the individual to make the best choices throughout life. Thus, the complete aim of education is good moral character and many-sidedness of interest.

HOW THE AIM IS REALIZED. "Educative instruction" is the means of realizing the aim of education. Will and intellect develop by this process. Knowledge is the means for developing the will and the intellect. Thus, instruction is the only foundation of all education. "To instruct

the mind is to construct it." Knowledge builds the mind, creates the intellect.

His Educational Psychology

INTRODUCTION. The psychology of Herbart has ethical import. His contributions to the field include: 1. He built a psychology from a study of the facts of mental life rather than from mere speculative conclusions. 2. He taught that the mind is a unity and not a grouping of separate faculties. 3. He sought to make psychology mathematically certain and thus gave impetus to the development of experimental psychology. 4. He initiated physiological psychology.

ACTIVITIES OF THE MIND. Mental life has the basic activities of knowing, feeling, and willing. The soul is called mind when it knows and heart or disposition when it feels or wills.

THE DOCTRINE OF PRESENTATIONS. Presentations are the ingredients of mental life. These are the sensations and perceptions of objects. Objects are presented. Thus, presentations include all percepts, concepts, ideas, meanings - all objects of thought. Objects presented strive to remain in consciousness, but may be pushed aside by other presentations and forced into the subconscious. Thus, consciousness shifts constantly as new presentations enter and force others out. Those forced out strive to re-enter consciousness and depose other presentations.

THE NATURE OF MENTAL ACTIVITY. Feeling and willing result from presentations, they originate from the relations which presentations bear to each other. A feeling is consciousness of a helping or hindering of an idea which is trying to get control of consciousness. Pleasure results when one idea helps another and pain comes when one idea hinders another. Interest is an inner force holding ideas in consciousness or helping ideas to come into consciousness. The more often an idea is brought into consciousness, the easier it is to bring it to consciousness. The greater the number of ideas of similar nature in consciousness, the more easily a new idea will enter. Therefore, the teacher must continuously bring into consciousness those ideas which he wishes to dominate consciousness. In this way he builds a mass of ideas which attracts similar ideas and repels dissimilar ideas. This is the "apperceptive mass." The will is not a special faculty, but is the totality of ideas which make up experience and are expressed in action. Desire is a striving to bring some object into consciousness in a concrete way so that it will satisfy. If one is of the opinion that the object cannot be obtained, the desire remains a wish. If he is confident that it can be obtained, the desire may become a volition. Therefore, as the teacher presents ideas to the child he builds his mind and determines how the child wills and

feels. Presentations are analyzed into parts and these parts are associated into masses of similar ideas or meanings. Experience begins with wholes and analysis follows. He calls these processes "analysis" and apperception.

His Educational Principles

THE PRINCIPLE OF APPERCEPTION. The teacher builds the "circle of thought" by manipulating presentations. There are three stages in the building of the mind: 1. The stage of sensations and perceptions. 2. The stage of imagination and memory. 3. The stage of conceptual thinking and judgment. The difference between an educated and an uneducated individual is one of association of ideas. The uneducated may have a mass of loosely associated ideas while the ideas of the other are closely related. New ideas are taken up by the "apperceptive mass" and united with it. This is the learning process.

CREATIVE ACTIVITY. The individual can never have an absolutely new experience since experience is an organic growth. When a new experience is contradictory of the old two things may happen: 1. One may be accepted and the other cast into the subconscious, or 2. The new concept may be formed to include both, a higher synthesis. This latter is creative mental activity.

THE CULTURAL-EPOCH THEORY. Our best guide for developing the mind of the child is the natural history of the human mind. This begins with the simplicity of primitive man and moves on to present-day social complexity. In this development are three stages: 1. The stage of sensations and perceptions when emotions are strong and the child's impulsiveness must be curbed. 2. The stage of memory and imagination when systematic training can be employed. 3. The stage of judgment when instruction has formed the will.

His Curriculum. The individual receives presentations from things, "empirical knowledge," and from social intercourse, "sympathy." Although the child gets many impressions before entering school, the teacher must fill in the picture and correct inaccuracies through the use of geography, mathematics, and natural history in the area of "empirical knowledge," and through history, literature, languages, religion, and art in the area of "sympathy." This leads to the principles of concentration and correlation.

His Methods of Teaching. All teaching must aim to build the mind into a compact body of knowledge and interests so that thought and ethical character are controlled from within. All knowledge must be properly assimilated and organized, apperceived. Thus, the "five formal steps" were

developed by Herbart and his followers:

PREPARATION. Ideas already in consciousness or in the subconscious are recalled to attention. The proper apperceptive mass is made ready to receive the new presentations.

PRESENTATION. The new material is presented in concrete form and at the level of the child's development.

ASSOCIATION. The new material is assimilated with the old. Likenesses to and differences from the old are pointed out so that the new is properly related to the old.

GENERALIZATION. The experiences are analyzed and general conceptions formed so that the individual moves from the low level of perception and the concrete to the higher level of judgment.

APPLICATION. Use of knowledge as part of a living mind, as an aid in interpreting life.

The Spread and Influence of His Theory. In Germany Herbart's principles were almost universally adopted. In the United States they were spread and championed by several educational leaders (Charles De Garmo, Charles McMurray, and Frank McMurray) who studied in Germany and brought Herbart's ideas to America. These men published a great mass of literature dealing with the Herbartian principles. The National Herbartian Society was organized in 1892. The name of this society was changed in 1902 to the National Society for the Scientific Study of Education as American educators turned away from slavish adherence to Herbartianism.

BIBLIOGRAPHY

1. Primary Sources:

Cubberley, Ellwood P., *Readings in the History of Education*, pp. 639-645. New York, Houghton Mifflin Co., 1920.

Herbart, J.F., *ABC of Sense Perception*. New York, D. Appleton-Century Co., 1896.

Herbart, J.F., *The Application of Psychology to the Science of Education*. New York, B.C. Mullineer, 1898.

Herbart, J.F., *Outlines of Educational Doctrine*. New York, The Macmillan Co., 1901.

Herbart, J.F., *The Science of Education*. Boston, D.C. Heath and Co., 1908.

Herbart, J.F., *Textbook in Psychology*. New York, D. Appleton-Century Co., 1896.

2. Secondary Material:

Adams, John, *The Herbartian Psychology Applied to Education*. Boston, D.C. Heath and Co., 1897.

Cole, P.R., *Herbart and Froebel: An Attempt at Synthesis*., New York, Columbia University Press, 1907.

Compayre, Gabriel, *Herbart and Education by Instruction*. New York, Crowell, 1907.

Cubberley, Ellwood P., *A Brief History of Education*, pp. 419-424. New York, Houghton Mifflin Co., 1922.

Cubberley, Ellwood P., *The History of Education*, pp. 759-764. New York, Houghton Mifflin Co., 1920.

DeGarmo, Charles, *Herbart and the Herbartians*. New York, Charles Scribner's Sons, 1895

DeGarmo, Charles, *Outlines of Educational Doctrine*. New York, The Macmillan Co., 1901.

Duggan, Stephen, *A Student's Textbook in the History of Education*, pp. 243-255. New York, D. Appleton-Century Co., 1936.

Eby, Frederick, and Arrowood, Charles F., *The Development of Modern Education*, pp. 755-788. New York, Prentice-Hall, Inc., 1937.

Felkin, H.E., and E., *Herbart's Lectures and Letters on Education*. Syracuse, C.W. Bardeen, 1898.

Felkin, H.E., and E., *Herbart's Science of Education*. Boston, D.C. Heath and Co., 1902.

Graves, Frank P., *A History of Education, In Modern Times*, pp. 191-220. New York, The Macmillan Co., 1927.

Graves, Frank P., *A Student's History of Education,* pp. 377-390. New York, The Macmillan Co., 1936.

Graves, Frank P., *Great Educators of Three Centuries,* Chapter X. New York, The Macmillan Co., 1912.

Lange, Alexis F., *Herbart's Outline of Educational Doctrine.* New York, The Macmillan Co., 1901.

Lange, Karl, *Apperception.* Boston, D.C. Heath and Co., 1893.

McMurry, Charles A., *The Elements of General Method.* New York, The Macmillan Co., 1914.

Melvin, A. Gordon, *Education, A History,* pp. 226-232. New York, The John Day Co., 1946.

Monroe, Paul, *A Brief Course in the History of Education,* pp. 319-329. New York, The Macmillan Co., 1909.

Monroe, Paul, *A Text-Book in the History of Education,* pp. 622-639. New York, The Macmillan Co., 1907.

Mulhern, James, *A History of Education,* pp. 369-375. Ronald Press Co., New York, 1946.

Randels, George B., *The Doctrines of Herbart in the United States.* Philadelphia, University of Pennsylvania Press, 1909.

Smith, Margaret K., *Herbart's Text-Book in Psychology.* New York, D. Appleton-Century Co., 1891.

CHAPTER XX

Friedrich Froebel (1782-1852)

His Life. Born at Oberweisbach, in southern Germany, the son of a busy pastor, Froebel, at nine months of age, lost his mother. After his father remarried the boy was much of an outcast. His father was too busy to pay much attention to him and his stepmother treated him with contempt. Thus, the boy turned to nature and to a study of his own inner impulses and feelings. After spending the years from 10 to 14 with his uncle, Pastor Hoffman of Stadt Ilm, he was apprenticed to a forester who failed to teach him as agreed. In 1799 Froebel entered the University of Jena where he studied for a while. Then he tried several areas of work with only slight success. An experience as teacher of drawing in Herr Gruner's school at Frankfort convinced him that teaching was his career. From 1807 to 1810 he worked with three boys, tutoring them and studying with them at Pestalozzi's school at Yverdun. This experience laid the foundation for his educational philosophy and method. Seeking a principle that would explain the basic laws of all phenomena, a principle of unity, he turned to a study of the sciences - philosophy, chemistry, physics, geology, mathematics, and minerology. He studied at Gottingen and at Berlin. He opened a school for boys, similar to Pestalozzi's school at Yverdun, at Keilhau in 1817. From 1831 to 1836 he worked with several similar schools in Switzerland. In 1837 he opened the first kindergarten at Blankenburg and continued with the kindergarten until his death.

His Fundamental Philosophy

ROOTS OF HIS THEORY. Though influenced by many factors in his age, Froebel was an original, creative thinker who used materials from many sources to construct a unique system of thought. Influences upon Froebel's thinking came from:

1. *The Post-Kantian Philosophic Thought of His Day:* He was especially influenced by K.C.F. Krause who seemed to harmonize best the inner world of man's soul and the outer world of phenomena. Krause held that everything is in and through God, an expression of his creative will.

2. *The Scientific Knowledge of His Time:* This was highly speculative and seemed to Froebel to reveal laws of unity amid diversity.

3. *The Educational Writings of His Day and Earlier:* Those of Rousseau, Pestalozzi, Arndt, Comenius, and Johann H.G. Heusinger (1766-1837).

Froebel added to these influences his own observations and the power of

his own creative mind.

THE ABSOLUTE. Education is part of the process of cosmic evolution. It includes the process by which mankind rises from nature to its present state and the process by which an individual develops into self-conscious adulthood. The Absolute, God, is the original active, energizing, creating, intelligent, and self-conscious source of all things. Both nature and mind come from this original unity. Both nature and man, force and thought, are this divine energy unfolding in diverse forms.

THE THEORY OF UNITY. Everything is both a unity in and of itself and is a member of a more inclusive unity. This is the theory of "part-whole" (Gliedganzes). The Absolute is the all-inclusive unity of which everything is a part. God does not lose his unity by unfolding himself in all the diversity of the universe. Each unity is best when all its parts function together, but in so functioning none of the parts loses its identity.

THE THEORY OF DEVELOPMENT. One law of development is found in everything, the inorganic, the organic, and the spiritual. This is the law of creative growth from unity to diversity in unity. This law is one of opposites, a law of action, reaction, and equilibrium. This is similar to the Hegelian dialectic, but it applies to all development in the universe, not merely to thought. Man is the latest product of development in which God becomes self-conscious. Thus, man attains freedom and is able to choose his ends. This enables him to know the correct method of education. It also means that the race will evolve to still higher forms and that there is unlimited progress.

THE PROBLEM OF EVIL. The child is naturally good and his essence is God. Thus, each vice is a virtue which has been perverted in its unfolding. Evil comes either through neglect of the development of a phase of the individual's native goodness, or through a distortion of that which was originally good.

THE RECAPITULATION THEORY. As the inner nature of the child unfolds, he repeats each stage of the development of the race. This applies to the physical and the mental. Recapitulation is not mere imitation of the past, but is the result of the inner urge of the individual. The growth of the individual is by stages: infancy, childhood, boyhood, youth, maturity. In these he repeats the development of the race.

THE THEORY OF CREATIVITY. God is creative. Man, as the unfolding of God, is creative and productive. This is not a utilitarian theory. Man creates because of his inner nature, not because of outer pressure.

THE THEORY OF FREEDOM. Man has attained self-consciousness. Thus, he is free to choose ends and evaluate outcomes. He is predetermined to become man, a free being.

EDUCATION. From his theory of development it follows that all education is a drawing out of the individual's inner potentialities. Learning should come when the child's inner nature demands it and reaches out for it. Thus, education must be passive, following.

His Theory of Education

AIMS OF EDUCATION. Education must bring man to a clear consciousness of himself, to peace with nature, and to unity with God. This necessitates knowledge of oneself, of nature, and of the laws of inner development. It also concerns development of the will. Thus, the highest aim of education is the development of character.

THEORY OF THE CURRICULUM. The purpose of the curriculum is not to transmit knowledge but to build habits, skills, and character. Learning must result in productive activity. Learning comes through doing. It must be a result of an inner craving to realize some objective.

THEORY OF "BUDDING-POINTS." Activities come from within and form a unity. Each new interest "buds" from an activity already there. The teacher must know when the child is ready for something new.

THEORY OF RELIGION. Religion is consciousness of one's unity with the Absolute, with God. This can be developed best in the normal home where the child is obedient to the father.

PERIODS OF DEVELOPMENT

1. *Infancy* (from birth to 3): The child is dependent upon his parents. His senses and motor activities develop in organic relation to each other. Hearing and vision are the most important senses.

2. *Childhood* (from 3 to 6 or 7): Here the "child begins self-actively to represent the internal outwardly." Forms of expression at this stage include language, play, drawing, rhythm. Education comes through "gifts and occupations."

3. *Boyhood* (from 6 or 7 to 9 or 10): This is the period when instruction predominates. Now the individual creates for a purpose, not merely for the sake of activity. He engages in constructive activities, play, reading of many stories of interest, and in the study of nature.

THE FUNCTION OF THE FAMILY. The family is the supreme human institution. It is a complete unity. In this unity the inner nature of the child unfolds completely and truly. The family is the source of the first religious consciousness.

SOCIAL EDUCATION. The child engages in group activities, thereby developing the sense of oneness with others. This counteracts extreme individualism and is a means of harmonizing the individual and the social group. As the individual becomes one with his fellows he develops the distinctly human qualities.

FROEBEL'S SYMBOLISM. Froebel used many objects (the ball, cube, cylinder, games, and apparatus) as symbols with inner meaning. He saw in the child's play a love of symbols and believed that this was the basis of education. Symbols contribute to the development of the child's intelligence.

Criticisms of Froebel's Theory. Froebel's educational theory and practice have been criticized vigorously. Some of the criticisms that have been put forth are: The Prussian government banned the kindergarten as too liberalizing and democratic; his emphasis upon play detracts from serious thinking and learning; his theory and methods disparage sound learning. Knowledge is necessary and must be secured by a hard road; his philosophy is mystical and pantheistic. Froebel denied this, but his writings are often confusing; he puts too much emphasis upon form and mathematical knowledge, and his law of evolution is meaningless.

Froebel's Contributions to Educational Theory: In education the natural sequence of the development of the child's activities must be followed; development is based upon the inner self-activity of the child; play is an important method of early education; the most important technique for the harmonious development of all powers of the individual is constructive activity; through creative activity the impulse for individual expression and social controls are harmonized; we must build the curriculum on the activities and interests peculiar to each stage of the child's development; the process of human development is continuous. Education is the means for future development, and knowledge is a means, not an end in itself, for the realization of the essential nature of the individual.

The Story of the Kindergarten. Froebel became interested in the kindergarten idea around 1828. In 1837 he opened the first kindergarten at Blankenburg. This failed, but another institution of similar nature was opened in 1840. This was successful and others followed. He also established a training school for women. Though Germany was opposed to the kindergarten, many German educators were enthusiastic about the program and plan. These included Diesterweg and the Baroness Bertha von Merenholz-Buelow. In the United States the kindergarten was introduced by Mrs. Carl Schurz who opened the first American kindergarten at Watertown, Wisconsin, in 1855; Caroline Frankenburg who opened a kindergarten at Columbus, Ohio, in 1858; Dr. William N. Hailman teaching at Louisville, Kentucky; and Elizabeth Palmer Peabody who opened the first English kindergarten in Boston in 1860. In 1873 William T. Harris made the kindergarten part of the school system at St. Louis, Missouri.

BIBLIOGRAPHY

1. Primary Sources:

Fletcher, S.S.F., and Walton, J., *Froebel's Chief Writings on Education.* New York, Longmans, Green and Co., 1912.

Froebel, F., *Autobiography.* Translated by E. Michaelis and H.K. Moore. Syracuse, C.W. Bardeen, 1889.

Froebel, F., *Education by Development.* New York, D. Appleton and Co., 1902.

Froebel, F., *The Education of Man.* New York, D. Appleton and Co., 1887.

Froebel, F., *Mother Play.* Translated by Eliot and Blow. New York, D. Appleton and Co., 1895.

Froebel, F., *Pedagogics of the Kindergarten.* New York, D. Appleton and Co., 1905.

2. Secondary Material:

Barnard, Henry, *Kindergarten and Child Culture Papers.* Hartford, American Journal of Education, 1884.

Blow, Susan E., *Letters to a Mother on the Philosophy of Froebel.* New York, D. Appleton and Co., 1899.

Bowen, H.C., *Froebel and Education Through Self-Activity.* New York, Charles Scribner's Sons, 1906.

Cubberley, Ellwood P., *A Brief History of Education,* pp. 424-428. New York, Houghton Mifflin Co., 1922.

Cubberley, Ellwood P., *The History of Education,* pp. 764-768. New York, Houghton Mifflin Co., 1920.

Duggan, Stephen, *A Student's Textbook in the History of Education,* pp. 255-268. New York, D. Appleton-Century Co., 1936.

Eby, Frederick, and Arrowood, Charles F., *The Development of Modern Education,* pp. 790-837. New York, Prentice-Hall, Inc., 1937.

Graves, Frank P., *Great Educators of Three Centuries,* Chapter XI. New York, The Macmillan Co., 1912.

Graves, Frank P., *A History of Education, In Modern Times,* pp. 220-251. New York, The Macmillan Co., 1927.

Graves, Frank P., *A Student's History of Education,* pp. 390-406. New York, The Macmillan Co., 1936.

Heinemann, A.H., *Froebel's Letters.* Boston, Lee and Shepard, 1893.

Herford, W.H., *The Student's Froebel.* Boston, D.C. Heath and Co., 1900

Hughes, J.L., *Froebel's Educational Laws For All Teachers.* New York, D. Appleton and Co., 1898.

International Kindergarten Union, *Pioneers of the Kindergarten in America.* New York, Century Co., 1924.

Kilpatrick, William H., *Froebel's Kindergarten Principles Critically Examined.* New York, The Macmillan Co., 1916.

Kraus-Bolte, Maria, and Kraus, J., *The Kindergarten Guide.* New York, Steiger and Co., 1906.

Lange, W., "Reminiscences of Froebel," in Barnard's *American Journal of Education,* Vol. XXX, pp. 833-845. Hartford, 1880.

MacVannel, J.A., *The Educational Theories of Herbart and Froebel.* New York, Columbia University Press, 1906.

Marenholz-Buelow, Baroness Bertha von, *Reminiscences of Friedrich Froebel.* Translated by Mrs. Horace Mann. Boston, Lee and Shepard, 1892.

Melvin, A. Gordon, *Education, A History,* pp. 234-247. New York, The John Day Co., 1946.

Michaelis, E., and Moore, H.K., *Froebel's Letters on the Kindergarten.* Syracuse, C.W. Bardeen, 1897.

Monroe, Paul, *A Brief Course in the History of Education,* pp. 329-348. New York, The Macmillan Co., 1909.

Monroe, Paul, *A Text-Book in the History of Education,* pp. 639-667. New York, The Macmillan Co., 1907.

Mulhern, James, *A History of Education,* pp. 375-383. Ronald Press Co., New York, 1946.

Shirreff, Emily, *A Short Sketch of the Life of Froebel.* London, Chapman and Hall, 1887.

Snider, Denton J., *The Life of Friedrich Froebel, Founder of the Kindergarten.* Chicago, Sigma Publishing Co., 1900.

Ulich, Robert, *Sequence of Educational Influences Traced through Unpublished Writings of Pestalozzi, Froebel, Diesterweg, Horace Mann, and Henry Barnard.* Cambridge, Mann., Harvard University Press, 1935.

Vanderwalker, Nine C., *The Kindergarten in American Education.* New York, The Macmillan Co., 1908.

CHAPTER XXI

The Scientific Movement

Introduction. The sciences and the scientific approach play a major role in modern education. The story of this movement has its theoretical phase in the educational theories of leaders like Herbert Spencer and its institutional phase in the gradual inclusion of the sciences and scientific method in schools.

Background Factors

SENSE REALISM. This movement was largely outside the schools of the 17th century and had only a slight influence upon the schools of the age. This influence is seen in the development of science at the University of Halle, the growth of the Realschule in Germany, and the development of the academy. The psychological import of the movement was developed by leading thinkers such as Descartes, Bacon, and Locke, and the educational implications were worked out to a degree by Rousseau, Basedow, and Pestalozzi.

SCIENCE IN THE 19TH CENTURY. During the 19th century pure science developed rapidly and its implications for the daily life of man were extended so that the Industrial Revolution was made inevitable. Applications of science to man's living included the cotton gin, the sewing machine, the steamboat, the locomotive, and many machines for the manufacture of goods.

EDUCATIONAL IMPLICATIONS. The pressure of scientific development and use upon education resulted in a new conception of a liberal education and a growing insistence that the sciences and scientific method be featured in the curriculum.

Herbert Spencer (1820-1903)

HIS LIFE. Born into a scholarly and prominent family, Spencer received a fine education. This was followed by work in the fields of architecture, engineering, and writing. From wide reading in many areas Spencer was familiar with the best thinking of his age and his essays on *Education* (1861), which contain a statement of his philosophy of education, reveal the influence of educational thinkers from Pestalozzi to his day.

HIS EDUCATIONAL POSITION. The aim of education is to prepare one for complete living. Complete living is analyzed into certain definite activities in which one must engage: 1. *Physical* - for this development physiology is necessary. 2. *Vocation* - here one must study mathematics,

physics, chemistry, biology, and sociology. 3. *Parenthood* - the subjects necessary here are physiology, psychology, and ethics. 4. *Citizenship* - the subjects necessary here are political, social, and economic history. 5. *Enjoyment of the Finer Things of Life* - in this area the necessary subjects are physiology, mechanics, and psychology. The sciences, then, are necessary for complete living. This is the position developed in Spencer's *What Knowledge Is of Most Worth?*

Science in the Schools

IN THE UNITED STATES

1. *In the Elementary Schools:* Geography was first. Horace Mann introduced physiology. The Oswego movement stimulated the use of object lessons. William T. Harris introduced elementary science. The Froebelian influence stimulated nature study.

2. *In the Secondary Schools:* The academies introduced scientific subjects and these were carried over into the English High Schools. Later the laboratory method was introduced to supplement textbooks.

3. *In Higher Institutions:* The early course in "natural history" developed into courses in the various sciences. Experiments conducted by instructors gradually gave way to laboratory experimentation conducted by students. Many colleges and other institutions giving major emphasis to science were founded.

IN GERMANY

1. *In the Elementary Schools:* The Pestalozzian movement resulted in the addition of scientific material to the curriculum after the Napoleonic wars.

2. *In the Secondary Schools:* Science was featured in the Realschulen, Oberrealschulen, and in the Realgymnasien, challenged the monopoly over secondary education held for so long by the gymnasium and its classical curriculum. Vocational schools included considerable science in their curricula.

3. *In the Universities:* Many universities added the sciences to their curricula. The University of Halle was among the first. The laboratory method was introduced at Giessen in 1826. The Technische Hochschulen, higher schools of applied science, have been created with emphasis upon science as applied to industry.

IN FRANCE

1. *In the Elementary Schools:* Science came into the primary schools after 1870. In lower primary schools scientific material was developed around drawing, handwork, agriculture, and geography. In higher primary schools courses were introduced in the natural sciences, hygiene, and physical sciences.

2. *In the Secondary Schools:* Science courses were established at the close of the 18th century, during the Revolution of 1792-1799. Napoleon, in 1802, added a science course to the program of the lycees paralleling the classical course. Later an attempt was made to require science in the classical course, but this was vigorously opposed. This led to the establishment of four courses in the lycee, two of which emphasize science.

3. *In the Universities:* Higher technical schools were founded as early as 1747. After the Revolution many higher technical schools with major emphasis upon science were established.

IN ENGLAND

1. *In the Elementary Schools:* Subsidies were granted to schools teaching science at the close of the 19th century. After 1900 science was made compulsory.

2. *In the Secondary Schools:* The academies of the Dissenters included some science in their curricula. The English public and grammar schools were not influenced by the scientific movement until after 1868, after the government investigation of endowed schools. Then many introduced a "modern side." Subsidies for teaching of science stimulated many schools to introduce the subjects.

3. *In the Universities:* There was some science at Cambridge very early. Here Newton was working. Around 1850 biology and the laboratory method were introduced. Science has made its greatest advance in the municipal universities that have arisen at such centers as Sheffield, Leeds, Birmingham, Manchester, and London. Here practical applications of science are stressed.

BIBLIOGRAPHY

1. Primary Sources:

Cubberley, Ellwood P., *Readings in the History of Education*, pp. 655-661. New York, Houghton Mifflin Co., 1920.

Spencer, Herbert, *Education*. New York, D. Appleton and Co., 1860.

2. Secondary Material:

Compayre, Gabriel, *Herbert Spencer and Scientific Education*. New York, Thomas Y. Crowell and Co., 1907.

Cubberley, Ellwood P., *A Brief History of Education*, pp. 430-434. New York, Houghton Mifflin Co., 1922.

Cubberley, Ellwood P., *The History of Education*, pp. 772-779. New York, Houghton Mifflin Co., 1920.

Duggan, Stephen, *A Student's Textbook in the History of Education*, pp. 271-284. New York, D. Appleton-Century Co., 1936.

Graves, Frank P., *A History of Education, In Modern Times*, pp. 320-354. New York, The Macmillan Co., 1927.

Graves, Frank P., *A Student's History of Education*, pp. 495-513. New York, The Macmillan Co., 1936.

Melvin, A. Gordon, *Education, A History*, pp. 249-253. New York, The John Day Co., 1947.

Monroe, Paul, *A Text-Book in the History of Education*, pp. 677-703. New York, The Macmillan Co., 1907.

Mulhern, James, *A History of Education*, pp. 333-343, 413-426. Ronald Press Co., New York, 1946

Quick, R.H., *Educational Reformers*, Chapter XIX. New York, D. Appleton and Co., 1860.

CHAPTER XXII

Modern American Educational Leaders

Francis W. Parker (1837-1902)

HIS EARLY LIFE. Born at Piscataquog, New Hampshire, the son of a cabinetmaker and a school teacher, Parker lost his father when he was but six years old. At eight he was apprenticed to a farmer. During the period of his apprenticeship he received a meager education in the district school and a somewhat broader education through his contact with nature and through general reading. His study of nature lead him to a doctrine of unity similar to that of Froebel. This unity was interpreted in terms of "concentration," the idea of "the central subjects" which included geography, geology, mineralogy, astronomy, meteorology, botany, zoology, anthropology, ethnology, and history. At 13 he left the farm and worked at odd tasks while getting what education he could. At 16 he took his first position as a teacher with a salary of $15 per month and board. In 1859 he became teacher of the school at Carrolton, Illinois, and reformed the institution.

AT QUINCY, MASSACHUSETTS. After a period of service in the United States army, Parker spent two years in Germany studying the work of Pestalozzi, Herbart, and Froebel. Returning to the United States, he took charge of the schools of Quincy, Massachusetts. Here he introduced new methods and made the city a mecca for educators. Here he emphasized activity and concentration.

LATER ACCOMPLISHMENTS. As supervisor of the Boston schools and then as principal of the Cook County Normal School at Englewood, Illinois, Parker carried on his educational reforms. At the latter institution he became acquainted with John Dewey. Mrs. Emmons Blaine built and supported a private laboratory school for Parker. This became the School of Education of the University of Chicago. When Parker died, John Dewey, then head of the university's department of education, became director of the school.

G. Stanley Hall (1844-1924)

HIS LIFE. Born at Ashfield, Massachusetts, of an intelligent farm family, Hall graduated from Williams College in 1867. He attended Union Theological Seminary, preparing for the ministry. He then did graduate work at Bonn and at Berlin and later at Harvard where he studied under William James. After a period of teaching, first at Antioch College and then at Johns Hopkins University, he became president of Clark University

in 1888. Here he developed one of the most famous graduate schools of the country and gathered about him a group of creative students.

HIS PSYCHOLOGY. Influenced by Charles Darwin's *The Origin of Species* and the theory of evolution, Hall sought to reconcile the development of mental life with the evolutionary hypothesis. He held that mental and physical life are always parallel. The child, in his development, repeats the evolution of the race. This is the recapitulation theory. Each stage is necessary for the higher. The stages are the prenatal, the primitive, the savage, and finally civilization.

CHILD STUDY. Hall was a leader in the study of child life. In 1880 he published *Contents of Children's Minds on Entering School*. In 1891 he began publication of the *Pedagogical Seminary*. He became the leader of the Child Study Movement in this country and throughout Europe. His book *Adolescence* is his masterpiece.

HIS EDUCATIONAL PRINCIPLES: 1. The central interest of education must be in those learnings which serve the continuation of the race. The individual is incidental. 2. Emotions are more significant and fundamental than intellect. 3. In human development we see the story of racial development repeated. This recapitulation must control the steps in education. 4. Education should be based upon the growth of the child's nature and lead to a well-balanced whole. 5. Basic to a science of education are all the sciences which throw light upon human nature.

John Dewey (1859-   )

HIS LIFE. Born at Burlington, Vermont, Dewey was educated in the public schools of the town, at the University of Vermont, and at Johns Hopkins University. After teaching for a time at the University of Michigan, in 1894 he became head of the department of philosophy at the University of Chicago. Here his interest in education lead to the establishment of the University Elementary School. In 1904 he became professor of philosophy at Columbia University. Here his influence both in philosophy and in education became world-wide.

THE UNIVERSITY ELEMENTARY SCHOOL. This was opened in 1896 as a laboratory school to supplement his course in education at the University of Chicago. There was no rigid grading, the work was informal, teachers sought to test new ideas, explore new methods, and criticize results. This experiment gave birth to Dewey's famous book, *School and Society*.

THE PHILOSOPHIC PRINCIPLES BASIC TO EDUCATION

1. *His Theory of Mind and Knowledge:* The mind evolves as the organism meets and solves problems. Thus, mind has developed as a tool for dealing with the environment. This is the "instrumental" theory of mind. On the basis of this, action precedes knowledge. Learning comes from acting

and experiencing results in action. This knowledge then changes, influencing action. As the race has developed knowledge it has given to the individual instincts, impulses, and interests. These are inherited urges. Knowledge is a social instrument.

2. *How the Individual Thinks:* Thinking comes through one's effort to solve a problem. The steps in the process are: a) A felt need. b) Analysis of the difficulty. c) Possible solutions are suggested. d) These are tried mentally until one is discovered which passes the mental test. e) The accepted solution is tried in overt action. This is the scientific method of experimenting.

DEWEY'S PHILOSOPHY OF EDUCATION. Education is "the process of the reconstruction or reconstitution of experience, giving it a more socialized value through the medium of increased individual efficiency." As one faces a changing environment and makes adjustments to it, he reconstructs experience and learns. The end or aim of education is more education. The aim of education is within the process of education, not a termination of education. Thus education is growth, actual living. The school is a social institution and must be real for the child.

DEWEY'S INFLUENCE. Modern education owes much to Dewey. Progressive education stems from his ideas, but in many instances has misrepresented his philosophy. The activity program reveals his influence. Dewey's influence is one of the major factors in the great mass of experimental education being undertaken throughout the world.

BIBLIOGRAPHY

1. Primary Sources:

Dewey, John, *Democracy and Education*. New York, The Macmillan Co., 1916.

Dewey, John, *Experience and Education*. New York, The Macmillan Co., 1938.

Dewey, John, *Human Nature and Conduct*. New York, Henry Holt and Co., 1922.

Dewey, John, *How We Think*. Boston, D.C. Heath and Co., 1933.

Dewey, John, *My Pedagogic Creed*. Chicago, A. Flanigan Co., 1910.

Dewey, John, *The School and Society*. Chicago, University of Chicago Press, 1915.

Dewey, John, and Dewey, Evelyn, *Schools of Tomorrow*. New York, E.P. Dutton and Co., 1915.

Hall, G. Stanley, *Adolescence; Its Psychology and Its Relation to Physiology, Anthropology, Sociology, Sex, Crime, Religion, and Education*. New York, D. Appleton and Co., 1904.

Hall, G. Stanley, *Contents of Children's Minds on Entering School*. New York, E.L. Kellogg and Co., 1893.

Hall, G. Stanley, *Morale, The Supreme Standard of Life and Conduct*. New York, D. Appleton and Co., 1920.

Hall, G. Stanley, *Youth; Its Education, Regimen, and Hygiene*. New York, D. Appleton and Co., 1906.

Hall, G. Stanley, and some of his pupils, *Aspects of Child Life and Education*. Boston, Ginn and Co., 1907.

Parker, Francis W., *Talks on Pedagogics*. New York, John Day Co., 1937.

2. Secondary Material

Ames, E.S., et al., *Essays in Honor of John Dewey, on the Occasion of His Seventieth Birthday*. New York, Henry Holt and Co., 1929.

Childs, John L., *Education and the Philosophy of Experimentalism*. New York, The Century Co., 1931.

Dangler, Edward, "The Consequences of Parker's Educational Philosophy," *Education*, June, 1942.

Dewey, John, "In Memoriam - Col. Parker" (address). *Elementary School Teacher*, June, 1902.

Heffron, Ida Casson, *Francis Wayland Parker, a Biography*. Los Angeles, Ivan Deach, Jr., 1934.

Hook, Sidney, *John Dewey: An Intellectual Portrait.* New York, John Day Co., 1939.

Horne, H.H., *The Democratic Philosophy of Education.* New York, The Macmillan Co., 1932.

Mulhern, James, *A History of Education,* pp. 383-392. Ronald Press Co., New York, 1946.

Patridge, Leila, *The "Quincy Method."* New York, E.L. Kellogg and Co., 1886.

Pruette, Loraine, *G. Stanley Hall; A Biography of a Mind.* New York, D. Appleton and Co., 1926.

Ratner, Joseph, *Philosophy of Dewey.* New York, Henry Holt and Co., 1928.

Thomas, M.H., and Schneider, H.W., *A Bibliography of John Dewey.* New York, Columbia University Press, 1929.

Wilds, Elmer H., *The Foundations of Modern Education,* pp. 547-589. New York, Rinehart and Co., 1942.

Wilson, Louis N., *Granville Stanley Hall.* New York, G.E. Stechert and Co., 1914.

Index

Abelard, 74
Academy, The, 41, 147
Alcuin, 70
Alexandria, 42
Alfred the Great, 71
Ambrose, 65
American College, Growth of, 150, 176
Andrea, Johann Valentin, 116
Andronicus, Livius, 50
Anselm, 74
Anthony, 65
Antroch, 43
Apperceptive mass, 182
Apprentice education, 81
Arabic learning, 70
Aristotle, 37
Asceticism, 64
Assyrian education, 4
Athanasius, 65
Athenian education, 24
Athenian educational ideal, 25
Augustine, 58, 65
Austria, Nationalization in, 154
Babylonian education, 4
Bacon, Francis, 114, 116
Barnard, Henry, 175
Basedow, Johann Bernhard, 144
Basil "the Great", 58
Bell, Andrew, 157
Benedict, Saint, 66
Bishop's House, Education in, 61
Boethius, 66
Bohemia, Education in, 103
Bologna, University at, 77
Boston Latin Grammar School, 106
Brethren of the Common Life, 93, 94
Brinsley, John, 120
Brothers of the Christian Schools, 124
Bugenhagen, Johannes, 100
Burgh Latin Grammar Schools, 82
Calvin, John, 102
Campanella, Tommaso, 116
Carthage, Fourth Council of, 58
Cassiodorus, 67
Castiglione, 89
Catechetical schools, 59
Catechumenal schools, 59
Cathedral and Collegiate Churches, learning in, 72
Cathedral churches, 60
Catholic Reformation, The, 108
Cato the Censor, 50
Chantries, 83
Charlemagne, 70
Chartres, School of, 73
Cheever, Ezekiel, 106
Chinese education, 5
Chivalry, 80
Christian education, 57
Chrysoloras, Emanuel, 88
Chrysostom, John, 59
Cicero, 51
Clement of Alexandria, 58
Clinton, De Witt, 173
Colet, John, 104
Colonial America, Protestant influence in, 105
Comenius, John Amos, 117
Common School Fund, The, 173
Confucius, 5
Coote, Edmund, 120
Counter Reformation, The, 108
Cultural-epoch theory, 183
Cyr, Saint, 125
Dame Schools, 147, 157
Defoe, Daniel, 121

Delphi, 42
Descartes, Rene, 114
Dewey, John, 198
Dominican Order, The, 74
Dorothea Maria, Dutchess, 119
Dort, Synod of, 119
Drury, John, 121
"Educational Ladder," Development of the, 177
Educative instruction, 181
Egyptian education, 6
Elyot, Thomas, 104
England, Education in, 69, 103
England, Nationalization in, 155
English Lawyer, Education of, 81
English School System, 167
Enlightenment, The, 133
Ephebic training, 28, 41
Epicurean School, The, 41
Erasmus, 95
Ernest of Gotha, Duke, 119
Federal Government and Education, The, 175
Fenelon, 125
Feudalism, 68, 79
Five formal steps, 183
France, Nationalization in, 153
Franciscian Order, The, 75
Francke, August Hermann, 122
Frankish Empire, 67
Franklin, Benjamin, 147, 148
French School System, 169
Froebel, Friedrich, 189
Gamala, Joshua ben, 15
Germany, Nationalization in, 154
Gliedganzes, 188
God, idea of among the Hebrews, 14
Gorgias, 30
Gratian, 75
Greek characteristics, 20
Greek education, 19
Greek Fathers, 58
Greek games, 20
Greek religion, 21
Gregory of Nazianzen, 58
Gregory the Great, 58
Guarino of Verona, 89
Guild, Education of the, 81
Gymnasium, The, 100
Harrington, James, 116
Hartlib, Samuel, 120
Harvard College, 107, 150
Hall, G. Stanley, 197
Harris, William T., 190
Hebrew education, 13
Hecker, Johann Julius, 144
Hellenistic era, 40
Herbart, Johann Friedrich, 181
Hermits, 64
High School, Growth of, 175
Hindu education, 10
Hippias, 30
Homeric times, education in, 22
Hoole, Charles, 121
Humanism, 87
Humanism and Scholasticism, 94
Humanism and the Reformation, 93
Ignatius of Loyola, 108
Infant School Movement, The, 157
Initiatory ceremonies, 2
Innate ideas, 130
Ireland, Education in 69
Irnerius, 75
Isadore of Seville, 69
Isocrates, 32
Jefferson, Thomas, 148
Jerome, 58, 65
Jesuit Colleges, 109
Jesuits, The, 108
Jesus as a teacher, 57
John the Scot, 71
Kalamazoo Case, The, 175

Kindergarten, The, 190
Knightly training, 80
Knox, John, 105
Krause, K.C.F., 187
Lancaster, Joseph, 157
Latin Grammar School, 51
Licentia Docendi, 78
Locke, John, 130
Luther, Martin, 98
Lyceum, The, 41
Lycurgus, 22
Macedonian Era, The, 43
Maclure, William, 163
Mann, Horace, 174
Maurus, Rabanus, 71
Medieval University, Conduct of, 78
Melanchthon, Philip, 100
Mencius, 5
Mental discipline, 131
Michigan, University of, 151
Middle Colonies, Education in, 106
Miletus, 42
Milton, John, 121
Mohammedanism, 67
Monasticism, 64
Monitorial system, 157
More, Thomas, 116
Morrill Act, The, 176
Moses' educational program, 13
Mulcaster, Richard, 114
Naevius, 50
Naples, University at, 78
Napoleon, Education under, 169
National Herbartian Society, 184
Neef, Joseph, 163
Netherlands, Education in, 102
Neuhof, 159
New England Colonies, Education in, 106
New Orleans, University of, 150
Nominalism, 74
Notre Dame, The Sisters of, 124
Old Deluder Satan Law, 107
Oratory, The, 123
Origen, 58
Oswego Movement, The, 164
Owen, Robert, 157
Oxford, University at, 78
Pachomius, 65
Palace School, 70
Pansophism, 118
Papacy, Growth of, 68
Papacy, Story of, 66
Paris, University of, 78
Parker, Francis W., 197
Part-whole theory, 188
Paul, Saint, 58
Peabody, Elizabeth P., 190
Pergamon, 42
Periclean Age, education in, 28
Persian education, 9
Pestalozzi, Johann Heinrich, 159
Peter the Lombard, 75
Petrarch, 87
Petty, William, 121
Philanthropinum, The, 144
Philanthropy in Education, 156
Philip of Macedonia, 40
Phoenician education, 10
Physiocratic Movement, The, 134
Pietism and Education, 122
Plato, 33
Plautus, 50
Plutarch, 44
Port Royalists, The, 124
Prehistoric cultures, 1
Presentation, Doctrine of, 182
Primitive cultures, 1
Primitive education, 1
Prodicus, 30
Protagoras, 30
Puberty rites, 2

Quintilian, 52
Rabelais, Francois, 113
Raikes, Robert, 156
Ramus, Peter, 114
Ratich, Wolfgang, 117
Ratio Studiorum, 109
Realism, 74, 113
Recapitulation theory, 188
Reformation in England, The, 103
Reformation, The, 98
Renaissance, 86
Renaissance, Italian, 87
Renaissance, Northern, 92
Revival of Learning, 87
Rhodes, 42
Rochow, Baron von, 145
Roman Court, University of the, 78
Roman education, 48
Roman Era, The, 44
Roman Fathers, 58
Roscellinus, 74
Rousseau, J.J., 137
Rule of Saint Benedict, 66
Saint Charles, The Congregation of, 124
Saint Paul's Cathedral, School at, 104
Salerno, University at, 77
Scholasticism, 74
Schurz, Mrs. Carl, 190
Science in Education, 193
Scotland, Education in, 105
Scotland, Realistic Education in, 120
Seven Liberal Arts, 73
Shetach, Simon ben, 15
Society of Jesus, The, 108
Socrates, 31
Sophists, The, 30
Southern Colonies, Education in, 106
Spain, Education in, 69
Spain, Nationalization in, 155
Spartan education, 22
Spencer, Herbert, 193
Spener, Philip Jacob, 122
Stoic School, The, 42
Sturm, Johann, 100
Sunday School Movement, 156
Sweden, Nationalization in, 154
Switzerland, Nationalization in, 155
Symbolism, 190
Synagogue, The, 15
Tarsus, 43
Teos, 42
Tertullian, 58
Transition people, 4
Transition people, general characteristics, 11
University idea, Source of, 151
University of Athens, The, 44
University of the State of New York, 150
Universities, Rise of, 76
Ursulines, Order of, 109, 124
Utopians, The, 116
Vikings, The, 68
Virginia, Education in, 105
Vitruvius, 52
Vittorino da Feltre, 88
Vives, Juan Louis, 113
Volkschulen, The, 167
Voltaire, 133
Weimar, Plan, The, 119
William and Mary, College of, 107
Xenaphon, 32
Yahweh, 14
Yale College, 107
Yverdun, 159